শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতামৃত

স্থ্রবিখ্যাত ৺ কৃষ্ণদাস কবিরাজ গোস্বামী বিরচিত।

শ্রীজগদীশ্বর গুপ্ত প্রণীত

সরল টীকা ও ব্যাখ্যা সহিত।

'মরি উক্তি হি ভূতানামমূততার করতে।' শ্রীমন্তাগবত।

কলিকাতা

২৪ নং বিউন ষ্ট্রীট, ভিক্টোরিয়া প্রেসে শ্রীমণিমোহন রক্ষিত বারা মুদ্রিত

২১০/৪ কর্ণওয়ালিস খ্রীট হইতে শ্রীদেবীপ্রসন্ন রান্নচৌধুরী কর্ত্ত্ ক প্রকাশিত।

> ১২৯৬— জৈচ। সুমুগ্র গ্রন্থের অগ্রিম মুল্য ৫২ টাকা।

উৎসর্গ পত্র।

যিনি একান্তভাবে চৈতন্মচরণ আশ্রয় করিয়াছেন ;

যিনি স্তত্যদানের সহিত আশৈশব গোরের মধুর
চরিতস্থা দান করিয়া প্রতিপালন
করিয়াছেন;

যিনি ইহ জীবনেই পঞ্মপুরুষার্থ লাভে সমর্থা হইয়া বৈকুণ্ঠ বাদ প্রতীক্ষা করিতেছেন:

পরম ভক্তিভাজনা সেই মাতামহী দেবীর নামে এই গ্রন্থ ভক্তির সহিত উৎসর্গ করিলাম।

প্রায় তিন বংসর অতীত হইল একদিন বটতলার ছাপার একথানি চৈত্রচরিতামূত গ্রন্থ পাঠ করিতেছিলাম। গ্রন্থানি এতই ভ্রমপূর্ণ বে ক্ষনেক করে তাহার কিছু পাঠ করিতে সমর্থ হইলাম। ছাপার সেই **দ্বতি বিহুত আকার দেবিয়া আমি এক প্রকার পাঠের আশা পরিত্যাগ** ক্লারিছেছিলাম, কিন্তু প্রস্থের বিষয়দী এতই মধুর লাগিতেছিল যে উহা কোন ক্রমে ছাভিতে পারা গেল না। এমন সময় কে যেন আমার ভুদরের অন্ত:তেল ভেদ করিয়া বলিয়া উঠিল যে, "এ গ্রন্থ পড়া ছাড়া হইবে না, সমস্ত পড়িতে হইবে ; তথু পড়া নয়, টাকা ও ব্যাখ্যা করিয়া প্রকাশ করিতে কটবে।" আমার নিজের অক্ষমতা আমি জানিতাম। যে জন ভক্তি রাজ্যের ক. প. জানে না. সে এক বিচিত্র ভজ্জি গ্রন্থের ব্যাখ্যা করিবে. ইহা অতি অসম্ভব কথা; বাহার সংস্কৃতভাষাজ্ঞান অতি অকিঞিংকর. দে ভাগবভাদি ভ্রহ শাস্ত্রোদ্ধ কবিতার টাকা করিতে পারিবে, এ কথায় क्राहां विशास हम ? धवर दर दिमाखानि नर्मन भाख कथन शार्ठ कदत नाहे. সে সেই সকল শাল্লীয় ভাবের নিগৃঢ় তত্বোৎভেদ করিতে সমর্থ হইবে. ইছা বাতুলের কলনা। কিন্তু আমার ইচ্ছার মতীত কোন এক অশ্বীরী ইচ্ছাস্তুত বাণী বৰিষা যখন দৃঢ় প্ৰভাৱ জন্মিল, ভখন পৃঠভক দিতে भावा त्रल मा: छाटे टेडेल्पादत शानशत्त्र श्राम कतिया त्म हे मुटाईटे প্রথম লোকের টাকা লিখিতে বদিলাম। আকর্যোর কথা টাকাও একরুপ হইরা থেল; কে বেন ছাত ধরিয়া লেথাইয়া দিলেন। সামি উৎসাহ ও অধ্যবসায়ের বহিত আদিও কার্য্যে নিযুক্ত হইলাম। সেই আৰ্ধি ছে প্ৰির পাঠক! উহা জীবনের একটা পৰিত্র বত হইয়া গেল L নানা অৰ, ছংৰ, সমুলদ, বিপদ, রোগ, শোকের মধ্য দিয়া কভ লেখাই निश्चिम्, कठ क्यारे दिवलाम ७ कठ खानरे भारेलाम, जारा विनन्न (नव করা বার না। এক দিনের জন্ত আমি নিকংশাহিত হই নাই। যেখানে হুখন বাছিয়াছিল, কোখা হইতে ভাবের স্বোত গুলিয়া গিয়াছে? কে বেন অৰ্থ ও বাংখা যোগাইয়া দিয়াছে ? কেমন করিয়া বৃত্তান্ত আসিয়া हिराइ, किहरे सानिद्ध शांति नारे। अपूर्वत क्या विनश याश वृति-

রাছি, নিঃসংকাচ চিত্তে ভাহাই লিখিরাছি। বাহা ব্ঝিরাছি মনে করিরাছি, অথচ ব্ঝিতে পারি নাই, ভাহাও লিখিরাছি। স্তরাং প্রকাশিত
প্রস্থানের পারা আনি নাই; আর
বাহা ভূল থাকিল, ভাহা আমার গুনিবার ও ব্রিবার দোবে হইরাছে;
ভাতএব ভাহার জয় ভিরস্কারের ভাগী আমি। বাত্তবিক বিগত ভিন বৎসরের
ঘটনাশ্রেণীর মধ্য দিরা পশ্চাদিকে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিরা আমিই অবাফ্
হইরা বাই; ভাবি হইল কি? কাঠ বিড়াল দিরা সাগর বাঁধা হইরা সেল।
কর্মনারও বাহা ভাবি নাই, ভাহা কার্য্যে পরিণত হইল। আমার
হারের এই করেকটী ক্থার সঙ্গে শ্রীশ্রীচৈতস্থচরিভামৃত সাধারণের
সমক্ষেপ্রকাশিত হইল।

विमाापिक, क्छीमान वालनात चामिकवि व्हेल्ड उाहाता चाल्प्रक्रिक चंद्रेनावनी भूर्ग कान श्रष्ट्र निथिया यान नारे। छाँशालय त्रिक त्रांथाकृत्यक्र শীলাবিষয়ক কবিতাগুলি অভি মধুর ও রসময় তাহাতে সন্দেহ নাই; কিন্ত ভালা গ্রন্থ বাচ্য নতে। এটিতভালার শীবনবভাত কইলা নারারণীর পুত্র শ্ববিখ্যাত বুলাবনদান টেচভ ভাগবত নামে যে বিস্তীৰ্ণ পুত্তক বচন! করিয়াছেন,ভাহাই বাঙ্গলা ভাষার আদি গ্রন্থ। ভাষার পরে পরম ভক্তিভাজন প্রীকৃষ্ণদাস কবিরাজ গোস্থামী মহাশম এই গ্রন্থখানি লিখিয়া কেবল চৈতক্ত-চরিতের মাধুর্য্য পিপাস্থদিসকে নহে, সমগ্র বাদলা সাহিত্য ও ভাষাকে অশেষ ঋণে আবদ্ধ করিয়া গিরাছেন। যে কারণে এই আছের উৎপত্তি হইরাছিল, ভাহা গ্রন্থকার আদিলীলার অষ্টম পরিক্রেদে উল্লেখ করিয়াছেন। বুন্দাবনধালী रिकारमधनी अधिमिन अनदारह वुनीयनमारमदं रिकामधानवक अनिरायन ; কিছ ভাষাতে চৈত্তপ্ৰদেবের শেষণীলা স্বিস্তার ধর্ণিত না থাকার छाहारमत्र आणा मिहिल ना ; कुक्तमाम कवित्राक एथन वुन्नावतन वान ু করিতেছিলেন; বৈক্ষবগণ জানিতেন তিনি অতি স্থাপ্তিত ও কবি এবং काहात अधिकारत और 6 जरतात त्या की रामत वासक वर्षमा कित । अकथव সকলে তাঁহাকে অনুরোধ করিলে, তিনিঞ্জারাঞ্জ ও অতি বৃদ্ধ হইয়াও महनामाहन एए त्वत्र व्यामी स्वाह व्यवस्थि नहेबा श्रष्ट्रहाना व्यवस्थ इहेरनन । बाधाकुछ छोटा अष्टागर वरेला, (यज्ञाल खेवा व्यव्यव्यक्तिक वरेबाहिन, खावा छोरांत्र जीवनी भर्या मितिविहे रहेत्रारकः; अभारत शूनकृत्वच निष्टादाक्त । क्य रहेट महानिश्रहम, महानि रहेट भग्रिन्तम बन्द भग्रिन्ति

হুইতে নীলা সহবৰ, হৈত্তভাবিনের এই তিনটা বিভাগ অবলয়ন করিয়া।
ক্রম্থানি আদিনীলা, মধালীলা ও অক্সানীলা নামে তিনধতে বিভক্ত
হুইরাছে। প্রত্যেক থণ্ডে করেকটা ক্রিয়া পরিছেবে এবং প্রক্তি পরিছেদের বর্ণনীয় বিষয় স্থান্ত আদিনীলার ১৭, মধালীলার ২৫ ও অক্সানীলার ২০, মোটে ৬২টা পরিছেবে এই সম্পূর্ণ হুইরাছে। প্রক্তি পরিছেহেদের প্রথমে বর্ণনীয় বিষয় সংক্ষিপ্তরূপে উল্লেখ করিয়া পরে তাহাই
বিজ্ভরূপে বর্ণিত হুইরাছে। এই সংক্ষিপ্ত উল্লেখর নাম স্ত্রবর্ণনা।
আনেক বৈষ্ণব্যহে এইরপ স্ত্রবর্ণনার রীতি দেখিতে পাওয়া যায়।
হৈতভারিত্রের যে যে অংশ বুলাবনদাসের হৈতভালাবতে বিজ্ভরূপে
লিবিত হুইরাছিল, গ্রন্থকার সেই সকল অংশের উল্লেখ মাল করিয়া
বুলাবনের অস্ত্র অংশগুলি স্বিভার বর্ণনা করিয়াছেন।

প্রস্থার বিবরণ বাদল। পয়ারে লিখিত: স্থান বিশেষে ত্রিপদী বা রাগচ্ছনত দেখিতে পাওয়া যায়। অস্তানীরায় অপেকাত্তত কিছু অধিক ত্রিপদী ব্যবহাত হইরাছে। প্রতি পরিছেদারছে একটী করিরা সংস্কৃত শ্লোক আছে ; দে গুলি এছকারের স্বরচিত ঐচৈতভার বন্দনা ও নমস্কার উদ্দেশে প্রয়োগ করা হইরাছে। এতদাতীত আদিশীলার প্রথম পরিচেত্রদের বিতীয়, ভৃতীয়, পঞ্চদশ, বোড়শ ও সপ্তদশ, মধ্যনীলা ও অন্তালীলার দ্বিতীয় হইতে পঞ্ম এবং এছপরিশিটের লোকগুলি গ্রন্থকার সংস্কৃত ভাষার রচনা করিয়া বন্দনাদির অভিপ্রায়ে গ্রন্থ মধ্যে निविष्टे कंत्रिया नियारक्त । देशत मार्था व्यापात मधानीनात वि**छी** श्रद्धांक আদিলীলার বিভীয়ের, মধ্যনীলা অভীমস্তালীলার তৃতীয় হইতে পঞ্মলোক. क्यांनिजीनात्र शक्ष्मण इहेरक मञ्जलत्मत्र शूनक्कि मांता। व्यवस्थित शहकात স্বমত পরিপোষণার্থ শ্রীমন্তাগবভাদি গ্রন্থ ইইতে ভূরি ভূরি সংস্ত স্নোক উদ্ধার করিয়া গ্রন্থের কলেবর বিভূষিত করিয়াছেন। উদ্ধৃত প্লোকের . मःशाश्वित वाजाधिक शहेरला (म श्वित व्यक्षिकाः म এত मधून (य जारी मा थाकित्न श्रष्ट्रशानित व्यक्तिक दर्शान्तरी किमशा याहेख। छक्छारटमव আভিশব্য দৃষ্টে কেছ কেছ মনে করিতে পারেন যে চৈতক্স চরিতামৃত বুঝি সংস্কৃত গ্রন্থ; কিন্তু বাল্ডবিক তাহা নছে; উহা বাললা কবিভান্ন লিখিত। यथन कुक्छमान (श्राचामी श्रष्ट तहन) करतन, उसन चामारमय माछ खारांत ख ছत्मत्र द्यान व्यवप्रदेहे हिन ना; त्यक्क दि शहर छाता सारन साहन

नीवम् । प्रतिथ वरेरव अदेर एक्किपि अम्मानाकत । वर्षेत्र वरेरवे. काहा कि इहे आम्हर्रात क्या नरह, वतः क्यनकात व्यवसात दिनाकानि দর্শনশালের তব্, ভক্তি ও রস শালের নিগৃঢ় কথা এবং স্টিতত্ব প্রভৃতি আধ্যাত্মিক রাজ্যের রহস্ত পরিপূর্ণ এতবড় গ্রন্থ কে বিভার রচিড 'इहेबाहिन, जाहाहै जान्तर्यात विवेत । बहकारतत व्येतीए शांकिका, जाइक कविष गक्ति এवः अनोमाञ्च ভाষাচাত্या ना शाकित हैश केवनह महत्व-हरे मा। बुलावन मात्र बाक्रमा कविजात बुहर बह निर्देश हिएनन বটে: কিন্তু তিনি কেবল চৈত্ত জীবনের ঘটনাওলি পরারে গাঁথির গিরাছেন: ভাঁরাকে অবভারতত্ত, জীবতত্ত, প্রেমতত্ত, স্টেতত প্রভিতি আধ্যাত্মিক রাজ্যের কোন কথাই লিখিতে হর নাই: স্কুতরাং তাঁহার রচনী किছ প্রাঞ্জল হইলেও অক্সান্তাংশে চরিতামতের সমকক হইতে পারে না। এই সকল অসুবিধা সত্তে চরিভায়তের কবিভা অনেক ছানে বে. অভি क्षिष्टे व दामाकीयक. ভाষা बद्धां खन मुलाब, आञ्चन व मधुत अवः छार উচ্চ ও গম্ভীর হইয়াছে; তাহাতেই কবির অসামান্ত কবিত্ব শক্তির পরিচর দিভেছে। ভাষা অপ্রচলিত বলিয়া যদি শিক্ষিত্মগুলী এই কছত প্রস্থেষ শম্চিত আদর না করেন, ভবে ইংরাজ কবি চলর, স্পেন্সরের কবিতাগুলির-ও আদর থাকা উচিত নয়। ফলতঃ সুপক রম্ভা ভোজনের ভায় এই बाएर माधुर्याश्वापन कानात्राम नका नारः , किन्न नात्रिकन (कांक्रान्त्र छात्र किছु अम गारा। वर्षमान मरक्षत्रत्व चामि मरक्रजारमात्र अविधी महन किका ' वाक्ना वााचा, महस्र वाकानात इतार भगारतत वर्ष. (व त्य नीनांत्र ত্ত্র বা সংক্রিপ্ত উল্লেখ মাত্র আছে, তাহার বিস্তৃতাংশের মুর্ম ও চৈতক্ত ভাগৰতের যে স্থানে তাহা পাওরা যাইবে, তাহার উল্লেখ, পৌরাণিক, दिवास्कि, छोशनिक छ ঐতিহাসিक निवर्णत्तत्र वित्यव ब्राया, अञ्चलादत्रेत्र श्रीवनी अवः अकृति श्रविद्धार्व शृति ও शृतमा मृतिद्वित्व कृतिया निर्वाहि । এই গ্রন্থ ইতিপূর্বে বটভলাতে ছাপা হইয়াছে সভা; কিন্তু বর্তনান ভাবে যে ইহা কেহ কথন প্রকাশ করিয়াছেন তাতা জানিনা। ইতার ভারা এট অমৃণা গ্রন্থ ব্রিধার অতি অলমাত দাহাষ্য হইলেও আমার যথেষ্ট পুরস্কার। त्य नकन खम ६ क्लि थाकिया त्रान, छात्रात कछ नश्नम भाठेकवर्ग क्रवक्रहे क्या कतिरवन। यनि क्यन देशत विजीत मः कत्र हत् वानिर्ण शांतिरन े वे नकन जुन जास्नात्मत गरिक मः भाषन कतिता निव ।

এই প্রতিভারের জীবনচরিত ও ভংপ্রবার্তিভ ধর্মমণ্ড विवेष इहेबाएँ। চतिष्ठारण वृक्षिएक काहोबल अञ्चलिया इहेबाब में बार्यना नार्षे : किन्द्र शर्मात या विष्ठात ও छक्ति उप विकाश विकास र्षामध्वि कर्णकाकुछ कठिम। बाधार्थिक छ्वेश्वि बाक्ना भद्राद्र क्षेत्रीय केंद्रिया अर्कान केंद्रा महक व्यानात नहेंह : छोहारिखें व्याचीत श्रीष्ठकीतर्दक मार्निनिक छ विरमेश नक्तनाकार मच नेकन ध्यदिनित केतिए इटेबार्ट : कार्य कार्या जान कार्या करि-बार्छ। थे नकन चारनंत जाया जिकात चाकारत विविध खेंच भरवार (मध्या हेहैंग्रार्ट्क: ज्योह नमाक जार्श्या अकेंद्र नहरक समयम হুইতে পারিবে বিবেচনার এখানে ছুল ছুল কত কওলি বিষয় সরিবিষ্ট করা যাইভেছে। এটিচভগ্রচরিভাষ্ঠ পাঠ করিতে ইইলে পঠিককে गर्साभित अकरी कथा मान बाबिएक हरेर्द : बाधाकरक व निकामीमा वा भक्षके नीनारे बेट्डब मून भवनप्रतीत्र ; धकरेनीना छाराइरे वार्च धकाण-मार्ज। असः निना कर्रामहोत कर्नाताला क्रांत वे नीनात त्यांक व्यनस्त्रीन প্রবাহিত; কথন ইহার বিরাম হর না। শীলামর ভগবাদের নরশীলা সমরে তাহা আয়ের গিরির অগ্নাৎপাতের ভাগে কেবল লোকচকুর সমক্ষে क्षेत्रांनिত रत्र माख ; ভक्कक्र निक्ष कि के छेश हित्रमिम अक्रांक्टि প্রকটিত। কেবল যে ছাপরযগের শেষে প্রকটিত হইয়াছিল ভাষা মতে. অদ্যাব্ধিও অবিস্রাম ঐ লীলাভরক ভরকারিত হইতেছে। আদিলীলার প্রথম हरेट अक्षम निर्देशकाल, मधानीनात कहम ७ विश्म इरेट खालाविश्म পরিচ্চেদে এবং অস্তালীলার বোড়েশ হইতে বিংশ পরিচ্চেদের সানে সানে · এই নিতা লীলারই আভাস পাওরা ঘাইতেছে; তাহারই সার সার কথা এখানে লিখিত হইতেছে। প্রকটলীলা বা নরলীলা আপামর সাধারণ সকলেরই জানা আছে বলিয়া এখানে ভাহার কোন উল্লেখ করা ੰਡ ਡੈਲਾ ਜਾ।

এ দেশের ধর্ম জগতে অবৈতবাদ একটা প্রধান মত। জগদাদি স্টবন্ধ
নিখা। ও মারা সভ্ত, একমাত্র ব্রক্ষই সংবাদ। কিন্তু তিনি নির্দিশের স্বাধা,
তাঁহা হুইতে স্টির ক্ষিত্রই বিশেষত্ব নাই; বত কিছু বিশেষ ভাব অবিদ্যা
বিজ্ঞিত। মারা ভূচিয়া গেলে আর ভেদবৃদ্ধি থাকে না; জীব শিব সকদই
নির্দিশের ব্রদ্ধিদ্ধ ইইনা যায়। ব্রাধিং শ্রুরাচার্য্য এই মত প্রচার করিরা

बाखबात नत अरहात्मत त्यारकत व्यक्तियारामत मर्था देश व्यविष्टे अनेवा विवाह है होत कन वहें माँ ज़िहा किन व. উপাক্ত बिक जिर्दाहिक इन्द्रांत्र कीवरमद कर्डवा निकाद्रत्य, भाग शामात्र नाविक বোধে, এবং প্রেম ভক্তির চরিতার্থকার সকলে শিধিল প্রয়ত্ত হইয়া পড়িল: জাহাতে মানব জীবন কেবল কটভোগের কারণ এবং ধর্মসাধন একটা নীরদ ব্যাপার হইরা উঠিল। এটিচতক এই মতের বিকলে তর্ক বৃদ্ধি প্রার করিয়া রামাত্রক প্রবর্তিত বিশিষ্টাহৈতবাদের মক্ত কিছু শংস্কৃত আরারে সংখাপিত করিলেন। ভাঁহার মতে একমাত্র বৃদ্ধ বৃৎবৃদ্ধ বৃইলেও श्रुद्धामित देवित्वका काहातरे हेव्हात मञ्जूक हरेबाएक अवर श्रुष्टित मकन পদার্থের সহিত তিনি অস্বর্থানীরূপে ও ওত্তোতভাবে মিশ্রিত হইয়া রহিরাছেন; স্থতরাং জীবের দারিত ও উপাসনার আবশ্রকতা এমতে व्यवस्थाती। क्रावात्मत रेव्हा वरेटन महोतान व्यक्तिक वरेत्रा शादक. श्याबाद काँहाबड़े हेक्काब देश काँहार एक नम्र इहेगा बाब । এই हेक्काब धीक है-ভাবের নাম মারা। জীব ও ব্রন্ধে প্রভেদ এই ব্রন্ধ অখণ্ড স্ফিদানন্দ ও মারার অধীশ, মারা ভাঁহাকে অভিভূত করিছে পারে না; জীব চিৎকণ eat माहात वन । चानिनीनात मक्षम, मधानीनात वहे. ए পঞ্বিংশ পরিচ্ছেদে এই সকল বিষয়ের বিচার দেখিতে পাওয়া शहित ।

বৈভাবৈত্যাদের সলে সলে সৃষ্টিভবের কথা আসিরা পৃদ্ধিভৈছে।
আদিনীলার পঞ্চম পরিছেদে এবং মধ্যলীলার একবিংশ ও বাবিংশ পরিছেদ্রের হানে হানে এই বিষয়ের প্রসদ্ধ হইরাছে 🗗 পূর্ণপুক্র ভগবানের স্বরূপ অবও সচ্চিদানদ। সৃষ্টি প্রকাশের ইচ্ছা হইলে ভাঁহার চিটদর্বার নানাভিরেকরূপে পরিব্যাপ্ত হইরা পড়ে। বে প্রক্রিয়ার হারা ইক্রা-সম্পাদিত হর, ভজিপাত্রে তাহাকে বিলাম বলা হইরাছে। বিলসিভ অবহার তত্ত্বর বৈলক্ষণ্য না অন্মিরা রূপের বৈলক্ষণ্য ক্ষিয়া থাকে এবং পূর্ব শক্তির উবৎ নানতা দৃষ্ট হয়। ক্রমবিকাশ বা evolution প্রক্রিয়ার সহিত বিলাস প্রক্রিয়ার কথকাংশে তুলনা করা বাইভে পারে। ভগবান হইতে সাক্ষাভোবে বিলাস হইলে তাহাকে মুখ্য বা প্রান্ত বিলাস এবং পৌণরূপে অর্থাৎ মুখ্য বিলাস হইতে পুনর্বার বিবর্তনের হারা বিলাস ক্রিয়া হইলে তাহাকে অংশ মুখ্য-

ক্লপে বিলসিত হইলে হৈ ক্লপ প্রকৃতিত হয়, তাহার নাম বাহ্মদেব বা বিভন্ন मृत्युत्र व्याधात । हैनिहे चत्रः कृष्ण्यय ७ मृष्टित मृत कात्र ; व्याधाव्यकत्रात चयुक्क इंहेरन हैनि विक्क टिल्कमन हिन्दक्तार थकीनमान हम। ষ্ষ্টির মূল কারণ বা বাছদেব ভত্তশাল্পে কারণ মহার্ণব নামে বণিত হইরাছেন। এই কারণাণ্বে বিলাস প্রক্রিয়ার নিয়্মালুসারে যে চৈডভাংশ উপছিত-খাকে, ভাষার নাম ম্<u>চালত্র্ব</u>ণ বা অহন্ধার তত্ত্ব। ইনি স্টির আদি তত্ত্ विना हैशा के शासित्व वना निन्ना थातक. अवः हैश बहेटल दर्शन विनातन বারা অন্তান্ত অবস্থা প্রকটিত হইয়া থাকে। অধিভূতরূপ ইনি কারণা-र्नरमाशी, धारम शुक्रवावजात या विताहितान, चार्यहोल्काल क्रांत, अवर আধ্যান্ত্রিক ভাবে সম্বর্গরূপে প্রতীয়মান হন। ক্রফের লীলা প্রকাশ করেন বলিরা ইনি তাঁহার সেবক। ঐ সেবক ভাবের প্রকটাভূত অবস্থা चनताम खरः ८शीदलीनाम विश्वतन वा श्रीतिल्यानमः। महर्षन वा अवस्त्र হইতে স্টে প্রকাশ হইলে স্টের অভান্তর ভাগকে ভাগার গর্ভত জল বা গভৌদক বলা যায়: ভাষাতে মহাসম্বর্গের যে চৈছ্ঞাংশ নিহিত থাকে. ডাহার নাম গর্ভোদকশায়ী। সৃষ্টিরাজ্যের সৃদ্ধ ভাগ অবলম্ম করিয়া থাকেন বলিরা ইহাকে স্ক্রান্তর্যামী বলা বার: অবিভূতরূপে ইনি গর্ভোদক-শারী, হিরণাগর্ভ বা বিতীয় পুরুষাবতার; অধিষ্টাভুরণে এবং আধ্যাত্মিক অবস্থার প্রস্তামন্ত্রণে প্রতীয়মান হটরাথাকেন। প্রহামের প্রকটীভূত অবস্থাই কৃষ্ণের প্রেম বৈচিত্র। বলনীলার গোপবধু-গণ এবং গৌরলীলায় সাঙ্গোপাঞ্চণণ এই প্রেমের বাহ্ন প্রকাশ। মহা সম্বর্ণের বে চৈডভাংশ পালনকর্ত্তরূপে পরিগণিত, তাঁহার নাম পরোজিশারী বা অনিক্ষ। সৃষ্টি প্রতিপালনার্থ যে সমস্ত সামগ্রী সম্ভারের প্রয়োজন, ভাষাকে সাধারণ ভারে পর: বা ক্ষীর বলিয়া অভিহিত করা ছইরাছে। बारमात मरवा रक्षम माळ इस बाता मतीत रशायन इहेर्ड शारत, बहे बार्स बाराब पाता शक्ष व्यक्तिभागिত श्रेष्ट भारत, छारार्क कीत विगत किडूरे দোৰ হর না। এই ক্ষীরক্রণ মহার্ণবে বে চৈডফাংশ শায়িত বা वावश्रिष्ठ थात्क, किमिटे भारताकिमात्री। अधिकृषकाल देनि कीतामक-শারী, পালনকর্ম্ভা বিষ্ণু বা ভৃতীর পুৰুষাবভার; এবং আধ্যান্মিকরূপে অনিক্র বা মনতত। এই তত্তের প্রকটাবতা ক্ষের লীলাবৈচিত। इक्नीनात्र महातानानि धदः त्रीत्रनीनात्र नम्य नःकीर्फनानि देशतः

बाह्य क्षकान्य अकदित सहिदाका क किन्द्रभएक क्षकिक प्रकार #Bo কি কল লবভার বে অনস্থ নীলাবৈচিত্র আছে, তদুপহিত रेडक्काश्रम् व नाम श्रम का अनक; देशक मकिनानम कुरक्क स्वक-ভার ভিন্ন আর কিছু নতে। এইকপে প্রীরুষ্ণ মহাসম্বর্গণের দারা ্রোণ বিলাদের নিয়মাত্রপারে অনস্ত কোট শক্তি করি করিবা লীলা প্রকাশ ্রুবিয়া থাকের। স্থভরাং স্টি লীবার বিশ্বচরচের সকলই ভাঁহার <u>শ্বব</u>ভার বা অবতীর্ণ ক্রি। সরোবরের স্থির জলরাশি বিক্ষিপ্ত হইলে যেমন তরঙ্গের পর জন্ম উঠিয়া অগণ্য তর্তমালায় সর্বী ব্যাপ্ত হইয়া প্রছে: ভূপবানের স্বছা-সাগর তেমনি ক্টির ইচ্ছাবোণে বৈচিত্রপূর্ণ শক্তিভরক তুলিয়া অনন্তরূপে जाल बहेबा बहिबाड । बालापव छच वा लग्नः जीकक स्टिकार्या महामद-র্ধ্ব শক্তিকে নিয়ক করিয়া আপুনি স্থান্তর স্বতীত নিতা ধানে স্বীয় কান্তাগুণ সহ নির্ব্ধ নীলা বিহার করিতেছেন। এই পরিষ্ঠমান জড় জগতের শতীত একটা চিক্ষগৃৎ বা পাধ্যাত্মিক রাল্য পাছে; ভাহাই নিত্য লীলার श्वान । बेहारक शत्राद्याम वा दिवकुर्धशाम वना यात्र। कथान व्यादा अवस् বিশ্ব করিয়া বলা বাউক। সুল স্ক্রাদি পরিপূর্ণ এই পরিদুর্যুমান কড়-্লগৎ আত্মজান সাপেক; আত্মানা থাকিলে ইাহার ক্লান সন্তবেনা। ক্ষত্রাং আমরা বাহাকে অড় জগৎ বলি, প্রকৃত পকে ভারা আত্মার একটা ক্ষেত্র মাত্র। তথ্ঞান লাভ হইলে জীবাস্থা ইহা অপেকা আরও উচ্চত্তর ব্যবস্থার আবোহণ করিয়া থাকে। তথ্ন আর ক্লড়ার্ভুতি থাকে না-স্কুন্ই ্ট্রভক্ষর দেখাবার। যে ক্ষবহার এইরূপ প্রভীতি ক্লে, ভাহারই নাম त्यावाशिक बाक्त त्वा देवकुर्श्वमान। यह कियाम जिविद्य अवद्यात विरूक्तः ्रभाक्त्, (शारताहरू: वा द्वलाहरू ; हरेशहे (श्वमताला वा नर्साटार्ट शाम। हिराकरे ज्यावात व्यक्तिका अन्यसादक बुलायन वा माधुर्यापूर्व जिकाम व्यम्पाम লামা বিয়া পাকে; ভোহাই নিভা লীলার নিভাগাম। বিভীয় ভাগ মধুরা বা ক্ষানবৈকুঠ; এথানে ভগবানের বিশুদ্ধ জ্ঞানস্থিয়া প্রাভিটিত। তৃতীর, বোরকা বা ঐশব্যাধান; ক্রবানে ভারবদ্বিভূত্ির ভূরীয়াবভা ভারেরোচর -स्टेशा बारक। वालक्षमत्र-मनुता, वात्का, तुन्तावनानि स्नान वि विद्वारमत न्वास् अकान । त्रमुख देवकूर्वधारम_्कृष्टेति । श्रादकां भारक ; लाशास्क हरूर्व उद नाम । अध्यापन, नाकर्षन, व्यक्षात्र, व्यक्षिक्ष करे हाति छत् नारेहारे क्र ्ष्वकी, हकूर्र्स्ट । । जन्नात्म अथमति मात्राजी छ विश्वक नीवात । वान, विकीतनि

নারাজীত হইরাও স্টির সহিত সম্পর্ক রাথে ব্লিরা অবিভ্রাবস্থা। তগবান্

জীক্ষ নির্কিশেব নহেন, তাঁহার জড়ীর আকার না পাকিলেও তিনি সচ্চিদানন্দ বিগ্রহ। তাঁহার কান্তাগণও চিদাকারমরী। তাঁহাদিগের সঙ্গে যে
নিরবচ্ছির রাসাদিলীলা, তাহারই অবস্থান প্রথম চতুর্গৃহ এবং স্পষ্টরাজ্যের যে আধ্যান্থিক লীলা তাহাই বিতীয় চতুর্গৃহ।

উপরে বলা হইয়াছে যে শ্রীক্ষের জডীয় আকার না থাকিলেও সচিদা-নক বিগ্ৰহ আছে। কথাটা আর একট্ পরিছার করিয়া বলা আবশ্যক। ৰাহির হইতে দেখিলে স্থামগুল যেমন নির্বিশেষ তেলোমর দেখার, উহার অভাতরত্ব রথচক্রাদি যুক্ত দবিশেষ মূর্ত্তি দেখা যায় না; অভাচচ বিমানা-রোধী ব্যক্তির নিকট বেমন পৃথিবীত্ব পৃথক পৃথক ক্ষেত্র সমুদারের সবিশেষ नीमानि हिर् विनुश रहेबा अकमांव निर्वित्म रविष्ठीर्ग ज्यथ अछीत-মান হইয়া থাকে: জ্ঞানযোগমার্গে উপাসনা দ্বারা ভগবানের স্বরূপও তেমনি তেজামর নির্বিশেষ সন্থা মাত্র অমুভূত হইয়া থাকে; বিশুদ্ধ ভক্তিমার্গ ভির ভালীর বিগ্রাহের সবিশেষ লীলাবৈচিত্র পরিলক্ষিত হয় না। নারিকেল ফলের উপরের কঠিন ত্বক অর্থাৎ ছোবরা, মালা প্রভৃতি পরস্পর ভেদ করিতে না পারিলে যেমন ভাহার অভান্তরত্ব স্থমিষ্ট জলের আত্মাদন লাভ कता यात्र ना, त्महेब्रुभ विश्वक अकित्यात्य मात्राभून स्टित हुन आवत्रनानि ভিন্ন হইলে ভগবানের মাধুর্য্যপূর্ণ সবিশেষ রসলীলা আত্মপ্রত্যক ছইবার সম্ভাবনা নাই। বাহাহউক বিশুদ্ধ ভক্তিবোগে গোলোক ধামে ভগবানের সং, চিং, আনন্দময় যে স্বরূপ অন্তুত হইয়া থাকে; তাহা চিমার, विज्ञ भूतनत रीक्रभ, नरीन किर्मात, धामस्नत, मननरमाहन ও तमसत। अञ्चतागमत्री आगम छ। छल्जित आकर्षगर मूत्रनो वा वः मी, विनि निका नुष्तन, ভিনি কিশোর বরক্ষ, শ্রামবর্ণের জার সিগ্ধ বলিয়া আমিক্ষলর, মদন বা कामनामि পर्यास छाँहाटि मुक्ष हरेशा यात्र, এই व्यर्थ महनत्माहन अदर भून तमयक्रभ ; वाकिय वाध कत्राहेवात सन्न विज्ञ विव्यव वित्यव वावक्र हरेबार्छ। अरेकाण अञ्चाक वित्नवरणत वित्नव वित्नव अर्थ अष्ट मरश স্থানে স্থানে দেখিতে পাওয়া বাইবে; এবং গোপাল তাপনী ও ব্ৰহ্ম সংহিতা প্ৰছে বিশ্বতক্সপে প্ৰদৰ্শিত হইয়াছে। তথিকাঞ্ लाईक के नकत शहर छाहा क्रिया लहेरवन। शार्ठक महानद्र ! भारत जानित्वन दय, माधूर्याशूर्न श्रीत्माक वा वृत्तावन श्रीरमहे

को बीजा बारक; क्षेत्रका वा ब्यानशास्त्र महिल कारात मन्नर्क नाहे । सहादेवकुर्क माध्य वित्रका नात्व त्व नती खेवाहिक भारक, काशा नाटक वह जीनामात्र। व्यक्तरंग क्रिकाश वह दय, विवस कि ? জীবালা অভাবরণ ভেদ করিলা মহাবৈকুঠের জ্ঞান ও ঐপর্যাধানে जामन कतिएक नकम इहेरल अध्यास प्राप्त एक, दल विवस्त वा आधानिक व ছাভ হইতে নিকৃতি লাভ করিতে পারে না ; তাহার ধর্মাছ্টান অহলার-জনিত পুৰা লাভের প্রত্যালার হইয়া বাকে বলিয়া পুণ্য সম্ভূত অর্গ ভোগাদি कतिया दन भूनवात कर्षा नम्रतन माजि कहेगा भएक । विशव क्रकित्यादन मीव चाननारक कुनिया यथन এरकवारत जनवारमत हहेता यात्र, छाहात धर्षाधर्ष পাপপুণা বোধ থাকে না; দ্বর ইচ্ছার সহিত ভাহার ক্ষুদ্র ইচ্ছা একেবারে ঘক্ত ছইরা যায়, ভগনই তাহার বিরকা পার হওয়া হয়; এবং তখনই এই গোলোকবিছারী চিমার বিস্তুজ মুরলীধরের মাধুর্ঘালীলা দর্শনের अधिकात अप्य 🖟 नीना विविध-धेर्यर्श ও माधुर्श । अर्थरानीनात छगवान অশীম চিদ্বিভৃতি প্রকাশ করিয়া জীবের পরিআভা প্রভুরণে প্রভীয়মান হট্যা থাকেন। এথানে জীব আপনার কুদ্রত্ব ও ভগবানের মহত্ব অস্তব করিয়া কথন ভীত, সভ্চিত ও বিশ্বিত হইরা পড়ে। কিন্তু মাধুর্বা লীলায় সেরপ নছে; সেধানে ভগবান্ আপনার পিতা মাতা শ্বল্ ও সামীর স্থায় শরমান্ত্রীর; ভাঁহার শাসন কেবল প্রেমের, ব্রভাও প্রেমের, পূজাও ঞেমের এবং পরিত্রাণও প্রেমের। জড়রাজ্যে রাজার শাসন ও পিতার भागरम रव थालिन, क्षेत्रेरी छ माधूर्यानीनात्र क्षेक्षिय राहेन्नभ राजन वना बाहरक भारत ।

এখন কথা হইডেছে এই নিছা বৃন্ধাবনে ভগবানের লীলার সহার কে ?
কাহাকে লইরা তিনি লীলা করিরা থাকেন ? মহাভাবমরী শ্রীমতী
রাধিকাকে লইরা। একই ভগবান্ লীলা প্রকটন জন্ত হুই ভাবে প্রকাশিত;
পুরুষ ও প্রকৃতি। পুরুষ চৈড্ডভাংশ; প্রকৃতি বা শক্তি অর্থাং চৈড্ডভাংশর
প্রকৃতি অবহা। বিভাব বলিলে হুইটা পুথক অবহা ব্রিভে হুইবে না;
একই স্বরণের হুইটা ভাব। বেষন মুগনাভি ও ভাহার সৌরভ, অন্তি ও
ভাহার আলা, চক্র ও ভাহার কিরব, পুরুষ বন্ধ নহে; সেইরণ পুরুষ ও
প্রকৃতি একই বন্ধর হুইটা বিভিন্ন প্রকাশ মার। স্কিলানক ক্ষরের
ভিন্নী স্বরণ বা বিভিন্ন চৈড্ডভাগেকে অর্থাং বং, চিং, আনুক্তিক প্রক্

नद्दन कतिशा शता श्राह्मक वा निक विविध चाकार श्राह्म श्राह्म । नक्राह्म महिली वा निका क्यांमिक किन्द्रिण मिट्ट वा सान्द्रेडकरामिक ए जान-मार्ट कामिनी वा बास्नामगात्रिमी मकि। এই बास्नामिनी मिकिट बाद ছইটা শক্তির সারভাগ। ভাবিরা দেখিতে গেলে ভগবানের সকল শক্তিই আনন্দময়ী; জানন্দ ভিন্ন স্থাই সম্ভবে না এবং আনন্দ ভিন্ন কাছারও স্থিতিও मछद्द नाः दम पञ्च स्नामिनी मकिने नर्याताता। दमन चुकाःम मकन অনক্ষিত ভাবে হুড়ের সহিত সংযুক্ত পাকিয়াও মছন রজ্জু, লণ্ডাদির ছারা यक्कि ना रहेरन अक्फिल्ड इस ना, रमहेबन कीव मार्कहे स्नापिशांकि मिक अफटव्याख बहिबाटक वटि, किछ अवन कीर्छनांति माधन खिक छाडा পরিক্ট হয় না। ভগবদফুগ্রহে জীব সংসারের কল্পিত পথ ছাতির। দিখরোশূর্থ হওত প্রবণ কীর্জনাদি করিতে করিতে জ্লাদিনীর ক্র্তি জানিতে পারে। প্রথমে ঐ ক্রণের নাম প্রের হয়। আয়, পর ভাব ঘুচিরা সর্বজ नमनर्गन ७ रेमजी रहेटन ८ थम रहेन। এই এ थम ता गाएका समितन छात : এবং ভাব স্থায়ী ও ধনীভূত হইলে মহাভাব্যাথ্যা ধারণ করে। 🗷 মহাজাব চিন্তামণিই শীরাধিকার স্বরূপ। ইনি চিরতক্ষী, করণামরী, লাবণ্যম্বী, भिन्तर्गात आधात. अक्षतागमग्री ७ हाजमग्री हेजानि: मत्नाविकाप স্থী পরিবেষ্টিত। অল ভাগ্যে তাঁহার স্বরূপ লাভ হয় না। আদিলীলার हर्ज्य ७ मधानीनात कार्डम शतिकारन ताथा श्रञ्जूकित शतिहत स्तिशिक পাওয়া বাইবে

উপরে জ্বীরাধিকার প্রকৃতি নির্মাপিত ইইল। একলে স্বীদিগের প্রকৃতি কি ? তাহা নির্পন্ন করা প্ররোজন। জ্লাদিনী শক্তির স্বরূপ অফুস্কান করিয়া দেখিলে দেখা যায় যে কতকগুলি বিভিন্ন প্রকৃতিক অফুস্কান করিয়া দেখিলে দেখা যায় যে কতকগুলি বিভিন্ন প্রকৃতিক অফুস্কান করিয়া উহাকে নিরস্তর সম্বর্জন করিছেছে। যেমন ললিতা বাক্তিমনীর সোল্পান্যভূতি, বিশাখা বা চিত্রবিদ্যাদি অফুভ্তি, রুদদেবী বা বিশুক্ষ আনোদ কোতুকাদির অফুভ্তি, শৈব্যা বা মললামূভ্তি, কাস্তি কা শোভামূভ্তি ইত্যাদি। এইরপ অফুভ্তির আখাদুল ভিন্ন কথন জ্লাদিনীর অফুভ্ব সম্ভব হয় না। এই সকল শক্তিকে কুফুকাতা বলা গিয়া থাকে। ইহাদের নিজের স্বশ্রুহা বা বাসনা কিছুই নাই, জ্লাদিনীকে পরিপুঠ করিয়া ক্রীক্ষের সহিত মিলন করিতে পারিলেই ইহারা স্থা। সংক্ষেপে নিঃস্বার্থ প্রের্ম্ব ও নিঃসার্থ সেবাই ইহাদের প্রাকৃতি। এই সকল শক্তিই গোলী বা স্থী শক্তি। বাহনবলে এই শক্তি স্পান্ধ

হইতে না পারিলে অর্থাৎ এই স্থীদিপের আত্রর গ্রহণ করিতে না পারিলে কৃষ্ণ সেবার অধিকার জন্মে না ও রাধাক্তকের নিস্তা লীলাও ছেখিতে পাওয়া যার না। যাহা নিজেঞ্জির স্থ জন্ত অস্টিত হয়, তাহার নাম কাম; चात राश क्ष थीि नःगारन क्ष क्ष हत्र, जाशत नाम त्थम। नशीक्षाम কামনার গন্ধ মাত্র নাই, স্থতরাং তাহা কথন কাম নহে, প্রেম। সম্পূর্ণ-क्राण प्रशः ख्वान कृतिया शिया ध्वारायरात अस छे रमगीकृष्ठ ना स्ट्रेल नथी श्रक्तक नाक करा यात्र ना। नथी चारात्र, विरात, चारमान, श्ररमान, यांश किছ करतन, निष्यत खळ नत्र, नकनरे स्थादत क्षीं उत्काल । विकद ভক্তির আশ্রর গ্রহণ করিতে না পারিলে স্থীদিকের আশ্রর লাভ ও রাধা-কৃষ্ণের নিভাণীলা দর্শন লাভে অধিকার হর না। দেহাদি বহিবিষয়ের মুমতার উদাসীন হইয়া ভগবানে অত্যন্ত মমতার নামই ভক্তি। এই মমতা বা ভক্তির সাহায্যে পূর্ব্বোক্ত অন্তর্নিহিত স্বতঃসিদ্ধ ভাবসমূহকে উদ্দীপ্ত করার নাম সাধন ভক্তি। 🗴 সাধন ভক্তি দ্বিধ; বৈধী ও রাগময়ী। শাস্ত্র-विधि युक्ति ७ अक्षणात्मानि असूनात्त जाव नाथन क्रित् छाहात्र नाम देवशी-ভক্তি। ইহার কাবার নানাবিধ প্রকার ভেদ আছে; তাহা বিশেষরূপে বর্ণনা করিতে গেলে বৃহৎ একথানি গ্রন্থ ছইয়া পড়ে। সংক্ষেপে শ্রবণ. कीर्डन, चर्रन, मनम, त्राता, विश्वाम, कार्कन, वन्त्रन ও आधानित्वत्तन अकृष्ठि নয়টী ইহার প্রধান সাধনাক। অসৎ সক্ত পরিত্যাপ পূর্বক শ্রদ্ধাবান্ হইয়া সাধুসঙ্গাদি করিতে পারিলে এই ভক্তি লাভ করিতে পারা যায়। ঈশ্বরাসুগ্রহ ভিন্ন আবার শ্রনা উৎপত্ন হয় না; স্ক্তরাং দকল দাধনের মূলে ভগবৎকুপা। ভগবানে গাঢ় ভ্ষা না জন্মিলে রাগমন্ত্রী বা রাগান্ত্রিকা ভক্তি জন্মিতে পারে না। মৃত্ মন্দ গভিতে নদীর স্রোত নির্দিষ্ট থাত মধ্যে প্রবাহিত হইতেছিল; অকমাৎ কোথা হইতে থরভর বেগে বক্তা ভাসিণ; ভার উত্তাল ভরক তুলির৷ ছই কুলের বাঁধ আদি উলংখন পূর্কক দে চারিদিক পাৰিত করিরা সাগর সৃক্তমে চলিল। অমুরাগ্মরী ভক্তির প্রাকৃতিও এইরূপ। সাধক কুল্ধর্মাদি বন্ধার রাবিরা বেদবিহিত উপদেশামুসারে ভক্তির পথে চলিতেছিলেন; কোথা ছইতে অনুরাগের প্রবল বঞা বিছিল; আর জাতি ধর্ম কুন শীল সকলই ভালিয়া চ্রিয়া ভক্তের প্রাণ প্রিয়তমের দিকে ছুটবা চলিল। কিন্তু এই গাঢ় অহ্বাগ জন্মিবার পূর্বে মদনমোহন, শ্বানত্মনর ক্রপের হৃচাক দর্শন চাই; উহাতে মগ্ন হওরা চাই। ত্মভবাং এই ভক্তি কেবল এক অৰবাসী জন ভিত্ন জন্তত্ব সম্ভবে না। এই ভক্তি লাভ করিতে হইলে গোপী ভাবের আত্রর গ্রহণ করা নিতান্ত প্রয়োজন। সিদ্ধ ভাবমন্ত্রী গোপী প্রকৃতির আদর্শ সমূখে রাখিরা তাঁহাদের অনুরাপের পথে আত্তে আন্তে ঘাইতে পারিলে কালে ইহা লাভ হইতে পারে। অনুরাগ-ভক্তিতে ভক্তের সঙ্গে ভগবানের দূর সমন্ধ থাকিছে পারে না। বিনি . অবাঙ মনদোগোচর বিশ্বব্যাপীছিলেন, বৃহৎকার হস্তী দর্পণে প্রভিবিশ্বিত হইরা বেমন কুল্ল হইরা যার: ভক্তের অনুবাগপুণ অবর দর্পণে পড়িয়া ভিনিত তেমনি ছোট হইরা পড়েন। তথন ভক্তের সঙ্গে ভাঁছার নানাবিধ সম্বন্ধ উপ-স্থিত হয়। ভক্তিশাল্লে এই সকল সম্বন্ধকে পাঁচ শ্ৰেণীতে বিভক্ত করা হই-রাছে; যথা—শান্ত, দাস্ত, দথ্য, বাৎস্ল্য ও মধুর বা নায়ক নায়িকার ভাব। ইহার মধ্যে মধুর ভাবই দর্কশ্রেষ্ঠ, কারণ তাহাতে অক্ত চারিটা ভাব অস্ত-নিবিষ্ট রহিয়াছে। বিনি পতি প্রাণা সতী, তিনি পিতা মাতার ভার প্রির-ভমকে স্নেহ করেন, দথীর ভার উপদেশ দেন, দাসীর ভার সেবা করেন মধ্যে শান্ত, সথ্যের ভিতর দান্ত ও শান্ত এবং বাৎস্লোর মধ্যে দ্বা, দান্ত ও শাস্ত ভাব সমাবিষ্ট রহিয়াছে: কিন্তু মধুরভাবে সকল ভাবই পর্য্যবসিত হই-রাছে। একলীলায় **জ্ঞী**মতী রাধিকা প্রভৃতি <u>একহন্দরীগণ রক্ষাহুরাগি</u>নী হইয়াও আবার অপরের বিবাহিত ছা। এটা বড় মধুর ভাব। সংসাররূপ আয়ানের সহিত সংযুক্ত থাকিয়াও নিঃস্বার্থ প্রেমিকা রাধার ঐকুফুে গাঢ় অহুরাগ। বেদ বিহিত পথের শীতলতা ও অহুরাগের স্থতীত্র মধুরতা প্রদর্শন করাই পরকার। প্রেমের মুখ্য উদ্দেশ্য। কোন নীচ বাদনাযুক্ত ইন্তির ভাব লইয়া ঘাইলে, এ প্রেম বৃদ্ধিবার উপায় নাই।

উপরে যে সকল তত্ব বিবৃত্ত হইল তাহা হইতে পরকালের ভাবের জ্ঞানক আভাস পাওরা বাইতেছে। অবৈভবাদ মতে যেমন ব্রহ্ম নির্কিশেষ পদার্থ, ব্রহ্ম ভিন্ন জগতে আর কিছুই নাই; এ মতে সেরপ নহে। ঈশরের ইচ্ছার জীব চিৎকণ বা বিভিন্ন চিচ্ছেক্তির জংশ সম্পন্ন হইরা ব্রহ্মতত্ত্বর সহিত অবিচ্ছিন বোগে যুক্ত; স্বতরাং ভাহার আত্মত্বরপে হিভিই তাহার মুক্তি। অবৈভবাদেও আত্মত্বরপে অবহিতিকে মুক্তি বলা যাইতে পারে; কিছ্ক সে আত্মাত্বানা নহে, পরমাত্মা; কাষেই আত্মত্বরপে থাকিতে গেলেক জিত জীবজ্ব জ্ঞান থাকিতে পারে লা। মান্নতেই জীবজ্ব জ্ঞান, মানা গেলে

की बर्फन विनान या निर्सान मुक्ति नाक दम। देवकर मक देवान नान्त्र विक्या जीवत श्रक्ष छगवात्मत निकामान। जीव निक वर्षामार क्रकटक विश्वत स्टेश मात्राटक क्रक्रिक स्टेश नामाविध सूच घःचानि ভোগ করিয়া থাকে। যভবিন এই স্থব চুঃধের বাসনা নিবুত না . इयु: ७७ हिन छाहात मुक्ति इटेटि शास्त्र ना ; वियत वाननार खाहात मुक्तिक चाखतात हरेता में लाव । यह दिन नमल कर्य निटक्य क्या करा हरेटा, छछ दिन कीवाक कर्मावकान नश्कषिक हहेबा श्रेनः श्रेनः नश्मादि बालाबाक कविष्ठ হটবে: কিন্তু বধন ঈশ্বর কুপায় ভক্তি লাভ হটরা আপনার শ্বরূপ সে জানিতে शांतित. ज्यम बात बिल्ड क्छ किছूहे कतित्व मा, जावित्व मा, बाधित मा। मुन्पूर्वक्राण (म श्रित्रकरमत्र हेफ्श्र अनुगंक हरेत्रा गहित्य। बहे स्य वास्किष वकात ताबिता हैव्हात हैव्हात मिलन, हैशतह नाम कीरनत आयरकरण অবভিতি বা মৃক্তি। স্থতরাং এমতে সাযুক্তা বা নির্কাণ একেবারে অসম্ভব। সাষ্টি সালোক্যাদিতেও কামনাগন্ধ আছে বলিয়া পরিত্যালা। ভঙ্জভতি र्वारण रथन कोराखाँ निष्यद रव किছ रामना, जाण कतिहा क्रास्काता অনুগত হয়; তথন দে প্রকৃত মুক্ত। তথন নিংমার্থ প্রেমই ভাষার সেবা ; দেই প্রেমার বৈচিত্র শাস্ত দাত কথা বাৎসলা মধুর ভাবই ভাহার অবলমন। हेराहे १७म्मभूक्वार्थ दो धारायन। क्षेत्रक्षराखणुक की रात देश ग्रम्भ हे পরিল্ফিক হইরাছে।

পূর্ব্ধে কথিত হইরাছে যে শীলাবিহারী ভগবান স্কর্ষণাদি নিজ্ঞ শক্তিকে হাই কার্যো নিযুক্ত করিরা আপনি স্বরূপ শক্তিভে গাকিয়া নিতঃ লীলা করিভেছেন। এইরপে যে সমস্ত শক্তি অবভীর্থ হইয়া স্টিলীলারকা করিভেছেন। এইরপে যে সমস্ত শক্তি অবভার। অভি স্ক্র বাসুকারেণু ও তৃণ গুল্ল হইভে প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড প্রহ, উপপ্রহ, ক্রুল ক্রুল কীটাণ্ হইভে ক্বেভা, নানব প্রভৃতি উচ্চ প্রেণীর জীবপণ, ভৌভিক শক্তি হইভে জ্ঞান, প্রেম, পূণ্য পবিজ্ঞা সমস্ত দেব শক্তি প্রহং ধর্মজ্ঞান, আস্থাসন, স্থভি, ধারণা, মেবা ও ইজিরাদির বিস্কৃত্র শক্তি প্রক্রিক, রাস্থভিত, বাবভীর নৈডিক ও ধর্মবল সকলই দেই পূর্ণসূক্ষের অবভীর শক্তি বা অবভার; ক্তি কেছই স্বহং ভগবান্ নহে। স্ক্রির ইজ্বাবোগে প্রক্রাণ ও বিলাস প্রক্রির বার বেরপে এই সব শক্তি অবভীর্ণ হর, ভাহা পূর্ব্ধে স্টেভিত্তর বিচারে মোটাষ্টি ক্ষিত হইরাছে। প্রস্কের আক্রিলার পঞ্চম পরিচ্ছেদে

स मशानीनात विश्वक्रिय शतिष्कात देशात गविश्वात वर्षमा त्विष्क পাওয়া বাইবে। প্রকৃতি ও রূপভেদে এই সব অবভার নানা শ্রেণীতে विकक हरेबाए । बन्ता, निवानिक भवणात, भात भुशू, मात्रमानिक भवणात । কিন্ত উভারে প্রকৃতিগত বৈষমা এত অধিক যে উভয়কে এক শ্রেৰীতে কথনই বিন্যস্ত করা বাইতে পারেনা। সে জন্য অবতরি সকল নানা শ্রেণীতে বিভক্ত হইরাছে:--যথা প্রক্ষাবভার, লীলাবভার, গুণাবভার, সমস্তরাবভার, মুগাবভার এবং শব্দাবেশাবভার ইভ্যাদি। ক্রিরা ভির সৃষ্টি হইতে পারে না; সে জন্য এই ভিন শক্তি সুম্বিত মহা-मुखर्ग ଓ छाँह। इटेट कांत्रपार्वनात्री, गर्छानकमात्री धवर कीटानक. শারী ভিন্টি পুরুষাবতার প্রকটিত হর। বিলাদের প্রক্রিরার দ্বারা বেরূপে ইহা সম্পাদিত হয়, পূর্বে তাহা বলা হইয়াছে। এই ভিন পুরুষাবতারই স্টীর মূলাধার শক্তি। বেমন কছালোপরে নরদেহ প্রতিষ্ঠিত, দেইরূপ এই ত্রিবিধ শক্তির উপর স্পষ্টপ্রস্থাত বংশ্বিত রহিয়াছে। মংস্ত, কুর্মাদি श्रवणात नकन नौनावणात, जनवात्नत्र नौना ध्रवहेन बना दें हाता श्रवहीर्न हरेबा बात्कन । हत्राहत अका शृक्षत रही, अफिशानन धर दिनान कना ভগবানের তিনটা বিভিন্ন গুণাংশ ত্রহ্মা, বিষ্ণু ও ক্রুত্রপে অবভীর্ণ হইরা ঈর্যাঞ্জা বহন ক্রিথাকেন: সেজনা তাঁহার। ভগাবতার। মহতরা-ৰভার অসংখ্য। সভা, ত্রেভা, দাপর, ক্লি, এই চারিযুগে এক দিবা যুগ এবং ৩৯৭৬ দিবাযুগে ব্রহ্মার একদিন ; ব্রহ্মার দিন মধ্যে চৌদ্ধী মম্বস্তর। এদিকে ব্রহ্মপরিমাণে ব্রহ্মার ব্রহ্ম শভবৎসর; স্রভরাং এক স্টেতে ৫ লক্ষ ৪০ হাজার মবস্তর হইয়া থাকে। এক এক মবস্তরের একটা একটা অধিপতি: তাঁহাদের নাম মন। সারস্তব প্রভৃতি ১৪ জন মহুই ভগবানের রাজকীর শক্তির প্রতিনিধি বা ময়ভারাবভার। সভা তেতা প্রভৃতি যুগে অধর্মের নাশ, ও ধর্ম সংস্থাপন জনা বে অবতার হইবা থাকে, ভাহার নাম যুগা-বতার। এই সকল বুগাবভারও ভগবানের অংশশক্তি, প্রভিষ্ণের অবস্থামুগারে নির্দারিত সময়ে ভর্গবিদিচ্ছার অবতীর্থ ইয়া থাকেন। অবেট-কিক কার্যা ও পবিত্র চরিত্র দারা যুগাবভারগণ লোকগোচর হইরা থাকে। যে সময়ে বুগাবভার প্রকাশিত হর, সে সময়ে ক্তকগুলি **অবভার পক্ত ও কতকগুলি অবভারবিংছবী লোকও প্রান্ত্রভ হইরা** প্ৰতীৰ্ণ বৰ্ম প্ৰচাৰেরই বাছাৰ্য করিবা থাকেন। অৱতারণক বিধানীগঞ্চ ধন, প্রাণ, মন, দৰ দিয়া অবভাবকে প্রতিষ্ঠিত করিবার চেটা করিবা থাকেন; আর অবভাবনিবর্ত্তক লোক দকল অশেব প্রকারে বাধা অন্যাইরা ও নির্বাভন করিরা বিশাদীদিপের শক্তিকে আরও উত্তেজিত করিরা দিয়া এবং ওঁছোদের ল্রান্তি ক্রটি চুর্জ্বগতা দেখাইরা দিয়া প্রকারাভ্রের অবভার্ব ধর্ম সংস্থাপনেরই সহায়তা করিয়া থাকেন। এই ধর্ম-সংগ্রামে পরিণামে বিহেনীগণেনই পরাল্লম হয়। তাহাতেও লোক সকল অবতারের পরাক্রম অন্তব করিয়া উত্তরকালে অবতারকে গ্রহণ করিয়া থাকে। বাহাতে ঈশ্বরের শক্তিসমাবেশ দেখা যায়, তাহাই শক্ত্যাবেশাবতার। ইহা চুই প্রকার; মুখ্য ও গৌণ। দনক, নারদ, পৃথু, পরশুরাম প্রভৃতিতে জ্ঞান, ভক্তি, দেবা শক্তি প্রভৃতি সাক্ষাৎরশে আবিষ্ট হইবাছিল বলিয়া তাঁহারা মুখ্যশক্ত্যাবেশাবতার; আর ভগবানের বিশ্বরূপ মধ্যে অনজ্বরাচর প্রতিষ্ঠিত থাকিয়া তাঁহারই বিভৃতিরপে প্রকাশ পাইতেছে; দেজন্য তাহারা গৌণশক্ত্যাবেশ।

্ উপরে যে দকল অবতারের কথা বলা হইল তাঁহারা দকলই পূর্ণপুক্রবের অংশ শক্তি, তাঁহার ইচ্ছার নিযুক্ত হইরা স্টিলীলা রক্ষা জন্য অবতীর্ণ ছইরা থাকেন। ইহা ব্যতীত স্বরং ভগবানের যে অবতরণ, তাহার নাম পূর্ণ অবভার। সে অবভারের কোন নিয়ম নাই, নির্দ্ধারিত সময়ও নাই। লীলামর ভগবানের অবতারলীলা প্রকাশের ইচ্চা হইলেই তাহা প্রকাশ হইরা থাকে। পূর্বে বলা হইরাছে যে ভগবান কতকগুলি স্বরূপ শক্তিতে পরিবৃত इरेंद्रा माधुर्यापूर्व बन्नमश्राल निजानीना कतिरज्जहन; तन नीनांत्र वानि नाहे, बख नाहे बदः विदायं नाहे। धहे नकत खन्नाना कि चात कि इहे नव, निका वृत्तावरनव नन यरणांगांति (शानाशानीशन, श्रीताम स्ववाति ত্রদ বালক সকল, এবং শ্রীমতী রাধিকা পরিবৃত ললিভালি স্থীনিচয়। . সংসারাসক লোকদিগকে অহেতুকী ওম ভক্তি শিক্ষা দিয়া ব্রহ্পপ্রেমের चिवित्रोते कतिवातं कता कक्रनामत्रं जनवान् काक्रनाशृर्व हरेता (अव्हात সমত সক্ষণ শক্তির সহিত অবতরণ করিয়া থাকেন। এই পূর্ণ অবভার গ্রহণ জনা ভগবান পৃথক কোন বিগ্রহধারণ করেন না। বুগাবভারের বে সকল উপকরণ থাকে, তাহার অভ্যস্তরেই প্রকাশিত হইয়া থাকেন। चांत्रस्त मस्त्रदात वांशत ग्रात्रत (गरन क्लीस क्लित्रकून विनाम क्रिनात भना वर्षन भीरतामगात्री नातावगरक रावकीत शर्छ संग्र नहेंदा खेक्कारण

चवछीर्ग हरेएछ हरेगाहिन, श्रीरनांक विहाती विजूच त्रुवनीयत स्त्रि सिह कारत कृष्ण विवाद पूर्वक्ररण व्यवजीर्य इहेबा खालब निर्मात व्यामनीता প্রকটিত করিলেন এবং শাস্ত, দাস্ত, স্থা, বাৎস্ল্য ও মধুর ভাবের উপাসনা প্রবর্ত্তিত করিয়া পুনরায় অন্তর্হিত হইলেন। আবার কলির প্রাতর্ভাবে ধর্মের প্লানি ও অধর্মের প্রাত্তাব হইরা পড়িল: নীরসভার, বর্মজীবন কঠোর হট্যা গেল, অবৈতালি ভক্তপণ লোক পরিত্রাণের জন্য ব্যাকুল হইয়া ভগবানকে ডাকিডে লাগিলেন, ভক্তের ক্রন্সনে ভক্তবংগল খাকিছে পারিলেন না; ভাই নিজে আচরণ করিয়া লোক শিক্ষা দিবার জন্ত ভক্তভাব জঙ্গীকার করভঃ গৌরদেহে অবতীর্ণ হইয়া কলির ধর্ম नःकीर्फनमश्यक भावक कविवानित्तन। कनियुश्यत युगर्प अवर्कत्नत चम्म देवा कारत वह मन कारन निर्मिष्ठ बहुतारक ; किन्न हुन कारन-কাও গভীরতর অন্তরক কারণ আছে। লীলাময় ভগবানের ইচ্ছাত্তর পূর্ণ করাই দেই কারণ। মহাভাবমরী শ্রীরাধিকা ক্লঞ্চের অভিনা হইরাভ বুলাবন লীলায় পৃথক প্রকাশিতা। ভগবান পূর্ণানন্দ ও পূর্ণপ্রেম হইলেও ভক্তরপিণী রাধাক্ষদয়ের প্রেমোচ্চাসে বিহবল ও উন্মত্ত হইরাছেন। শ্রীরাধা সেই প্রেমের আশ্রর ভূমি (subject), ডিনি উহার বিষয় (object); আশ্রহজাতীর প্রকৃতি লাভ করিছে না পারিলে বিবর জাতীর প্রকৃতিতে শে প্রেমমাধুর্ব্য আস্থাদন করা অসম্ভব। স্কুতরাং শ্রীরাধিকার এই প্রেম-ত্রথ আন্থাদন করিবার উদ্দেশ্যে ভক্তরূপিণী রাধাপ্রকৃতি লাভ করার জন্ত ভগবানের প্রবন ইচ্চা উপস্থিত হইন। দিতীয়ত: ভগবানের মাধুর্ব্যেডে এক অনিক্চনীয় আক্ষ্ণী শক্তি আছে। অন্তের কথা দূরে থাকুক স্বন্ধ ভগবান নিজের আনন্দে নিজেই বিভার হইরা বান। কিন্তু তাঁলার সেই পরানন্ত জীরাধার আনলোচ্ছাদের নিকট পরাত হইরা যায়; স্বাধার चक्छ त्थाममर्भरम अहे मधुदिमा व्यक्तिविचिक इटेरन अक चनिर्विजनीत ভাবতরঙ্গ উঠিয়া থাকে। এই মধুরিষার আকর্ষণী শক্তি কিরূপ যাহাডে রাধাও বিহবল হট্য। যান ? শ্রীরাধার প্রাকৃতিতে অমুভব করিবার জন্ত দিতীর ইচ্ছার উদ্পন হইল। গোপীদিপের নিঃবার্থ থেন কর্ম আবাদন করিবার জন্ত ভৃতীয় ইচ্ছার উৎপত্তি। বাহাতে আপনার স্থ-ছ:খ, সম্পর विश्वन, माल अश्वमान कृताहेशा अश्वात्तत्र हित तानए नियुक्त कतात, নিজের ইন্দ্রির ত্বথ বিলাদের বাসনা সমূলে উৎপাটিত ক্রিয়া প্রভূর প্রীতি

বাধনে ছবাছ ইলিরকুলকে জীওদাসের ভার অন্থাত করার, নিজের প্রথ সন্তোগের বাসনা না থাকিলেও নাথের প্রীভিদাধন হইলে আপনা হৈছেই অনির্কারনীয় নির্পাণ আনন্দস্থ অন্থতা ইইরা থাকে, এবং সেই স্থানাদনে বিহন হইলে পাছে ক্ষমেবার বাাঘাত উপস্থিত হর, এই ভারে দে আনন্দ স্থাকেও অতি তৃচ্ছ জ্ঞানে দ্রীভৃত করিতে তৎপর করাইরা দের; গোপী প্রকৃতি লাভ করিতে না পারিলে সেই গোপী-প্রেমাআদনের উপায়াছর নাই। ঈরর প্রকৃতিতে বিদ্যান থাকিরা ভক্ত প্রকৃতির এই সব ইচ্ছা পরিপূর্ণ হইবে না ভাবিয়া লীলাবিহারী ভগ্তান এই সব ইচ্ছা পরিপূর্ণ হইবে না ভাবিয়া লীলাবিহারী ভগ্তান আই করি ভাবকান্তি পরিগ্রহ করিয়া গোরদেহে অবতীর্ণ ইইলেন। উহাতে ইবব ভাব, রাধা ভাব, গোপী ভাব ও ভক্তভাব একত্র সমাবিষ্ট হইরা অপূর্ব অবতার লীলা প্রকৃতি ইইল এবং অরং প্রীহরি নরহরি রূপ ধারণ করিয়া যুগ্ধর্ম প্রবর্তন ও উপরোক্ত ইচ্ছাত্রয় সম্ভূত মাধুর্যা সুখ আরাদন করিয়া আচঙালে অহেভৃকী ভক্তিরস বিভরণ করিলেন।

্ৰীশ্ৰীটেডক্সচরিতামুভোক্ত ধর্মের সারভাগ সংক্ষেপে বিবৃত হইল। ইহার কিছুই আমার নিজের কথা নহে। ইহা পড়িয়া গ্রন্থানি পাঠ করিলে বুঝিবার পক্ষে অনেক সাহায্য হইতে পারিবে উদ্দেশে এসব কথা এখানে লিথিলাম। ইহার মধ্যে যে সকল ভ্রমপ্রমাদ বা অভাব থাকিয়া েগল. তাহার অন্ত আমি বড়ই অণরাধী থাকিলাম। প্রির পাঠক। পুর্বেই বলিয়াছি এ গ্রন্থ আমি নিজে প্রণয়ন করি নাই, করিবার ক্ষমতাও নাই। ভগবানের আদেশাভুগ্রহ ও আপনাদের কুপামরী গুভ কামনাই আমাকে শ্রেণিপাছিত করিয়াছে। ষধন কোন সাংগারিক বাসনার বশবর্ত্তী হুইয়া এ কার্য্যে হতকেপ করি নাই, তখন ইহাতে লাভালাভের বড় প্রভ্যাশা রাখি না। আপনারা মনোযোগ পূর্বক পাঠ করিয়া স্থাী হটলেই ষ্থেষ্ট পুরক্ষত হইব। আজ কাল যেক্সপ সময় পডিয়াছে। চারিদিকে, জডবাদের रमक्रे रचात ची। (नथा नाहर्ष्डाइ, इतिशानशत विमय इहेबा लाक नक्ल ষেরপ সংসারাসক হইয়া পড়িয়াছে, ভাহাতে চরিতামুভের ভার প্রেমভক্তি-পूर्व श्रष्ट नमानृष्ठ करेरव कि ना छशवान्हे खात्नत। छत्व थहे खाना मतन ছয়, ঘণন আমার পাপ ছদরে বসিয়া অদয়রঞ্জন এ প্রস্থ প্রকাশ করাইলেন, ভখন লোক জনতে বিধিয়া ইছা ছারা অবশ্রই লোকরঞ্জন করিবেন। এখন शक्ति मश्मद्रा मक्ष्म लाग मार्कना शूर्वक व तीन सनदक চরণগুनि

দিয়া অনুসহীত করেন এই প্রার্থনা। শ্রন্ধের গ্রাহকগণ। আপনারা স্বস্থ স্তিদার্ব্য গুণে অঞ্জিম মুলারূপ ঋণ দান দিয়া চরিতামৃত প্রকাশের যে লাহায্য করিয়াছেন, ডজ্জুল জাপনার। বিশেষ ধলাই। আজ আপনাম্বের ঋণপাশ হইতে মুক্তি লাভ করিয়া প্রমানন্দ লাভ করিলাম। পরিশেষে সকৃতজ্ঞ হলরে স্বীকার করিতেছি যে, ভারতবর্ষীর ব্রাহ্মসমাজের অক্তরত প্রচারক ভক্তিভাজন পণ্ডিত গৌরগোবিন্দ রায় উপাধ্যার, খুলনা জেলার অন্তর্গত বাগের হাট ইংরাজী কুলের ভৃতপূর্ব্ব প্রধান পণ্ডিভ শ্রীযুত রাধানাথ কবিভূষণ এবং জেলা নদীয়ার অস্তঃপাতী কৃষ্টিয়া স্কুলের প্রধান পশ্তিত শীষুক্ত অধীকেশ ব্যাকরণ সরস্বতী মহাশয়গণ এ গ্রন্থের সংস্কৃত টীকা রচনার অনেক স্থানে সাহায্য করিয়াছেন এবং নব্য ভারত পত্তিকার সম্পাদক প্রিয় ক্রম্বদ শ্রীযুক্ত বাবু দেবী প্রবন্ধ রায়চৌধুরী মহাশর প্রস্থ প্রকাশ 😎 অক্তান্ত বিষয়ে অমান চিত্তে পরিশ্রম করিয়া আদিভেছেন, আমি তাঁহা-দিগের নিকট চির্কুভক্তভাপাশে বদ্ধ থাকিলাম। আবার বলি আজিকার আনস্বোৎসবের মধ্যে জ্ঞীশ্রীটেততাচরিভামৃত সাধারণে তাকাশ করিয়া প্রীশ্রীহরি চরণে প্রার্থনা করিতেছি যে, এই গ্রাছের গ্রাহক, পাঠক, প্রকাশক, স্রোভা এবং সাহায্য পাভাদিগকে ভিনি চিরকল্যাণ কুশলে রাথিয়া ভক্তিসুধা দানে চন্নিতার্থ করুন। শাস্তিঃ শাস্তিঃ ।

ক্ষিরা ১৫ই বৈশাপ ১২৯৬ সাল।

প্রণেতা।

শ্রীশ্রীচৈতন্যচরিতামৃত।

অন্ত্যলীলা।

প্রথম পরিচ্ছেদ।

অথ গ্রন্থকারস্ত শ্লোক পঞ্চকং।

পকুং লঙ্ঘয়তে শৈলং মৃকমাবর্ত্তয়েৎ শ্রুতিষ্। বংকপা তমহং বন্দে কৃষ্ণচৈতক্তমীশ্বরং॥ ১॥ তুর্গমে পথি মেহম্মস্ত শ্বলংপাদপতেম্ভিঃ। স্কুপাযষ্টিদানেন সন্তঃ সন্ত্বলম্বনং॥ ২॥

'যৎক্ষণা' ৰস্ত কৃপা 'পঞ্ছুং' পদহীনং জনং 'শৈলং' 'লজ্বরতে' উত্তীর্ণং কারয়তে 'মৃকং' বাকৃশক্তিরহিতং জনং 'শুতিং' বেদাদিকং 'আবর্ত্তরেৎ' পঠয়েৎ 'তং' 'কৃষ্ণচৈতভাং' 'ঈশবং' জহং 'বলে'॥ ১॥

'কুৰ্গমে' 'পৃথি' সংসারক্তিগ্রন্থ নি ইভার্থ: 'মূছঃ' বারধারং 'ঝানংপাদ-গুড়ে' খালন্তী পাদগতি বঁড়া তদ্য 'অল্পায়' 'মে' মম সম্বন্ধে 'সন্ধাঃ' ব্রচ্চাপ্রিভা: সাধ্য: 'অকুপা ষ্টিদানেন' মুক্ত কুইপ্র ষ্টি স্ততা দানেন 'অবলম্বনং' 'সন্ত' ভ্রন্ত ॥ ২ ॥

যাঁহার ক্পায় পঙ্গু পর্বত লজ্বন করিতে পারে, এবং মুকজন বেদ পাঠ করিতে সমর্থ হয়, সেই ভপবান্ ক্ষণতৈত-ন্সের বন্দনা করি ॥ ১॥

তুর্গম সংসার পথে পতিত হইরা আমি বারন্থার পদস্থ-লিত হইতেছি; সাধ্গণ তাঁহাদের কুপারূপ যটিদানে আমার অবলম্বন হউন। ২। .

শ্রীশ্বপ, সনাতন, ভট্ট রখুনাথ; শ্রীশীব, গোপাল ভট্ট, দাস্কুরখুনাথ; এই ছর শুক্তর করেন চরণ বন্দন; বাহা হৈতে বিশ্বনাণ, অভীষ্ট পূরণ।

জয়তাং স্থরতো পঙ্গো ম'ম মন্দমতে গতী। মৎসর্কমপুদাস্থোতো রাধামদনমোহনো॥ ৩॥

দীব্যদ্ ন্দারণ্য কল্পক্রমাধঃ
শ্রীমদ্রত্বাগারদিংহাসনস্থে।
শ্রীমদ্রাধাশ্রীলঞ্জিগোবিন্দদেবে।
প্রেষ্ঠালীভিঃ সেব্যমানে। স্মরামি ॥ ৪ ॥
শ্রীমানু সেরসারস্কী বংশীবটতটাস্থিতঃ।
কর্ষন বেণুম্বনৈ গোপী গোপীনাথঃ শ্রিয়েহস্ত নঃ ॥ ৫ ॥

টী ও ব্যাধ্য আদিঃ ১৫, ১৬, ১৭ স্লোকে ১৫-১৬ পৃঃ যথাক্রমে অট্টব্য ॥ ৩, ৪, ৫ ॥

क्नीन वामी छक्त्रन जात पश्चानी; আচার্য্য শিবানক সনে মিলিলা সবে আসি।। निवासन करत नव यां है नेमाधान ; नवादक भाषान करतः, (मग्र वाँमा शाम । এক কুকুর চলে শিবানক দনে; ভক্য দিয়া লঞা চলে করিয়া পালনে। এক দিন এক হানে নদী পার হৈতে ; উড়িয়া নাবিক কুরুর না চড়ার নৌকাভে 🛦 কুকুর রহিলা, শিবানন্দ হঃশী হৈলা ; দশ পণ কড়ি দিয়া-কুকুর পার কৈলালন এক দিন:শিৰানক্ষ ঘাটতে রহিলা 😥 কুরুরে ভাত দিতে দেবক পাসরিলা। ক্লাত্রে আসি শিবানক ভোজনের কালে_; কুকুর পাঞাছে ভাত ? সেবকে পুছিলে।· কুকুর নাহি পায় ভাত শুনি হঃখী হৈলা ;-কুরুর চাহ্নিতে দশ লোক পাঠাইলা। চাহিয়া না পাইল কুকুর, লোক দৰ আইল 🞉 ছঃখী হঞা শিবানক উপবাদ কৈল। অভাতে কুকুর চাহি কে**!**থায় না পাইল ;ু मकल देवक्षव मर्स्स हमदकात देहला উৎকণ্ঠার চলি সবে আইল নীলাচলে ; পূর্ববং মহাপ্রভু মিলিকা সকলে।। मवा लका देकल खनमाथ मत्रभन ; সবা লয়ে মহাপ্রভু করেন ভোজন। পূর্ববৎ সবারে প্রঠাইল বাসাম্বানে ; আর দিনে প্রাতঃকালে আইলা প্রভূ স্থানে।। আসিয়া দেখিল সংক দেইভ কুকুরে প্রভূ পাশে বসিয়াছে কিছু অল্ল দূরে। প্রসাদ নারিকেল শশু প্রভু দেন ফেলাইয়া :: 'কুফা, রাম, হরি' কহ বলেন হাসিয়া।

শশু ধার কুকুর কৃষ্ণ কছে বার বার : দেখিয়া লোকের মনে হৈল চমৎকার। निवानम क्कृत त्मिष् मध्य दिक्ना ; দৈল করি নিজ অপরাধ ক্ষমাইলা। আর দিন কেছ তার দেখানা পাইলা: সিদ্ধ দেহ পাঞা কুৰু র বৈকুঠেতে গেলা। केट्ड निवा लीका करत महीत नकन : কুকুরকে ক্লঞ্জ কহাই করিল মোচন। এথা প্রভু আজ্ঞায় রূপ আইলা বুন্দাবন ; ক্ষণীলা নাটক করিতে হৈল ভার মন। বন্দাবনে নাটকের আরম্ভ কবিল: प्रकृताहरून संस्कृतियाक छशाहे लिथिला। পথে চলি আইসে নাটকের ঘটনা ভাবিতে: কড চা করিয়া কিছ লাগিলা লিখিতে। এইমত ছুই আই গৌড় দেশে আইলা: গৌডে আসি অভুপমের গঙ্গাপ্রাপ্তি হৈলা। রূপ গোঁসাঞি প্রভুপাশ করিলা গমন: প্রভুকে দেখিতে ভার উৎকণ্ঠিভ,মন। স্মুসমের কাগি তাঁর বিলয় হইল : ভজ্জগণ পাশ আহল, লাগি না পাইল। উড়িয়াদেশে সভাভাষাপুৰ নামে আম: এক রাতি সেই গ্রামে করিল বিভাগ। রাত্রে স্বপ্লেকে এক দিব্যরূপা নারী: সম্মুখে আসিয়া আজ্ঞা দিল কুপা করি:---'আমার নাটক পুথক করহ রচন ; আমার কুপাতে নাটক হবে বিলক্ষ্য। স্থানেধি রূপ গোঁদাঞি করিল,বিচার: 'সতাভাষার আজ্ঞা পৃথক নাটক করিবার। ব্রপ্রলীশা একত ক্রিয়াছি ঘটনা: ছই ভাগ করি এবে করিব রচনাং ।

ভাবিতে হাবিতে শীল আইলা নীলাচলে : আসি উত্রিলা ভরিদাসের বাসস্থল। হরিদাস ঠাকর ভাঁরে বহু কুপা কৈলা: 'তমি যে আনিবে, মোরে প্রভু যে কহিল।।' উপলভোগ দেখি হরিদাসেরে দেখিতে. প্রতিদিন আইনেন প্রভু, আইলা আচ্ছিতে। 'ক্রপ দাণ্ডবৎ করে' হরিদাস কছিলা: হরিদাসে মিলি গ্রন্থ রূপে আলিঙ্গিলা।। হরিদাস রূপ লঞা বৃদিল এক স্থানে: কুশল প্ৰশ্ন ইপ্তগোঞ্জি কৈল কছকণে। স্নাতনের বার্তা ধবে গোঁসাঞি পুছিল: ক্রপ কছে 'তার দলে দেখা না হইল। আমি গলাপথে আইলাম, কিনো রাজপথে: ষ্মতএব আমার দেখা নহিল জাঁর সাথে। প্রয়াগে ভ্রিলা তিঁহ পেলা বুক্লাবন'। অফপমের গঙ্গাপ্রাপ্তি, কৈল নিবেদন। ' ক্রপে তাঁহা বাঁসা দিয়া গোঁশসাঞি,চলিলা: ্গোঁসাঞিব সঙ্গী ভক্ত ক্রপেরে মিলিলা। আরে দিন মহাপ্রভু সব্ভক্ত লঞ্চা রূপে মিলাইলা সরায় কুপাত করিয়া। স্বার চরণ রূপ করিল বন্দন: ক্রপা করি রূপে সবে কৈল আলিখন। অবৈত নিত্যান্দ প্রভু চুই জনে প্রভু কহে 'রূপে কুপা কর কায়মনে। তোমা হুঁহার কুপায় ইহার ভৈছে হউক শক্তি ; যাতে বিরচিতে পারেন রুফরসভক্তি। গৌড়িয়া উড়িয়া ষত গুড়ুর ভক্তগণ; স্বার হইল কপ ক্ষেত্রে ভাজন। প্রতিদিন আসি প্রভুকরেন মিলনে; মুদ্দিরে যে প্রসাদ পান দেন ছই জনে ৷

ইই গোষ্টি কেইবা সনে করি কছকণ
মধ্যাক করিতে প্রভু করেন গমন ।
এইমত প্রতিদিন প্রভুর ব্যবহার ;
প্রভুবণা পাঞা রূপের আনন্দ অপার ।
ভক্ত লঞা কৈল প্রভু গুপ্তিচা মার্জন ;
আইটোটা আসি কৈল বন্য ভেলন ।
প্রদাদ থার, হরি বলে দর্ম ভক্তগণ ;
কেথি হরিদাদ রূপের হর্মিত মন ।
গোবিক দারা প্রভুব শেষ প্রসাদ পাইনা ;
প্রেমেন্ড ছই অন নাচিতে দাগিলা ।
আর দিনে প্রভু প্রথম মিনিরা বিলা ;
সর্মজ শিরেমিনি প্রভু কহিতে লাগিলা ?
ক্ষিকে বাহির নাহি করিহ বন্ধ হৈতে ;
ব্র ছাড়ি কুষ্ঠুক্ত না যান কাঁহাতে"।

তথাহি লঘুভাগবতামতে পূর্ববিশৃত্তে শ্রীকৃষ্ণপ্রকটলীলায়াম ছাত্রিংশারপুত যামলরচনং।

> 'ক্ফো২ন্ডো যতুনভূতো, যস্ত গোপেন্দ্রনন্দনঃ রন্দাবনঃ পরিত্যজ্য দ ক্চিমৈর গচহতি'॥ ৬ ॥

'য্ত্সভ্তঃ' যত্বংশোভ্বঃ 'কৃষ্ণঃ' এক: স্যাৎ 'অভাঃ' 'গোপেক্সন্স্নাঃ' নামন্ত্ৰাৰ । বং মহ্সভ্তঃ কৃষ্ণঃ স্কুলবনং পরিত্যজ্ঞ' 'ক্চিৎ' কুষ্ক্চিদ্পি 'না' 'এব' 'গছেতি' । ৬ ॥

বছবংশোন্তব কৃষ্ণ এক জন, নন্দনন্দন কৃষ্ণ অক্সজন ; যিনি নন্দনন্দন, তিনি বুন্দাবন পরিত্যাগ করিয়া কথন কোন্দ ছানে যান না। ৬।

> এত কহি মহাপ্রভূমধ্যাক্তে চলিলা ; ক্রপ পোঁলাঞ্জিমলে কিছু বিশ্বর হুইলা-৮

'পুথক নাটফ করিতে সভ্যভামা আজা দিল बानि शृथक् नोंग्रेक कतिए अञ्ज बाक्का देश्य। 'পুর্বে ছই নাটকের ছিল একতা রচনা; ছুই ভাগ করি এবে করিব ঘটনা। স্থাই নান্দী প্রস্তবনা, ছই সংঘটনা : পুথক করিয়া লিথি করিয়া ভাবনা'। রথযাতার জগরাথ দর্শন করিল; . রথ অগ্রে প্রভুর নৃত্য কীর্ত্তন দেখিল। প্রভার নৃত্যালোক শুনি শ্রীরূপ গোঁবাঞি পেই স্লোকের অর্থে স্লোক করিল তথাই। পূর্বে সেই সব কথা করিয়াছি বর্ণন ; ভণাপি কহিয়ে কিছু সংক্ষেপ কথন। সামান্য এক শ্লোক প্রভু'পড়েন কীর্ত্তনে : কেন শ্লোক পড়েন ইহা কেহ নাহি জানে। সবে একা স্বরূপ গোঁদাই শ্লোকের অর্থ জানে ১ সোকাতুরপ পদ করানু আখাদনে। রূপ গোঁলাঞি মহাপ্রভুর জানি অভিপ্রায়: সেই অর্থে স্লোক কৈল প্রভুরে যে ভার।

ভথাহি কাব্যপ্রকাশে প্রথমোল্লাদে চতুর্থাক্ষপ্পতং তথা পদ্যাদল্যাং অশীত্যধিকশততমাক্ষপ্পতং কস্থাশ্চির্নায়িকারা বচনং।
থঃ কোমারহরঃ স এব হি বর স্তা এব চৈত্রক্ষপা
স্তে চোমালিতমালতীহ্বভয়ঃ প্রোচাঃ কদম্বানিলাঃ।
সা চৈবান্মি তথাপি তত্র হ্বরতব্যাপারলীলাবিথা
স্বেবাধ্বাধসি বেতসীতক্ষতলে চেতঃ সমুৎকণ্ঠাতে' ॥ ৭ ॥
ভীকা ও ব্যাধ্যা নধ্যঃ ৬ খোঃ ৬— গ্রঃ দেব ॥ १॥

জ্ঞীরপগোসামিক্ত শ্লোকঃ যথা। 'প্রিয়ঃ সোহ্যং কৃষ্ণঃ সহচরি কুরুক্তেত্র মিলিত শুণাহং মা রাধা তদিদমুভয়োঃ সঙ্গমহুথং। তথাপ্যন্তঃখেলনাধ্রমুরলীপঞ্মজুষে
মনো মে কালিন্দীপুলিনবিপিনায় স্পৃহয়তি'॥৮॥
টালাও ব্যাধ্যা মধ্যঃ ৭ লোঃ৮—৯ পুঃ দেব ॥৮॥

ভালপত্তে শ্লোক লিখি চালেতে রাখিলা: সমুদ্র স্নান করিবারে রূপ গোঁসাঞি গেলা। হেনকালে প্রভু আইলা তাঁহারে মিলিতে; চালে শ্লোক পাঞা প্রভু লাগিলা পড়িতে। লোক পড়ি প্রভু স্থথে প্রেমাবিষ্ট হৈলা; তেন কালে রূপ গোঁদাঞি সান করি আইলা। প্রভ দেখি দণ্ডবৎ প্রাঙ্গণে পড়িলা; প্রভু তাঁরে চাপড় মারি কহিতে লাগিলাঃ— 'গুড় মোর হাদয় ভূমি জানিলে কেমনে' ? এত কহি রূপে কৈল দৃঢ় আলিখনে। সে সোকে লইয়া প্রভু স্বরূপে দেখাইল ; স্বরূপের পরীকালাগি ভাঁহারে পুছিলঃ→ 'মোর অন্তর বার্তা রূপ জানিল কেমনে ?' স্বরূপ কহে 'জানি রূপা করিয়াছ আপনে। অনাথা এ অর্থ কারও নাহি হয় জ্ঞান: তুমি পূর্বের কুপা কৈলে করি অনুমান। প্রভু কহে 'ইহ আমায় প্রয়াগে মিলিলা: যোগ্য পাত জানি ইহায় মোর রূপা হৈলা। ভবে শক্তি সঞ্চারি আমি কৈল উপদেশ: তুমিও কহিও ইহার রসের বিশেষ। স্বরূপ কহে 'যাতে এই শ্লোক দেখিল ; তুমি করিয়াছ কুপা তবহিঁ জানিল'।

তথাহি ভায়ঃ। 'ফলেন ফলকারণমসুমীয়তে। কার্য্যং নিদানাদ্ধি শুণানধীতে'॥ ৯॥ 'কল কারণং' 'ফলেন' ছেত্না 'অছনীয়তে' 'হি' যতঃ 'কার্যাং' 'নিদানাং' কারণাছক্লপা২ 'ঞ্গান্' 'অধীতে' প্রাপ্লোভি ॥ ৯॥

ফল দারা ফলকারণ অনুমান করিবে; যেহেতু কার্য্য কারণের গুণ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। ৯।

তথাহি নৈষধীয়ে পঞ্চন্ধারিংশশ্লোকে দময়ন্তীং প্রতি হংগ্রাক্যং

'স্বর্গাপেপা হেমমূণালিনীনাং ন¦লামূণালাগ্রভুজো ভজামঃ। অস্বাসুরূপতসুরূপঋদ্ধিং কার্য্যং নিদানাদ্ধি গুণানধীতে'॥১০॥

হে দমগতি 'সর্বাগেগাহেমমূণালিনীনাং' স্বর্গপ্ত আপগায়াঃ স্থ্র নদ্যা
মক্ষাকিন্যা ইত্যুর্থ: হেমমূণালিণীনাং 'নালামূণালাপ্রভ্জঃ' নালানাং
মূণালাগ্রং অভিকোনলাংশং ভ্জতে যে তে বয়ং 'অস্বাল্রপং' তক্তরপঞ্জিং'
কারণাহ্বপাং ভ্লাঃ রুপস্থাঞ্জিং বৃদ্ধি কোমলং স্থালরক দেহমিত্যুর্থ:
প্রাপ্তাশ্ব্রং 'হি' যতঃ 'কার্যাং' 'নিলানাং' কান্নাং'জ্পান্' 'অবীভে'
প্রাপ্তাভি ॥ ১০ ॥

আমরা স্বর্গ মন্দাকিনীর হেমময় ও অতি কোমল মুণা-লাগ্রভাগ ভোজন করিয়া তদকুরূপ দেহ ও রূপ প্রাপ্ত হই-য়াছি; বেহেতু কার্য্যদকল কারণাকুরূপ গুণই লাভ করিয়া থাকে। ১০।

চাতৃশাগ্য রহি গোড়ে বৈঞ্চব চলিলা;
রূপ গোঁসাঞি মহাপ্রভুর চরণে রহিলা।
একদিন রূপ করেন নাটক লিখন;
আচমিতে মহাপ্রভুর হৈল আগমন।
সম্ভ্রমে হুঁহে উঠি দণ্ডবৎ হৈলা;
হুঁহে আলিজিয়া প্রভু আসনে বিসিলা।
'কাঁহা পুথি লিখ' গুৰলি একপত্র নিল;
অক্র দেখিয়া প্রভু মনে স্থী হৈল।
শীরণের অক্র যেন মুকুতার পাতি;
প্রীত হঞা করে প্রভু অক্রের স্তুভি।

সেই পত্তে প্রস্তু এক প্লোক দেখিলা; পড়িতেই প্লোক প্রেমে আবিষ্ট হইলা।

তথাহি বিদশ্বমাধবে প্রথমাকে ত্রোদশলোকে নান্দী-মুখীং প্রতি পৌর্ণমাদী বাক্যং।

'ছুঙে তাণ্ডবিনী রতিং বিতমুতে তুণ্ডাবলিলকয়ে কর্ণজোড়কড়ম্বিনী ঘটয়তে কর্ণার্ব্বুদেভাঃ স্পৃহাং চেতঃপ্রাঙ্গণসঙ্গিনী বিজয়তে সর্ব্বেন্দ্রিয়াণাং কৃতিং নো জানে জনিতা কিয়ন্তিরমূতৈঃ কৃষ্ণেতি বর্ণদ্বয়ী' ॥১১ ! ﴿

হে পুলি নানীষ্ধি 'কৃষ্ণ' 'ইতি' 'বর্ণব্যী' বর্ণব্যা 'কিষ্ডিঃ' পরি কিইটেঃ' 'জনিডা' সঠিতা তদহং 'নো' ন 'জানে'। কীদৃশা বর্ণবৃষ্টী তদাহ 'তুডে' জিহোরাং 'ডাডবিনী' নর্তনবভী দতী 'তুডাবিলিকর্মে,' তুডাবলীনাং জিহাপ্রেলীনাং প্রাপ্তরে নিমিতায় 'রতিং' বাসনাং 'বিভয়তে' বিভারম্ভি তুঙ্গম্হদেলভাতে স্থেন কৃষ্ণবীতিনং জিয়ত ইতিভাবঃ। পুনং 'কর্ণজ্যে কড্মিনী' কর্ণর্ম্বে অত্ববতী জাভ্যালাজ্যা ইতার্থ: সতী 'কর্ণর্ম্বে দেভাঃ' দশনোটকর্ণলাভাগ নিমিতায়েডার্থ: 'স্পৃহাং' ইছাং 'বটয়তে'; পুন: 'চেড: প্রাল্প স্লিনী' চেত এব প্রাল্পম্ ভ্রু স্লিনী সতী 'সংক্রিমানাং' 'কৃছিং' বাাপারং 'বিজয়তে'॥ ১১॥

নালীমুখি! জানি না 'কৃষ্ণ' এই ছুইটা বৰ্ণ কত অমৃত দিয়া গঠিত হইয়াছে? যখন ইহা রসনায় নৃত্য করিতে থাকে, তথন রসনাঞ্জেমিলাভের জন্ত বাসনা হয়; যখন কর্ণরক্ষে অঙ্কুরিতা হয়, তখন দশকোটি কর্ণলাভের স্পৃহা বলবতী হয়; এবং চিত্তপ্রাঙ্গণে প্রবেশ করিলে স্কল ইন্দ্রিয়ব্যাপার ইহার নিক্ট পরাজিত হইয়া যায় ১১১

> লোক ভৰি হরিখাস হইল উলাসী; নাচিতে লাগিলা লোকের অর্থ প্রশংসি। 'কুক্ষ নামের মহিষা শান্তসাধুসুথে জানি; নামের মহিষা ঐচ্ছ কাঁহা নাহি ভনি ?'

তবে মহাপ্রভ্ হুঁহে করি আলিকন
মধ্যাক্ত করিতে সমৃদ্রে করিলা গমন।
আর দিন মহাপ্রভু দেখি জ্বারাথ;
সার্বভৌম রামানন্দ ব্রুলাদি লাথ;
সবে মিলি চলি আইলা শ্রীরূপে মিলিতে;
পথে তাঁর গুল স্বারে লাগিল কহিতে।
ছই লোক কহি প্রভুর হৈল মহান্ত্র;
নিজ ভক্তের গুল কহে হঞা পঞ্মুব।
সার্বভৌমরামানন্দ পরীকা করিতে;
শ্রীরূপের গুল তুঁহারে লাগিলা কহিছে।
ইপর বভাব ভক্তের না লয় অপরাধ;
ভার সেবা বহু মানে আত্ম প্রায়ন্ত প্রায়াদ।

তথাহি ভক্তিরসায়তদিন্ধে দক্ষিণবিভাগে বিভাবলহয্যাং দপ্ততিতম শ্লোকে শ্রীরূপগোস্থামিবাকাং।

> 'ভূত্যস্থ পশ্যতি গুরুনপি নাপরাধান্ দেবাং কৃতামপি মনাধহুধাভূ্যপৈতি। আবিষ্করোতি পিশুনেম্বপি নাভ্যসূয়াং শীলেন নির্মলমতিঃ পুরুষোত্তমোহয়ং'॥ ১২॥

'শীলেন' অভাবেন সহ 'নির্মালমভিং' 'অয়ং' 'পুরুষোভমং' ভগবান্ 'ভৃতাস্য' নিজসেবকস্য 'গুরুনপি' 'অপরাধান্' 'ন' 'পশুভি'; 'মনাক্' অল্লাং 'সেবাং' 'রুভামপি' 'বহধা' 'অভা ঠণিডি' অভিমন্ততে; 'পিগুনেকু' আত্মবিদ্ধেষিষ্ জনেষ্ 'অভাস্ধাং' গুণেষ্ দোষারোপণং 'ন' 'আবিছ-রোভি'॥ ১২ ॥

নির্মালচরিত এই পুরুষোত্তম নিজ সেবকের অপরাধ শুরুতর ছইলেও গ্রহণ করেন না, এবং অল্প দেবাও বহু মনে করেন; আর আত্ম বিদ্বেধীর গুণ থাকিলে, তাহাতে দোষারোপ করেন না। ১২। ভক্ত সংস্প প্রভু আইলা দেখি ছেইজন :
দণ্ডবং হঞা কৈল চরণ বৈদ্দন ।
ভক্ত সংস্প কৈল প্রভু তুঁহাকে মিলন ;
পিণ্ডাঃ উপরে বিদিলা লঞা ভক্তগণ ।
ক্রপ হরিদাস হুঁহে বিদিলা পিণ্ডাতলে;
দবার অথ্যে না উঠিলা পী ভার উপরে ।
'পূর্ব খ্যাক কহ' কপে প্রভু আজ্ঞা কৈল ;
লজ্জাতে না পড়ে ক্রপ মৌন ধ্রলি ।
স্ক্রপ গোঁলাঞি ভবে দেই খ্যাক পড়িল;
ভানি স্বাকার চিত্তে চমৎকার হৈল।

তথাহি ব্রীরূপগোসামিক্তঃশোকঃ।
'প্রিয়ং দোহ্যং কৃষ্ণঃ দহচরি কুক্কেত্রমিলিত তথাহং সা রাধা তদিদমূভয়োঃ দঙ্গমস্থং তথাপ্যতঃ থেলনাধুরমূরলীপঞ্মজুষে মনো মে কালিনীপুলিনবিপিনায় স্পৃহয়তি'॥ ১৩॥

টীকা ও ব্যাথাঃ মধাঃ ৭ সোঃ ৮-৯ পঃ দেখা। ১৩ ॥

রাম ভট্টাচার্য বলে 'তোমার প্রসাদ বিনে; তোমার হৃদয় এই জানিবে কেমনে ? আমারে সঞ্চারি পুর্বেক কহিলে সিদ্ধান্ত; যে সব সিদ্ধান্তের রক্ষা নাহি পার জন্ত। ভাভে জানি পূর্বে তোমার পাইরাছে প্রসাদ; ভাহা বিনা নহে ভোমার হৃদয়াল্লবাদ'। প্রভু কহে 'কহ রূপ নাটকের শ্লোক; যেই শ্লোক শুনি লোকের যায় তৃঃধ শোক'। বার বার প্রভু তাঁরে আজ্ঞা যদি দিল; ভবে সেই শ্লোক রূপ কহিতে লাগিল। তথাহি বিদগ্ধমাধবে প্রথমাঙ্কে ত্রোদশঙ্কোকে নান্দীমুখীং প্রতি পৌর্ণমাদীবাক্যং।

'ছুণ্ডে তাণ্ডবিনী রতিং বিতকুতে তুণ্ডাবলিলকয়ে কর্ণক্রোড়কড়স্বিনী ঘটয়তে কর্ণার্ক্ব দেভ্যঃ স্পৃহাং। চেতঃপ্রাঙ্গণসঙ্গিনী বিজয়তে সর্কেন্দ্রিয়াণাং কৃতিং; নো জানে জনিতা কিয়ন্তিরমূতেঃ কৃষ্ণেতি বর্ণদ্বিয়ী'॥১৪॥ টীকা ও ব্যাধ্যা অস্তঃ ১১ খোকে ১০ পু: দেব ॥ ১৪॥

যত ভকুৰুল আর রামাননা রায়;
লোক শুনি দবার হৈল আননা বিজায়।
দবে বলে 'নাম মহিমা শুনিয়াছি অপার;
এমন মাধুর্যা কেহ বর্ণে নাহি আর'।
রায় কহে 'কোন গ্রন্থ কর হেন জানি;
যালার ভিভরে এই দিছাস্তের খনি'।
স্কলপ কহে 'রুফলীলা নাটক করিভে;
ব্রজনীলা প্রলীলা একত্র বণিভে
আরম্ভিয়া ছিলা, এবে প্রভু আজ্ঞা পাঞা
হুই নাটক করিভেছেন বিভাগ করিয়া।
বিদিশ্ধমাধ্ব আর লালিভমাধ্ব;
হুই নাটকে প্রেমর অভুত দব'।
রায় কহে 'নানী শ্লোক পড় দেখি শুনি'?
শীরলপ শ্লোক পড়ে পাভ আজ্ঞা মানি।

তথাছি বিদশ্ধমাধবে প্রথমাঙ্কে প্রথমশ্লোকে জ্রীরূপগো-স্থামি বাকং।

> 'স্থানাং চান্দ্রীণামপি মধ্রিমোশাদদমনী দখানা রাধাদিপ্রণয়ঘনসারৈঃ স্থরভিতাং। সমস্তাৎ স্তাপোদামবিষমসংসারসরণী-প্রণীতাং তে ভৃষ্ণাং হরতু হরিলীলাশিখরণী'॥ ১৫॥

'হরিলীলাশিধরির' হরিলীলা এব শিধরিণী রসালা মধ্রাছাদ্ত্লপানীর বিশেব ইভার্থ: 'তে' তব 'তৃষ্ণাং' 'হরতু' কীলুলাং তৃষ্ণাং ? 'সমস্কাহ'
সর্কাভ: 'সন্তাপোলামবিষমসংসারসরণী প্রণীতাং' সন্তাপানাং আধ্যাত্মিকাদীনাং উল্পানো যন্তাং দা এবকুতা যা বিবমা বক্ষরথাং অভিত্র্গমা
ভীসণসংসারক্ষপা সরণী পছাং তদ্মা প্রণীতাং পর্যাটমজনিতাং; হরিলীলাশিখরিণী কিল্পী ? 'চাক্রীনামণি' চক্রসম্বন্ধনিামণি 'তৃধানাং' 'মধ্রিমোমালদম্মী' মধ্বিদ্ধা হেতৃনা উন্নাদঃ অহ্মেব সর্কতো মাধ্র্যাশালিনীতি
যোহ্ছার তাং দম্মিতুং শীলং যন্তাং সা; পুনং 'রাধালিপ্রণ্যমনসাবৈরং' রাধানীনাং প্রণ্য এব ঘনসারাং কপ্রা তৈঃ করবেং 'স্করভিতাং' সৌগকং
'দধানা'॥ ১৫॥

যাহা স্থাংশুর স্থামাধ্যাগর্ক দমন করিয়াছে; এবং যাহা রাধাদির প্রণয়কপ্রযোগে সৌগদ্ধা ধারণ করি-য়াছে; সেই হরিলীলাশিথরিণী তোমার সন্তাপবর্দ্ধক বিষম-সংসারপথপর্যাটন জনিত তৃষ্ণা নিবারণ করুক। ১৫।

রায় কহে 'কহ ইউদেৰের বর্ণন';
প্রভ্র সংকাচে রূপ না করে পঠন।
প্রভ্ কহে ! 'কহ কেন কি সংকাচ লাজে ?
ব্যাহের ফল শুনাইবে বৈ ক্ষর স্যাকে ৷'
ভবে রূপ গোঁসাঞি যদি ক্লোক পড়িল;
শুনি প্রভু কহে 'এই অতি স্তুভি হৈল।'

তথা হি বিদশ্বমাধবে প্রথমাকে দ্বিতীয় লোকে শ্রীরূপ-গোন্থামি বাক্যং।

'অনপিতিচরীং চিরাৎ করুণরাবতীর্ণঃ কলে। সমর্পয়িতুমুমতোজ্জলরসাং সভক্তিপ্রায়ং। হরিঃ পুরটস্থলরত্যুতিকদম্বসন্দীপিতঃ সদ। হৃদয়কন্দরে স্ফুরতু বং শচীনন্দনঃ'॥১৬॥ চীকা ও ব্যাধ্যা আদিঃ ও রোকে এপঃ দেখ ॥ ১৬॥ সব ভক্তপণ কছে শ্লোক গুনিরা;
'ফুডার্থ করিলা সবার শ্লোক গুনাইরা'।
রার কছে 'কোন্ মুখে পাত্র সন্নিধান' ? (১)
রূপ ক্ষে 'কাল্সাম্যে প্রবর্তক নাম'।

তল্লকণং নাটকচন্দ্রিকায়াং দাদশশ্লোকঃ।

'আক্তিং কালসাম্যেন প্রবেশঃ স্থাৎ প্রবর্ত্তকঃ' ॥১৭॥ 'কালসাম্যেন' কালছেরপভরা কর্তৃত্তেন 'আক্ষিশুঃ' প্রেরিডঃ সন্ধঃ 'প্রবেশঃ' পাত্র সরিবেশঃ স এব 'প্রবর্তকঃ স্থাৎ'। ১৭।

সময়ামুরূপ পাত্রদন্ধিবেশের নামই প্রবর্ত্তক। ১৭।

তস্যৈবোদাহরণমাহ বিদগ্ধমাধবে প্রথমাঙ্কে দশমশ্লোকে পারিপার্মিকং প্রতি সূত্রধারবাক্যং।

> 'সোহয়ং বসন্তসময়ঃ সমিয়ায় যশ্মিন্ পূর্ণং তমীশ্বমুপোঢ়নবানুরাগং। গূঢ়গ্রহা রুচিরয়া সহ রাধ্য়াদে। বুঙ্গায় সঙ্গবিহা নিশি পৌর্ণমাসী'॥ ১৮॥

শ্লোকোহ্য ছার্থ ভদ্যথা। 'জয়ং' 'সং' দৃশ্যমান: 'বসন্তসময়ং' বসন্ত-কাল: 'দ্মিরার' সমাগতঃ তাৎ। 'যিমিন্' কালে অসৌ' 'পের্গমানী' তিথিঃ ভন্নমধেরা ভগবজী চ 'কচিরয়া' শোভনয়া 'রাধয়া' 'সহ' বিশাথানক্ষত্রেশ শক্ষান্তরে ব্যতামুক্তয়া সহ 'নিশি' রাজৌ 'রঙ্গায়' কৌচুকায় শোভ-নার্থং পক্ষান্তরে কৌচুকরহত্তমাবিদ্র্ত্ত্ পূর্ণং' বোড়শকলং পক্ষান্তরে পরিপূর্ণং 'তমীশ্বরং' চন্দ্রং পক্ষান্তরে ভং প্রসিদ্ধং ঈশ্বরং শ্রীকৃষ্ণং 'সঙ্গং'

১ কোন্মুথে পাত্র সন্নিধান এবর্ত্তক নাম — রামান লা রাষের প্রশ্নের প্রশ্নের থাকের থাকে বিধান এই যে নাটকের কোন্সময়ে নাট্যালিখিত পাত্র বা ব্যক্তিগণকে রক্তুমিতে অবভারণা করান হইরাছে। ইছার উত্তরে রূপ গোলামী বলিলেন বে নাটকের উপক্রমণিকা ভাগের নাম প্রভাবনা; প্রভাবনার সময়াত্রপ পাত্রদিগকে সন্নিবেশিত করা উচিত, যেমন বিদক্ষ মাধ্য নাটকের প্রভাবনার বসন্ধ পৌশ্মামীর অবভারণা করিতে করিতে নাট্যালিখিত পাত্র পৌশ্মামী প্রবিধানী প্রবেশ করিবেন।

'অমিতা' প্রাপ্তা; পৌর্ণমাসী কীদৃশী ? 'গুঢ়প্রহা' গুঢ়া প্রহা নবপ্রহা যক্তা: সা, পক্ষান্তরে গুঢ়ো প্রহো আগ্রহো যক্তা সা; ঈশ্বরং কীদৃশং ? 'উপোঢ়-নবান্ত্রাগং' উপোঢ়া প্রাপ্তঃ নবোহত্ত্রাপে। রক্তিমা যেন তং কুক্পক্ষে ক্ষান্ত্রাগং ৷ ১৮ ॥

এই বসস্তকাল সমাগত হইয়াছে; এ সময় পৌর্ণমাসী
তিথি স্থালেলন বিশাখানক্ষত্রের সহিত গ্রহগণে পরিবৃতা
হইয়া নবরক্তিমা রঞ্জিত পূর্ণচক্রের সহিত মিলিতা
হওতঃ শোভাবর্দ্ধন করিতে লাগিলেন। পক্ষাস্তরে বসস্তরজনীতে দেবা পৌর্ণমাসী অতিশয় আগ্রহ সহকারে নবামুরাগে অম্বরক্ত পূর্ণতম শ্রীকৃষ্ণের লীলাকোত্কবর্দ্ধন
জন্ম ক্রচিরময়ী শ্রীরাধাকে সঙ্গে লইয়া আসিয়া মিলিতা
হইলেন। ১৮।

রায় কহে 'প্ররোচনাদি কহ দেখি গুনি' ? রূপ কহে 'মহাপ্রভুর শ্রবণেচ্ছা জানি'।

তথাছি বিদগ্ধমাধবে প্রথমাঙ্কে অউমশ্লোকে সূত্রধারং প্রতি পারিপাখি ক বাক্যং।

'ভক্তানামূদগাদনর্গলধিয়াং বর্গো নিসর্গোচ্ছলঃ শীলৈঃ পল্লবিতঃ সবল্লববধ্বদ্ধোঃ প্রবিদ্ধোহপ্যসে । লেভে চত্ত্বতাঞ্চ তাওববিধে র্ব ন্দাটবীগর্ভভূ মব্যু মদ্বিধপুণ্যমণ্ডলপরিপাকোহয়মুন্মীলতি' ॥১৯॥

'জয়ং' 'য়য়৻পুণায়ড়লপরিণাকঃ' য়য়৻য়য়য়য় পুণায়ড়লায়াং পুণাসমুহায়াং পরিপাকঃ পরিপতিঃ চয়য়য়য়য়য়য়য়য়৾ উতার্থ: 'উল্লীলডি' বিকশন্তি ইতাহং 'য়য়য়ৢ'; কঝং ? ভলাহ 'অনর্গলিধিয়াং' অনর্গলা নির্দ্ধা সরলা ইতিয়াবং ধীবৃদ্ধি ধেঁবাং 'ভকামাং' 'নিসর্গোজ্ঞলঃ' সভাবনির্দ্ধারণ বর্গঃ' সমূহ: 'উলগাং' সলায়াং উলয়ং প্রাপ্তবান । পুনঃ 'অসেম্' সাং 'প্রবন্ধাই' বিশক্ষাধ্বনামনাটকঃ 'অপি' 'বলববধ্বদ্ধাঃ' গোপবধ্বদ্ধাঃ প্রিকঞ্জন

'শীলৈং' চরিতৈঃ 'পরবিভঃ' বিস্তারিতঃ প্রশোজিত ইত্যর্থঃ। 'বৃশাট্নী-গর্ভভূং' বৃশাবনম্বরাগভূমিখানং 'তাগুববিধেং' জন্য নাটক্স্য নর্ভনক্লায়াঃ অভিনয়ব্যাশাবস্য ইত্যর্থঃ 'চম্বরতাং' প্রাম্পনরপ্রভাং 'লেভে' প্রাপ্তবতী ।১৯।

ভাব! দেখুন এই সভাতে স্বভাবস্থন্দর সরলমতি ভক্ত-গণ সমুপস্থিত; এই প্রবন্ধও গোপীবল্লভের লীলাচরিতে স্থশোভিত; আর ভগবানের রাসলীলার স্থান এই রন্দা-ট্রবী আমাদের নৃত্যাভিনরের রঙ্গক্তল; বুঝি আজ মাদৃশ-দিপের পুণ্যপরিণাম বিকশিত হইল। ১৯।

তথাহি তত্ত্বৈব ষষ্ঠশ্লোকে পারিপার্শিকং প্রতি সূত্রধার-বাক্যং ।

'অভিব্যক্তা মন্তঃ প্রকৃতিলঘুরূপাদপি বুগাঃ বিধাত্রী দিদ্ধার্থান্ হরিগুণময়ী বঃ কৃতিরিয়ং পুলিন্দেনাপ্যঝিঃ কিষু দমিধমুম্মণ্য জনিতো হিরণ্যশ্রোনামপহরতি নাক্তঃকলুষতাং'॥ ২০॥

ছে 'ব্ধাং' দাধবং 'প্রকৃতি শমুরূপাৎ' প্রকৃত্যা স্বভাবেন লঘু: ক্রুক্তান্থার রূপনামা চেতি বদা লঘু ভূজং রূপং স্বভাবো বন্য তত্মাৎ 'মতং' মম সকাশাৎ 'অভিব্যক্তা' প্রকৃতিভা 'অপি' 'ইরং' 'কৃতিঃ' কবিতা 'বং' যুয়াকং 'দিরা-র্থান্' বাঞ্জিতার্থান্ 'বিধাত্রী' ভবেদিতিশের: বিধানং কুর্যাদিত্যর্থ: কিদৃশী স্থৃতিঃ ? ভদাহ 'ইরিগুণমন্ত্রী-লায়িক।। দৃষ্টান্তেন দ্যোভয়তি 'পুলিন্দেন' শবরেণ অতি নীচজাত্যভবেন জনেন কর্তৃত্তেন 'স্মিধং' কাষ্ঠং 'উন্মথ্য' স্বত্বী জনিতঃ প্রাকৃতিবিতঃ 'অধিরপি' 'হিরণাশ্রেণীনাং' স্বর্ণস্থানাং 'জন্তঃ-ক্র্যতাং' জন্তর্মলিন্তাং 'ন' 'অপহরতি' 'কিম্' কিং নাপহরত্যের ভ্রত মম ক্রিতা সাধুনাং কুর্মাননারপক্র্যতাং অপহরতি ধ্বনিতং। ২০।

হে বুধপণ ৷ আমি অতি ক্ষুদ্র শ্বভাব হইলেও আমার বির-চিত হরিগুণময়ী এই কবিতা আপনাদিগের অভীউসাধন করিবে; কারণ অতি নীচ জাতি পুলিন্দ কর্তৃক কাষ্ঠ সংঘর্ষণে বে অগ্নি উদ্দীপিত হয়, তাহাতে কি স্বর্ণের অন্তর্ম ল বিনষ্ট হয় না ? ৷ ২০ ৷

> রার কছে 'কছ দেখি প্রেমোৎপত্তি কারণ; পূর্ব্বাত্রাগ, বিকার চেটা, কাম লিখন'। ক্রমে জীরূপ গোঁদাঞি দকলই কহিল; ভানি প্রভূর ভক্তগণ চমৎকার 'হৈল।

স্নাগোৎপত্তিহেতুর্যথা তত্ত্রৈব দ্বিতীয়াক্ষে অফমশোকে লালিতাং প্রতি শ্রীরাধাবাক্যং

'একস্থ শ্রুতমেব লুম্পতি মতিং ক্ষেতি নামাক্ষরং সাল্রোন্মাদপরম্পরামুপনয়ত্যস্থত বংশীকলঃ। এষ স্লিগ্রঘনছাতি ম'নসি মে লগ্নঃ পটে বীক্ষণাৎ কফং ধিক্ পুরুষত্তয়ে রভিরভূন্মন্তে মৃতিঃ শ্রেয়সী'।২১।

হে স্থি! 'একন্ত' পুরুষস্য 'রুফ ইভি' 'নামাক্ষরং' 'শুভ্যেব' প্রবণ্
বিষরে গভ্যাত্তমের 'মভিং' বুজিং 'লুস্পতি' প্রলুপ্তাং করোভি; 'জন্তভ' পুরুষস্য 'বংশীকলং' বংশীরবং প্রবণমাত্তেণ ইভিশেবং 'সাল্লোনাদপরস্পরাং' অনমন্তভাপরস্পরাং ক্রমেন মন্তভারাং বনীভূভভাং ইভার্থং 'উপনয়ভি' প্রাপ্রাভি; 'এবং' 'লিগ্রনহাভিং' লিগ্ধ। ঘনা চ রুফ্যেঘবর্ণা চ হাভিং কান্তির্য্য স্পুরুষ ইভিশেবং 'বীক্ষণাৎ' দর্শনাজেভোং 'মনসি' 'পটে' চিন্তপটে 'লগ্লং' স্যাৎ ন বিশ্বভিপদবীং গছভীভার্থং 'ধিক্' 'কষ্টং' ভোং 'পুরুষত্রেয়ে' মম 'রভিং' আস্তিং' অভ্তং অভ্তর্ব 'মৃতিঃ' মরণং 'প্রেরুমী' 'ইভি' অহং 'মত্তে' ॥ ২১ ॥

হে সথি! এক জনের 'কৃষ্ণ' এই নামাক্ষর প্রবণমাত্ত মতি কিনুপ্ত হইল; অভ্যের বংশীরব প্রবণবিবরে প্রবেশ করিয়া ঘনীভূত মততা আনয়ন করিল; আর এক জনের স্লিশ্বনফলধরকান্তি দর্যনমাত্ত চিত্তপটে লগ্ন হইয়া থাকিল; হা ষিক্! আমাকে একেবারে তিন জন প্রক্ষের রতি বহন করিতে হইল! ইহা অপেকা আমার মৃত্যু ভাল। ২১!

তথা তত্ত্বৈব দিতীয়াকে দপ্তমশ্লোকে লনিতাং প্রতি: শ্রীরাধিকা বাক্যং

'हेशः मिथ[्] ऋषुःमाधा। ताधास्रतग्रदनना।

কৃতা যত্ৰ চিকিৎসাপি কুৎসায়াং পৰ্য্যবস্থতি^{*} ॥২২ **॥**

ছে 'স্থি' ললিভে 'ইয়ং' 'রাধা হালয়বেদনা' রাধায়া হালয়বেদনা 'সুছ্:সাধ্যা' ছ:সাধ্যা। 'বহা' বেদনায়াং 'চিকিৎসাপি' প্রতিকারোহপি 'রুভা'
'কুৎসায়াং' নিশায়াং 'পর্যাবদ্যতি' চিকিৎসায়াং কুতায়াং সভ্যাং ফ্লস্য,
ক্ষমন্তাবনাহেতো রিতার্থ: ॥ ২২ ॥

স্থি। রাধার এই হৃদয়বেদনা ছঃসাধ্য; ইহার চিকিৎসা নিন্দায় পর্য্যবসিত হইবে; রোগ প্রতীকারের সম্ভাবনা নাই। ২২।

তথা তত্ত্বৈব দিতীয়াঙ্কে ত্ৰয়ন্ত্ৰিংশলোকে প্ৰাকৃতভাষায়াং. কন্দৰ্পলেখে৷ যথা

> 'ধ্রিঅ পড়িচ্ছন্তেণং হৃদ্রে মহ মন্দিরে তুমং বসসি তহ তহ রুক্ষসি বলিঅং জহ জহ চইদা পলাএক্সি'॥ ২০॥

শাস্য সংস্কৃতাহ্বাদে:। ধুখা প্রতিচ্ছুল্ভণং স্থলর ! মন মান্দরে বং বদকি।
ভথা ভথা কণৎদি বলিতং, যথা যথা চকিতা পলায়ে। হে 'স্লার' ! 'পড়িচ্ছেল্ভণং' চিত্রপটক্রণং ভৎস্ত্রেষা 'ধরিঅ' ধুখা 'তুমং' স্থং 'মহ' নম 'মান্দিরে'
বল্মমান্দিরে 'বস্দি' তিঠিদি। 'জহ' 'জহ' যথা যথা 'চইদা' চকিতা ভীতঃ
সতী 'পলত্র্ন্দি' পলায়ে 'তহ' 'ডহ' তথা তথা 'বলিজং' বলিতং যথা স্যাৎ
তথা বলেন মাং 'রুক্ষদি' রুণৎদি প্রতিক্রাং করোদি॥ ২০॥

হে হৃদ্দর । তুমি আমার চিত্তপটে নিত্যবাদ করিতেছ; আমি চকিতা হইরা যে যে দিকে পলায়ন করি; তুমি বল-পূর্বক সেই সেই দিকে আমার গতি রোধ কর। ২৩।

চেক্টা তথা তত্ত্বৈৰ দ্বিতীয়াক্ষে চতুর্দশঙ্গোকে পৌর্ণ-মাসীং প্রতি মুখরাবাক্যং

'অতা বীক্যা শিষ্প্রধান বিরাত্ত কম্পানাল্যতে গুঞ্জানাঞ্বিলোকনাম ভ্রমো সাঞ্চ পরিজ্যোশতি নো জানে জনয়য়পূর্বনিটনক্রীড়াচমধ্কারিতাং বালালাঃ কিল চিত্তসুমিমবিশ্ব কোহয়ং নদীনগ্রহঃ'। ২৪।

হে পোর্ণমাল ! 'কঃ' 'অয়ং' 'নবীনগ্রহঃ' নবমুবকঃ 'বালায়াঃ' য়াধিকায়াঃ মম নপ্তাাঃ 'চিভভূমিং' 'অবিশৎ' প্রাবিশৎ ভদহং 'নো' 'জানে' 'কিল'। কিং কুর্বন্ ? 'অপূর্ব নটনক্রীড়া চমৎকারিতাং' অনির্বচনীয় নর্জনক্রীড়ায়াঃ চমৎকারিতাং 'জনয়ন্' সম্পালয়ন্; সা কিমাচেইতে ? 'অসৌ ' বালাঃ 'অতাে সমীপে 'শিখণ্ডথণ্ডং' ময়ৢরপিছে 'বীক্ষা' দৃষ্ট্যু 'অচিরাং' তৎক্ষণাং 'উৎকম্পাং' মৃগীবাাধিত্লাং কম্পাং 'আলম্বতে' ভূমো সংল্পৃতীতাতাহাঃ। 'চ' প্রঃ 'গুলানাং' গুলাকলানাং 'বিলোকনাং' 'সাক্র্যু অক্রসহিতং যথা ভাত তথা 'মূহঃ' বাম্বারং 'পরিজোশতি' উচ্চঃ প্রলাগং করোতি ॥ ২৪ ॥

দেবি পৌর্ণমাসি! এই বালা স্মীপস্থ ময়ৣয়পুচছ দর্শনমাত্র সহসা কাঁপিতে কাঁপিতে ধরালুঠিত হইতেছে;
আর গুঞা দর্শনে সজলনেত্রে মুছ্মুছ্ প্রলাপ বকিতেছে;
জানি না কোন্ নবীনগ্রহ ইঁহার চিত্তভূমিতে প্রবেশ করিয়।
এই সকল অপূর্বে নটরঙ্গ উৎপাদন করিতেছেন ?। ২৪।

ব্যবদায়ো যথা তত্ত্রিব দ্বিতীয়াক্ষে ষট্চস্থারিংশক্ষোকে বিশাখাং প্রতি শ্রীরাধিকাবাক্যং

'অকারুণ্যঃ কৃষ্ণে। যদি ময়ি তবাগঃ কথমিদং
মুধা মারোদী মে কুরু পরমিমামূত্তরকৃতিং
তমালস্ত স্কন্ধে দথি কলিতদোর্বক্লেরিরিয়ং
যথা রন্দারণ্যে চিরমবিচলা তিষ্ঠতি তন্তুং' ॥ ২৫ ॥
হে 'দখি' বিশাধে! 'কুকুঃ' 'বদি' 'দবি' বিব্য়ে 'অকারুণ্যঃ' নির্দ্রোহতুৎ

ভলা 'ভব' 'ইদং' 'আগাঃ' অপরাধঃ 'কথং' ভবেদিতিশেষ: 'দ্বা' বুথা 'মারোদীঃ' রোদনং মাকার্যীঃ। 'পরং' মম মরণাস্তরমিতার্থঃ 'ইমাং' 'উজ্বর-কৃতিং' অভ্যেষ্টিক্রিয়াং 'কুক'। ভিষানমাহ 'তমালস্য' 'কৃকে' মূলশাখায়াং 'কলিতদোর্বল্লিঃ' কৃলিতা নিহিতা অক্লেতিশেষঃ দোর্বল্লী ভূজলতা যস্যাঃ সা 'ইয়ং' মম 'ভহুং' যথা 'বুল্লারণ্যে' 'চিরং' বহুকালং ব্যাপ্য 'ভবিচলা' নিশ্চলা সতী 'ভিঠতি'। কৃদাচিৎ কুঞ্গে দুর্শনীয়া ভবিষ্যতাভিত্তাৎপর্যাঃ ॥ ২৫॥

হে সথি। কৃষ্ণ যদি আমার প্রতি নির্দিয় হইলেন,তাহাতে তোমার দোষ কি ? আর র্থা রোদন করিও না। আমার মরণান্তর তমানরক্ষের শাথায় আমার ভূজলভা এমত করিয়া বেইন করিয়া রাখিও, যেন এই দেহ চিরকাল বৃন্দাবন মধ্যে অবিচলিত অবস্থিত থাকিতে পারে। এইরূপা করিয়া আমার অন্ত্যেষ্টি ক্রিয়া সম্পন্ন করিও॥২৫॥

> রায় কহে 'কহ দেখি ভাবের স্বভাব'; রূপ কহে 'ঐছে হয় ক্রম্প বিবয় ভাব'।

তথাহি তত্ত্বৈব ছিতীয়াঙ্কে সপ্তদশঙ্গোকে নান্দীমুখীং প্ৰতি পৌৰ্ণমাদী বাক্যং।

'পীড়াভি ন'বকালকৃটকটুতাগর্বস্থ নির্বাসনো নিঃদ্যন্দেন মুদা স্থামধুরিমাহস্কার সঙ্কোচনঃ। প্রেমা স্থানর নন্দনন্দনপরো জাগর্ত্তি যস্থান্তরে জায়ন্তে স্ফুটমস্থ বক্রমধুরা স্তেনিব বিক্রান্তয়ঃ'। ২৬। টাহা ও ব্যাধ্যা মধ্যঃ ২০ লোঃ ৪০ গঃ দেব ॥ ২৬॥

রার কর্হেক্ছ সহজ প্রেমের লক্ষণ';

ন্ধণ গোঁদাঞি কহে দাহজিক প্রেমধর্ম।
তথাহি তত্ত্বৈব পঞ্চমাক্ষে তৃতীয়লোকে মধুমঙ্গলং প্রতি
পৌর্ণমানীবাক্যং

'ন্তোত্রং যত্র ভটস্থতাং প্রকটরচ্চিত্তন্য ধতে ব্যথাং নিন্দাপি প্রমদং প্রবচ্ছতি পরিহাসপ্রিয়ং বিজ্ঞতী দোষেণ ক্ষয়িতাং গুণেন গুরুতাং কেনাপ্যনাতস্বতী প্রেম্ন: স্বারদিকস্য ক্যাচিদিয়ং বিক্রীড়তি প্রক্রিয়া'॥২ ৭॥

'কস্যচিং' 'বাবসিক্সা' সহজপ্রেমিক্সা জনস্য 'প্রেয়ঃ' 'ইয়ং' 'প্রেয়া' কার্যাকারিভা 'বিক্রমিড়ভি' ভস্য অবরে বিশস্তি। কিং করোভি ভলাহ। 'বঅ' প্রেয়ঃ প্রক্রিরায়াং 'প্রোঅং' প্রশংসাবাকাং 'ভটফভাং' উদাসীয়াং 'প্রক্রমং' সং 'চিজস্য' 'ব্যথাং' অবয়্রবেদনাং 'ধতে'; প্রেমিক-জন্মে নিজপ্রশংসাবাকাং শুবা কইমভিজানাভীত্যর্থঃ। 'নিক্ষাপি' লোকভ্রুমিনাপি 'পরিহাসপ্রিয়ং' 'বিত্রতী' সভী 'প্রমাদং' মহানক্ষং 'প্রযাছতি'। কিং কুর্ম্বতী সভী ভলাহ 'কেনাপি' 'লোবেণ' ক্ষরিতাং ক্ষরং 'গুণেন'' 'গুফভাং' কৃষ্কিতী সভী ভলাহ 'কেনাপি' 'লোবেণ' ক্ষরিতাং ক্ষরং 'গুণেন'' 'গুফভাং' কৃষ্কিং নি' 'আতব্রতী' ন বিভারয়ভী সভী প্রণয়পাত্রস্য দোবন্ধিনে প্রেমিক্সা প্রেমা ক্ষীণো ন ভবভি গুণদর্শনে ন বুলো ভবভি। নিক্রপাধিস্ত দোবঞ্জাং ন অপেক্ষতে; যথা জ্ঞানিনঃ স্বেদেহে প্রেম্ম ভবং॥ ২৭॥

যিনি নিজ প্রশংসাবাদ শ্লেবণে ঔপাসীমূভাব অবলম্বন করিয়া হৃদয়ে বেদনা অমুভব করিয়া থাকেন; এবং লোক নিন্দা বাঁহার নিকট পরিহাসবাক্য রূপে পরিণত হইয়া আমোদ প্রদান করিয়া থাকে; আর প্রেমপাত্তের দেখি শ্রবণে বাঁহার প্রেমের ক্ষয় হয় না এবং গুণ প্রবণেও বৃদ্ধি হয় না; ভাঁহারই প্রেমাকে সহজ প্রেম বলা যাইতে পারে॥ ২৭॥

রাগপরীক্ষানন্তরং শ্রীকৃষ্ণস্য পশ্চাতাপো যথা তত্ত্রিক দিতীয়াঙ্কে চন্থারিংশ শ্লোকে মধুমঙ্গলং প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যং

ক্রেজা নিষ্ঠুরতাং মমেন্দ্রদনা প্রেমাঙ্কুরং ভিন্দতী স্থাত্তে শান্তিধুরাং বিধায় বিধুরে প্রায়ঃ পরাঞ্চিষ্যতি কিন্তা পামরকামকার্ম্ম কপরিত্রতা বিমোক্ষ্যতাসূন্ হা মৌশ্রাৎ ফলিনী মনোর্থলতা মূলী ময়োন্মূলিতা'॥২৮॥ ইন্ধ্রদনা' রাধা 'মম' 'নিষ্ঠুরভাং' নির্দ্ধর ব্যবহারং 'শ্রমা' স্বীম্ধাদি- ভার্থ: ভস্যাঃ 'প্রেমাজ্রং' 'ভিক্ষতী ভিক্ষতী সভী 'বিব্রে বাথিতে 'সাজে'
নিজাজঃকরণে 'শাজিধুরাং' ধৈর্যঃ 'বিধার' 'প্রারঃ' বাছল্যেন 'প্রাঞ্জিয়াতি'
বছিমু বা ভবিষ্যতি। 'কিছা' সংশ্রে 'প্রেরকামকার্যুকপরিত্রতা। তুরস্ককর্পস্য কার্মুকাং শ্রাসনাথ পরিজ্ঞা ভীতা সভী 'অহন্' প্রাণাদ্ 'বিমোক্ষাতি'। 'হা' থেকে 'মৌগ্রাং' মম মৃদ্ভাং 'মুবী' স্কোমল 'ফলিনী' কলোরুধা 'মনোরধল্তা।' 'ম্রা' 'উন্মূলিতা' নির্মূলীকুতা। । ২৮।

দেই ইন্দুবদনা রাধা সথীমুথে যথন আমার এই নির্দাব্যবহারের কথা শুনিবেন, তথন তিনি হয়ত প্রেমাঙ্কুর ছিল করতঃ ধৈর্য ধরিয়াও হৃদয়ে কতই যন্ত্রণা অনুভব করিবেন; না হয় পামর কন্দর্পের শরাসনে ভীতা হইয়া প্রাণই বিসর্জন করিবেন। হায় ! মৃঢ়তা প্রযুক্ত আমি ফলোম্মুথ কোমন মনোর্থলতাকে একে বারে উন্মূলিত করিয়া ফেলিলাম ॥ ৬॥

শ্রীরাধা যথা তত্ত্রৈব দ্বিতীয়ান্ধে একচন্থারিংশশ্লোকে বিশাখাং প্রতি শ্রীরাধিকাবাক্যং

'যদ্যোৎসঙ্গর্যাশয়া শিথিলিতা গুর্বী গুরুভ্যস্ত্রপা প্রাণেজ্যোহপি স্বভ্তনাঃ দথি তথা যুয়ং পরিজেশিতাঃ ধর্মঃ দোহপি মহামায়া ন গণিতঃ দাধ্বীভিরধ্যাদিতো ধিক্ ধৈর্ঘ্যং ততুপেক্ষিতাপি যদহং জীবামি পাপীয়দী' ॥২ঃ॥

হে 'সখি!' 'বস্য' ক্ষুস্য 'উৎস্ক্স্থাশ্র।' আলিজন স্থলাভশ্রা করণরা 'গুকভাঃ' গুকলনেভাঃ 'গুক্মি' 'এপা' লচ্চা 'শিথিলিতা' ময়া গিথিল লীকৃতা; 'ভথা' 'প্রাণেভাোহপি' 'স্ছাত্তমাং' বাদ্ধবর্ণাঃ 'যুবং' 'পরিক্রে-শিতাঃ' ক্রেশে নিপাতিতা ইভার্থঃ। 'নাধ্বীভিঃ' সতীভিঃ 'অধ্যাতিঃ' সেবিভঃ 'সঃ' 'মহান্' 'ধর্মোহপি' 'ময়া' 'ন' 'পণিতঃ'; 'তছপেন্দিত্তপি' তেন ক্রেণে উপেন্দিভাপি 'বং' 'অহং' 'পাপীরসী' 'জীবামি' তঃ মম 'ধৈর্যাং' ধিক্'॥ ২৯॥

হে স্থি ! যাঁহার আলিখন হ্রথলাভ আশায় আমি গুরু-

জনদিসের শচ্জাকে শিথিল করিয়াছি; তোমার। যে প্রাণা-পেকাও প্রিরতম হুহুদ্, ভোমাদিসকেও কত ক্লেশ দিয়াছি; এবং সাধ্বীদিসের সেবিত মহান্ ধর্মকেও গণনা করি নাই; এখন সেই কৃষ্ণকত্^ৰক যথন উপেক্ষিত হইলাম, তখন আমার এই পাপজীবন ধারণ করার থৈষ্যকে ধিক্॥ ২৯ ধ

ভবৈত্ব দিতীয়াঙ্কে পঞ্চত্বারিংশক্লোকে শ্রীকৃষ্ণং প্রতি শ্রীরুমিধকাবাকাং

'গৃহান্তঃ থেলন্ড্যো নিজসহজবাল্যস্য বলনা-দভদ্ৰং ভদ্ৰং বা কিমপি নহি জানীমহি মনাক্ বয়ং নেতৃং যুক্তাঃ কথমশরণাং কামপিদশাং কথং বা নাম্যা তে প্রথমিতুমুদাসীনপদবীং' ॥ ৩০ ॥

'নিজসহজবাল্যস্য' অস্থাকং বাল্যধর্মস্য 'বলনাং' প্রভাবাদ্ধেতো, 'হাস্কঃ' গৃহমধ্যে 'বেলস্কঃ' বিহরস্কাঃ সভ্যঃ 'বয়ং' 'কিমপি' 'অভদ্রং' 'বয়ংবা' মুবং ছংবং বা 'মনাক্' অয়মপি 'ন' 'জানীমহি'; 'অশরণাং' নির্ক্ষাং 'কামপি' 'দশাং' 'নেতৃং' বয়ং 'কথং' 'য়ুব্জাঃ' ভবামঃ ৽ পুনং 'উদাসীন-পানীরে' ঔদাসীক্তং 'প্রথমিছতু' প্রাপমিতৃ 'ডে' বয়ং 'কথং' 'বা' 'ন্যায্যাঃ' নায়প্রাপ্তা ভবামঃ ৽ ন কথমপি ইভাভিপ্রায়ঃ ॥৩০।

হে পৃতনাঘাতিন্! আমরা স্বীয় বাল্য স্বভাববশতঃ গৃহমাধ্য থেলা করিতেছিলাম, ভাল মন্দ কিছুই জানিতাম না;
এ অবস্থায় ভোমার আমাদিগকৈ নিরাপ্রায় দশার আনা কি
যুক্তিযুক্ত হইয়াছে? আর আনিয়া এখন কি ভোমার
উদ্যীনভাব অবলম্বন করা উচিত ? ৪৩০॥

তথ। তত্ত্বৈব দ্বিতীয়াকে সপ্তত্তিংশক্লোকে একৃষ্ণসমক্ষং এক্লাধিকামুদ্দিশ্য শ্রীললিতাবাক্যং

'মন্তঃক্রেশকলঙ্কিতাঃ কিল বয়ং যামোহদ্য যাম্যাং পুরীং নামং বঞ্চনসঞ্চয়প্রণয়িনং হাস্যং তথাপুত্রকু বৃতি অস্মিন্ সম্পুটিতে গভীরকপটেরাভীরপল্লীরিটে হা সেধাবিনি রাধিকে তব কথং প্রেমা গরীয়ানভূৎ'॥ ৩১॥

'অন্ত: ক্লেশকলছিডাং' অন্ত:কেশেন কলছিতাঃ চিছ্লিতাঃ সভাঃ 'বয়ং' 'অন্য' অনুনা 'ঘামাং' যমসম্বন্ধীয়াং 'পুরীং' বমালয়ং 'যামং' গচ্ছামঃ 'কিল'। 'ভথাপি' 'অয়ং' কৃষ্ণঃ 'বঞ্চনসঞ্জপ্রপালিনং' কপটপ্রেমপূর্ণং 'হাস্তং' 'ন' 'উল্বান্তি' ভ্যালভি; 'হা' 'মেধাবিনি' 'রাধিকে' 'অল্নিন্' 'আভীরপলীবিটে' গোপকুমারকাম্কে 'ভব' 'গরীয়ান্ মহান্ 'প্রেমা' 'কথং' 'অভুং' ৽ কীনুলে ৽ 'গভীর কপটেও' গভীরকপট বভাবৈঃ 'সম্পানিভে' আছ্লানিত চরিত্রে ॥০১॥

আমরা হৃদয়যাতনায় কাতর হইয়া এখনই যমালয়ে যাইতে প্রস্তুত আছি; তথাপি ইনি (কৃষ্ণ) বঞ্চনাপূর্ণ হাসি পরিত্যাগ করিলেন না। হা রাধিকে ! তুমি বৃদ্ধিনতী, কিরপে এই গোপকুমার ধূর্ত্তে তোমার মহান্প্রেম উদিত হইল ? ॥৩১॥

তথা তত্ত্বৈব তৃতীয়াঙ্কে অক্তমশ্লোকে প্রীকৃষ্ণং প্রতি পৌর্ণমাদীবাকাং

'হিছা দূরে পথি ধবতরোরন্তিকং ধর্মদেতে। উঙ্গোদ্রা গুরুশিথরি থং রংহদা লজ্মান্তী লেভে কৃষ্ণার্থব নবরদা রাধিকাবাহিনী ছাং বাখীচিভিঃ কিমিব বিমুখীভাবমদ্যা করোষি'॥ ৩২॥

ছে 'ক্ষাৰ্থব !' ক্ষসমুদ্ৰ ! 'নবঘনরসা' ঘনীভূতনবরসশালেনী 'রাধিকা- বাহিনী' রাধিকা নামনদী 'থাং' 'লেভে' । বিং কুজা ? 'ধবতরোঃ' পতিরূপ-রুক্ষস্য 'অস্তিকং' নিক্টং 'দূরে' 'হিছা' তাজ্যু ; 'পথি' মার্গে 'ধর্মদেহোঃ' কুলবর্মারপদেহভো:'ভলোদগ্রা'ভঙ্গে উদীর্ণমগ্রং যন্যাঃ সা ; পুনঃ'গুক শিখরিগং' গুকুজনকপপর্বতং 'রংহ্সা' বেগেন 'লজ্বরগ্রী' সহী । 'ছ্ঞ 'বাগ্রীচিভিঃ' বাক্যভরবৈঃ 'ক্মিব' কিমিতি কথং 'অস্যাঃ' 'বিমুখীভাবং' 'ক্রেরি' ॥৩২॥

হে কুফার্ণব ! নবরস শালিনী রাধানদী পতিত্র পরি-

ভ্যাপ করিয়া, কুলধর্ম সতু ভঙ্গ করিয়া ও গুরুজন-পিরি বেগে লগুন করিয়া তোমাতে মিলিতে আসিতেছিল; তুমি বাক্যভরঙ্গ বিস্তার করিয়া কেন তাহার বিমুখীভাব করিলে ? ॥৩২॥

রায় কছে 'বুন্দাবনে মুরলী নিংখন;
ক্বন্ধ রাধিকার কৈছে করিয়াছ বর্ণন ?
ক্বন্ধ তোমার কবিত্ব শুনি হয় চমৎকার'।
ক্রমে রূপ গোঁদাঞি ক্রে করি নম্বার।

त्रन्नावनः यथा विषयमाथत्व প্রথমাক্তে উনবিংশক্লোকে বৃন্দাবনং দৃষ্টা প্রীকৃষ্ণবাক্যং

'হৃগদ্ধে মাকন্দপ্রকরমকরন্দস্ত মধুরে বিনিস্তন্দে বন্দীকৃতমধুপরন্দং মুহুরিদং কৃতান্দোলং মন্দোন্নতিভিরনিলৈ শ্চন্দনগিরে শ্মানন্দং রুন্দাবিপিনমতুলং তুন্দিলয়তি'॥ ৩৩॥

সংখ মধুমদল ! 'ইদং' দৃশ্যমানং 'বৃন্দা বিপিনং' বৃন্দাবনং 'মম' অত্লং 'আনন্দং' 'ভূন্দিলরভি' বর্জয়িত। কীদৃশং তৎ ? 'মাকলপ্রকর্মকরন্দস্য' মাকলানাং আত্রাগাং প্রকর্মাণং সম্ভানাং মকর্মস্য 'মধুরে' মনোহরে 'হুগর্জা' 'বিনিশুলে' ক্ষরতি সভি 'মূহুং' অন্থানিনং 'বন্দাক্তমধুপবৃন্দং' বন্দীকৃতঃ মধুপবৃন্দ যত্র তৎ। পুন: 'চন্দন গিরেং' মলয়পর্কাত ভা 'অনিলৈঃ কর্ভ্টতঃ 'মনোংছভিতিং' অরবহৃত রৈঃ করণভূটতঃ 'কৃতান্দোনং' কৃতঃ আন্দোলং যত্র তৎ॥৩৩॥

যেপানে চুত্মুকুলের মধুর স্থগন্ধে মধুপার্ন্দ বন্দার্ক ত হইয়া রহিয়াছে; আর যেখানে অফুদিন মলরানিল প্রবাহিত হইয়া বনরাজিকে অর্লবিস্তর আন্দোলিত করিতেছে; হে সথে! এই সেই র্ন্দাবন আমার অতুল আনন্দ বর্জন ক্রিতেছে॥ ৩৩॥ তথা তত্ত্বৈ প্রথমাঙ্কে বিংশক্লোকে শ্রীদামানং প্রক্তি শ্রীবলদেববাক্যং

> 'রন্দাবনং দিব্যলতাপরীতং লতাশ্চ পুষ্পক্ষুরিতাগ্রভাজঃ পুষ্পাণি চ ক্ষীতমধুরতানি মধুরতাশ্চ শ্রুতিহারিগীতাঃ'॥ ৩৪॥

'বুকাবনং' কীদৃশং ? 'দিব্যলভাপরীতং' দিব্যলভাভি: বেষ্টিতং ভাৎ ; 'চ' পুন: অভা: 'লভা:' কীদৃশাঃ ? 'পুল্পফ্রিভাগ্রভাল্লঃ' পুল্পৈ: শোভি ভারং ভলন্তি যান্তা: 'অপি' পুন: অস্যাঃ 'পুল্পাণি' কীদৃশানি 'ফীভ্যপু ব্রতানি' ফীভা: উন্মতা: মধুক্রভা: বেষু তানি। 'মধুব্রতাশ্চ' কীদৃশাঃ 'শুভি হারিগীভাঃ' শ্রভিমধুবং গীতং বেষাং তে ॥৩৪॥

বৃন্দাবন দিব্যলতায় কেমন বেষ্টিত! লতাগুলির অগ্র-ভাগ নানা পুষ্পে অনুরঞ্জিত; প্রতি পুষ্পে মধুকর বিরাজ করিতেছে; মধুকরনিকর আবার কেমন কর্ণস্থদ গান করিতে প্রবৃত্ত ইইয়াছে!॥ ৩৪॥

তথা তত্ত্বৈ প্রথমাঙ্কে দপ্তবিংশশ্লোকে মধুমঙ্গলং প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যং

> কচিন্ত, ক্ষীগীতং কচিদনিলভগীশিশিরতা কচিদ্ধলীলাদ্যং কচিদমলমল্লীপরিমলঃ কচিদ্ধারাশালী করকফলপালীরসভরে। হুষীকাণাং বুন্দং প্রয়েদয়তি বুন্দাবনমিদং'॥ ৩৫॥

'ইদং' 'বুক্দাবনং' 'ফ্বীকাণাং' ইব্রিয়াণাং 'বুক্দং' সমূহং 'প্রমোদয়ভি' হর্ষয়ভি; কীদৃশং ? 'কচিং' ক্সিংক্তিং হানে 'ভ্সীগীভং' ভবতী ভিশেষঃ; 'কচিং' 'অনিলভঙ্গীশিশিৱভা' অনিলানাং ভঙ্গা আক্ষোলনেন শৈতাং; 'কচিং' 'বলীলাসাং' লভিকানর্জনং 'ক্চিং' 'অমলম্লীপ্রিমলা' ম্লিকা- কুস্থানাং নির্দ্দলঃ সৌগন্ধঃ; 'ক্চিৎ' 'ধারাশালী' ধারাবাহী 'করক্ফলগালী-রসভর:' দাড়িমফলশ্রেণীনাং রসপূর্ণতা লক্ষ্যতে ইতিশেষ: ॥৩৫॥

কোন স্থানে ভৃঙ্গগণ গান করিতেছে; কোথাও শীতল বায়ু প্রবাহিত হইতেছে; কোথাও বনলতা নৃত্য করি-তেছে: কোন থানে মল্লিকা পুষ্পের অমলপরিমল প্রবাহিত ইইতেছে; এবং কোথাও বা প্রকাড়িম্বশ্রেণী বিদীর্ণ হওয়াতে তাহ৷ হইতে রসধারা পাত হইতেছে: সথে! দেথ রুদাবন কেমন আমাদের ইন্দ্রিয়ত্বথ বর্দ্ধন করিতেছে ? ॥ ৩৫॥

মুরলী যথা তত্ত্রৈব তৃতীয়াঙ্কে প্রথমশ্লোকে পৌর্ণমাদী-বাকংং

> 'পরায়ন্তা**ঙ্গ**ুষ্ঠত্রয়মসিতরত্নৈকভয়তো वरुखी मःकीर्त्। মণिভित्रकृरेन छए পরিम्ती তয়োর্মধ্যে হীরোজ্জুলবিমল জামুনদময়ী করে কল্যাণীয়ং বিহরতি হরেঃ কেলিমুরলী'॥ ৩৬॥

'হরেঃ' রুঞ্চদ্য 'করে' হতেও 'ইরং' দুশ্যমানা 'কল্যানী' 'কেলিমুরলী' 'বিহরভি'। 'উভয়তঃ' শিরসি পুচেহ চ 'অংকৃষ্ঠতায়ং' অসুষ্ঠতায়পরিমিভং এপে দেশং বাাপা 'অসিতরতৈরং' ইক্রমীলমণিভিঃ 'পরাষ্টা'খচিতা; 'ভৎপরিসরৌ' শিরোংকুঠঅয়াভরমকুঠঅয়ং বাাপা তথা পূর্কাকুঠএয়াং পূর্কমকুঠঅয়ং ब्राभा यो प्ती পরিসংগ্রি ইতার্থ: 'ককেলেং' অকলবর্ণমণিভি: 'সকীরে'। সভৌ 'বহন্তী'। 'ভংলাঃ' মধ্যে ভবৈৰ ব্যাথ্যেরং 'হীরে।জ্জলবিমলজাস্কু-नत्तमत्री' शेटेतक ब्लाग्य ९ विमालः आवासूननः व्यर्गः खनाशी ॥०७॥

এই কল্যাণী কেলিমুরলী হরিকরে কেমন শোভা পাইতেছে ! ইহার মুখ ও পুচ্ছদেশে অঙ্গুঠত্রয়স্থান ইল্র-নীলমণি ছারা খচিত; ঐ স্থানের উভয়পার্বে ঐ পরিমিত পরিসর অরুণবর্ণমণি দারা সংকীর্ণ; এবং তত্ত্ভয়ের মধ্যস্থান হীরক ও বিমল স্থবর্ণে স্থাঠিত ॥ ৩৬ ॥

তথা তত্ত্বৈ পঞ্চমাঙ্কে পঞ্চদশশ্লোকে বিশাখাসমক্ষং বংশীং প্রতি শ্রীরাধিকাবাক্যং

> 'সদ্বংশত স্তব জনিঃ পুরুষোত্তমস্য পাণোস্থিতি মুরিলিকে সরলাদি জাত্যা কমাত্ত্যা বত গুরো বিষমা গৃহীতা গোপাঙ্গনাগণবিমোহনমত্ত্রণীক্ষা' ॥ ৩৭ ॥

হে 'মুরলিকে' ! 'সদংশক্তঃ' মহাবংশাৎ (দার্থমিদং) 'ভব' জিনিঃ' জন্ম আসীৎ ; 'পুরুবোত্তমস্য' শ্রীকৃষ্ণস্য 'পাণো' হত্তে তব 'দ্বিভিঃ' অধিষ্ঠান ছাৎ ; 'জাভ্যা' করণমা ছং 'সরলা' 'জিনি' ; 'বত' আশ্চর্যো 'কুমাং' 'গুরোঃ' সকাশাৎ কমাৎ কারণাৎ বা 'ছয়া' 'বিষমা' 'গোপান্ধনাগণবিমোহনমন্ত্রীক্ষা' 'গুহীভা' ॥৩৭॥

শ্রীরাধা বিশাখাসমকে মুরলীকে তিরকার করিতে-ছেনঃ—হে মুরলিকে! তোমার জন্ম সদংশে, স্থিতি পুরু-বোত্তমের হস্তে, জাত্যংশে তুমি সরলাও বট; তবে কেন হার! তুমি গোপাঙ্গনাবিমোহনকারী বিষমমন্ত্রে দীক্ষিত হইলে १॥ ৩৭॥

তথা তত্ত্বৈ চতুর্থাক্ষে অন্টমশ্লোকে পদ্মাং প্রতি চন্দ্রাবলীবাক্যং

'দখি মুরলি বিশালছিদ্রজালেন পূর্ণ। লঘুরতিকঠিনা ছং নীরদা গ্রন্থিলাদি তদপি ভজ্ঞদি শখচ্চু স্থনানন্দদান্তং ছরিকরপরিরস্তং কেন পুণ্যোদয়েন'॥ ৩৮॥ হে 'দখি' 'মুরলি'! 'দং' 'বিশালছিদ্রজালেন' 'পূর্ণা' অদি; 'লঘু': 'অভি কঠিনা' 'নীরসা' শুকা 'গ্রন্থিকা চ' 'অসি' ; 'ভদপি' তথাপি 'কেন' অনির্ব্তনীয়েন 'পুণোদয়েন' 'হ'রিকরপরিরন্তং' শ্রীক্কফণ্ড করালিজনং তথা 'চুধনানন্দযাক্রং' শ্রীমুধচুখনাৎ খনীভূতানন্দং 'শর্খং' নিরন্তরং 'ভজসি'॥৩৮॥

স্থি। মুরলি। ভূমি ত ছিদ্রজালে পূর্ণ, লঘু, অতি কঠিন, এছিযুক্ত ও রসহীন; তবে কোন্ পূণ্যবলে ভূমি নিরন্তর হরিকরালিসন ও শ্রীমুবচুম্বনম্ব প্রাপ্ত ইইতেছে ? ॥ ০৮॥

তথা তত্ত্বৈ প্রথমাঙ্কে ত্রোবিংশক্লোকে প্রীকৃষ্ণং প্রতি মধ্মসলবাক্যং

> 'রুম্বরমৃভ্ত শচমৎকৃতিপারং কুর্বন্ মৃছ্ স্তল্ব রং ধ্যানাদন্তরয়ন্ দনন্দনম্থান্ বিস্মারয়ন্ বেধসং উৎস্ক্যাবলিভি ব'লিং চটুলয়ন্ ভোগীক্রমাঘূর্ণয়ন্ ভিন্দমণ্ডকটাহভিত্তিমভিতো বভাষ বংশীধ্বনিঃ'॥৩৯॥

আমং বংকীদেনি: 'অওকটাহভিডিং' ব্রহ্মাণ্ডকটাহস্য ভিডিং মূল-দেশং 'মভিডঃ' সর্কাডোভাবে 'ভিক্সন্' সন্ 'ব্রাম' ধাবভিম্ম; পুনঃ কিং কুর্কন্? 'অষ্চ্ডঃ' মেঘান্ 'কুক্ষন্'; 'ভষুরং' গলক্রিশেষং 'মূভঃ' বার-ঘারং 'চমৎক্রতিপরং' আক্র্যানিছেডং 'কুর্কন্'; পুনঃ 'সনক্ষনম্থান্' ব্রহ্মণঃ মানসপ্রান্ 'ধ্যানাৎ' ব্রহ্মধ্যানাৎ 'অন্তর্মন্' অন্তর্ধাপ্যন্; পুনঃ 'বেধসং' বিধাতারং 'নিম্মারমন্' বিম্মাপ্যন্ পুনঃ'ঔৎস্ক্যাবলিভিঃ' আনক্ষম্ইছঃ 'বিশিং' পাতালত্বং বলিয়াজং 'চটুল্যন্' চঞ্ল্যন্ 'ভোপীক্রং' সর্পেক্রং আন্তর্গ্যন্'সন্ ♪১১॥

নেঘগণকে গুস্তিত করিয়া, গন্ধর্বগণকে বারন্থার আশ্চ-ব্যান্থিত করিয়া, সনন্দনপ্রভৃতি ঋষিগণকে ধ্যানচ্যুত করিয়া, বিধাতাকে বিশ্বিত করিয়া, পাতালে বলিরাজের আনন্দবর্ধন করিয়া, অনস্তকে বিঘূর্ণিত করিয়া এবং ব্রহ্মা-শুর আমূল ভেদ করিয়া এই বংশীধ্বনি দশদিকে বিচরণ করিতে লাগিল ॥ ৩৯ ॥ তথা তত্ত্বৈ প্রথমাঙ্কে চতুর্দশলোকে নানীমুখীং প্রতি পৌর্থমাসীবাক্যং

> 'অয়ং নয়নদণ্ডিতপ্রবরপুগুরীকপ্রভং প্রভাতি নবজাগুড়ছ্যতিবিড়ম্মি পীতাম্বরঃ অরণ্যজপরিষ্কিয়াদমিতদিব্যবেশাদরে। হরিম্মণিমনোহরদ্যতিভিক্লম্জ্বলাস্বো হরিঃ'॥ ৪০॥

'জনং' 'হরি:' 'হরিঅণিমনোহর ছাতিভি:' ইক্রনীলম ণিভা: মনোহর-কান্তিভি: 'উজ্জনাল:' সন্ 'প্রভাতি'শোভতে; কীদৃশঃ ? 'নমনদণ্ডিত প্রবর্ব পৃথরীক প্রভ:' নরনাভ্যাং দণ্ডিত। নির্জিন্তা প্রবর্বাণাং প্রভাগাং পৃথরীকানাং প্রভা বেন সং; পুনং 'নবজান্তভু ছাতি বিভ্সিপীভাষর:' নবজান্তভুসা নবক্ষুমত্ত ছাভাাং কান্তাঃ বিজ্মনীলং শীত্রসনং যদ্য সং; পুনং 'অরণাজ্ম পরিজ্মিলানিটিভি বিভ্রেশালর:' অরণাজ্জাভি: বনজাভাভি: পরিজ্ঞিলাভি: পরপ্রপাদিরচিভবেশভ্যাভি: দমিভ: বিভ্সিতঃ দিব্যবেশানাং আদরঃ শোভা বেন সংগাল্য।

আহা ! এই হরি কি হলের শোভা পাইতেছেন ! ইন্দ্র-নালমণি অপেকাও ই'হার অঙ্গকান্তি উজ্জ্বলতর ; নয়ন-শোভায় প্রফুল্লপুগুরীক প্রভাহীন হইয়াছে ; ই'হার পীতা-দ্বর নবকুস্কুমের ছ্যুতিকে বিভূষিত করিতেছে ; এবং বনজ-ভূষা দিব্যবেশের আদরকেও দমন করিতেছে ॥ ৪০॥

তথা ললিতমাধবে চতুর্থাঙ্কে সপ্তবিংশশ্লোকে ললিত। শ্রীরাধামাহ।

'জজাধস্তটসঙ্গিদক্ষিণপদং কিঞ্চিছিত্মত্রিকং সাচিস্তস্তিতকন্ধরং সথি তিরঃ সঞ্চারি নেত্রাঞ্জং বংশীং কূট্রালিতে দধানমধরে লোলাঙ্গুলীসঙ্গতাং বিজ্ঞজ্বরং বরাঙ্গি পরমানন্দং পুরঃ স্বীকৃক্ণ' ॥৪১॥ হে 'স্বি' 'বরাঙ্গি'! রাধিকে 'পুরং' অত্যে 'পরমানন্দং' মৃত্তিমন্তং পর- মানকং 'বীকুক' জনীকুক। কীদৃশং তং? 'জন্তায়ন্তটনলিদক্ষিণদং' বামলকায়ন্তটে দিল সংলগ্যং দক্ষিণদং যা তং; পুন: 'কিঞ্ছিছিপুগ্যত্তিকং' কিঞ্ছিং ঈবং বিভ্যানি বক্রাণি ত্রীণি গ্রীবাকটিচরণানি বস্য তং; 'সাচিত্তি ভিত কছরং' সাচিঃ বক্রতথা স্তন্তিভক্ত কছরং হৃদদেশা যস্য তং; পুন: 'তিরঃসঞ্চারিনেত্রাঞ্চলং ভিরঃ ভির্যান্ সঞ্চারী সঞ্চরণশীলো নেত্রাঞ্চলা বস্য তং। 'কূট্রলিতে' ঈবংলীলিতে 'অধরে' 'লোলাকুলীসঙ্গতাং' লোলাভি ভক্ষাভিঃ ক্রৌডাতিরিতার্থং অঙ্কুলীভিঃ সঙ্গভাং সংগ্রাপ্তাং 'বংকীং' মুরলীং 'দ্ধানং'; পুন: 'বিভ্রন্তুভ্রমরং' বিভ্রন্তেট ইতস্ততঃ সঞ্চরত্তেট ক্রবাবের ল্রম্রে ব্যা তং॥৪১॥

বাঁহার বামজন্তার অধোভাগে দক্ষিণচরণ মিলিত রহিয়াছে; বাঁহার তিন অঙ্গ ঈষৎ বক্র, ক্ষন্ধদেশ বক্রভাবে স্তম্ভিত, নেত্রাঞ্চল তির্য্যগ্ভাবে সঞ্চালিত; বাঁহার ক্লয়-ছুমালিত অধরে চঞ্চলাঙ্গুলিসঙ্গতমূরলী শোভা পাই-তেছে; এবং বাঁহার ক্রন্তমর সঞ্চরণ করিতেছে; হে বরাঙ্গি! প্রোভাগন্থিত সেই মূর্ত্তিমান্ প্রমানন্দকে তুমি অঙ্গীকার কর ॥ ৪১॥

তথা তত্ত্বৈব প্রথমাঙ্কে পঞ্চন্থারিংশশ্লোকে জ্রীরাধা ললিতামাহ

হে 'সুমুখি'! ললিতে! 'নিশিতদীর্ঘণাঙ্গটজজ্টাভি:' দীর্ঘণাঙ্গমেব নিশিত: শানিত: টঙ্গ: খনিজং খননাত্ত্তিশেষ গুণা ছটাভি: জালাভি: 'কুলবরজম্ধর্মগ্রাবর্কানি' বরাজনানাং কুলধর্মা এব গ্রাবর্কানি প্রস্তর-স্বৃহান্ 'ভিন্দন্' 'পুরং' জাশ্ধ: 'জপ্র্যং' 'কং' 'বিখর্কা' 'যুগপ্থ' এক- স্মিরেবকালে 'মরকতমণিলকৈঃ' করণেঃ স্বীয়স্তামদৌন্দর্ব্যেরিভার্থঃ 'গোঠ-কক্ষাং' 'চিনোভি' রচয়তি ত্যাং বলেতার্থঃ ॥৪२॥

জীরাধিক। পুরোভাগে ক্ঞাদর্শন করিয়া চমৎকারপরিভাবিত হইয়া ললিতাকে বলিতেছেন, হে সুমুথি! পুরোবর্তী এ কোন্ অপূর্ব বিশ্বকর্ম। বল, যিনি দীর্ঘাপাঙ্গরূপ
শাণিতাক্রচ্ছটায় কুলবধ্দিগের কুলধর্মরূপ পাষাণ ভেদ
করতঃ যুগপৎ লক্ষ্যরক্তমণি দিয়া গোষ্ঠকক্ষা রচনা
করিতেছেন ? ॥ ৪২ ॥

তথা তত্ত্বৈ প্রথম ক্ষে দিচন্বারিংশশোকে জ্রীরাধিক ং প্রতি ললিতাবাক্যং।

'নবান্ধুরমগুলীমদবিড়ন্বিদেহত্যতি র্জেন্দ্রকৃলচন্দ্রমাঃ স্ফুরতি কোহপি নব্যে। যুবা দথি স্থিরকুলাঙ্গনানিকরনীবিবন্ধার্গল-ছিদাকরণকোতুকী জয়তি যদ্য বংশীধ্বনিঃ'॥ ৪৩॥

হে 'निथ'! 'বলেজকুলচজ্রমাঃ' 'কোছপি' 'নবাঃ' 'ঘুনা' 'ফুরভি' বিরাজতে; কীদৃশঃ সঃ ? 'নবাসুধ্রমগুলীমদবিড় স্থিদেহছাতিঃ' নব-মেবসমূহানাং মদস্য গর্কান্ত বিড়ম্বনশীলা দেহকান্তি র্যক্ত সঃ। 'ঘস্য' যুবকস্ত 'বংশীধ্বনিঃ' 'জয়ভি'। কীদৃশঃ স বংশীধ্বনিঃ ? ভদাহ্' 'ছেরকুলাঙ্গনানি করনীবিবদ্ধার্গনিছিদাকরণকোতৃকী' সাধ্বীকুলবধৃসমূহানাং নীবিবদ্ধ এব অর্গলং বন্ধনং তস্য ছিদাকরণে ছিলকরণে কৌতৃকং অস্যান্তীভি ॥৪৩॥

স্থি। অজেন্দ্রক্লচন্দ্রমাঃ এক অনির্বাচনীয় নবযুবক বিরাজ করিতেছেন; ইঁহার অঙ্গকান্তি দ্বারা নবজলধর-মগুলীর গর্বা বিজ্ঞিত হইয়াছে; আর ই হারই বংশীধ্বনি যেন কোতুকসহকারে কুলবধ্দিগের নীবিবন্ধরূপ অর্গল ছেদন করত জয়লাভ করিতেছে ॥৪০॥

তথা বিদগ্ধমাধ্বে প্রথমাঙ্কে অফাবিংশশ্লোকে জীরা-धिकाया ऋतरः मृख्या त्र्रार्थमामीवाकाः

> 'বলাদক্ষে। ল ক্ষীঃ কবলয়তি নব্যং কুবলয়ং মুখোল্লাসঃ ফুলং কমলবনমূল্ভয়েতি চ দশাং ক্টাম্টাপ্দম্পিন্যুত্যাঙ্গিকক্চি বিবিচিত্রং রাধায়। কিমপি কিল রূপং বিলস্তি' ॥৪৪॥

অস্যা: 'অক্ষো:' নেত্রেয়া: 'লক্ষীঃ' শোভা 'বলাং' 'নব্যং' নূতন-প্রফ্টিতং 'কুবলয়ং' 'কবলয়তি' গ্রস্তি-; অস্তাঃ 'মুখোল্লাসঃ' উল্লানমনী মুখশোভা 'ফ্লং' 'কমলবনং' 'উল্লভ্যয়তি' 'চ' দুরীকরোতি চ; অংস্তা 'আঙ্গিকরুচিঃ' অঙ্গকান্তিঃ 'অষ্টাপদম্পি' সুবর্ণম্পি 'কষ্টাং' ক্লেশযুক্তাং 'দশাং' 'নমতি' প্রাপমতি; অতএব 'রাধায়াঃ' 'রূপং' 'কিল' 'কিমপি' 'বিচিত্রং' যথা স্থাতথা 'বিলস্তি' বিরাজ্তে। ৪৪।

গ্রীরাধার রূপ কি বিচিত্ররূপে বিলাস করিতেছে ! ই'হার নয়নশোভা নবপ্রস্ফুটিত কুবলয়শোভাকে আদ করিয়া কেলিয়াছে; ইঁহার উল্লাদময়ী মুখশোভা কমল-বনের শোভাকে দূরে ফেলিয়াছে; এবং ই হার অঙ্গণোভা স্বর্ণশোভাকেও কফৌর দশায় নিক্ষেপ করিয়াছে ॥৪৪॥

তথা তত্ত্বৈব পঞ্মাঙ্কে অফাদশশ্লোকে মধুমঙ্গলং প্রতি ঐকুষ্ণবাক্যং

> 'বিধুরেতি দিবা বিরূপতাং শতপত্রং বত সর্ব্বরীমুখে। रेिं कि कि मन खिराञ्चनः তুলনামহ তি মৎ প্রিয়াননং' ॥ ৪৫ ॥

হে মধুমলল ৷ 'বিধুং' চক্রঃ শোভাসম্পলোহপি 'দিব।' দিবসে 'বিক্ল পভাং' শোভাশ্ভঃ হাং 'এডি' প্রাগোতি তথা 'শতপত্রং' 'স্ক্রীযুৰে' রজন্তাং বিরূপতামেতীতিশেষঃ 'বত' আশ্চর্য্যে 'ইতি' জন্মান্দ্রেতোঃ 'সদা' শ্রিমা' শোভ্যা 'উজ্জ্বনং' 'মৎপ্রিমাননং' শ্রীয়াধিকাননং'কেন' সহ 'তুলনাং' 'আইতি' ন কেনাপীত্যর্থঃ। ৪৫।

চন্দ্র দিবাভাগে শোভাহীন হয়, পদ্মও নিশাকালে নিস্প্রভ হইয়া থাকে; হায়! তবে দক্ষণা শোভাময় আমার প্রিয়ানন কাহার সহিত্তু লনা হইবে १॥৪৫॥

তথা তত্ত্বৈব দ্বিতীয়াল্কে পঞ্চাশৎক্লোকে বিশাখাবাক্যা-মস্তরং শ্রীকৃষ্ণবাক্যং

> 'প্রমদরসতরঙ্গন্মেরগগুস্থলায়াঃ স্মরধনুরনুবন্ধিজ্ঞলতালাস্যভাজঃ মদকলচলভূঙ্গীভ্রান্তিভঙ্গীং দধানো হুদর্মিদমদাজ্জীৎ পক্ষালাক্ষ্যাঃ কটাক্ষ্যঃ'॥৪৬॥

পেক্সলাক্যাঃ' পক্ষেবে পক্ষযুক্তে অক্ষিণী যতাঃ ভতাঃ রাধায়াঃ 'কটাক্ষঃ' 'ইদং' মম 'হৃদয়ং' 'অদাজ্জীং' দদংশ ; কিং কুর্বন্ ? 'মদকলচলভ্দীলান্তি-জদীং' মদেন মন্তত্রা হেতুনা কলা কলরবপূর্ণা চলা চঞ্চলাচ যা ভৃদী তক্ষা ভাজ্যা ভ্রমত্ত ভঙ্গীং 'দধানঃ' সম্পাদয়ন্। রাধায়াঃ কীদৃশায়াঃ? 'প্রেমদরসভরক্ষেরণগুত্লায়াঃ' আনন্দরসভরক্ষে মেরং ঈষ্কাত্ত্তং প্রভুলং যস্যাঃ তত্তাঃ। পুনঃ 'অরধফ্রফ্বক্রিকালভালাত্তালঃ' কামধ্যুং অফ্বকিনী সম্কীয়া সদৃশেতি যাবৎ যা জলতা ভত্তাঃ লাত্তং নর্ত্তনং ভক্তি যা তত্তাঃ। ৪৬।

আনন্দরসতরক্ষে যাঁহার গগুরুগল ঈষৎ উৎফুল্ল হইরাছে; স্মরধন্মসদৃশ যাঁহার জ্ঞালতা নৃত্য করিতেছে;
সেই পক্ষালাকী শ্রীরাধার কটাক্ষ মদমতা ও মধুরভাষিণী
চঞ্চলা ভ্রমনীর ভ্রান্তি উৎপন্ধ করিয়া আমার হৃদয় দংশন
করিল ॥৪৬॥

রায় কহে 'ভোমার কবিতা অম্ভের ধার; বিতীয় নাটকের কহ নান্দী বাবহার'।
ক্রপ কচে 'কাহা তুমি স্থ্যসম ভাস ?
মুঞি কোন্ ক্ষুদ্র যেন থাদ্যাত প্রকাশ ?
ভোমার আগে ধাই গি এই মুগবাদান;
এত বলি নান্দী শ্লোক করিল বাাখানে।

্তথা ললিতমাধবে প্রথমাঙ্কে প্রথমশ্লোকে জ্রীরূপ-গোষামিবাক্যং

> 'স্বরিপুসদৃশামুরোজকোকা-মু্থকমলানি চ থেদয়মথগুঃ চিরমথিলস্থ্যস্চকোরনন্দী দিশতু মুকুন্দযশঃশশী মুদং বঃ ॥৪৭॥

'মৃক্লবশংশশী' প্রীকৃষ্ণজ যশ এব চল্র: 'বঃ' যুমভার 'মৃদং' আনক্ষণ 'দিশত্' দদাত্ 'কীদৃশঃ শশী ? 'অব ৪ঃ' পূর্ণ: কিং কুর্বন্ ? 'স্বরিপু-স্পূশঃ' অস্বরম্পীনাং উরোজ কোনান্ 'উরোজা তানা এব কোনা চক্রবাকা তান্ 'চ' তথা তাসাং 'মৃথকমলানি' 'থেলরন্' সন্ তাসাং পতীনাং নাশাদি চার্থ:। যশংশী পুনং কীদৃশঃ' ? 'চিরং' চিরকালং বাাপা 'অথিল-স্থগতেকোবনক্দী' অথিনা স্কাদ এব ভক্তা এব চকোরা তারক্ষিত্থ শীলং যত সঃ। ধ্ব।

মুক্দের বে অথগু যশঃশশী অত্রকামিনীপাণের স্তন-চক্রবাকের ও মুধকমলের থেদবর্জন করে ও ভক্ত চকোর-গণের হ্রবিধান করে, উহা তোমাদের আন্দদ প্রদান করুক ॥৫৭॥

> 'খিতীয় নান্দী কছ দেখি' রায় পুছিলা; সক্কো; পাইয়া রূপ কহিছে লাগিলা;

তথা তত্ত্বৈ প্রথমাঙ্কে তৃতীয়শ্লোকে সূত্রধারঃ স্থেউ-দেবং প্রণমতি।

> 'নিজপ্রণিয়িতাস্থামুদ্যমাপু বন্ যঃ ক্ষিতে। কিরত্যলম্রীকৃত দিজকুলাধিরাজস্থিতিঃ স লুঞ্তিতমন্ততি শুমে শচীস্থতাধ্যঃ শশী বশীকৃতজগন্মনাঃ কিমপি শশ্ম বিভাস্ততু'॥৪৮॥

'যাং' 'ক্ষিতে)' পৃথিবাং 'উদস্বং' জল্প 'আগ্রুন্' সন্ 'নিজপ্রণায়িতাস্থাং' স্থেনরসামৃতং 'অলং' অভিশরং 'কিরতি' বিভারেয়ভি; ছঃ
'উরীকৃতবিজকুলাধিরাজানিভিঃ' উরীকৃতা অসীকভা বিজকুলেমু অধিরাজঃ
নায়ক ইতি স্থিতিঃ পদবী বেন সঃ; যাস্ত 'লুঞ্ভিতনন্ততিঃ' লুঞ্চিতা তমলাং
জ্ঞানকৈতবাদীনাং ভভিঃ সমূহং বেন সঃ। 'সং' 'দটীস্থতাথ্য' 'শশী'
'মম' 'কিমপি' অনির্কাচনীয়ং 'শগ্র' স্থাং 'বিনাক্ততু' দিশতু; কীদৃশঃ সং
'বিশীকৃত জগনানাং' ব্শীকৃতানি জগতাং মনাংসি বেন সঃ। ৪০।

যিনি ক্ষিতিতলে উদিত হইরা স্থীয় প্রেমায়তস্থা বহুল পরিমাণে বিস্তার করিয়াছেন; যিনি 'দিজকুলাধিরাজ' এই খ্যাতি পাইয়াছেন; যিনি অজ্ঞানতমঃসমূহ বিনাশ করিতে-ছেন; যিনি জগতের মনোহারী; সেই শচীনন্দনশণী আমার স্থা বিধান করুন্॥৪৮॥

ভানিনা প্রাভ্ব বলি অন্তরে উলাল;
বাহিরে কাহন কিছু করি রোবাাভাল।
'কাঁহা তোমার রুফ্টরল কাব্য স্থানিজু?'
তার মধ্যে কেন মিথ্যা স্তুভি কার বিলু'?
রায় কাহে 'রূপের বাক্য অন্তরে পুর;
ভার মধ্যে এক বিলু দিয়াছে কপুর'।
প্রাডু কাহে 'রায় ভোমার ইহাতেও উল্লাল?
ভানিতেই লক্ষা, লোকে করে উপহাল'।

রায় কংহ 'ভোমার কবিতা অম্ভের ধার;
দ্বিতীর নাটকের কহ নান্দী বাবহার'।
রূপ কংহ 'কাহা তুমি স্থ্যিসম ভাস ?
মুঞি কোন্ ক্ষুদ্র বন ধন্যোত প্রকাশ ?
ভোমার আংগে ধাইর এই মুগ্রাদান;
এত বলি নান্দী শ্লোক করিল ব্যাখানে।

তথা ললিতমাধবে প্রথমাঙ্কে প্রথমক্লোকে জ্রীরূপ- বিশেষামিবাক্যং

'স্ররিপুসদৃশামুরোজকোকা-নমুথকমলানি চ থেদয়ন্নথণ্ডঃ চিরমথিলস্থ্ডচেকোরনন্দী দিশতু মুকুন্দযশঃশশী মুদ্ং ৰঃ ॥৪৭॥

'মুক্ দযশ শশী' জীক ক্ষেত্র যশ এব চন্দ্র: 'বং' যুম্মভাং 'মুদং' আন লাং "
'দিশত্' দদাত্ 'কী দৃশ: শশী ? 'অথ এং' পূর্ণ: কিং কুর্বন্ ? 'স্থর রিপ্স্লৃশাং' অস্ত্ররমণীনাং উরোজ কোকান্' উরোজা তনা এব কোকা
চক্রবাকা তান্ 'চ' তথা তাসাং 'মুথক মলানি' 'পেল মন্' সন্তাসাং পতীনাং
নাশাদি ভার্থ:। যশংশী পুন: কী দৃশং' ? 'চিরং' চিরকালং ব্যাপ্য 'জাবিল্স্থগচে কোবনলা' অথিবা স্কাদ এব ভক্তা এব চকোরা তার নিদ্তুং শীলং
বস্তু সঃ। ধণু।

মুকুন্দের বে অথগু যশঃশাশী অন্তরকামিনীগণের স্তন-চক্রবাকের ও মুথকমলের থেদবর্দ্ধন করে ও ভক্ত চকোর-গণের হর্ষবিধান করে, উহা তোমাদের আনন্দ প্রদান করুক ॥৫৭॥

> 'ছিতীয় নান্দী কছ দেখি' রায় পুছিলা; সংক্ষাত পাইয়া রূপ কহিতে লাগিলা।

তথা তত্ত্বৈ প্রথমাঙ্কে তৃতীয়লোকে সূত্রধারঃ বেই-দেবং প্রণমতি।

> 'নিজপ্রণিয়িতাস্থামুদ্যমাপ্রুবন্যঃ ক্ষিতে। কিরত্যলম্রীকৃতৰিজকুলাধিরাজস্থিতিঃ দ লুঞ্তিতমস্ততি শ্মি শচীস্থতাথ্যঃ শশী বশীকৃতজগন্মনাঃ কিমপি শর্ম বিভাস্ততু'॥৪৮॥

্বঃ' ক্ষিতে)' পৃথিবাং 'উদলং' জল 'আপুবন্' দন্ 'নিজপ্রাছিকাছবং' স্বপ্রেমরসামৃতং 'আলং' অভিশরং 'কিরতি' বিভারেরভি; ছঃ
'উরীকৃতবিজকুলাধিরাজভিভিঃ' উরীকৃতা অসীকৃতা বিজকুলেম্ অধিরাজঃ
নায়ক ইতি স্থিতিঃ পদবী যেন সঃ; যস্ত 'লুঞ্ভিতনভাতিঃ' লুঞ্জিতা তমসাং
জ্ঞানকৈতবাদীনাং ভভিঃ সমূহঃ যেন সঃ। 'সঃ' 'শচীম্পতাধাঃ' 'শশী'
'মম' 'কিমপি' অনির্কাচনীয়ং 'শগ্রু স্থাং 'বিন্যুক্ত দিশতু; কীদৃশঃ সঃ
'বনীকৃত জগনানাঃ' বশীকৃতানি জগতাং মনাংসি যেন সঃ। ৪০।

যিনি ক্ষিতিতলে উদিত হইরা স্বীর প্রেমায়তস্থা বহুল পরিমাণে বিস্তার করিয়াছেন; যিনি 'দ্বিজ্কুলাধিরাজ' এই খ্যাতি পাইয়াছেন; যিনি অ্জানতমঃসমূহ বিনাশ করিতে-ছেন; যিনি জগতের মনোহারী; সেই শ্চীনন্দনশণী আমার স্থা বিধান করুন্॥৪৮॥

্তিনিরা প্রাক্তর যদি অন্তরে উল্লাদ;
বাহিরে কহেন কিছু করি রোষাভাদ।
কোঁহা তোমার ক্ষরেদ কাব্য স্থাদিজ্?
তার মধ্যে কেন মিথা স্ততি কার বিন্দৃ'?
রায় কহে 'কণের বাক্য অমৃতের পুর;
ভার মধ্যে এক বিন্দু দিয়াছে কপুর'।
প্রাক্ত কহে 'রায় ভোমার ইহাতেও উল্লাদ?
ভানিতেই লজ্জা, লোকে করে উপহাদ'।

রার কছে 'লোকের স্থব ইহার প্রবর্ণে; অভীইদেবের স্থৃতি মঙ্গলাচরশে'। রায় কছে 'কোন্ অফে পাত্রের প্রবেশ ?' তবে ক্লপ গোঁদাঞি কহে ভাহার বিশেষ।

তথাহি ললিতমাধবে প্রথমাঙ্কে দশমশ্লোকে নটীং প্রতি সূত্রধারবাক্যং

'নটতা কিরাতরাজং নিহত্য রঙ্গস্থলে কলানিধিনা। সময়ে তেন বিধেয়ং গুণবতীতারাকরগ্রহণং' ॥৪৯॥

'নটত।' নৃত্যং কুর্কতা 'ডেন' 'কলানিধিনা' ভরামধারিণা নটেন (কুঞেন) 'রঙ্গল্পনে' নৃত্যদর্শনস্থলে (রণ্ডুমৌ) 'কিরাভরাদ্ধং' দেশাধি-কারিণং চুরাড়রাজং (কংসংগ্র) 'নিহত্য' 'সমরে' যথাকালে 'গুণবতী ভারাকরঞ্চ্বং' গুণবভ্যা ভারাঝা কন্তকায়া (রাধারাঃ) পাবিগ্রহ্শং 'বিধেরং'। ৪৯।

কলানিধি [রুঞ] নাচিতে নাচিতে রঙ্গস্থান মধ্যে কিরাত-রাজের [কংসের] প্রাণসংহার করিয়া যথাসময়ে তারার। [রাধার] পাণিগ্রহণ করিবেন॥ ৪৯॥ "

[•]উদ্বাত্যক নাম এই মুখ বিধি অফ; তোমার জাগে ইহা কহি ধার্টেরি তর্জ।

তল্লকণং যথা সাহিত্যদর্পণে দৃশ্যশ্রব্যনিরূপণে ষষ্ঠ-পরিচ্ছেদে ছাত্রিংশপদাং

> 'পদানিস্থগতার্থানি তদর্থগতয়ে নরাঃ। যোজয়ন্তি পদৈরক্যৈঃ স উদ্ঘাত্যক উচ্যতে' ॥৫০॥।

'তৃ' যতঃ 'নরাঃ' 'অগভার্থানি' অগতঃ অবোধিতঃ অর্থো যেষাং ভানি অবোধিতার্থানি 'পদানি' শ্লোকস্ত পদানি 'অট্যঃ' 'পবৈঃ' অট্থঃ 'যোজ- চ্যকঃ' 'উচ্যতে'। তদৃষ্টাস্তো যথা প্রের্জি তুলোকে কলানিধিনা নামা চনেন দেশাধিকারিণং কিরাতরাজং রঙ্গস্থলে নিহত্য নট্যা নপ্ত্যা ভারারাঃ াণিগ্রহণং বিধেয়মিতি স্ত্রধারেণ যৎ স্টিতং রঙ্গস্থলে প্রবেশোস্থয়া পৌর্ণ াক্তা তথে রাধামাধবয়োঃ পাণিবন্ধবেন গৃহীতনিত্যুদ্ধাত্যকঃ কথিতঃ। ৫০।

কোন পদের অর্থবোধজন্য অন্থ অর্থের সহিত ঐ অবোধিত পদের সংযোগ করা গেলে পণ্ডিতেরা তাহাকে উদ্ঘাত্যক বলেন। যেমন পূর্বেজ্ত ক্লোকে কলানিধি নামক
টেজাতীয় কোন ব্যক্তি রক্ত্বলে দেশাধিপতি কিরাতরাজকে নিহত করিয়া নটার নপ্ত্রী তারার পাণিগ্রহণ করিবে,
সূত্রধার কর্ত্বক সূচিত হইলে পোর্ণমাসী নেপথ্য হইতে উহা
শুনিতে পাইয়া রাধামাধবের পরিণয়সূচক মনে করিয়া
অন্য অর্থে গ্রহণ করিলেন ॥ ৫০॥

রায় কছে 'কহ আগে অঙ্গের বিশেষ'; (১) শ্রীরূপ করেন কিছু সংক্ষেপ উদ্দেশ।

তথাহি ললিতমাধরে প্রথমাঙ্কে দাবিংশক্লোকে পৌর্ণ-মাদীং প্রতি গার্গীবাক্যং

'ব্রিয়মবগৃহ্থ গৃহেভ্যঃ কর্ষতি রাধাং বনায় যা নিপুণা। সা জয়তি নিস্ফীর্থা বরবংশজকাকলী দূতী'॥৫১॥

'বা' 'নিপুণা' অকার্যকুশলা 'বরবংশজকাকলী' শ্রেষ্টবংশীধ্বনিরেব 'দ্ভী' 'ছিয়ং' লোকলজাং 'অবগৃছ' স্বত্বা 'গৃহেভ্যঃ' 'নিবসতিভাঃ 'বনায়' বনগমনায় 'রাধাং' 'কর্বন্তি' বলাং গৃহাতি 'সা' ধ্বনিঃ 'জয়তি' কীদুশা সা ? 'নিস্টার্থা' সংযোগকারিশী; ভথাহি বিজ্ঞকার্য্যভারা স্থান্যুনোরেকতরেণ যা; যুক্যো-ভৌ ঘটয়েদেযা নিস্টার্থা নিগদাতে। ৫১।

যে স্বকার্য্যকুশল মুরলীধ্বনি দৃতীরূপ। হইয়া লোক-

লজ্জা হরণ করত জ্রীরাধাকে গৃহ হইতে বনে আকর্ষণ করে; সেই সংযোগকারিণী বংশীধ্বনি জয় যুক্ত হইতেছে॥ ৫১॥

তথা তত্ত্বৈ প্রথমাঙ্কে একবিংশশ্লোকে গার্গীং প্রতি পৌর্ণমাদীবাক্যং

'হরিম্দিশতে রজোভরঃ পুরতঃ সঙ্গময়ত্যমুং তমঃ। অজবামদৃশাং ন পদ্ধতিঃ প্রকটা সর্বদৃশঃ শুতেরপি'॥৫২॥

'রলোভরং' গোক্ররেপুনম্হ: 'হরিং' রুঞং 'উদ্দিশতে' কথমতি ক্ষা-গমনং স্চয়তীত্যথ:। 'ভমঃ' গোধূল্দোতাল্লকার: 'পুরতঃ' অত্যে 'অমুং' হরিং 'সদময়ভি' সংযোজয়তি গোপিকাভি: সহেত্যথ:। অতএব 'অজবাম-দৃশাং' অজাদনানাং 'পদ্ধতিঃ' কুফাদশ্নিগমনপদ্ধতি: 'নর্কদৃশঃ' সর্কেষাং চকুষঃ 'শ্রুতেরপি' বেদাদেরপি 'প্রুক্টা' 'ন' ভবতীতিশেষঃ। ৫২।

গোক্ষুররেণুসকল কৃষ্ণাগমন বলিয়া দিতেছে এবং সম্পুষ্ঠিত অন্ধকার তদীয় সঙ্গম সংঘটন করিতেছে। অত-এব গোপরামাদিগের কৃষ্ণদর্শনের গমনপথ সর্বদর্শিনী শ্রুতির নিকটও প্রকটিত হইল না॥ ৫২॥

তথা তত্ত্বৈব দ্বিতীয়াঙ্কে একাদশশ্লোকে শ্রীকৃষ্ণং দৃষ্ট্বা শ্রীরাধা সথীমাহ

> 'সহচরি নিরাতক্ষঃ কোহয়ং যুবা মুদিরছাতি ব্রজ্পুবি কৃতঃ প্রাপ্তো মাদ্যমতঙ্গজবিভ্রমঃ অহহ চটুলৈরুৎসর্পদ্তি দৃগঞ্চলতক্ষরৈ র্মম ধ্রতিধনং চেতঃকোষাৎ বিলুঠয়তীহ যঃ' ॥৫৩॥

ছে 'সহচরি' 'যা' যুবা 'ইহ' বুলাবনে 'চটুলৈ:' চঞ্চল: 'উৎদর্শন্তি:' ইতস্তত: ত্রমন্তি: 'দৃগঞ্চল ভস্ক হৈ:' নয়নকটাক্ষরপতস্করি: 'মম' 'চেড:কোষাৎ' হুদয়ভাণ্ডারাৎ 'ধৃতিধনং' 'অহহ' থেদে 'বিলুঠন্নতি' দক্ষ্যবদাচরতি; 'অষং' 'যুবা' 'কঃ' ? কীদৃশ: সাং? 'নিরাতস্কঃ' নির্ভর্চিত: পুন: 'মুনির- চ্যুতিঃ' নৰ্মনহাতিঃ। 'ব্ৰজ্বি' 'কুতঃ' কমাৎ 'প্ৰাপ্তঃ গুপুনঃ 'মালাম্ভজ্জবিত্ৰমঃ' মালান্ যো মতক্জ গুৰ্ছিত্ৰো বিলাগে। যন্ত সং। ৫৩।

হে স্থি! মদমত মতঙ্গজের স্থায় বিলাসশালী, নিঃশঙ্ক, নবঘনকান্তি, এই যুবা কে? কোথা হইতে ইনি বৃন্দাবনে আসিলেন? হায়! ইনি স্বীয় চঞ্চলনয়নাঞ্চলরূপ তক্ষর দাবা আমার চিত্তকোষ হইতে ধৈর্যধন অপহরণ করিয়া লইতেছেন॥ ৫০॥

তথা তত্ত্বৈব দ্বিতীয়াঙ্কে দশমশ্লোকে জ্রীরাধিকাং দৃষ্টা জ্রীকৃষ্ণবচনং

> 'বিহার স্থরদীর্ঘিকা মম মনঃ করীন্দ্রস্থ যা বিলোচন চকোররোঃ শরদমন্দচন্দ্রপ্রভা উরোহস্বরতটস্থ চাভরণচারুতারাবলী ময়োন্নতমনোরথৈ রিয়মলন্ডি সা রাধিকা' ॥৫৪॥

'যা' রাধা 'মম' 'মন:করীক্রস্তা' চিত্তরপমতক্ষক্স 'বিহারস্থরদীর্দিক।' বিহারায় নিমিতায় অর্গগঙ্গা ইব স্যাৎ; যা 'বিলোচনচকোরয়োঃ' মম নেজ-চকরয়োঃ 'শরদমন্দচক্রপ্রতা' শরৎকালীনপূর্বচক্রপ্রভারপা স্যাৎ; যা 'উরোহ্যর ভট্ন্যা' মম বক্ষোরাপ আকাশমশুলন্য 'আভরণচাক্তারাবলী' আভরণায় ভ্রণায় নিমিতায় স্ক্রনক্ষরাবলী স্যাৎ; 'উন্নতমনোরবৈঃ' চিরাকাজ্জিতাভিলাবৈঃ করণাঃ 'ময়া' ক্ষেণ অধুনা 'ইয়ং' 'সা' 'য়াধিকা' 'অলন্তি' প্রাপ্রতী। ৫৪।

যিনি আমার মনোরপ মতঙ্গজের বিহারার্থ স্থননদী-রূপা; যিনি আমার লোচনচকোরের শরৎকালীন পূর্ণচন্দ্র-প্রভাসদৃশী; এবং যিনি আমার বক্ষরূপ আকাশতটের

ভূষণ জ্বন্য চারুতারাবলীর ভূল্য ; আজ আমি চিরাকাজ্মিত ্মনোর্থসিদ্ধির সহিত সেই রাধাকে প্রাপ্ত হইলাম। ৫৪॥

> এত শুনি রায় কছে প্রভুর চরণে; 'রূপের কবিত প্রশংসি সহস্র বদনে । কবিত্ব না হয় এই অমৃতের ধার; ্লাটক লক্ষণ এই সিদ্ধান্তের সার। প্রেমপরিপাটী এই অন্তত বর্ণনঃ

- শুনি চিত্ত কর্ণের হয় আনন্দ ঘূর্ণন। তথাহি প্রাচীনক্তশ্লোকঃ।

কিং কাব্যেন কবে স্তস্ত কিং কাণ্ডেন ধনুত্মতঃ। পরস্থ হৃদয়ে লগং ন ঘূর্ণয়তি যচ্ছিরঃ'॥৫৫॥

'किमा' 'करतः' 'कार्यान' कत्रांशन 'किश' खार्याकनः मार्थः 'सम्बन्धः' খামুছজনদা 'কাডেন' শস্ত্রনিক্ষেপেণ 'কিং' প্রয়োজনং স্যাৎ ; 'যুৎ' কাব্যুং কাওক 'পরস্থ' 'হাদরে' 'লগং' সৎ তস্ত 'শিরঃ' যদি 'ন' 'ঘুর্ণয়তি'। ৫৫।

কবির কাব্য রচনায় ও ধাতুকীর শস্ত্রনিক্ষেপের প্রয়োজন কি

। যদি উহা পরছদয়ে বিদ্ধা হইয়া তাহার মস্তক না সুরাইয়া দেয়॥ ৫৫॥

> 'ছোমা শক্তি বিনা জীবের নহে এই বাৰী: তুমি শক্তি দিয়া কহাও হেন অন্তমানি'। প্রভুকহে 'আমা সনে ইহার হইল মিলন; ইহার গুণে ইহায় আমার তৃষ্ট হৈল মন। মধুর প্রাসঞ্জ ইহার কাব্য সালভারে; ঐছে কবিত বিনা নছে রসের প্রচার। সবে কুপা করি ইহারে দেহ এই বর; ব্রজলীলা প্রেমরস বর্ণে নিরস্কর। ইহার বে জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা নাম সনাভন ; পৃথিবীতে বিজ্ঞবর নাহি তার সম।

'তোমার যৈছে বিষয় ত্যাগ ছৈছে ভাঁর রীভি : দৈন্য, বৈরাগ্য, পাণ্ডিত্য, জাঁহাভেই স্থিতি। এই চুই ভাই আমি পাঠাইল বুলাবনে: শক্তি দিয়া ভক্তি শাস্ত্র করিতে প্রবর্ত্তনে'। রায় করে 'ঈশ্বর ভূমি যে চাহ করিছে: কার্ছের পুতৃলী ভূমি পার নচোইতে। মোর মূথে যে সব রস করিলে প্রচারণে: সেই রস দেখি এই ইহার লিখনে। ভজ রূপায় প্রকাশিতে চাহ ব্রজরস: যারে করাও, সেই করিবে; জগৎ তোমার বশ'। তবে মহাপ্রভু কৈল রূপে আলিঙ্গন; জাঁচাবে করাইল স্বার চরণ বৃদ্ধন। অবৈত নিত্যাননাদি সব ভক্তগণ: কুপা করি রূপে সবে কৈল আলিঞ্চন। প্রভুকুপারূপে আরে রূপের সদগ্ণ; দেখি চমৎকার হৈল স্বাকার মন। ভবে মহাপ্রভু সব ভক্ত লঞা গেলা; হরিদাস ঠাকুর রূপে আলিঙ্গন কৈলা। হরিদাস কছে 'ভোমার ভাগ্যের নাহি সীমা: যে সব বর্ণিলে, ইহার কে জানে মহিমা' ? জীরূপ কহেন 'আমি কিছুই নাজানি: যেই মহাপ্ৰভু কহান দেই কহি বাণী'।

তথাহি ভক্তিরদায়তসিক্ষো পূর্ববিভাগে সামাশুভক্তি-লহর্য্যাং দ্বিতীয়শ্লোকে শ্রীরূপগোস্বমিবাক্যং

> 'হ্লদি যস্ত প্রেরণয়া প্রবর্তিতোহহং বরাকরূপোহপি। তস্ত হরেঃ পদক্ষলং বন্দে চৈতন্তদেবস্ত' ॥৫৬॥ টাকা ও ব্যাখ্যা মধ্যঃ ২০১ শ্লোঃ ৪০৭-০৮ প্রং দেও। ৫৬।

এই মত ছাই জন কৃষ্ণকথা রঙ্গে; স্থে কাল গোঙায় রূপ হরিদাস সঙ্গে। চারি মাস রহি সব প্রভুর ভক্তগণ; গোঁসাঞি বিদায় দিল গোঁডে করিতে গমন। শ্রীরূপ প্রভ পদে নীলাজি রহিলা; দোল্যাত্রা প্রভু সঙ্গে আনন্দে দেখিলা। দোল্যাত্রা বই প্রভু রূপে আজ্ঞা দিলা; আনেক প্রসাদ কবি শক্তি সঞারিলা। 'বুন্দাবনে যাও তুমি, রহিও বুন্দাবনে ; একবার ইছা পাঠাইও স্নাত্নে। বেজে যাই বসশাস কব নিকপণ : তীর্থ দব লুপ্ত তার করিও প্রচারণ। রুষ্ণদেবা, রস, ভক্তি করিও প্রচার: আমিও দেখিতে ভাঁহা যাব একবার'। এভ বলি প্রভু ভাঁরে কৈল আলিজন: রূপ গোঁদাঞি শিরে ধরিল প্রভুর চরণ। প্রভক্তগণ পাশে বিদায় লইলা: পুনরপি গৌড়পথে বুন্দাবন আইলা। এইত কহিল পুনঃ রূপের মিলন: ইল যেই শুনে পায় চৈত্তু চরণ। 🗐 রূপ রখুনাথ পদে যার আশ ; হৈতনা চরিতামুত কহে কুঞ্দাদ।

ইতি শ্রীচৈতন্য চরিতামতে অন্ত্যথণ্ডে শ্রীরূপসঙ্গোৎ-সবো নাম প্রথম পরিচ্ছেনঃ। ১।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থ।

বন্দেহহং শ্রীগুরোঃ শ্রীয়ৃত পদকমলং শ্রীগুরূন্ বৈষ্ণবাংশ্চ শ্রীরূপং সাগ্রজাতং সহগণরঘূনাথান্বিতং তং সজীবং সাবৈতং সাবধৃতং পরিজনসহিতং কৃষ্ণচৈতভাদেবং শ্রীরাধাকৃষ্ণপাদান্ সহগণললিতান্ শ্রীবিশাথান্বিতাংশচ ॥৫৭॥

'শ্রীগুরোং' স্বাভীষ্টদেবস্ত 'শ্রীযুত্রপদক্ষলং' 'শ্রীগুরন্' গুরুপরম-গুর্মাদীন্ 'চ' তথা 'বৈষ্ণবান্' 'অহং' 'বল্কে'। 'সাঞ্চলাভং' অপ্রজন সনাতনেন সহ বর্ত্তমানং 'সহগণর ঘূনাথায়িতং' গগৈঃ স্বভক্তেঃ সহ তথা রঘুনাথেন সহ বৃত্তং 'সজীবং' জীব গোস্থামিনা সহ যুক্তং 'ভং' 'রূপেং' রূপে-গোস্থামিনং অহং বল্পে। 'সাবৈদ্ধং' 'সাবধৃতং' নিত্যানন্দেন সহিতং 'পরিজনসহিতং' শ্রীবাসগদাধরাদিসহিতং 'শ্রীকৃষ্ণকৈত্তভ্রেদেবং' অহং বল্পে; 'সহগণলিভান্' ললিভাদিগপ্যুক্তান্ 'চ' তথা 'শ্রীবিশাধান্বিভান্ 'শ্রীরাধা-কৃষ্ণপাদান্' অহং বল্পে॥৫৭॥

অভীউদেবের পদকমলের, পরমগুর্বাদির ও বৈঞ্বদিগের আমি বন্দনা করি; অগ্রজ দনাতন, জীবগোস্বামী ও
রঘুনাথাদিগণ দহিত রূপগোস্বামীর ও নিত্যানন্দাদৈত পরিজনাদি দহিত চৈতন্মদেবের এবং ললিতাবিশাখাদি সহিত
রাধাক্ষ্চরণের বন্দনা করি॥ ৫৭॥

জয় জয় শ্রীচৈতন্য ! জয় নিত্যানন্দ ! জয়াবৈতচক্র ! জয় গৌরভক্তবৃন্দ ! সর্ব্ব লোক উদ্ধারিতে গৌর অবতার ; নিস্তারের হেতু তাঁর ত্রিবিধ প্রকার ।

সাক্ষাদর্শন আরে যোগা ভক্ত জীবে আবেশ করয়ে, কাঁহা হয় আবিভাবে। जाकाकर्मात लाइ जवा निस्तातिनाः नकृत अवस्थाती (मट्ट व्याविष्ठे स्टेनाः।। প্রভায় নুসিংহানদে কৈল আবির্ভাব; লোক নিজারিল। এই ঈশ্বর শ্বভাব। মাক্রাদর্শনে স্ব জ্বং ভারিল: একবার যে দেখিল সে কভার্থ হটল। গৌডদেশের ভক্তগণ প্রত্যক আসিয়া; পুন: গৌড়দেশে যায় প্রভুকে মিলিয়া। আরু নানা দেশের লোক আসি জগন্নাথ':. ৈ দেৱা চৰণ দেখি হটল কভাৰ্থ। দপ্তবীপের লোক আর নবখণ্ডবাদী: দেব পদ্ধর্ম কিল্ল মনুষাবেশে আংসি প্রভকে দেখিয়া যায় বৈষ্ণক হইয়া: ক্লক বলি নাচে দব প্রেমাবিষ্ট হঞা। এই মত দরশনে ত্রিম্বগত নিস্তারি: যে কেছ আসিতে নারে অনেক সংসারীীঃ: তা সবা ভারিতে প্রভু সেই সব দেশে যোগ্য ভব্দ জীব দেহে করেন আবেশে। সেই জীবে নিজ শক্তি করেন প্রকাশে; উাভার দর্শনে বৈষ্ণব হয় সর্ব দেশে। এই মত আবেশে ভারিল ত্রিভুবন। ুগৌড়ে ষৈছে আবেশের কহি দিগ্দরশন। অমুয়া মূলুকে (১) হয় মকুল ব্রহ্মচারী: পরম বৈষ্ণব ভিঁহ বড অধিকারী। গৌড়দেশে লোক নিস্তারিভে মন হৈল: নকুল হৃদয়ে প্রভু আবেশ করিল।

১ অম্বর মলক---বোধ হয় অভিতৰ ভালতৰ

অহ্পত্ত প্রায় মকল প্রেমাবিষ্ট হঞা: হাসে কাল্যে নাচে গায় উত্মন্ত চইয়া। অশ্র, কম্প, স্তম্ভ, স্বেদ, সাথিক বিকার: নির্ভার প্রেমে নুড্য, স্থন হৃদার। তৈছে গৌরকান্তি, তৈতে স্বা প্রেমাবেশ; कौंशांक दिल्ला बाहरम मर्ख शोज्दम । যারে জেখে তারে কতে কত কফনাম :: ভাঁহার দর্শনে লোক হয় প্রেমোদাম। টেডন্য আবেশ হয় নকুলের দেছে <u>;</u> শুনি শিবানক আইলা করিয়া সক্ষেতে। পরীক্ষা করিছে জাঁরে যবে ইচ্চা হৈল : -বাভিয়ে রভিয়া ভবে বিচার করিল। 'আপ্রে বোলান মোবে ইচা আমি জানি : আমার ইষ্ট মল জানি কছেন আপনি : তবে জানি ইহাতে হয় চৈতনা আবেশ³। এত চিভি শিবানন্দ রহিলা দুরদেশ। অসংখ্য লোকের ঘটা কেহ আইসে যায় : লোকের সংঘটে কেছ দর্শন লা পায় : ব্ৰন্সচারী কহে 'শিবানন্দ আছে দূরে; জন ছই চারি যাও বোলাও তাঁহারে। চারিদিকে ধায় লোক শিবানন্দ বলি : 'শিবানন্দ কোন ? ভারে বোলায় একচারী'। শুনি শিবানন সেন শীঘ আইলা: নমস্বার করি ভারে নিকটে বদিলা। ব্ৰহ্মচারী বলে, 'তুমি যে কৈলে সংশয়; এক মন হঞা ভার ভনহ নিশ্চয়। গৌর গোপাল মন্ত্র ভোমার চারি জক্ষর: অবিখাস ছাড় যেই করেছ অস্তর'। ভবে শিবানন্দ মনে প্রতীভ হইল : অনেক সম্মান ভক্তি তাঁহায়ে করিল।

এই মত মহাপ্রত্র অচিত্র প্রভাব; এবে ভন প্রভর গৈছে হয় আবির্ভাব। শনীর মন্দিরে আর নিত্যানন্দ নর্তনে: প্রীরাস কীর্ত্তনে আরু রাঘব ভবনে। এই চারি ঠাঁই প্রভুর সদা আবির্ভাব ; প্রেমাবিষ্ট হয় প্রভুর সহজ স্বভাব। নুদিংহানন্দের আগে আবিভূতি হঞা; ভোজন করিল, ভাহাত্মন মন দিয়া। শিবানদের ভাগিনা জীকান্ত সেন নাম: প্রভর কুপাতে ভিঁহ মহা ভাগ্যবান। এক বংসর ভিঁহ প্রথম একেশ্বর : প্রভু দেথিবারে আইলা উৎকণ্ঠা অস্তর। মহাপ্রভু দেখি তাঁরে বড় কুপা কৈলা; মাস হুই মহাপ্রভুর নিকটে রহিলা। ভবে প্রভু ভাঁরে আজ্ঞা কৈল গৌড় যাইতে; ভক্ষগণে নিষেধিল ইহাকে আসিতে। 'এ বৎদর তাঁহা আমি যাইব আপনে : ভাঁহাই মিলিব সব অং বৈভাদি সনে। শিবানদে কহিও আমি এই পৌষ মাদে: আচেম্বিতে অবশ্য যাইব তাঁর আবাসে। জগদানল হয় তাঁহা, তিঁহ ডিক্ষা দিৰে : সবাকে কহিও এ বৎসর কেছ না আসিবে'। শ্ৰীকান্ত আসিয়া গৌডে সন্দেশ কহিল: শুনি ভক্তগণ মনে আনুনদ হইল। "চলিডেছিলা আচার্যা, রহিলা ভিরুহঞা: শিবানন্দ জগদানন্দ রহে প্রত্যাশা করিয়া। পৌষ মাদ আইলে হুঁহে সামগ্রী করিয়া: मका। पर्याच्य द्राष्ट्र चारणका कतिया। এই মত মাস গেল, গোঁসাঞি না আইলা : क्रगतानम भिवानम इ: थिङ इटेला।

আচ্ৰিতে নুসিংহানক তাঁহাই আইলা 🕫 দোঁতে তাঁরে মিলি তবে স্থানে বসাইলা। দোঁহার চঃথ দেখি ভবে কহে নুসিংহানন : 'ভোমা দোঁহাকারে কেন দেখি নিরানন্দ' গ ভবে শিবানন্দ ভাঁরে দকল কহিলা: 'আসিতে আজ্ঞা দিয়া প্রভু কেন না আইলা' ? শুনি ব্রহ্মচারী করে কর্ত সন্তোষে: আমিত আনিব তাঁরে ততীয় দিবসে'। তাঁহার প্রভাব প্রেম জানে তুই জনে। 'আনিবে প্রভুরে' এই নিশ্চয় কৈল মনে। প্রহায় ব্রহ্মচারী তাঁর নিজ নাম: লুসিংহানক নাম ভার কৈল গৌরধাম। ছই দিন ধ্যান করি শিবানন্দেরে কহিল; 'পানীহাটি আমে আমি প্রভরে আনিল। কালি মধ্যাছে তিঁহ আসিবেন তোমার ঘরে: পাক নামগ্রী আন আমি ভিক্ষা নিব তাঁরে। তবে তাঁরে এথা আমি আনিব সম্বর: নিশ্চয় কহিল কিছু সন্দেহ না কর। যে চাহিয়ে ভাছা কর হইয়া তৎপর: জ্ঞতিরবায় করিব পাক শুন অতঃপর। (১) পাক সামগ্ৰী আন আমি যেই চাই'। ∡য মাগিল শিবানন আনি দিল ভাই। প্রাতঃকাল হৈতে পাক করিল অপার: নানা হুপ. ব্যঞ্জন, পিঠা, ক্ষীর উপহার। জগরাথের ভিন্ন ভোগ পৃথক বাড়িল; হৈ তন্য প্রভুর লাগি আনর ভোগ কৈল। इष्टेरमव नृत्रिःह लागि शृथक् वाजिन ; তিন জনে সমর্পিয়ে বাহিরে ধ্যান কৈল।

ख्द द्वाद्य··· यक: शत्र - कान (कान श्रीपट वरे भन्नात प्रेंगे नारे।

দেখে আসি বদিলেন চৈতন্য গোঁসাঞি: তিন ভোগ খাইল কিছু অবশিষ্ট নাঞি। আনন্দে বিহবল প্রত্যম পড়ে অশ্রধার: কি কর ? কি কর ? বলি কররে ফুৎকার। লগ্রাথে ভোনায় ঐকা থাও তাঁর ভোগ: নুসিংহের ভোগ কেন কর উপভোগ ? নুসিংছের হৈল জানি আজি উপবাস; ठाकत जेनवामी तदर, जीदम देकट मान' ? ভোজন দেখি যদাপি তাঁর হৃদয়ে উলাস: ন্সিংছে লক্ষ্য করি করে বাহিরে তঃখাভাস। স্বয়ং ভগবান কৃষ্ণ চৈতন্য গোঁদাঞি; 'জগল্লাথ নৃসিংহ সহ কিছু ভেদ নাই। ইহা জানিবারে প্রছায়ের গুঢ় হৈত মন ; তাহা দেখাইল প্রভু করিয়া ভোজন। ভোজন করিয়া প্রভু গেলা পানীহাট; সজোষ পাইল দেখি বাঞ্চন পরিপাটী। শিবানন কছে 'কেন করছ ফুৎকার' গু ব্রহারী কহে 'তোমার প্রভর বাবহার। তিন জনার ভোগ তিঁহ একেলা খাইল: অসমাথ নুদিংছের উপবাদ হৈল'। ক্তনি শিবানক চিত্তে হইল সংশয় : 'কিবা প্রেমাবেশে কহে ? কিবা সত্য হয়' ? ভবে শিবাননে কিছু কহে ব্ৰহ্মচাগী: 'দামগ্রী আন নুসিংহের পুনঃ পাক করি'। তবে শিবানন্দ ভোগ সামগ্রী আনিল; পাক করি নুসিংহেরে ভোগ লাগাইল। বর্ষান্তরে শিবানন্দ লঞা ভক্তগণ; নীলাচলে গিয়া দেখে প্রভুর চরণ। এক দিন সভাতে প্রভু বাত চালাইলা: नृतिःशानामत ७१ कहिए नातिना।

'গত বৰ্ষ পৌষে মোরে করাইল ভোজন; কভু নাহি থাই ঐছে মিষ্টার বাঞ্জন'। ত্ৰিভক্তগণ মনে আশ্চৰ্য্য মানিল: শিবাননের মনে তবে প্রতায় জন্মিল। এই মত শচীগ্ৰহে সতত ভোজন: শীবাদের গৃছে করেন কীর্ত্তন দর্শন। নিত্যানদের নৃত্য দেখে আসি বারে ধারে এ নিবক্ষর আহি ভার বাস্বের স্বরে। প্রেমবশ গৌর প্রভু, ধাঁহা প্রেমোভম ; ্প্রমবশ হট উচিং। দেন দরশন। শিবানন্দের প্রেমসীমা কে কহিতে পারে ৪ যার প্রেমে বশ প্রভু আইদে বারে বারে। এই ত কহিল গৌরের আবিভাব: ইহা যেই শুনে জানে চৈত্ত প্ৰভাব। পুরুষোত্তমে প্রভু পাশে ভগবান আচার্য্য ; পরম বৈষ্ণব ভিঁহ স্থপণ্ডিত আর্যা। স্থাভাবাকোতা চিত্ত গোপ ভাবতাব • স্কলপ গোঁদোঞিঃ সহ স্থা ব্রেহার। একান্তভাবে আশ্রিয়াছে চৈত্ত চরণ: মধ্যে মধ্যে প্রভুর তিঁহ করেন নিমন্ত্রণ। ঘরে ভাত করি করে বিবিধ বাঞ্জন: একেলা প্রভকে লঞা করান ভোজন। তার পিতা বিষয়ী বড় শতানন্দ থান; বিষয় বিমুথ আচার্য্য বৈরগ্যে প্রধান। গোপাল ভট্টাচার্যা নাম তাঁর ছোট ভাই: কাশীতে বেদাভ পড়ি গেল তাঁর ঠাঁই। আচার্য্য তাঁহারে প্রভুপদে মিলাইলা: আন্তর্যামী প্রভূচিতে ক্রথ না পাইলা। আচার্য্য দম্বন্ধে বাহে করে প্রীতিভাষ : কুঞ্ভজি বিনা প্রভুর না হয় উলাস।

অকপ গোঁসাইকে আচার্য্য কছে আর দিনে: 'বেদাস্ত পডিয়া-গোপাল আসিয়াছে এখানে। সরে মিলি আইস গুলি ভাষা ইহাঁর স্থানে। প্রেক্রেটার করি স্থরূপ বঙ্গেন বচনে :— 'বদ্ধিঅষ্ট হৈল ভোমার গোপালের নঙ্গে; মাযাবাদ শুনিবাবে উপজিল রঙ্গে। বৈষ্ণৱ হট্যা যেবা শারীরিক ভাষা ওনে; (১) সেবা সেবক ছাডি আপনাকে ঈশ্বর মানে। মহাভাগৰত কৃষ্ণ প্রাণধন হার: মায়াবাদ শ্রবণে চিত অবশ্য ফিরে ভার'। আচাৰ্য কেহে 'আমা স্বার কৃষ্ণ নিষ্ঠ চিত্তে: আমা স্বার মন ভাষা নারে ফিরাইতে'। স্কুপ কহে 'ভথাপি মায়বোদ প্রবণে : চিছ কা, মায়া মিথাা, এই মাত্র ভানে। জীব জ্ঞান কল্লিত, ঈশ্বরে স্কল্ অজ্ঞান: বাহার প্রবাণে ভক্তের কাটে মনীপ্রাণ । তবে লজ্জাপাঞা আনোহা মৌন হৈল: আর দিনে গোপালেরে দেশে পাঠাইল ১ এক দিন আচাৰ্য্য প্ৰভুকে কৈলা নিমন্ত্ৰণ: ঘরে ভাত করি করে বিবিধ বাঞ্চন। ছোট হরিদাস নাম প্রভুর কীর্ত্তনীয়া; ভারে কহেন আচার্য্য ভাকিয়া আনিয়া। 'নোর নামে শিবি মাহিতীর ভগিনী স্থানে ঝিরা : উত্তম চালু এক মোন আনহ মাগিয়।'। মাহিতীর ভগিনীর নাম মাধ্বী দেবী: বুকা তপ্রিনী আর পর্ম বৈষ্ণ্রী।

শাহীরিক ভাষা—শ্রীমান্ শকবাচার্ক্স কৃত বেদান্ত ভাষোর নাম। ইহা ভারা জাইবত
 প্রতিতিত হউয়াছে।

এজভ লেখা করে যারে রাধিকারগণ: জগতের মধ্যে পার সাতে তিন জন। স্বরূপ পোঁদোঞি আবে রাষ রামানকা: শিখি নাহিতী তিম, তাঁর ভগিনী অর্ক্লন। তাঁর ঠাঞি তণ্ডল মাগি আনিল হরিদাস; তগুল দেখি আচার্য্যের হইল উলাস। সুখে রান্ধিল প্রভুর প্রিয় যে ব্যঞ্জন; (मिडेन व्यनाम, आमा हाकि, लिश् मनवन । মধ্যাহে আবিয়া প্রভু ভোজনে বদিলা; भानात्र (पश्चि প্রভু আচার্য্যে পুছিলা। 'উদ্ভম অলু ৷ এত তণ্ডুল কাঁহাতে পাইলা' ? আবোধাকতে 'মাধবী পাশ মাগিয়া আনিলা'। প্ৰভুক্তে 'কোন্যাই মাগিলা আনিল ?' ছোট হরিদাসের নাম আচার্য্য কহিল। অর প্রশংসিয়া প্রভু ভোজন করিলা; নিজ গ্রহে আসি গোবিন্দেরে আজা দিলা। 'আজি হৈতে এই মোর আজা পালিবা; (छाँठ देविकारम देश व्यामिएक मा निवा"। षांत्र माना, रुद्रिणांत्र घृत्थी देशला मान : কি লাগিয়া দার মানা কেছ নাছি জানে। তিন দিম হরিদাস করে উপবাস: অরপাদি ভবে পুছিল মহাপ্রভুর পাশ। 'কোনু অপরাধ প্রভু কৈল হয়িদাস ? কি লাগিয়া দ্বার মানা ? করে উপবাদ'। প্ৰভু কছে 'বৈরাগী করে প্রকৃতি সম্ভাষণ ; দেখিতে না পারি আমি তাছার বদন। ত্বার ইন্দ্রিকরে বিষয় গ্রহণ; माक व्यक्ति इति भूनि खरनत भन।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে নবমক্ষদ্ধে একোনবিংশাধ্যারে পঞ্চ দশশ্রোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুকদেববাক্যং

> 'মাত্রা স্বস্রা ছুহিত্রা বা নাবিবিক্তাসনো ভবেৎ। বলবানিজ্রিয়গ্রামো বিদ্বাংসমপি কর্ষতি'॥৫৮॥

'মাত্রা' জনন্যা, 'স্বস্রা' ভগিন্যা 'ছৃহিত্রা' কন্তমা 'বা' সহ 'অবিবিক্তাসনঃ' অবিবিক্তঃ সন্ধাৰ্থ অপুকৃত্ত নিভিযাবৎ আসনং বস্তা সঃ 'ন' 'ভবেৎ'।
যতঃ 'ইন্দ্রিস্থামঃ' ইন্দ্রিসমৃহঃ 'বলবান্' সন্ 'বিদাৎসমপি' 'ক্ইভি'
আক্রতি জীসরিধানক স্ক্ধা ডাঞ্জামিত্যধঃ ॥ ৫৮ ৮

মাতা, ভগিনী কিম্বা কন্তার সঙ্গেও নির্জ্ঞান একাসনে থাকা বিধেয় নছে; কারণ ইন্দ্রিয়গণ অতিশয় বলবান্; বিদ্বান্ পুরুষকেও আকর্ষণ করে ॥৫৮॥

'কুজ জীব মকটি বৈরাগ্য করিয়া;
ইন্সির চরাঞা বুলে প্রকৃতি সম্ভাবিয়া'।
এত বলি মহাপ্রভু অভ্যন্তরে গেলা;
গোঁসাঞি আবেশ দেখি সবে মৌন হৈলা।
আর দিনে সবে মিলি প্রভুর চরণে;
ভরিদান লাগি কিছু কৈল নিবেদনে।
'অল্ল অপরাধ, প্রভু করহ প্রসাদ;
এবে শিক্ষা হইল, না করিবে অপরাধ*।
প্রভু কহে 'মোর বশ নতহ মোর মন;
প্রভু কভাবী বৈরাগী না করে স্পর্শন।
নিজ কার্য্যে বাও সবে ছাড় বুগা কথা;
পুন: বহ কদি আমা না দেখিবে হেথা'।
এত ভনি সবে নিজ কর্ণে হস্ত দিয়া;
নিজ নিজ কার্য্যে ববে চিল্প উঠিয়া।

মহাপ্রভু মধ্যাহ্ন করিতে চলি গেলা; বুঝন না যায় এই মহাপ্রভুর লীলা। আর দিনে সবে পর্মানল পরী ভালে: 'প্রভকে প্রসন্ন কর' কৈল নিবেদনে। তবে পুরী গোঁগোঞি একা প্রভুম্বানে আইলা; ন্মক্ষরি প্রভ তাঁরে সম্রমে বসাইলা। পুছিলা 'কি আজা ? কেন হৈল আগমন ?' क्रिजारन लागाम नाशि किन निर्वास । শুনিয়া কহেন প্রভু 'শুনহ গোঁলাঞি; সব বৈষ্ণব্লঞা তুমি রহ এই ঠাঞি। মোরে আজ্ঞা দাও, মুঞি যাঙ আলালনাথ: একলে রহিব তাঁহা গোবিনদ মাত্র সাথ'। এত বলি প্রভু যদি গোবিদে বোলাইলা; পুরীকে নমস্কার করি উঠিয়া চলিলা; আন্তব্যন্তে পুরী গোঁসাঞি প্রভু স্থানে গেলা: অহুনয় করি প্রভুরে ধরে ফিরাইলা। 'ভোমার যে ইচ্ছা কর স্বতন্ত্র ঈশার: কেবা কি বলিতে পারে ভোমার উপর ? লোক হিত লাগি তোমার সব ব্যবহার : আমি সব নাজানি গজীর জদয় তোমার'। এত বলি পুরী গোঁসাঞি গেলা নিজ স্থানে; হরিদাদ স্থানে গেলা সব ভক্তগণে। স্বরূপ গোঁদাঞি কহে 'শুন হরিদাদ ! সবে তোমার হিত বাঞ্ছি করছ বিশ্বাস। প্রভু হঠ পড়িয়াছে স্বতন্ত্র ঈশ্বর; কভু কুপা করিবেন দয়ালু অস্তর। ভুমি হঠ কৈলে তাঁর হঠ সে বাড়িবে; স্থান ভোজন কর তবে স্থাপনি ক্রোধ যাবে'। এত বলি তাঁরে স্থান ভোজন করাইয়া: আপন ভবন আইলা তাঁরে আখাসিয়া।

প্রভু যদি যান জগরাথ দরশনে ; দূর হৈতে হরিদাস করে নিরীক্ষণে। মহাপ্রভু কুপাসিদ্ধ কে পারে বুঝিতে ? নিজ ভতে দণ্ড করে ধর্ম শিথাইতে। দেখি তাস উপজিল স্ব ভক্তগণে: স্বপ্নেও ছাড়িল সবে স্ত্রী সম্ভাষণে। এই মত হরিদাদের এক বংসর গেল; তবু মহাপ্রভু মনে প্রসাদ নহিল। রাত্রিশেষে প্রভুরে ভিঁহ দণ্ডবৎ হঞা; প্রয়াগেতে গেল কারে কিছু না বলিয়া। প্রভূপাদ প্রাধ্যি লাগি দংকল করিল; ত্রিবেণী প্রবেশ করি প্রাণ ছাড়িল। (महेकर्ण अचुशास निवास्तरह आहेता; প্রভু কুপা পাঞা অন্তর্করশনে রহিলা। थक्तर्य (मर्ट्शान करतन व्यस्तर्भातः রাত্রে প্রভূরে গীত ওনায়, অস্ত নাহি ভনে। এক দিন মহাপ্রভু পুছিলা ভক্তগণে ; 'হরিদাস কাঁহা ? তারে আনহ এথানে'। मत्व करह 'इब्रिमाम वर्ष शूर्ण मितन ; রাত্রে উঠি কাঁহা গেলা ? কেহ নাহি জানে'। ভানি মহাপ্রভু ঈষৎ হাবিয়ারহিলা; সব ভক্তগণ মনে বিমায় জ্মিলা। এक भिन खगमानन, अक्रम, भाविन द काशीयंत, लाटमाल्य, गक्षत्र, मूक्ना সমুদ্র স্লানে গেলা সবে; শুনে কভ দুরে হরিদান গায়েন যেন ডাকি কণ্ঠস্বরে। মহ্য্য না দেখে মধুর গীত মাত ওনে; গোবিন্দ আদি মিলি সবে কৈল অনুমানে। 'বিষাদি খাইয়া হরিদাস আত্মঘাত কৈল; সেই পাপে জানি বন্ধরাক্ষস হইল।

আকার না দেখি যাত্র শুনি ভার গান'। স্বরূপ কছেন 'এই মিথ্যা অকুমান। আঞ্জন্ম কুষ্ণকীর্ত্তন, প্রভুর দেবন ; প্রভ কুপাপাত্র জার ক্ষেত্রের মরণ। জুৰ্গতি না হয় ভার স্পাতি যে হয়: মহাপ্রভূর ভঙ্গী পাছে জানিবে নিশ্চর'। প্রস্থাগ হৈতে এক বৈষ্ণব নবদীপে আইলা: হরিদাদের বার্তা তিঁহ স্বারে কহিলা। বৈছে দংকল বৈছে ত্রিবেশী প্রবেশিলা : ক্ষমি শ্রীবাসালির মনে বিস্ময ক্রমিলা। বর্ষান্তরে শিবানন্দ সব ভক্ত লঞা : প্রভুরে মিলিলা আদি আনন্দিত হঞা। 'হরিদাস কাঁহা' ? যদি শ্রীবাস পুছিল : 'স্বকর্ম ফলভুক্ পুমান' প্রাভু উত্তর দিল। তবে জীবাস তাঁর বুতান্ত কহিলা: বৈছে সংকর বৈছে ত্রিবেণী প্রবেশিলা। ভনি হাসি প্রভুকহে স্থপ্সন্ন চিত্ত: 'প্রকৃতি দর্শন কৈলে এই প্রায়শ্চিত্র'। স্থাজপাদি মিলি তবে বিচার করিল: ত্রিবেণী প্রভাবে হরিদাস প্রভু পাশ আইল। এই মত লীলা করে শচীর নক্ন: যাহা ভনি ভক্তগণের জভায় কর্ণ মন। আপন কারুণ্যে লোকে বৈরাগ্য শিক্ষণ: ভক্তের গাঢ় অনুরাগ প্রকটীকরণ: তীর্থের মহিমা, নিজ ভক্তে আত্মদাত; এক লীলায় করে প্রভু কার্য্য পাঁচ সাত। মধুর চৈতভালীলা সমূদ্র গন্তীর; लाक नाहि वृत्य, बृत्य (यहे ज्क धीत। বিখাদ করিয়া শুন চৈতন্য চরিভ: ভর্ক না করিও, ভর্কে হয় বিপরীত।

প্রীক্লপ রখুনাথ পদে ধার আশ; চৈতনাচরিভায়ত কহে ক্ঞদাস।

ইতি জ্রীচৈত্তত চরিতামতে অন্ত্যপত্তে শ্রীহরিদাস দণ্ডরূপ-শিক্ষা নাম দ্বিতীয় পরিচ্ছেদঃ ॥ ২ ॥

তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থ।

ষদ্দেহহং প্রীগুরোঃ শ্রীযুতপদকমলং শ্রীগুরুন্ বৈষ্ণবাংশ্চ শ্রীরূপং দাগ্রজাতং দহগণরঘুনাথান্বিতং তং দজীবং দাদ্বৈতং দাবধৃতং পরিজনদহিতং কৃষ্ণচৈতন্মদেবং শ্রীরাধাকৃষ্ণপাদান্ দহগণললিতান্ শ্রীবিশাথান্বিতাংশ্চ॥৫১

होका e वार्था कराः eq लाटक ८० पृः (मर्थ ॥६२॥

জয় জয় গোরচক্র ! জয় নিত্যানক্ষ !
জয়াবৈতচক্র ! জয় নােরজকর্ক !
পুক্ষােরমে এক বাদ্ধণ কুমার ;
পিড়শৃন্তা, মহাফ্লর, মৃত্ ব্যবহার ।
প্রভু স্থানে নিত্য আইসে, করে নমস্কার ;
প্রভু সনে বাত কছে, প্রভু প্রাণ তার ।
প্রভুতে তাহার প্রীতি, প্রভু দয়া করে ;
দামােদর তারে প্রীতি সহিতে না পারে ।
নিত্য আইসে, প্রভু তারে করে মহাপ্রীতি ;
বাাহা প্রীতি, তাহা আইসে, বালকের রীতি ।
ভাহা দেবি দামােদর গুংখ পার মনে ;
বলিতে মা'পারে, বালক নিষেধ না মানে ।
ভার দিনে সে বালক প্রভু স্থানে আইলা ;
গোঁসাঞি তারে প্রীতি কিক বার্ছা প্রচিলা।

কভক্ষণে সে বালক উঠি ষবে গেলা: ষ্ঠিতে না পারি দামোদর কঠিতে লাগিলা। 'অলোপদেশে পঞ্জি করোঁ গোঁদাঞির ঠাঁঞি: গোঁদাঞি গোঁদাঞি এবে জানিব গোঁদাঞি। এবে গোঁদাঞির গুণ সবলোকে গাইবে: তবে গোঁসাঞির প্রতিষ্ঠা পুরুষোত্তমে হৈবে'। ভনি প্রভুকহে 'কাহ কহ দামোদর' ? দামোদর কহে 'তুমি স্বতন্ত্র ঈশ্বর। স্বচ্চনের আচার কর, কে পারে বলিভে ৯ মুধর জগতের মুখ না পার আছোদিতে। প্তিভ হঞামনে কেন বিচার নাকর গ রাণ্ডী ব্রাহ্মণীর বালকে প্রীতি কেন কর ৮ ষদাপি বাক্ষণী সেই তপস্থিনী সভী: ভথাপি তাহার দোষ স্থন্দরী যুবতী। তুমিও পরম যুবা পরম স্থলর ; লোক কাণাকাণি বাতে দেহ অবসর'। এত বলি দামোদর মৌন হইলা: ষ্মস্তরে সস্তোষ প্রভু হাসি বিচারিলা। 'ইহাকে কহিয়ে শুদ্ধ প্রেমের তরঙ্গ: দামোদর সম যোর নাতি অস্তরজ'। এভেক বিচারি প্রভু মধ্যাত্রে চলিলা: আর দিনে দামোদরে নিভতে বোলাইলা। প্রভু করে দামোদর ! চলহ নদীয়া; মাতার সমীপে তুমি রহ তাঁহা যাঞা। ভোমা বিনা তাঁহার রক্ষক নাহি দেখি আন : আমাকেই যাতে তুমি কৈলে সাবধান। ভোমা সম নিরপেক নাছি মোর গণে: निव्राथक ना देशल क्यां ना यात्र व्यक्ता। আমা হৈতে যে না হয়, সে তোমা হৈছে হয়: আমাকে করিলে দণ্ড, আন কেবা হয়ু ?

মোতার গতে রহ যাই মাতার চরণে ; তব আবে নাহি কারও অচ্ছন্সাচরণে। यात्रा यात्रा कल व्यानिश्व व्यामात नर्गान ;ः শীল করি পুন: ভাঁহা করিও গমনে। মাভাকে কহিও মোর কোটি নমস্বারে: মোর অথকথায় অখী করিও ভাঁহারে। "নিবন্ধর নিজ কথা ভোমারে শুনাইভে: এই লাগি প্রভ মোরে পাঠাইল ইহাতে।" এত ক্ষতি মাতার মান সম্মোষ জনাইও: আবার গুঞ্চ কথা তাঁরে স্মরণ করাইও। "বারে বারে আসি আমি তোমার ভবনে: মিষ্টার বাঞ্চন সব করিয়ে ভোজনে। ভোজন করিয়ে আমি. তমি ভাহা জান : বাহ্য বিরহে তাহা ক্রি করি মান। এই মাঘ সংক্রাস্তো তমি রক্ষন করিলা: নানা বাজন কীর পিঠা পায়স রাঞ্চিলা। ক্লফে ভোগ লাগাই তুমি যবে কৈলে ধ্যান : बामा ऋ खिं देश, अळ छितिन नशान। আতে ব্যক্তে আমি গিয়া দকল থাইল: আমি খাই দেখি তোমার স্থুথ উপজিল। ক্ষণেকে অঞ মুছি শৃন্ত দেখ পাত; স্থা দেখিলে যেন নিমাই খাইল ভাত । বাহ্ বিরহ দশায় পুন: ভ্রাস্থি হৈল: 'ভোগ লাগাইলে' এই সব জ্ঞান গেল ৮ পাকপাত্র দেখ সব অল্ল আছে ভরি: পুন: ভোগ লাগাইলা স্থান সংস্কৃত্তি 🖡 এই মত বার বার করিয়ে ভোজন: ভব শুদ্ধ প্রেমে মোরে করে আকর্ষণ। তোমার আজাতে আমি আছি নীলাচলে: নিকটে নেয়ায় আমা ভোমার প্রেমবলে"।

'এই মত বার বার করাইও শ্বরণ :: মোর নাম লঞা ভাঁব বলি ৯ চবণ'। এড কহি জগরাথের প্রসাদ আনাইল: মাভাকে, বৈষ্ণবে, দিতে পুথক পুথক দিল। करव मार्गामव हिला बहीश आहेला : মাড়াবে মিলিয়া জাঁব চরৰে বভিলা ৮ আচার্যালি বৈজ্ঞবেরে মহাপ্রসাল দিল: প্রভার বৈছে আজ্ঞাপণ্ডিড তাহা আচ্রিলা দামোদৰ আগে আজ্লা না হয় কাছাৰ: ভাঁরে ভাষে সতে করে সঙ্কোচ ব্যৱহার। প্রভির গণে যার দেখে অল মর্য্যাদা লজ্ম : বাকা দল কবি কবে মহাদি ভাপন। এই ত ক্রতিল লামোদরের বাকাদও : যাহার স্মরণে ভাগে অজ্ঞান পাষ্ড। চৈতভের লীলা গন্ধীর কোটি সমস্র হৈতে : কি লাগি কি করে কেহ না পারে বঝিতে। অভএব গুঢ় অর্থ কিছুই না জানি: ৰাছ অৰ্থ করিবারে করি টানাটানি। এক দিন প্রভু হরিদাসেরে মিলিলা ; তাঁরে লঞা গোর্মি করি তাঁহারে পছিল।। 'হরিদাস! কলিকালে যবন অপার; গো আক্রণ হিংদা করে মহা জরাচার। ইহা স্বার কোন মতে হইবে নিস্তার প তাহার হেতু না দেখিয়ে এ হ:খ অপার।* হরিদাস কহে 'প্রভু চিস্তা না করিও; যবনের সংসার দেখি হঃথ না ভাবিও। যবন সকলের মুক্তি হবে অনায়াসে; হা রাম। হা রাম। বলি কহে নামাভাবে। মহাপ্রেমে ভক্তকহে হারাম চছারাম চ यवत्मत्र ভांशा (एथ नव्र (महे नाम ।

বিদাপি সক্ষেতে ভার হর নামাজাস ; তথাপি নামের তেজ না হয় বিনাশ।

তথাহি নৃসিংহপুরাণং।

'দংষ্ট্রিদংষ্ট্রাহতো মেচ্ছো হা রামেতি পুনঃপুনঃ। উক্তাপি মুক্তিমাপ্রোতি কিং পুনঃ শ্রেদ্ধা গৃণন্'॥ ৬০॥

'দংষ্ট্রিদংট্রাহতঃ' দংষ্ট্রিং বরাহত দংষ্ট্রা দত্তেন আহতঃ 'মেচ্ছঃ' 'পুনঃ' 'হা রাম ইতি' 'উজ্বাপি' 'মুক্তিং' 'আপ্লোভি'। হা রামেতি নাম 'শুল্লা' 'গ্ৰন্' অনঃ মুক্তিং প্রাপ্লোতি তত্ত্ব 'কিং' বক্তব্যং ॥৬০॥

যখন বরাহদন্তাহত মেচছগর্ণ 'হা রাম' বাক্য পুনঃ পুনঃ উচ্চারণ করিয়া মুক্তি প্রাপ্ত হয়; তখন শ্রদ্ধা পূর্বকি হা রাম। নাম গ্রহণ করিলে মুক্তি লাভ হইবে, তাহাতে সন্দেহ কি ? ॥ ৩ ॥

'জজামিল পুত্র বোলার বলি নারারণ;
বিফুদ্ত আদি ছাড়ার ডাহার বন্ধন।
'রাম' ছই অক্ষর ইহা নহে ব্যবহিত;
প্রেমবাটী 'হা' শব্দ ভাহাতে ভূষিত।
নামের অক্ষর সবের এইত স্বভাব;
বাবহিত হৈলে না ছাড়ে আপদ প্রভাব।

তথাছি হরিভক্তিবিলাসসৈকাদশবিলাসে উননবত্যধিকদিশততমাঙ্কপুতং পদ্মপুরাণীয়নামাপরাধনিরসনস্ভাত্তং ।
'নামৈকং যদ্য বাচি স্মরণপথগতং শ্রোত্রমূলং গতং বা
শুদ্ধং বাশুদ্ধবর্ণং ব্যবহিতরহিতং তারস্থত্যেব সত্যং
তচ্চেদ্দেহদ্রবিণজনতালোভপাষ্ণভ্যধ্যে
নিক্ষিপ্তং স্থান্নফলজনকং শীঘ্রমেবাত্র বিপ্র'॥ ৬১॥
'একং' 'নাম' 'ষক্ত' জনক্ত 'বাচি' বাক্ষে প্রবর্ত্ততে 'স্মরণপ্রত্তং' 'বা'

অথবা 'শ্রোঅসূলং গডং' 'শুদ্ধং' 'বা' অথবা 'আশুদ্ধনণ' আৰু 'ব্যবহিত-রহিতং' জন্ত দক্ষেত্য কংবা আৎ; ভয়াম 'নতাং' জনান্ 'ভারয়ত্যেব' ছেষাং বিমৃত্যে ভবতীত্যর্থ: হে 'বিপ্রা' 'তৎ' নাম 'চেং' ! যদি 'দেহজুবিল-জনতালোভপাষত্তমধ্যে' দেহক্ষ জড়শনীরঞ্জ জবিণঞ্ধন কলভাচ প্রদারাদিবাদ্ধবাদ ভেষাং সমাহার স্তামিন্ বিষয়ে লোভ এব পাষতঃ পামর স্তস্ত্য মধ্যে নিক্ষিপ্তং আং তদা 'অত্ত' বিষয়ে 'শীঘ্রং' 'ফল্লনকং' 'ন এব' ভবতীত্যর্থ: ॥৬১॥

ভগবানের একটা নামও যদি বাক্যে উচ্চারিত, স্মরণপথে উদিত বা কর্ণকুহরে প্রবিক্ত হয়; তাহা শুদ্ধই হউক
আর অশুদ্ধবর্ণ ই হউক, অথবা অন্য সঙ্কেত্যুক্তই হউক;
উহাতে নিশ্চয়ই পরিত্রাণ হয়; কিন্তু হে বিপ্র! উহা ধনজনদেহাদিলুক পাষ্ডদিগের হৃদ্যে নিক্ষিপ্ত হইলে শীজ্র
কলবানুহয় না ॥৬১॥

'নামাভাদ হৈতে হয় সর্বা পাপ কয়; নামাভাদ হৈতে হয় সংসারের ক্ষয়।

তথাহি ভক্তিরনামৃতদিন্ধে দক্ষিণবিভাগে বিভাব-লহর্য্যাং দ্বিপঞ্চাশংশ্লোকে শ্রীরূপগোস্বামিবাক্যং

'তং নির্ব্যাজং ভজ গুণনিধে পাবনং পাবনানাং শ্রদ্ধারজ্যন্মতিরতিতরামূত্তমংশ্লোকমোলিং। প্রোদ্যন্মন্তঃকরণকুহরে হন্ত যন্নামভানো রাভাদোহপি ক্ষপরতি মহাপাতকধ্যান্তরাশিং'॥ ৬২॥

হে 'গুণনিধে'! নারদ ! षः 'শ্রকার স্বান্ধতি!' প্রক্রম রক্ষান্তী মতি র্যন্ত ভাদৃশ: সন্ 'তং' তগবস্তং 'নির্বান্ধং' অকপটং যথা স্থাৎ তথা 'ভল' কীদৃশ 'পাবনানাং' 'পাবনং' পুনঃ 'উত্তমঃশ্লোকমৌলিং' উত্তমংশ্লোকানাং দেবাদীনাং শিরোভূষণা । 'হস্ত' আশ্চর্য্যে 'ষ্লামভানোং' যক্ষ ভগবতঃ নামক্র্যান্ত 'আভাব্দাহ্শি' 'অক্তঃক্রব্কুহ্রে' 'প্রোদ্যন্' উন্মীলন্ সন্ 'মহাপাতক-

ধ্বান্তরালিং' পাপাক্ষকারসমূহং 'অভিভরাং' তৎক্ষণাদেব 'ক্ষপরতি' ছ্রী-ক্রোতীত্যর্থ: ॥৬২৪

হে গুণনিধে ! নারদ ! তুমি প্রদার সহিত অকপটে পাব-নের পাবন ও দেবাদির শিরোভূষণ ভগবানের ভজনা কর ; অন্তঃকরণ কৃহরে বাঁহার নামভাসুর আভাসমাত্রও প্রকাশিত ইংইলে মহাপাপান্ধকাররাশি তৎক্ষণাৎ দূরীভূত হয়॥৬২॥

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে ষষ্ঠক্ষমে দ্বিতীয়াধ্যায়ে একচম্বারিংশ-শ্লোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুকদেববাক্যং

'মিয়মাণো হরে নীম গুণন্ পুজোপচারিতং

অজামিলোহপ্যগাদ্ধাম কিমৃত শ্রদ্ধা গুণন্'॥ ৬৩॥

'আলামিলঃ' নাম জন: 'মিয়মাণোহণি' আসময়ভূতারণি অবশত্বেন শ্রছা বিহীনোহণীত্যর্থ: 'পুত্রোপচারিভং' স্বপুত্রন্ত নামোপলজিতং 'হরেঃ' ভগবতঃ নাম নারায়ণেতি 'গৃণন্' উচ্চারয়ন্ সন্ 'ধাম' বৈকুঠধাম 'অগাং' আবোন্; 'উত' ভোঃ 'শ্রছয়া' 'গৃণন্' সন্ জনঃ 'কিং' বৈকুঠধাম প্রাক্ষাতি ভত্র কিং বক্তবাং ॥৬০॥

জ্জামিল মৃত্যুকালে পুজের নামে ভগবদাম উচ্চারণ করিয়াছিল বলিয়া যখন বৈকুগগাম প্রাপ্ত হইয়াছিল; তথন শ্রেদাপূর্বক ঐ নাম গ্রহণ করিলে বৈকুগ প্রাপ্তি হইবে, ভাহাতে আর দদেহ কি ११ ৬৩॥

নামাভাসে মৃক্তি হয় সর্কাশাস্কে দেণি;
প্রীভাগবতে ভাহা অজামিল সাক্ষী'।
ভানিয়া প্রভ্র সূথ বাড়য়ে অস্তরে;
পুনরপি ভঙ্গী করি পুছরে উহিলের।
'পৃথিবীতে বহু জীব স্থাবর অজম;
ইহা সবার কি প্রকারে হইবে মোচন' ?
হরিদাস কহে 'প্রভূ সে কুপা ভোমার;
ভাবের জক্ম আগে করিবাছ নিস্তার।

'कृषि (य कतिशाष्ट्र केटिक: यदत मःकी र्खन : স্থাবর জন্মর দেই হয়ত প্রবণ। শুনিয়াই জঙ্গমের হয় সংসার কায়: স্থাবরের শব্দ লাগি প্রভিধ্বনি হয়। थ्यां ध्यानि नारं. (महे कद्राव कीर्तन: তোমার কুপায়--এই অকথা কথন। मकन सराज वर डेक्ट मरकी र्वन : শুনি প্রেমাবেশে নাচে ভাবর জন্ম। বৈছে কৈলে ঝারিখণ্ডে বুন্দাবন ঘাইতে: বলভদ্র ভটাচার্যা ভাহা কহিয়াছেন আমাভে। वाञ्चरम्य कीय माशि देकन निर्दारमा : তাঁর অজীকার কৈলে জীবের মোচন। জগভ তারিতে এই ভোমার অবভার; ভক্তগণ আগে তাতে কৈলে জঙ্গীকার। উচ্চ সংকীর্ত্তন ভাতে করিয়া প্রচার : হিরচর জীবের থণ্ডাইলে সংসার'। প্রভুকহে 'দব জীব মুক্তি যবে পাবে; এইত ব্ৰহ্মাণ্ড তবে জীব শুন্য হবে' ? হরিদাস বলে 'তোমার যাবৎ মর্ত্তো স্থিতি ; তাঁহা যভ স্থাবর জলম জীব জাভি: সব মুক্ত করি তুমি বৈকুঠে পাঠাইবে; সুন্দ জীব পুনঃ কর্মে উদ্দ করিবে। সেই জীব হবে ইহা স্থাবর জন্ম; তাহাতে ভরিবে ব্রহ্মাণ্ড বেন পূর্ব্য সম। রমুনাথ যেন সব অযোধ্যা লইয়া; বৈকুঠে গেলা অন্য জীবে অযোধ্যা ভরিয়া। অবতরি তুমি ঐছে পাতিয়াছ হাট; কেহ না বুঝিতে পারে ভোমার গুড় নাট। পূর্বেবে যেন ব্রঞ্জে ক্রফ করি অবভার ; সকল ব্রহ্মাতে জীবের থণ্ডাইল সংসার।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমক্ষমে উনত্রিংশদধ্যায়ে পঞ্চদশ-শ্লোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুকবাক্যং

> 'ন চৈবং বিশায়ঃ কার্য্যো ভবতা ভগবতাজে যোপেশরেশ্বে ক্ষে যত এতবিমূচ্যতে' ॥৬৪॥

হে পরীক্ষিৎ! 'ঘোগেখনেখনে বাগেখনাদীনাং ঈখনে 'ভগবভি' অশে

ইষ্থ্যবৃত্ত 'অজে' জন্মনহিতে জীববন জারতে কিন্তু স্বেচ্ছবৈর স্বন্ধাবির্ভব
ভীতার্থ: 'ক্কে' 'ভবভা' স্বন্ধ 'এবং' গোপীনামৌপপতিভাবেন মুক্তিলাভ
ইত্যর্থ: 'বিশ্বরঃ' 'ন' 'কার্যাঃ' কর্ত্তবাঃ ভগবভোহ্যমতিভাবো ন 'যভঃ' ক্লফাৎ
'এতং' স্থাব্যাদিকম্পি 'বিষুচাতে' ॥৬৪॥

রাজন্! ইহাতে তুমি বিশ্বয় করিও না; যোগেখর-দিগের ঈখর জন্মরহিত ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ হইতে যথন স্থাবরা-দিও মুক্তিলাভ করে; তথন গোপীগণ তাঁহাকে কাম-ভাবে ভজিয়া যে মুক্তি পাইবে, তাহা আর কি বিচিত্রে ? ॥৬৪

তথাহি বিষ্ণুপুরাণে চতুর্থাংশে পঞ্চদশাধ্যায়ে দ্বাদশগদ্যং।
'ভগবানিহ কীর্ত্তিঃ সংস্মৃতশ্চ
দ্বোমুবন্ধেনাখিলহুরাহুরাদিছুল্ল ভং
ফলং প্রথচ্ছতি কিমৃত সম্যুপ্ভক্তিমতামৃ'॥৬৫॥

'ইষ' লগতি 'ভগবান্' 'দেবাম্বকেন' বিদেবভাবেন 'কীর্ত্তিতঃ' 'সংস্থৃতক্ত' শিশুপালাদিতিঃ অস্ক্রমভাবৈরিভিশেষঃ তেষাং সম্বন্ধে 'অথিলস্ক্রাস্ক্রাদিল্ল ভং' 'ফলং' মুক্তিমিতার্থ: 'প্রাম্ছ্ডি' দদাতি; 'সম্যগ্ ভক্তিমতাং' স্বক্তকানাং সম্বন্ধে ভৎকলং প্রমৃদ্ধিভি 'উত' ভোঃ 'কিং' তত্র বক্তবাং ॥৬৫॥

বিষেষভাবে ধ্যান কীর্ত্তন করিলেও ভগবান্ যখন বেষ-কারীদিগকে অথিলস্রাস্থরাদির ছুর্ল্ ভ ফল (মুক্তি) প্রদান করিয়া থাকেন; তথন ভক্তিমান্দিগকে যে এদই ফল দিবেন, ভাহাতে আর সন্দেহ কি ? ॥৬৫॥ তৈছে ভূমি নবৰীপে করি অবতার;
সকল ত্রন্ধাতে জীবের করিলে নিস্তার।
বে কহে চৈতনা মহিমা মোর গোচর হয়;
সে জাহক; মোর পুন: এই ত নিশ্চয়—
তোমার বে লীলা মহা অমৃতের সিদ্ধ;
মোর মনোগোচর নহে তার এক বিন্দু'।
এত তানি প্রভূর মনে চমৎকার হৈল;
'মোর পুঢ়লীলা হরিদাস কেমনে জানিল'?
মনের সুন্তাবে তাঁরে কৈল আলিজন;
বাহ্য প্রকাশিতে তাহা করিল বর্জন।
কথর সভাব ঐপ্র্যা চাহে আচ্চাদিতে;
ভক্ত ঠাঁই লুকাইতে নারে ক্রম্মত বিদিতে।

তথাহি আলকমন্দারসংজে গ্রীসম্প্রদায়কৃৎযা মুমাচার্য্য-স্তোত্তে অফাদশশোকঃ

> 'উল্লংঘিত ত্রিবিধ দীম দমাতিশায়ি-দস্তাবনং তব পরিব্রড়িমস্বভাবং মায়াবল্লেন ভবতাপি নিগুছ্মানং পশুন্তি কেচিদনিশং স্বদনস্ভাবাঃ' ॥৬৬॥ ঃ

টীকা ও ব্যাখ্যা আদিঃ ৭৪ স্লোঃ ৯০—৯৬ পৃঃ দেখ ॥৬৯॥ :

তবে মহাপ্রভূ নিজ ভক্ত পাশে যাঞা;
হরিদাদের গুণ বলে শতমুখ হঞা।
ভক্তের গুণ কহিতে প্রভূর বাড়্যে উল্লাস;
ভক্তগণ শ্রেষ্ঠ তাতে শীহরিদাস।
হরিদাদের গুণগণ অসংখ্য অপার;
কেহ কোন অংশ বর্ণে নাহি পাধ পার।

চৈত্র্যঙ্গলে জীবনাবন দাস: ছবিদাসের গুণ কিছ করিয়াছে প্রকাশ। (১) স্ব কহানা যায় হরিদাদের অনস্ত চরিতা: কেহ কিছ কছে আপনাকে করিতে পবিতা। বনদাবন দাস যাহা না কৈল বর্ণন : হরিদাদের গুণ কিছু গুন ভক্তগণ! হরিদাস যবে নিজ গৃহ জ্যাগ কৈলা: বেণাপোলের বন মধ্যে কভ দিন বহিলা ৷ নির্জন বনে কটীর করি তলসী সেবন: থাতি দিলে জিল লক্ষ্য লাম সংকীৰ্তন। কাক্ষণের মারে কারে জিক্ষা নির্কাচণ : প্রভাবে সকল লোক করয়ে পূজন। সেই দেশাধকে নাম রামচনদ থান: বৈষ্ণবৃদ্ধনী সেই পাদ্ধ প্রধান। হরিদাসে লোক পুজে সহিতে না পারে; ভারে অপমান করিতে নানা উপায় করে। কোন প্রকারে হরিদাদের ছিল নাহি পায়: বেজাগণ আনি করে ছিল্পের উপায়। বেখাগণে কহে 'এট বৈরাগী হরিদাস: ত্মি সব কর ইছার বৈরাগ্যধর্ম নাশ্'। বেখাগণ মধ্যে এক স্থলরী যুক্তী: সেই কহে 'তিন দিনে ছরিব ভার মভি'। খান কছে 'মোর পাইক ঘাউক তোমার দনে': তোমার সহিত একতা ভারে ধরি যেন আনে'।

হরিদানের গুণ কিছু করিয়াছে প্রকাশ— টেডনাভাগবত আদিবও ১৪শ অধ্যায়
দেব। টেডনা ভাগবতে হরিদানের জীবন বৃহাত্ত সংক্ষেপতঃ এই রপে নিবিত হইরাছে:—
ব্চন য়াম উাহার জন্ম হান। গৃঁহ হইতে বাহির হইয়া তিনি শান্তিপুরে অছৈতের নিকটে
আসিয়াছিলেন; তথা হইতে ফুলিয়া য়ামে যান। সেখনে তাহার বৈক্ষবাচরণ দেখিয়া
ভাজী তাহার নামে মুল্কাবিপতির নিকট অভিযোগ করিয়া তাহাকে বন্দী করতঃ বিচারার্থে
পাঠান। তিনি হরিনাম পরিভাগে না করায় তাহাকে বাইশালাকে প্রহার করিয়া নারিয়া

বেখা কছে 'মোর দক্ষ হউক একবার : ষিতীয়বারে ধরিতে পাইক লইব ভোমার'। রাত্রিকালে সেই বেখা স্পরেশ ধরিয়া : হরিদাসের বাসা গেল উল্লসিভ হৈয়া। তল্পী নমস্করি হরিদাদের বারে যাঞা; গোঁদাঞিরে নমস্করি রহিলা দাণাইয়া। ष्मत्र डेचां डिया दम्थाय दिनया छ्याद्य : কহিতে লাগিলা কিছু স্থমধুর স্বরে। 'ঠাকুর ! পরমন্তব্দর প্রথমধৌবন ; তোমা দেখি কোন নারী ধরিতে পারে মন ? তোমার সকম লাগি লকুমোর মন: তোমানা পাইলে প্রাণ না যায় ধারণ। व्यामां करह '(जामां क्यित क्यू की काव : সংখ্যা নাম সংকীছিন যাবৎ আমাৰ। তাবং তুমি বসি শুন নাম সংকীর্ত্তন; নাম সমাধা ভৈলে কবিব যে ভোমাব মন'। এত শুনি সেই বেশ্রাবসিয়ারছিলা: कीर्जन करत हतिलाम, खाउ:काल टिला। প্রোতঃকাল দেখি বেখা উঠিয়া চলিলা: সমাচার বামচল খানেকে কভিলা।

ফেলাইবার আদেশ হয়; এবং ঐরপ প্রহারে জাবনান্ত হইয়াছে মনে করিয়া তাঁহাকে ননী নধ্যে ফেলাইয়া দেওয়া হয়। কিন্তু তিনি আশ্চর্গ্য শক্তিবলে জীবন নাত করিয়া প্রত্যাগমন করিলে মুল্কণতি পীর জ্ঞানে তাঁহার স্বাধীনতা প্রত্যাগন করিবলে । তৎপরে তিনি স্থানীয়া আনিয়া গঙ্গাতীরে এক গোন্ধার মধ্যে থাকিয়া সাধনতভক্ষ করিতে লাগিলেন। তহার মধ্যে এক মহাসর্গ ছিল; সেহরিবাসের তবে ভাহা ছাড়িয়া চনিয়া গেল। তৎপরে ভঙ্কের মৃত্যাহানে তিনি আপনার আশ্চর্যা শক্তি প্রকাশ করেন। ইরিনদী প্রাব্যের এক ছই ব্রাহ্মণ তাঁহাকে নামাতাসে মুক্তি হয় বলিতে শুনিয়া কটুক্তি করে; তিনি তাঁহার কথার উত্তর না বিয়া হাসিতে হাসিতে চনিয়া যান। চারিলিকে হরি-ভক্তি শ্বা গ্রেষ্থার থাতান্তকরণে অবশেষে তিনি নববীপে গ্রান ক্ষত্ত অবৈতের বৈক্ষব-বিষয় যোগ ভাগন ক্রিলেন।

रेहरुग्रम्हाल श्रीवनावन गामः হরিদাসের গুণ কিছ করিয়াছে প্রকাশ। (১) সর করা না যায় হরিদাদের অনেকাচরিত: কেহ কিছ কছে আপনাকে করিতে পবিতা। বুনদাবন দাস যাহানা কৈল বৰ্ণন : হরিদাদের গুণ কিছু গুন ভক্তগণ ! হরিদাস যবে নিজ গুর ত্যাগ কৈলা: বেণাপোলের বন মধ্যে কভ দিন বছিলা ১ নির্জ্জন বনে কটীর করি তল্মী সেবন : রাতি দিনে তিন লক্ষ নাম সংকীর্তন। ত্রাক্ষণের ঘরে করে ভিক্ষা নির্ব্বাহণ : প্রভাবে সকল লোক করয়ে পুজন ৷ সেই দেশাধাক নাম বামচৰ থান : বৈষ্ণবদ্বেষী সেই পাদগু প্রধান। হরিদাদে লোক পূজে সহিতে না পারে: ভারে অপমান করিছে নানা উপায় করে। কোন প্রকারে হরিদাদের চিজু নাহি পায়: বেশ্রাগণ আনি করে ছিদ্রের উপায়। বেশ্রাগণে করে 'এট বৈরাগী হরিদাস: ত্মি স্ব কর ইহার বৈরাগ্যধর্ম নাশ্'। বেখাগণ মধ্যে এক শ্বন্দরী যুবজী : সেই কছে 'তিন দিনে হরিব ভার মৃতি'। খান কছে 'মোর পাইক যাউক তোমার সনে': ভোমার সহিত একত ভারে ধরি যেন আনে'।

হরিদাদের গুণ কিছু করিয়াচে প্রকাশ— হৈতনাভাগ্রত আদিগও ১৪শ অধ্যায়
দেশ। হৈতনা ভাগ্রতে ছবিদাদের জীবন বৃহাক্ত সংক্ষেপতঃ এই রূপে নিবিত ইইয়াছে:—
বুচন গান ভাহার জন্ম হান। গৃঁহ হইতে বাহির হইয়া ভিনি শাস্তিপুরে অহৈতের নিকটে
আাদিয়াছিলেন; ভ্রধা হইতে ফুলিয়া আমে যান। সেবানে ভাহার বৈক্ষরাচরণ দেবিয়া
কালী ভাহার নামে মুল্কাবিপতির নিকট অভিযোগ করিয়া ভাহাকে বন্দী করতঃ বিচারার্থে
পাঠান। তিনি হরিনাম পরিত্যাগ না করায় ভাহাকে বাইশগারাবে প্রহার করিয়া মারিয়া

বেখা কৰে 'মোর দঙ্গ হউক একবার: ষিতীরবারে ধরিতে পাইক লইব ভোমার'। রাত্রিকালে সেই বেখ্যা স্থবেশ ধরিয়া: হরিদাসের বাসা গেল উল্লসিভ হৈয়া। ত্লগীন্মকরি হরিদাসের ভারে যাঞা: গোঁদাঞিরে নমস্করি রছিলা দাংগাইয়া। অস উপাড়িয়া দেখায় বদিয়া গুয়ারে: কহিতে লাগিলা কিছু স্থমধুর স্বরে। 'ঠাকুর ! পরমন্তব্যর প্রথমযৌবন ; তোমা দেখি কোন নারী ধরিতে পারে মন ? তোমার সক্ষ লাগি লকুমোর মন: তোমানা পাইলে প্রাণ না যায় ধারণ'। হরিদাস কহে 'ভোমায় করিব অজীকার: সংখ্যা নাম সংকীর্ত্তন যাবৎ আমার। তাবং তুমি বসি ভন নাম সংকীর্ত্তন; নাম সমাধা ছৈলে করিব যে ভোমার মন'। এত শুনি সেই বেশ্চাবদিয়ারহিলা: कीर्जन करत हतिमांग. लांड:कांम देश्या। প্রাতঃকাল দেখি বেখাউঠিয়া চলিলা: সমাচার রামচন্দ্র খানেরে কছিল।।

ফলাইবার আদেশ হয়; এবং ঐরপ প্রহারে উাহার জীবনান্ত চ্ইয়াছে মনে করিয়া চাহাকে ননী মধ্যে ফেলাইয়া দেওয়া হয়। কিন্তু তিনি আশ্চর্গ শক্তিবলে জীবন নাত করিয়া প্রত্যাপন করিলে মূলুকপতি পীর জ্ঞানে উাহার স্থানীনতা প্রত্যুপি করিলে। তৎপরে তিনি ফুনিয়ায় আনিয়া গলাতীরে এক গোলার মধ্যে থাকিয়া নাধনভদ্দ করিতে লাগিলেন। তথার মধ্যে এক মহানপ ছিল; সে হরিদাসের তবে তথা ছাড়িয়া চনিয়া গেল। তথারে ডকের মৃত্যহানে তিনি আপনার আশ্চর্যা শক্তি প্রকাশ করেন। ইরিনলী প্রাব্দের এক ছুই আলোপ তাহাকে নামাভাবে মুক্তি হয় বলিতে তানিয়া কটুক্তি করে; তিনি তাহার কথার উত্তর নারিয়া হাসিতে হাসিতে চলিয়া যান। চারিদিকে হরিক ভূকি শুনা দেখিয়া যাখিতাভাকরণে অবশেষে চিনি নববীপে গদন করতঃ থবৈতের বৈক্ষমন্ত্র বালে খ্রাপ স্থাপন করিলেন।

'আজি আমার অসীকার করিয়াছে বচনে: चाबि चवश जाँद मल्य हरेरव मन्दर्भ । জার দিন রাত্তি হৈকে বেখা আইল: চরিদাস বল্ত ভারে আখাস করিল। 'কালি ডঃথ পাইলে, অপরাধ না লও আমার ; অবশ্র করিক আমি ছোমায় অঙ্গীকার । ভাৰৎ ইহা ৰসি ভন নাম সংকীৰ্ত্তন : নাম পূর্ণ হৈলে পূর্ণ হবে ভোমার মন'। তুলদীকে তবে বেশ্যা নমস্কার করি: দারে বসি নাম ওনে, বলে হরি হরি। রাজি শেষ হৈল, বেশ্যা উবিপষি করে: তার রীতি দেখি হরিদাস কছেন ভারে। 'কেণ্টি নাম প্রহণ যজ্জ করি একমাসে : এই দীক্ষা করিয়াছি, হৈল আসি শেষে। আনলি সমাপ্ত হইবেক হেন জ্ঞান ছিল: সমস্ত রাজি নিল নাম সমাপ্ত না হৈল ৷ কালি সমাপ্ত হবে, ভবে হবে ব্ৰছ ভঞ্চ : অচ্চন্দে ভোমার সঙ্গে হইবেক সঙ্গা। বেশ্যা গিয়া স্থাচার থানেরে কছিল: আর দিন সন্ধ্যাকালে ঠাকুর ঠাঁ ঞি আইল । তুলদীকে ঠাকুরকে নমস্কার করি; ষারে বসি নাম: শুনে বলে হরে হরি:। 'নাম পূর্ণ হবে আজি বলে হরিদাস:; তবে পূর্ণ করিব তোমার অভিলাষ'। কীর্মন করিছে ভবে রাজি শেষ হৈল; ঠাকুরের সনে বেশ্যার মন ফ্রিরি গেল। দণ্ডবৎ হঞা পড়ে ঠাকুর চরণে ; तामहत्त थारनत कथा देकल निर्देशता 'বেশ্যা হঞা মৃত্রি পাপ করিয়াছি অপার; क्रणा कति कत मूकि अधरम निखात'।

ঠাকুর কহে 'থানের কথা দ্ব আমি জানি; অভ্য মুর্থ, সেই ভারে হঃথ নাহি মানি। সেই দিন যাইতাম এ স্থান ছাড়িয়া: তিন দিন রহিলাম তোমার লাগিয়া'। (वणा करह 'कुषा कति कत्र छेपरमण : কি মোর কর্ত্তব্য প্রাত্তে হার ভব কেশ'। ঠাকর করে ভিরের জ্বা প্রাক্ষণে কর দান; এই ঘরে আদি ভূমি করছ বিশ্রাম। नित्रचत्र नाम न ७, जूननी रनवन ; অচিরাতে পাবে ভবে ক্লঞ্চের চরণ'। এত বলি তাবে নাম উপদেশ করি: উঠিয়া চলিলা ঠাকুর বলি হরি হরি। फट्ट (महे दिन्। श्वकृत व्याक्ति। नहेन ; গৃহ বুদ্ধি যেবা ছিল আন্দাণেরে দিল। মাথা মুজি এক বজে রহিলা সেই ঘরে; বাজি দিনে তিন লক্ষ নাম গ্রহণ করে। जुननी (मवन करत हर्जन छे नवान; ই ক্রিয় দমন হৈল, প্রেমের প্রকাশ। প্রসিদ্ধ বৈষ্ণবী হৈল পর্ম মহাস্তী: বভ বভ বৈষ্ণব ভার দর্শনেতে যান্তি। विभागत हिल्ला दिन विभागत हमर्यकात : হরিদানের মহিমা কছে করি নমস্বার। রাম চল্ল থান অংশরাধ বীজ কুইল: সেই বীজ বুক্ষ হঞা আগেতে ফলিল। মহদপরাধের ফল অভুত কথন; প্রস্থার পাইয়া কহি গুন ভক্তগণ ! সহতেই অবৈঞ্ব রামচক্র থান; চবিদাসের অপরাধে হৈল অম্বর স্থান। देवक व धर्म निक्त कदत देवक व अभान ; বছ দিনের অপরাধ পাইল পরিণাম।

নিজানন গোঁদাঞি গোঁডে যবে আইলা: প্রেম প্রচারিতে ভবে ভ্রমিতে লাগিলা। প্র প্রচারণ আর পাবগুদলন : এই কার্য্যে অবধৃত করিল ভ্রমণ। সর্বাচ্চ নিত্যানন্দ প্রেড আইলা তার ঘরে ; আসিয়া বদিলা হুগামগুণ ভিভরে। অনেক লোক জন দক্ষে অঙ্গন ভরিল: ভিতর হৈতে রামচল সেবক পাঠাইল। দেবক বলে 'গোঁদাঞি। মোরে পাঠাইল খাদ : গৃহত্তের হরে তোমায় দিছে বাদস্থান। গোয়ালার গোশালা হয় অত্যন্ত বিস্তার: ইঁহা সংকীৰ্ণ স্থান, তোমার মহুষ্য অপার'। ভিতরে আছিলা কোধে শ্বনি বাহির ছৈলা: অট অট হাদি গোঁদাঞি কহিতে লাগিলা। 'দভ্য কছে এই ঘর মোর যোগ্য নয়; মেচ্ছ গোবধ করে ভার যোগ্য হয়'। এত বলি ক্রোধে গোঁলাঞি উঠিয়া চলিলা: ভারে দণ্ড দিভে সে গ্রামে না রহিলা। ইহারামচন্ত খান সেবকে আনজ্ঞাদিল: গোঁদাঞি থাঁহা বদিলা ভার মাটি খোদাইল। গোময় ভালে লেপিল স্ব মন্দ্র প্রাঙ্গণ: তবুরামচন্দ্রমন না হৈল প্রসর। দস্যবৃতি রামচজেরে, রাজার না দের কর: কুদ হঞা সেচ্ছ উদ্ধির আইল তার বর। জাদি সেই ছুর্গামগুণে বাদা কৈল; অবধা বধ করি মরে মাংস রাছিল। को शूल महिक त्रामहत्सदत वासिता; ভার বর গ্রাম লুটে তিন দিন রহিয়।। त्मरे घरत जिन निन अवशा तक्कन; আবার দিন স্বাল্ঞাক্রিল গ্রন

कां जिथन चन शास्त्र मकल लहेल : বল্দিন প্রাস্ত প্রাম উচ্চাড কবিল। মহাজের অপমান যে দেশ গ্রামে হয় : এক জনার দোষে সব দেশ উজাতয়। হরিদাস ঠাকুর চলি আইলা চান্দপুরে: আদিয়া রহিলা বলরাম আচার্যোর ঘরে। हित्रगा त्शावर्क्तन इहे भूलूटकतं भक्त्रमातः ভার পুরোহিত ক্লরাম নাম তাঁর। হরিদাসের কুপা পাত্র, ভাতে ভক্তিমানে: মত্র করি ঠাকুরেরে রাখিল সেই গ্রামে। নির্জন পর্ণালায় করেন কীর্ত্তন: বলরাম আচার্বাগতে ভিক্ষা নির্বাহণ। রঘুনাথ দাদ বালক করেন অধ্যয়ন; (১) হরিদাস ঠাকুরে যাই করেন দর্শন। হরিদাস রূপা করে ভাঁহার উপরে: শেই রূপা কারণ হৈল চৈড্যু পাইবারে। তাঁহা থৈছে হরিদাসের মহিমা কথন: ব্যাখ্যান অন্তত কথা শুন ভক্তগণ ! এক দিন বলরাম মিনভি করিয়া; মজুমদারের সভায় আইলা ঠাকুর লইয়া। ঠাকুর দেখি ছুই ভাই কৈল অভ্যুথান: পাষে পড়ি আসন দিল করিয়া সম্মান। অনেক পণ্ডিত সভায় ব্রাহ্মণ সজ্জন: জুট ভাই মহাপণ্ডিত হির্ণ্য গোবর্দ্ধন। हतिमारितत श्वन मर्त करह शक्षभूर्य ; শুনিয়া হই ভাই পাইল বড় স্থথে। তিন লক্ষনাম ঠাকুর করেন কীর্ত্তন ; নামের মহিমা উঠাইল পণ্ডিতেরগণ।

> রমুনাথ ছাস—সোবর্জন দাদের পুত্র; পর জীবনে ই'হার নাম রমুনাথ দান গাৰাকী।

কেছ বলে 'নাম হৈতে হয় পাপক্ষ'; কেছ বলে 'নাম হৈতে জীবের মোক্ষ হয়'। হরিদাস কলে 'নামের এ ছই কল নহে; নামের ফলে কৃষ্ণপদে প্রেম উপলয়ে।

তথাহি শ্রীমদ্ভাগবতে একাদশক্ষমে দ্বিতীয়াধ্যায়ে অক্ট ত্রিংশংশ্লোকে জনকং প্রতি কবিবাক্যং

> 'এবং ব্রতঃ স্বপ্রিয়নামকীর্ত্ত্যা জাতানুরাগো ক্রতচিত্ত উচ্চৈঃ। হসত্যথো রোদিতি রোতি পায়-ভুগমাদবন্ধৃত্যতি লোকবাছঃ'॥৬৭॥ টাকা ও ব্যাখ্যা আদিঃ ১৫৮ শ্লোঃ ২৩৬ গৃঃ দেখ॥৬৭॥

'আফুসঙ্গিক ফল নামের মুক্তি পাপ নাশ; তাহার দৃষ্টান্ত হৈছে সুর্য্যের প্রকাশ।

তথাহি পদ্যাবল্যাং পঞ্চশাঙ্কগ্বতশ্ৰীধরস্বামিকৃতশ্লোকঃ।

'অংহঃ সংহরদ্থিলং স্কুছ্দ্রাদেব স্কল্লোকস্থা। তর্নিরিব তিমিরজল্ধে জ্রতি জগম্মল্লহ্রে ন্মি'॥৬৮॥

'ভিমিরজলধেং' পাপরূপাজ্ঞানসাগরস্তা 'ভরণিরিথ' 'জগ্মস্ললহরেং' জগত: মঙ্গলব্ধপশু হরেঃ 'নাম' 'জয়তি' সর্ব্বেংকর্ষেণ বর্ত্ততে; কিং কুর্ব্বং? 'সকললোক্সু' সম্বন্ধে 'স্কুং' একবারং 'উদয়াদেব' প্রকাশাদেব 'অথিলং' সকলং 'অংহং' পাপং 'সংহরং' দুরীকুর্ব্বং ॥৬৮॥

জগমঙ্গল শ্রীহরিনাম জয়যুক্ত হউক। অজ্ঞানতিমির জলধির তরণীর ন্যায় উহা একবারমাত্র প্রকাশিত হইলে সকল লোকের অথিলপাপরাশি দুরীভূত হয়॥৬৮॥

^{&#}x27;এই স্লোকের অর্থ কর পণ্ডিতের গণ'। সবে কছে 'তুমিকহ কর্থ বিবরণ'।

হরিদাস কছে 'থৈছে স্থেগ্যির উদয়;
উদয় না হৈছে আরম্ভ তনো হয় কর।
চৌর প্রেড রাক্ষণাদির ভর হয় নাশ;
উদয় হৈলে ধর্ম কর্ম মঙ্গল প্রকাশ।
ঐচেছ নামোদয়ারজ্ঞে পাপ আদি কয়;
উদয় হৈলে কৃষ্ণপদে হয় প্রেমোদয়।
মুক্তি ভুচ্ছ কল হয় নামাভাস হৈতে;

তথাহি শ্রীমভাগবতে ষষ্ঠক্ষকে দিতীয়াধ্যায়ে একচত্বা-রিংশশ্লোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুকবাক্যং

'ত্রিয়মাণো হরে নাম গৃণন্ পুত্রোপচারিতং। অজামিলোহপ্যগাদ্ধাম কিমৃত শ্রুদ্ধা গৃণন্'॥৬৯॥ টাকা ও বাধ্যা অস্তাঃ ৬০ লোকে ৬৪ পুঃ দেব॥৬৯॥

'যে মুক্তি ভক্ত না লয় ক্লফ চাহে দিতে'। তথান্থি তত্ত্বৈব তৃতীয়ক্ষন্ধে ঊনবিংশাধ্যায়ে একাদশ-শ্লোকে দেবভূতিং প্ৰতি কপিলদেববাক্যং।

'দালোক্য দান্তি দারূপ্য দানীপ্রৈক্তমপুতে। দীয়মানং ন গৃহ্নন্তি বিনা মৎদেবনং জনাঃ'॥ ৭০॥ দীকা ও ব্যাখ্যা আদিঃ ১১১ শ্লোকে ১৪৬ পুঃ দেখ॥৭০॥

গোপাল চক্রবন্তী নাম এক জন;
মজুম্লারের ঘরে দেই আরিন্দা আদ্ধাণ।
গৌড়ে রহে পাত্দাহা আগে আরিন্দাগিরি করে;
বার লক্ষ মুজা সেই পাতদাহারে ভরে।
পরম স্কার, পণ্ডিত, ন্তনবৌষন;
নামাভাগে মুক্তি শুনি না হইল সহন।
কুদ্ধ হঞা বলে সেই সরোষ বচন;
ভাবকের সিদ্ধান্ত শুন পণ্ডিতেরগণ!

'কোট জন্ম ব্ৰক্ষজানে যে মুক্তি না পায়;
এই কৃষ্টে নামাভাগে সেই মুক্তি হয়'।
হরিদাস কহে 'কেন করহ সংশয় দী
শাব্রে কহে নামাভাস মাব্রে মুক্তি হয়।
ভক্তি সুথ আগে মুক্তি অতি তুচ্ছ হয়;
অতএব ভক্তগণ মুক্তি না ইচ্ছয়'।

তথাহি ভক্তিরদায়তদিকো পূর্ববিভাগে দামাশুভত্তি লহ্য্যাং অন্টাবিংশাঙ্কধৃতে৷ হরিভক্তিস্থােদয়শু চতুর্দশাধ্য য়ীয়ষ্ট ত্রিংশশ্লোকঃ

'ছৎ সাক্ষাৎ করণাহলাদ বিশুদ্ধান্ধি স্থিতস্ত মে। স্থানি গোম্পদায়ন্তে ত্রহ্মণ্য পি জগদগুরো'॥৭১॥ ট্রকা ওব্যাধ্যা আদি: ১৫৯ স্লো: ২৩৭—৩৮ পু: দেব॥৭১॥

> বিপ্র কছে 'নামাভাদে যদি মুক্তি হয়; ভবে আনার নাক কাটি করহ নিশ্চর'। হরিদাস করে 'যদি নামাভাসে নয়: তবে আমার নাক কাটি এই স্থনিশ্চয়'। শুনি সভাসদ উঠে করি হাহাকার; মজুমদার সেই বিপ্রে করিল ধিকার। বলাই পুরোহিত ভারে করিল ভর্পন; 'ষ্টপ্টিয়া মুখ তুই মুক্তি কাঁহা জান 🔊 হরিদাস ঠাকুরে ভুই কৈলি অপুমান: সর্কনাশ হবে ভোর না হবে কল্যাণ' 🖡 শুনি হরিদাস ভবে উঠিয়া চলিলা: মজ্মদার সেই বিপ্রে ত্যাগ করিলা। সভা সহিত হরিদাদের পড়িলা চরণে : হরিদাস হাসি কহে মধুর বচনে। 'তোমা দ্বার দোষ নাহি, এই অজ্ঞ ব্রাহ্মণ: তার দোব নাতি, তার তর্ক নিষ্ঠ মন।

তেকের গোচর মতে নামের মহত : (काथा देश्रां क्वानित त था था अने अन प्रक था যাও খর, রুঞ্জ করুন কুশল স্বার: আমার সম্বন্ধে জঃথ না হউ কাহার'। ভবে সে হির্ণাদাস নিজ খরে আইলা: সেই বাক্ষণেরে নিজ লাব মানা কৈলা। ভিন দিন বহি সেই বিপ্রের কুর্ছ হৈল : অভি উচ্চ নাসাতার গলিয়াপডিল। চম্পককলিকা সম হস্ত পদাছুলি; কোঁকড হইল সব কুঠে গেল গলি। দেখিয়া সকল লোক হৈল চমংকার ৮ হরিছালে সব লোক করে নমস্তার। यहात्रि हतिहान वित्थात (हार ना हहेन : তথাপি ঈশ্বর তারে ফল ভূঞাইল। ভক্তের সভার অভ্যের দোষ ক্ষমা করে: কঞ্চসভার ভক্ত নিজ্ঞাস্তিতে নাপারে। বিপ্রের জঃখ শুনি হরিদাসের জঃথ হৈলা : বলাই পুরোহিতে কহি শান্তিপুরে আইলা। জাচার্যা মিলিয়া কৈল দণ্ডবৎ প্রণাম: অবৈত আলিক্সন কবি কবিল সমান। গঙ্গাতীরে গোফা করি নির্জন ভারে দিল: ভাগৰত গীড়ার ভক্তি অর্থ গুনাইল। আচার্যোর ঘরে নিভা ভিক্ষা নির্বাহণ : ছুই জনামিলি কৃষ্ণ কথা আযোদন। হরিদাস করে 'গোঁসাঞি ! করি নিবেদন ; মোরে প্রতাহ অর দেও কোন্ প্রয়োজন' ৽ মহা মহা বিপ্র এথা কুলীন সমাজ; আমারে আদের কর, না বাসহ লাজ। অলৌকিক আচার তোমার কহিতে পাই ভয়: সেই ক্লপা করিবে যাভে তোমার রক্ষা হয়'।

আচাৰ্য্য কৰেন 'তুমি না করৰ ভয়; সেই এআচরিব যেই শাল্প মত হয়। তমি থাইলে হয় কোট ব্ৰাহ্মণ ভোজন। এড বলি আন্ধ পাত্র করাইল ভোজন। জগৎ নিজার লাগ্যি করেন চিন্তন: 'অবৈষ্ণৰ জগত কেমনে হইবে মোচন' ? ক্ষে অবভারিতে অবৈত প্রতিজ্ঞা করিল: জল তুলসী দিয়া পূজা করিতে লাগিল। হরিদাস করে গোফার নাম দংকীর্ত্তন : ক্লফ অবভীর্ণ হন এই ভারে মন। ছুই জনের ভজ্যে চৈত্যু কৈল অবতার: নাম প্রেম প্রচারি কৈল জগত উদ্ধার। আর এক অলোকিক চরিত্র তাঁহার : যাহার প্রবণে লোকের হয় চমৎকার। তর্ক না করিও তর্ক অগোচর তাঁর রীতি: বিখাস করিয়া গুন করিয়া প্রভীতি। এক দিন হরিদাস গোফাতে বসিয়া: নাম সংকীর্ত্তন করে উচ্চ করিয়া। জ্যোৎসাবতী রাজি, দশদিশা স্থানির্মল: গঙ্গার লহরী জ্যোৎসায় করে ঝল মল। দারে তুলনী, লেপা পিতির উপর: গোফার শোভা দেখি লোকের জুড়ায় অস্তর। হেন কালে এক নারী অঙ্গনে আইলা: ভার অঙ্গ কাস্ত্যে স্থান পীত বর্ণ হৈলা। ভার অঙ্গলে দশ দিক!আমোদিভ: ভূষণ ধ্বনিভে কর্ণ হয় চম্কিত। আসিয়া তুলসীকে সেই কৈল নমস্কার; তুলদী পরিক্রমা করি গেলা গোফাছার। যোড় হাডে হরিদাসের ব্লিয়া চর্ণ: ভারে বসি কংখ কিছু মধুর বছন।

'জগভের বন্দ্য ভূমি রূপ ভণবান্; ভব সভ লাগি মোর এথার প্রায়াণ। মেরে অসীকার কর চইয়া সদয়: দীনে দয়া করে এই সাধ্যভাব হয়'। এত বলি নানা ভাৰ কর্য়ে প্রকাশ। খাহার দর্শনে মুলির হয় ধৈর্ঘ্য নাশ। নির্কিকার হরিদাস্থিতীর আশয়: হলিতে লাগিলা ভাবে হট্যা সদ্ধ :---'সংখালি মাস সংকীর্জনীমহাযত মনে: ভাহাতে দীক্ষিত আমি হই রাত্রি দিনে। যাবৎ কীর্তন সমাপ্ত নহে না করি অন্ত কাম: কীর্ত্তন সমাধা হৈলে হয় দীক্ষাম বিশ্রাম। দারে ৰসি শুন জুমি নাম সংকীর্ত্তন; নাম সমাপ্ত হৈলে করিব প্রীতি আচরণ'। এত বলি করেন ভিঁহ নাম সংকীর্ভন: সেই নারী বসি করে নাম প্রবণ। কীর্ত্তন করিতে আদি প্রাতঃকাল হৈল; প্রাত:কাল দেখি নারী উঠিয়া চলিল। এইমত ভিন দিন করে আগমন: নানা ভাব দেখায় যাতে ব্রহার হরে মন। কৃষ্ণ নামাবিষ্ট মন সদা হরিদাস: অরণ্য ক্রদিত হৈল স্তীর ভাব প্রকাশ। ভতীয় দিবদের রাত্রি শেষ যবে হৈল: ঠাকুরের স্থানে নারী কহিতে লাগিল:-'তিন দিন বঞ্চিলা আমা করি আখাসন: রাত্রি দিনে নছে তোমার নাম সমাপণ'। হরিদাস ঠাকুর কহে 'আমি কি করিব ? নিয়ম করিয়াছি ভাহা কেমনে ছাঙ্গিব' ? ভবে নারী কছে ভারে করি নমস্তার : 'আমি মারা করিতে আসিলাম পরীক্ষা তোমার।

'ब्रम्मामि कीव चामि नदारत याहिल ; একেল। ভোষারে আমি মোহিতে নারিল। মহাভাগবত তুমি ! তোমার দর্শনে ভোমার কীর্ছন ক্লফ নাম প্রবণে চিত্ত শুদ্ধ হৈল, চাহি কৃষ্ণনাম লৈতে: ক্লঞ্চনাম উপদেশি কুপা কর মোতে। হৈচভাগবভারে বছে প্রেমামূভ বভা; লব জীব প্রেমে ভালে পৃথিবী হৈল ধন্যা। এ বন্যায় যে না ভাগে সেই জীব ছার: কোট কল্পে তার কভু নাহিক নিস্তার। পুর্বে আমি রামনাম পাঞাছি শিব হৈতে; ছোমার সঙ্গে লোভ হৈল রুফানাম লৈতে। মুক্তি হেডু ভারক ব্রহ্ম হয় রামনাম; ক্ষণনাম পাবক, করে প্রেম দান। कुक्षनाम मां छुमि (माद्र कद्र धना।; कामाद्र छ जायात्र देयदछ এই প্রেমবন্যা '। এত বলি বন্দিল হরিদাসের চরণ: হরিদাস কছে 'কর ক্লফ সংকীর্ত্তন'। উপদেশ পাঞা মায়া চলিলা হকা প্রীত। এ সব কথাতে যদি না জম্মে প্রতীত : প্রতীতি করিতে কহি কারণ ইহার; যাহার শ্রবণে হয় বিশ্বাস সবার। চৈতন্যাবভারে ক্লফপ্রেম লুক্ক হঞা: ব্ৰহ্মা শিব সনকাদিপুথিবীতে জ্বিয়া क्रकनाम मध्या नारह, त्थामवन्त्रांत्र ভारतः नात्रम थक्नाम चानि मञ्चरा थकारम। লক্ষী আদি কৃষ্ণপ্ৰেমে লুক হইয়া; নাম প্রেম আস্বাদিল মন্তব্যে জ্বিরা। **অন্যের কা কথা ? আপনি ব্রভেক্ত নক্ষন** ব্দবতরি করে প্রেম নাম আত্মানন।

মারাগাদী প্রেম মানে ইহাতে কি বিশার ?

সাধু কুণা না করিলে প্রেম নাহি হর।

তৈতন্য গোঁদাঞির লীলার এইত শ্বভাব;

ক্রিন্থবন নাচে গার পাঞা প্রেমভাব।
ক্রম্ম আদি আর বত শ্বাবর জলম;
ক্রম্ম প্রেমে মন্ত, করে ক্রম্ম সংকার্ডন।

অরূপ গোঁদাঞি কড়চার যে লীলা লিখিল; (১)
রবুনাথ দাদ মুখে যে দব শুনিল;

সেই দব লীলা কহি সংক্ষেপ করিয়া;

তৈতন্য কুণাতে লিখি কুল জীব হঞা।

হরিদাদ ঠাকুরের কহিল মহিমা কথন;

যাহার শ্রবণে ভক্তের জুড়ার শ্রবণ।

শ্রীরপ রঘুনাথ পদে যার আশ;

তৈভন্যচরিতামুত কহে ক্রম্মদাদ।

ইতি জ্রীচৈতন্মচরিতামূতে অন্ত্যথণ্ডে জ্রীহরিদাস ঠাকুর-মহিমা কথনং নাম তৃতীয়পরিচ্ছেদঃ ॥৩॥

চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থ।

স্থল্পাবনাৎ পুনঃ প্রাপ্তং শ্রীগোরঃ শ্রীসনাতনং। দেহপাতাদবন্ স্লেহাৎ শুদ্ধং চক্রে পরীক্ষয়া॥ ৭২॥

'জীপৌরং' 'রুলাবনাৎ' 'পুনং' পুনর্জারং 'প্রাপ্তং' ঝারিখওমার্গেন নীলাচলমাগভমিভ্যর্থঃ 'গ্রীসনাভনং' 'দেহপাভাৎ' জগলাথরথাতো দেহ-পাভনাৎ 'স্লেহাৎ' 'অবন্' রক্ষন্ সন্ 'পরীক্ষমা' পরীকাঞাহণেন 'গুদ্ধং' প্রিকং 'চক্রে'। ৭২।

> বরণ গোঁসাই—কোন কোন পুঁথিতে 'শ্রীরূপ গোঁসাঞি' পাঠ আছে।

শ্রীসনাতন ঝারিখণ্ডপথে নীলাচলে আগমন করত জগ মাথের রথাতো দেহপাত করিবেন মননু করিয়াছিলেন; শ্রীগোরচন্দ্র স্নেহবশতঃ তাঁহাকে দেহপাত হইতে রক্ষা করিয়া পরীক্ষাগ্রহণাত্তে পবিত্র করিলেন। ৭২।

> खब्र खब्र और हरूना। खब्र निर्हानना ! জ্বাহৈত চক্র। জন্ম গৌর ভক্ত রন্দ। নীলাচল হৈতে রূপ গোডে যবে গেলাঃ মথরা হৈতে স্নাত্ন নীলাচলে আইলা। ঝারি খণ্ড বন পথে আইলাচলিয়া; কভু উপবাদ কভু চর্ক্রণ করিয়া। ঝারিথণ্ডের জলের দোষ উপবাস হৈতে: গাতে কণ্ড হৈল রসা পড়ে থাজুরা হৈতে। নির্কেদ হইল পথে করেন বিচার: 'নীচ জাতি দেহ মোর অত্যন্ত অসার। অগলাথে গেলে তার দর্শন না পাইব: প্রভর দর্শন সদা করিতে নারিব। মন্দির নিকটে শুনি তাঁর বাসা স্থিতি: মন্দির নিকটে যাইতে মোর নাছি পক্তি। জগরাপের সেবক ফেরে কার্য্য অন্তরেশ্যে; ভার স্পর্শ হৈলে মোর হৈতে অবপরাধে। ভাতে এই দেহ गिन ভान जाति किरह : ছঃথ শাস্তিহয় আর স্কাতি পাট্রেছ। জগলাথ রথ যাতায় হবেন বাহির : তাঁরে রথ চাকায় এই ছাডিব শরীর। মহাপ্রভুজাগে জার দেখি জগরাথ: রথে দেহ ছাড়িব এই পরম পুরুষার্থ। এই ত নিশ্চর করি নীলাচলে আইলা: লোকে পুছি হরিদাস স্থানে উত্তরিলা।

হরিদাসের কৈল্ভিঁহ চরণ বন্দন: হরিদাস জানি তাঁরে কৈল আলিজন। মহাপ্রভু দেখিতে তাঁর উৎকণ্ণিত মন: হরি। দ্ব কছে 'প্রভু আসিবে এখন'। হেন কালে প্রভু উপল ভোগ দেখিয়া: হরিদাসে মিলিতে আইলা ভক্তগণ লঞা। टाजु (मिथ (मैरिह भए ए मण्डवर इका ; প্রভূ আলিদিল হরিদাসে উঠাইয়া। হরিদাস কচে 'সনাতন করে নমস্কার': সনাতনে দেখি প্রভু হৈল চমৎকার! স্মাত্নে আলিঙ্গিতে প্রভু আগে হৈলা; পাছে ভাগে স্নাত্ন কছিতে লাগিলা :---'মোরে না ছুঁইও প্রভু পড়েঁ৷ তোমার পায়; একে নীচ জাতি অধ্য ছার কণ্ড রদা গায়।' বলাৎকারে প্রভু তাঁরে আলিঙ্গম কৈল: তাঁর কণ্ড ক্লেদ প্রভুর শ্রীমঙ্গে লাগিল। সব ভক্তগণে প্রভুমিলাইল স্নাতনে; সনাভন কৈল স্বার চরণ বন্দনে। স্বা লঞা বসিলা প্রভু পিণ্ডার উপরে: হরিদাস সমাতন বসিলা পিণ্ডা তলে। কুশল বার্ত্তা মহাপ্রভু পুছেন দনাতনে; ভিঁহ কহেন 'পরম মঙ্গল দেখিত চরণে'। মথুরার বৈফাবের কুশল পুছিল; সন্তেন স্বার কুশল বার্তা জানাইল i প্রভু কহে 'ইহা রূপ ছিল দশ মাসে; ইছা হৈতে গোডে গেলা হৈল দিন দশে। তোমার ভাই অনুপমের হৈল গঙ্গা প্রাপ্তি; ভাল ছিল রখুনাথে দৃঢ় তাঁর ভক্তি।' मनाजन करह 'नीह दश्रम स्मात जना; অধর্ম অন্তায় যত আমার কুলধর্ম।

'হেন বংশে ঘুণা ছাড়ি কৈলে অলীকার; কোমার কপাতে বংশের মঙ্গল আমার। সেই অমুপম ভাই শিশুকাল হৈছে; রঘুনাথ উপাদনা করে দৃঢ় চিছে। রাত্রি দিনে রঘুনাথের নাম আর ধ্যান 🕫 রামায়ণ নিরবধি শুনে, করে গান। আমি আর রূপ তাঁর জ্যেষ্ঠ সহোদর: আনালুহাসকে ভিঁহরছেনিরস্কর। আমা সবাসঙ্গে কৃষ্ণকথা ভাগবত ভানে; তাঁহার পরীক্ষা আমি কৈল তুই জনে দ " শুনহ বলভ ! কুফাপরম মধুর ; त्रोक्तर्या भाष्या (अम दिलान अहत। রুফভজন কর তুমি আমা ছুঁহার সঙ্গে; তিন ভাই একতা রহিব ক্লম্ভ কথা রক্লে'। এই মত বারবার কহি ছুই জন; আমা দোঁহার গৌরবে কিছু ফিরি গেল মন। ''ভোমা দোঁহার আজা আমি কতেক লজিব্ব প দীক্ষামন্ত্র দেহ ক্রফ ভজন করিব" : এভ কহি রাত্রিকালে করেন চিস্তন: ''কেমনে ছাভ়িব রখুনাথের চরণ'' ?। স্ব রাত্তি ক্রন্দন করি কৈল জ্ঞাগ্রণ: প্রাতঃকালে আমা তুঁহায় কৈল নিবেদন। "রমুনাথের পাদপলে বেচিরাছি মাথা; কাড়িতে না পাৰেঁ। মাথা পাই বড়বাথা। রূপা করি মোরে আজ্ঞা দেহ ছই জন; कत्य कत्य (मर्दा त्रयूनारथेत हत्रन । রখুনাথের পাদপল ছাড়ন না ধার; ছাড়িবার মন হৈলে প্রাণ ফাটি বার''। ভবে আমি ছঁছে তাঁরে আলিক্সন কৈল; ''দাধুদ্ঢ ভজি ভোমার'' কৰি প্রশংসিল।

'যেবংশ উপরে ডোমার হয় ক্লপা লেশ; সকল মলল তাঁহা খণ্ডে সক কেশ'। গোঁদাঞি কহেন 'এই মত মুরারি গুপ্ত; পূর্বে আমি পরীক্ষিল ভাঁর এই রীত। সেই ভক্ত ধন্য যে না ছাড়ে প্রভুর চরণ ; সেই প্ৰেভ ধনা যে না ছাড়ে নিজ জন। क्रटेक्टर (भरक यनि यात्र अन्। शादन: বেই ঠাকুর ধন্য তারে চুলে ধরি আনে। ভাল হৈল ভোমার ইহা হৈল আগমনে: এই ঘরে রহ ইহা হরিদাস সমে। কৃষ্ণ ভক্তি রুসে ভিঁহ পরম প্রধান: ক্ষা রস আসাদন কর, প্র ক্ষা নাম'। এত বলি মহাপ্রভু উঠিয়া চলিলা; গোবিল স্বারায় হুঁহে প্রসাদ পাঠাইলা চ এই মড সমাতন রহে প্রভর স্থানে: জগরাথের চক্র দেখি করেন প্রণামে। প্রভু আসি প্রতিদিন মিলে হুই জনে ; ইষ্ট গোষ্ঠি কুষ্ণকথা কহে কভক্ষণে। দিব্য প্রসাদ পাইয়া নিত্য জগরাথ মন্দিরে: ভাহা আনি নিত্য অবশ্র দেন ছঁহাকারে। এক দিন আদি প্রভু হুঁহারে মিলিলা; সনাতনে আচ্ছিতে কহিতে লাগিলা:---'সুনাতন ! দেহত্যাগে কুঞ্চ না পাইয়ে : কোট দেহ ক্ষণেকে ভবে ছাড়িতে পারিরে। দেহত্যাগে কৃষ্ণ না পাই, পাইয়ে ভলনে; ক্লফপ্রাপ্তির উপায় নাহি ভক্তি বিনে। দেহভাগাদি এই সব তামস ধর্ম ; তমোরজোধর্মে কুফের না পাইরে মর্মা। ভক্তি বিনা ক্লে কভু নহে প্রেমোলয়; প্রেম বিনা ক্ষপ্রাপ্তি অন্য হৈছে নয়।

ভণাহি শ্রীমন্তাগবতে একাদশক্ষকে চতুর্দশাধ্যায়ে উন বিংশশ্লোকে উদ্ধবং প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যং।

'ন সাধয়তি মাং যোগে। ন সাংখ্যং ধর্ম উদ্ধব। ন স্বাধ্যায় ত্তপ স্ত্যাগো যথা ভক্তির্মনোর্চ্জিতা'॥ ৭৩॥

किका ख ब्याच्या ज्यांनिः ১৯৯ ज्ञाः ०१०-१८ शृः (नथ । १०।

'দেহত্যাগাদি তমা ধর্ম, পাতক কারণ;
সাধক না পায় তাতে কৃষ্ণের চরণ।
প্রেমী ভক্ত বিয়োগে চাহে দেহ ছাড়িতে;
প্রেমে কৃষ্ণ মিলে, দেও না পায় মরিতে।
গাঢ় অকুরাগে বিয়োগ না যায় সহন;
তাতে অকুরাগী বাঙ্গে আপুন মরণ।

তথাহি এমন্তাগবতে দশমস্বন্ধে দ্বিপঞ্চাশত্মাধ্যায়ে পঞ্চালিংশশ্লোকে প্রাকৃষ্ণমূদিশ্য লিখনে রুক্তিশীবাক্যং।

যতাংগ্রিপক্ষরজঃ স্লপনং মহান্তো বাঞ্স্ত্যমাপতিরিবাত্মতমাপহতৈত্য যদ্যবুজাক্ষ ন লভেয় ভবৎপ্রসাদং জহ্যামসূন্ ব্রক্ষান শতজ্মভিঃ ত্থাৎ'॥ ৭৪॥

হে 'অধু আক'! 'বহু' ভবতঃ 'জজিবু প্রজার জারণনং' পাদপদান্ত রজোভিঃ রপনং রানং 'আত্মতানাপহত্যৈ' আত্মনঃ পাপবিনাশার 'উমাপতি-রিব' 'মহান্তঃ' সাধবঃ 'বাছন্তিঃ'; তহু 'ভবং প্রসাদং' 'যদি' জহং 'ন' 'লভের' ন প্রাপ্নাং ভহি 'বতরুশান্' বভৈরূপবাসাদিভিঃ রুশান্ 'অক্ন্' প্রাণান্ 'জহান্' তাজেরম্; ততঃ কিমিতি ? অভ আহ 'শতজন্মভিঃ' অপি তব প্রসাদঃ 'হৃহং'। ৭৪।

বে কমলাক্ষ ! উমাপতির ন্থায় মহজ্জনের। আত্মার তমোনাশের জন্য তোমার যে পাদপঙ্কজরজে স্নান করিতে বাস্থা করেন; তোমার দেই প্রদাদ যদি আমি লাভ করিতে না পারি, তবে উপবাদাদি দারা এই প্রাণকে ক্ষীণ করিয়া পরিত্যাগ করিব; তাহা হইলেশত জন্মেও তো তোমার প্রদাদ পাইতে পারিব। ৭৪।

তথা তত্ত্বৈ একোনত্রিংশাধ্যায়ে দ্বাত্রিংশক্লোকে শ্রীকৃষ্ণং প্রতি গোপীবাক্যং।

> 'সিঞ্চান্ধ ন স্থানধরামূতপূরকেণ হাসাবলোককলগীতজহাচ্ছয়াগ্রিং নোচেদ্বয়ং বিরহজাগ্যুপযুক্তদেহা ধ্যানেন যাম পদয়োঃ পদবীং সথে তেওঁ॥ ৭৫ ॥

হে 'আছে' প্রিয় 'বিদধরায়তপূরকেণ' তব অধরায়তলানেন 'নঃ' আত্মাকং 'হাদাবলাককলগীতজল্পজ্যাগ্রিং' হাদদহিতাবলোকনেন কলগীতেন চ জাতো যো হৃজ্যাগ্রিং কামাগ্রি স্তং 'নিঞ'; 'নোচেং' হে 'দথে' 'বয়ং' 'বিরহলাগু গুবুকুলেহাং' তব বিরহাৎ জনিষ্যতে ঘোহগ্রি স্তেন চ উপযুক্তদেহা দক্ষশরীরাঃ যোগিন ইব 'তে' তব 'পদয়োঃ' 'পদবীং' জান্তিকং 'ধ্যানেন' 'ঘান' প্রাপুরাম। ৭৫।

হে প্রিয়! তোমার হাস্যাবলোকন এবং স্থমধুর সঙ্গীতে আমাদের যে কল্পািয়ি উদ্দীপিত হইল, অধরামৃত দানে তাহা নির্বাণ কর; নতুবা তোমার বিরহািয়িতে দগ্ধ হইয়া যোগীদের ন্যায় আমরা ধ্যান যোগে তোমার চরণ সন্ধিধি প্রাপ্ত হইব ॥ ৭৫॥

'কুবুদ্ধি ছাড়িয়া কর শ্রবণ কীর্ত্তন ;
আচরাতে পাবে তবে কৃষ্ণ প্রেম ধন।
নীচ জাতি নহে কৃষ্ণ ভজনে অবোগ্য;
স্থকুল বিপ্রানহে ভজনের বোগ্য।
বেই ভজে সেই বড়, অভক্ত হীন ছার;
কৃষ্ণ ভজনে নাহি জাতি কুলাদি বিচার।

পীনেরে অধিক দক্ষা করে ভগবান ; কুলীন পণ্ডিত ধনীর বড় অভিমান।

তথাছি শ্রীমন্তাগবতে সপ্তমক্ষন্ধে ন্বমাধ্যারে ন্বম স্লোকে ন্রসিংহং প্রতি প্রহলাদ্বাক্যং।

> 'বিপ্রাদ্ধির ষড় গুণযুতাদরবিন্দনাভ পাদারবিন্দবিমুখাৎ শ্বপচং বরিষ্ঠং মন্যে তদপিতিমনোবচনেছিতার্থ-প্রাণঃ পুনাতি দ কুলং ন তু ভূরিমানঃ'॥ ৭৬॥

क्रीका छ व्याध्या मध्यः २६२ (अाः ४७)-७२ श्रः (तथ । १७ ।

'ভজনের মধ্যে শ্রেষ্ঠ নববিধ ভজি ; ক্লফপ্রেম রুফ্ড দিতে ধরে মহাশক্তি। ভার মধ্যে দর্ব শ্রেষ্ঠ নাম সংকীর্ভন: নিরপরাধে নাম লৈলে পায় প্রেমধন'। এত ভানি স্নাভনের হৈল চমৎকার । 'প্রভুরে নাভার মোর মরণ বিচার। সর্বজ্ঞ মহাপ্রভুনিষেধিল মোরে'। প্রভুর চরণ ধরি কহেন ভাঁহারে। 'সক্তি কুপালু তুমি ঈশার স্ভেদ্র: रेयरक नाहा अ रेखरक नाहि स्वन कार्डिया। নীচ অধম মুক্তি পামর সভাব; মোরে জীয়াইলে ভোমার কিবা হবে লাভ'?। প্রভু কহে 'তোমার দেহ মোর নিজ্ধন: তুমি মোরে করিয়াছ আত্ম সমর্পণ। পরের দ্রব্য ভূমি কেন চাহ বিনাশিতে ? ধর্মাধর্ম বিচার কিবা না পার করিতে ? ভোমার শরীর মোর প্রধান সাধন: এ শরীরে সাধিব জামি বছ প্রয়োজন।

'ভক্ত ভক্তি কৃষ্ণ প্রেম তত্ত্বে নির্দার: বৈষ্ণবের ক্বত্য আর বৈষ্ণব আচার। কৃষ্ণভক্তি, কৃষ্পপ্রেম, দেবা, প্রবর্ত্তন: বুপ্ত তীর্থ উদ্ধার আর বৈরাগ্য শিক্ষণ। নিজ প্রিয় স্থান মোর মধুরা বুন্দাবন ; তাঁহা এত কর্ম চাহি করিতে প্রচারণ। মাতার আজ্ঞায় আমি বসি নীলাচলে : ভাঁহ। রহি ধর্ম শিকাইতে নাহি নিজ বলে। এত স্ব কর্ম আমি যে দেছে করিব: তাহা ছাড়িভে চাহ তুমি, কেমনে সহিব' ? ভবে সনাভন কহে 'ভোমাকে নমস্কারে: তোমার গন্ধীর হৃদয় কে বুঝিতে পারে ? কার্চের পুতলী যেন কুহকে নাচায়; ष्यां भरत वा खात्न भूउनी किया नात्र गात्र। ভৈছে যারে যৈছে নাচাও সে করে নর্জনে : देका नाह, दक्या नाहाय, त्मर नाहि कात्न'। ছরিদাসে কহে প্রভ 'গুন হরিদাস। পরের দ্রব্য ইহ করিতে চাহেন বিনাশ। পরের স্থাপ্য দ্রব্য কেছ না থায় বিলায়: নিষেধিও ইহার যেন না করে অন্যায়'। **ভরিদাস কহে 'মিথাা অভিমান** করি : ভোমার গন্তীর হাদ্য বঝিতে না পারি। কোন কোন কার্য্য ভূমি কর কোন ছারে; তুমি না জানাইলৈ কেহ জানিতে না পারে। এতাদশ তুমি ইহারে করিয়াছ অঙ্গীকার: এ সৌভাগ্য ইহার, নাহয় কাহার'। ভবে মহাপ্রভু হুহাঁরে করি আলিজন; মধ্যাক্ত করিতে উঠি করিলা গমন। সনাতনে হরিদাস কছে করি আলিজন: 'ভোমার ভাগ্যের সীমা না যায় কথন।

'তোমার দেহ কহে প্রস্থ মোর নিজ ধন; ভোমা সম ভাগ্যবান নাহি কোন জন। নিজ দেছে যে কার্য্য না পারেন করিতে: দে কার্য্য করাইবেন ভোমায় সেহ মথুরাভে। যে করিছে চাহেন ঈশ্বর সেই সিদ্ধ হয়: জোমার সৌভাগা এই কছিল নিশ্চয়। ভক্তি সিদ্ধান্ত শাল্প আচার নির্ণয়: তোমা দার। করাইবেন বুঝিল জাশয়। कामात कहे (पह श्रञ्ज कार्या ना नातिन ; ভারত ভূমিতে জন্মি এই দেহ ব্যর্থ হৈল'। স্নাত্তন কছে 'তোমা-স্ম কেবা আছে আন প মহাপ্রভুর গণে তুমি মহাভাগ্যবান। অবতার কার্য্য প্রভুর নাম প্রচার; দেই নিজ কার্য্য প্রভু করেন ভোমার দ্বার। আছে। কর তিন লক্ষ নাম সংকীর্রন**ঃ** স্বার আংগে কর নামের মহিমা কথন। আপনি আচরে কেহ নাকরে প্রচার: প্রচার করয়ে কেছ না করে আচার। আচার প্রচার নামের কর ছই কার্যা: তুমি স্কাণ্ডফ, তুমি জগভের আর্ধ্য'। এই মতে ছই জন নানা কথা রঙ্গে: কৃষ্ণকথা আমাদায় বহি এক দক্ষে। याजाकारण कारेला मन रशोरकत कळनन : পূর্ববং কৈল রথ যাত্রা দরশন। র্থ অগ্রে প্রভু তৈছে করিল নর্ত্তন ; দেখি চমৎকার হৈল স্নাভ্নের মন। বর্ষা চারিমাস রহিল সব ভক্তগণ : স্বাসজে প্রভুমিলাইল স্নাত্ন। অবৈত, নিভ্যানন্দ, শ্ৰীবাদ, বক্তেশ্ব: वाञ्चलव, भूताबि, ताचव, नार्यान्त :

পুরী, ভারতী, স্বরূপ, পণ্ডিভ গদাধর ; সার্কভৌম, রামানক, জগদানক, শকর : কাশীশ্বর গোবিন্দাদি যভ ভক্তগণ: স্বাস্নে স্মাত্রের করাইল মিলন। यथीरयोशा कताहेल मवात हत्र वन्मन : ভাঁরে করাইল সবার কপার ভাজন। সদগুণে পাণ্ডিভো স্বার প্রিয় স্নাভন : ষথাযোগ্য রূপা মৈত্রী গৌরব ভালন। मकल देवस्थव यात रशेडिएमर्ग रशेला : স্নাভন মহাপ্রভুর চরণে রহিলা। দোল্যাত্রা আদি প্রভর সঙ্গেতে দেখিল: দিনে দিনে প্রভ সঙ্গে আনন্দ বাড়িল। পূর্ব বৈশাথ মাদে যবে সনাতন আইলা: জ্যৈষ্ঠমানে প্রভ তাঁরে পরীক্ষা করিলা। ক্রৈষ্ট্রমানে প্রভ যমেশ্ব টোটা আইলা: ভক্ত অনুরোধে তাঁহা ভিক্ষা যে করিলা। मधारक जिकाकारन मनाज्य द्वानाहेन : প্রভ বোলাইল ভারে আনন্দ বাডিল। মধ্যাকে সমুদ্রের বালু হঞাছে অগ্নিসম: সেই পথে সনাত্ন করিলা গমন। 'প্ৰভ বোলাঞাছে' এই আনন্দিত মনে: ভপ্ত বালুকাতে পা পোড়ে তাহা নাহি জানে। ছুই পায়ে ফোস্কা হৈল তবু আইলা প্রভু স্থানে; ভিকাকরি মহাপ্রভুকরিয়াছে বিশ্রামে। ভিক্ষা অবশেষ পাত্র গোবিন্দ তাঁরে দিলা: প্রসাদ পাঞা সনাতন প্রভু পাশে আইলা। প্রভু কহে 'কোন পথে আইলা সনাতন ?' ভিঁচ কচে 'সমুদ্র পথে করিল গমন'। প্রভু করে 'ভপ্ত বালু কেমনে আইলা ?

'ভপ্ত বালুকাতে তোমার পায়ে হৈল বণ; চলিতে না পার, কেমনে করিলে সহন ?' সনাতন কহে 'হু:খ বহু না পাইল ; পায়ে ত্রণ হঞাছে ভাহা না জানিল। সিংহছারে যাইতে মোর নাহি অধিকার: বিশেষ ঠাকুরের ভাঁছা সেবক প্রচার। সেবক সব গতাগতি করে অবসরে: কারও সহিত স্পর্শ হৈলে সর্কনাশ করে'। ভনি মহাপ্রভু মনে সস্তোষ পাইলা; তুই হঞা তাঁরে কিছু কহিতে লাগিলা। 'যদাপিও হও তুমি জগৎ পাবন: ভোমা স্পর্শে পবিত্র হয় দেব মুনিগণ। তথাপি ভক্তের স্বভাব মর্যাদা রক্ষণ : মর্যাদা পালন হয় সাধুর ভূষণ। মর্য্যাদা লজ্বিলে লোকে করে উপহাস; ইহলোক পরলোক ছই হয় নাশ। गर्यामा ताथित, फूडे देशन त्यांत मन ; তুমি ঐছে না করিলে করে কোন্জন ?' এভ বলি প্রভু তাঁরে আলিস্ন কৈল; তাঁর কণ্ড,রসা প্রভুর শ্রীঅংক লাগিল। বার বার নিষেধে, তবু করেন আলিজন: অঙ্গে রসা লাগে, ছঃখ পার সনাতন। এই মতে দেবক প্রভু দোঁহে ঘর গেলা; আর দিনে জগদানন্দ সনাভনে মিলিলা। হই জন বসি কৃষ্ণকথা গোষ্ঠি কৈল: পণ্ডিতেরে সনাতন ছঃখ নিবেদিল। 'ইহা আইলাম প্রভু দেখি ত্র:থ থগুটিতে; যেবা মনে বাঞ্ছা প্রভুনা দিল করিভে। निरंविधरङ अञ् आनित्रन करत्र सोद्य ; মোর কণ্ডুরসা লাগে প্রভুর শরীরে।

'অপরাধ হয় মোর নাহিক নিস্তারু; জগনাথ না দেখিয়ে এ তঃখ অপার। হিত নিমিত্ত আইলাম হৈল বিপবীতে :: কি করিলে ভিত হয় নারি নির্দ্ধারিতে'। পণ্ডিত কছে 'তোমার বাদ ধোগ্য বৃন্ধাবন :-রথ যাত্রা দেখি তাঁহা করছ গমন। প্রভু আজ্ঞা হইয়াছে ভোমার গুই ভায়ে: বুন্দাবনে বৈস ভাঁছা সর্ব্ব স্থখ পাইয়ে। যে কার্য্যে আইলা প্রভর দেখিলা চরণ: রথে জগরাথ দেখি করত গমন'। সনাতন করে 'ভাল কৈলে উপদেশ: ভাঁহা যাব সেই মোর প্রভুদত্ত দেশ।' এত বলি দোঁতে নিজ কার্য্যে উঠি গেলা = আর দিনে মহাপ্রভু মিলিতে আইলা ৮ হরিদাস কৈল প্রভুর চরণ কলন ; হরিদানে কৈল প্রভ প্রেম আলিকন। দুরে হৈতে দুগুবৎ করে সনাভন: প্রভু বোলায় বার বার করিতে আলিঙ্গন। অপরাধ ভয়ে তিঁহ মিলিভে না আইলা: মহাপ্রভ মিলিবারে সেই ঠাই আইলা। সনাতন ভাগি পাছে করেন গমন; বলাৎকারে ধরি প্রভু কৈল আলিঙ্গন। চুই জনে লঞা প্ৰভু বসিলা পিণ্ডাতে; নিৰ্বিপ্ন সনাতৰ লাগিলা কহিতে। 'হিত লাগি আইলাম হৈল বিপরীত: সেবাযোগ্য নহোঁ, অপরাধ করোঁ নিভি নিভ। সহজে নীচজাতি মুঞি ছষ্ট পাপাশয়; মোরে তুমি ছুঁইলে মোর অপরাধ হয়। ভাহাতে আমার অকে রক্তরসা চলে: ভোমার অংক লাগে ভবু স্পর্শ তুমি বলে।

'বীভংস ব্লবিভে মা কর স্থালেপে; এই অপরাধে মোর হবে সর্বানালে। জাতে ঠিলা বছিলে মোর না হয় কল্যাণ : আছে। দেহ রথ দেখি যাই বৃন্দাবন। জগদানৰ পণ্ডিতে আমি যুক্তি পুছিল; বন্দাবনে যাইতে ভিঁছ উপদেশ দিল'। এত ভনি মহাপ্রভু সরোষ অন্তরে; জগদানদে জৈ দ্ধ হঞা করে ভিরকারে I' 'কালিকার পড় য়া জগা ঐছে গবরী হৈল ?' তোমাকেও উপদেশ করিভে লাগিল ? ব্যবহারে প্রমার্থে ভূমি তার গুরুত্বা: ভোমারে উপদেশ করে, না জানে আপন মৃল্য। আমার উপদেষ্টা তুমি প্রামাণিক আর্য্য ; ভোমারে উপদেশে বালকা, করে ঐছে কার্য্য'? ভনি সনাতন পায়ে ধরি প্রভুকে কহিল; জগদানকের সোভাগ্য আজি সেভানিল। আপনার সৌভাগ্যের আজি হৈল জ্ঞান: জগতে নাহি জগদানন সম ভাগ্যবান। জগদানদে পীরাও আত্মতা স্থারস: মোরে পীরাও গৌরব স্কৃতি নিম্ব নিষিকা রস । আজিও নহিল মোরে আত্মীয়তা জ্ঞান; মোর অভাগ্য ভূমি স্বভন্ন ভগবান'। শুনি মহাপ্রস্কু কিছু লজ্জিভ হৈল মনে: তাঁরে সম্ভোবিতে কিছু বলেম বচনে। জিগদান্ক প্রিয় আমার নহে ভোমা হৈতে 🕫 মর্ঘাদা লজ্বন আমি না পারি সহিতে। কাঁহা তুমি প্রামাণিক শাস্ত্রে প্রবীণ 🤊 কাঁহা জগা কালিকার বটুকা নবীন 🏲 আমাকেও বুঝাইতে তুমি ধর শক্তি; কত ঠাঞি বুঝাঞাই ব্যবহার ভক্তি।

ভোমার উপদেশ করে না বার সহন;

অতএব তারে আমি করিয়ে ভৎ সন।
বহিরক জানে তোমার না করি তবন;
তোমার গুণে স্তুতি করায়, ঐছে ভোমার গুণ।
বদ্যপি কারও মমডা বছজনে হয়;
প্রীভিম্বতাবে কাহাকে কোন ভাবোদয়।
ভোমার দেহ তুমি কর বীভংসতা জ্ঞান;
ভোমার দেহ আমায় লাগে অমুভস্মান।
অপ্রান্থত দেহ ভোমার প্রান্থত কভু নয়;
তথাপি তোমার ভাতে প্রান্থত বৃদ্ধি হয়।
প্রান্থত হৈলেও ভোমার বপু নারি উপেকিভে;
ভ্রমাভর্ম্ব বস্কুজান নাহি অপ্রান্ধত।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে একাদশস্কন্ধে অফীবিংশাধ্যায়ে চতুর্গলোকে উদ্ধবং প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যং।

'কিং ভদ্রং কিমভদ্রং বা দ্বৈতস্থাবস্তুনঃ কির্থ। বাচোদিতং জদনৃতং মনসা ধ্যাতমেব চ'॥ ৭৭॥

হৈন্তাসভ্যতরা স্তাতিনিন্দরোরবিষয়ত্বং প্রাপঞ্চয়তি। 'আবস্থনঃ' 'হৈত্ত্ত' আবয়বিরপতা মধ্যে 'কিয়ৎ''কিং' 'ভলং ? 'কিং' 'বা' 'আভলং' ? কিয়ন্তত্বং কিয়ন্তাহত নিত্যর্থঃ। আবস্তাহমেবাহ 'বাচোদিভং' বাচা বাকোন উদিতং উক্তং (বাহেন্দিরোপলক্ষণং)। চক্ষ্রাদিভিঃ যদ্ভাং 'মনসা' 'চ' যৎ 'ধ্যাত-মেব' 'ভৎ' 'অন্ভং' আবে। ৭৭।

দৈত বস্তু মাত্রই অবস্ত ; তাহার মধ্যে কোনটা ভাল কোনটা মন্দ আবার কি ? যাহা বাক্যদারা প্রকাশিত, বহিরিদ্রিয়ের গ্রোহ্য বা মন দারা ধ্যাত, তাহাই অবস্ত । ৭৭।

> 'বৈভে ভন্তাভন্ত জ্ঞান সব মনোধর্ম ; এই ভাল, এই মন্দ, এই সব ভ্রম।

তথাহি শ্রীভগবদগীতায়াং পঞ্চমাধ্যায়ে অফীদশস্লোকে
অর্চ্ছনং প্রতি শ্রীভগবছচনং।

'বিদ্যাবিনিয়সম্পন্নে ব্রাহ্মণে গবি হস্তিনি। শুনি চৈব শ্বপাকে চ পশুতাঃ সমদর্শিনঃ'॥ ৭৭॥

'পশুভাঃ' বিষদেশপি সমং এইশ্বৰ জাইং শীলং বেষাং ডে জ্ঞানিন ইভার্থ: এতেষু 'সমদর্শিনঃ' সমব্দ্ধয়ং ভবজ্ঞি; 'বিদ্যাবিনয় সম্পন্নে' 'আব্দংণ' 'পাবি' গোজাভৌ 'হজিনি' 'ভনি' কুকুরে, 'শুপাকে' চণ্ডালে 'চ'। ৭৮।

বিদ্যাবিনয় সম্পন্ন ভাষাণ, গো, হস্তী, কুরুর, ও চণ্ডা-

ব্দকে পণ্ডিতগণ সমভাবে দেখেন। ৭৮।

তথা তত্ত্বৈ ষষ্ঠাধ্যায়ে অফমক্লোকে অৰ্জ্নং প্ৰতি শ্ৰীভগবন্ধচনংঃ

'জ্ঞানবিজ্ঞানভৃপ্তাত্মা কুটোস্থো বিজিতেক্সিয়ঃ। যুক্ত ইত্যুচ্যুতে যোগী সমলোষ্ট্রাম্মকাঞ্চনঃ'॥ ৭৯॥

'জ্ঞানবিজ্ঞানত্থাত্মা' জ্ঞানমৌপদেশিকং বিজ্ঞানমপরোক্ষান্তবপ্তাত্যাং ছথো নিরাকাজ্জ আত্মা চিত্তং যত অতঃ 'কৃটত্থং' নির্দ্ধিকারঃ অতএব 'বিজিতেজ্লিয়ঃ' বিজিতানীজ্মিয়াণি ঘেন অতএব 'সমলোষ্ট্রাক্ষকাংশ সমানি লোষ্ট্রাদীনি যত মৃৎপণ্ডপাষাণস্থবর্ণেষ্ হেয়োপাদেয়বৃদ্ধিশ্ন্যঃ স 'যোগী' 'যুক্তং' যোগারাড় 'ইভ্যাত্তে'। ৭৯।

বাঁহার চিত্ত জ্ঞান (উপদেশ প্রাপ্ত) বিজ্ঞানে (অপরোকামুভূতি) তৃপ্ত হইরাছে; যিনি নির্বিকার ও জিতেন্দ্রিয়;
এবং বাঁহার লোষ্ট্র, প্রস্তর ও কাঞ্চনে সমান জ্ঞান জ্ঞানিয়াছে;
সেই যোগীকেই যোগারুচ বলা যায়। ৭৯।

'আমিত সর্যাসী আমার সমদৃটি ধর্ম; চম্দনপক্তেত আমার জ্ঞান হর সম। এই লাগি তোমার ভাগে করিতে না যুবার; মুণাবুদ্ধি করি যদি নিজ ধর্মাযার।'

হরিবাস কহে 'প্রভু যে কহিলে ভূমি: এই বাফ প্রভারণা নাতি মানি আছি। আমা দব অধ্যে যে করিয়াছ অঙ্গীকার: দীন দয়াল গুণ তোমার তাহাতে প্রচার'। প্রভূ হাসি কহে 'ওন হরিদাস স্নাতন। ভব কহি ভোমা বিষয় আমার থৈছে মন। তোমাকে লালা মানি আপনাকে লালক অভিযান : লালকের লাল্য নছে দোষ পরিজ্ঞান। আপনাকে হয় মোর অমানা সমান : ভোমা স্বাকে করেঁ। মুঞি বালক অভিমান। মাভার বৈচে বালকের অমেধ্য লাগে গায়: ছণ। নাচি জনো আরও মহাস্থপায়। লাল্যামেধ্য লালকের চন্দন সম ভার: সনাতনের ক্লেদে আমার ঘণা না উপজায়'। হরিদাস কহে 'তুমি ঈশ্বর দ্যাময়! তোমায় গন্তীর হাদয় বুঝন না হয়। বাহ্রদেব গ্লৎক্ষী, অঞ্ক কীড়াময় গ काँद्रिकालिक संदेकत्व इटेशा मनग्र। আলি সিয়া কৈলে ভারে কন্দর্পদম অস: কে বুঝিতে পারে তোমার কুপার তরক ?' প্রভ করে 'বৈঞ্বদেহ প্রাকৃত কভু নয়; ভাপ্তারত দেহ ভক্তের চিদানক্ষয়। দীক্ষাকালে ভক্ত করে আত্ম সমর্পণ: দেই কালে কৃষ্ণ তাঁরে করেন আক্সম **।** সেই দেহ করেন ভারে চিদানন্দময়: অপ্রাক্ত দেহে তাঁর চরণ ভদ্ম'।

তথাহি
শ্রীমন্তাগবতে একাদশক্ষমে উনত্তিংশাধ্যায়ে
দাত্তিংশলোকে উদ্ধবং প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যং।

'মর্ত্যো যদা ত্যক্তসমস্তকর্ম। নিবেদিতাল্মা বিচিকীর্ষিতো মে। তদামৃতত্বং প্রতিপদ্যমানো ময়াজুভুয়ায় চ কল্পতে বৈ'॥ ৮০॥

होका छ वार्था। मध्यः अन्न द्वांटक क्टन-७० पृष्टी दन्य १ ५० १

'সনাতনের দেহে কৃষ্ণ কণ্ডু উপলাঞা; আমা পরীক্ষিতে ইহা দিল পাঠাইয়া। খুণা করি আলিজন না করিতাম যবে: ক্ষ ঠাঞি অপরাধী হইতাম ভবে। পারিষদ দেহ এই, নাহয় তুর্ণীয়া; প্রথম দিনে পাইলাম চতুঃসোম গন্ধ?। বস্তুত: প্রভুষবে কৈল আলিগন: ৰ্জার স্পর্শে গন্ধ হইল চন্দনের সম। প্ৰভুকহে 'দনাতন ! না মানিও ছঃধ ; তোমা আলিকনে আমি পাই বড সূথ। এ বংসর তুমি ইহারহ আমাসনে; বৎসর বৈ ভোমাকে পাঠাব বৃশাবনে'। এভ বলি পুনঃ তাঁরে কৈল আলিক্ষন; क्षु राम वाक रेहन ख्वर्पत मम। দেখি ছরিদাদ মনে হৈল চমৎকার; প্রভুকে কহেন' এই ভঙ্গী যে তোমার। সেই ঝারিথতের পানী তুমি খাওয়াইলা; সেই পানী লক্ষ্যে ইহার কণ্ড উপজিলা। কণ্ড্করি পরীকা করিলে স্নাতনে; এই লীলা ভঙ্গী ভোমার কেহ নাহি জানে'। হুঁহা আলিজিয়া প্রভুগেলা নিজালয়; প্রভুর গুণ কহে হুঁহে হঞা প্রেমময়। এই মত স্নাত্ন রছে প্রভু স্থানে ; ক্লফটেতনাগুণকথা হরিদাস সনে। मालयाजा मिथि श्रञ् छाँदि विमात्र मिना ; द्रमावटन रव कदिरवन नव भिकारेण।।

त्य कारन विषाय देहन श्राञ्चत हत्रा ; क्रू समात विष्कृत तथा ना साम वर्गन । ষেই বন পথে প্রভ গেলা বুন্দাবন : সেই পথে যাইতে মন কৈল স্নাভন। त्य भर्थ त्य श्रीम नती. गांहा त्यहे नीना : ৰলভদ্ৰ ভট্ট স্থানে সব লিখি নিলা। মহাপ্রভুর ভক্তগণ স্বারে মিলিয়া: দেই পথে চলি যায় দে স্থান দেখিয়া। (यह नीना পথে श्रेष्ठ देवन (य रा जाता: ভাছা দেখি প্রেমাবেশ হৈলা সনাতনে ৷ এই মতে স্মাত্ন বুলাবনে আইলা: পাছে আসি রূপগোঁদাঞি ভাঁহারে মিলিলা ৮ এক বৎসর রূপগোঁসাঞির গৌডে বিলম্ব হৈল :-কটথের স্থিতি অর্থ বিভাগ করি দিল। গৌডে যে অৰ্থ ছিল, ভাহা আনাইল: কটম্ব ব্রাহ্মণে দেবালয়ে বাঁটি দিল। সর মনকথা গোঁদাঞি করি নির্কাহণ : নিশ্চিত হইয়া শীজ আইল বুনাবন। खुरे ভारे मिलि बुन्गावरन वात देवन: প্রভার যে আন্তরা দোঁকে সব নির্কাহিক। নানা শাস্ত্র আনি লুপ্ত ভীর্থ উদ্ধারিলা 🕫 বুন্দাকনে কৃষ্ণ সেবা প্রাকাশ করিলা। সনাতন কৈলা গ্রন্থ ভাগবভারতে: ভক্তি ভক্ত কৃষ্ণ তত্ত্ব জানি যাহ। হৈতে। বিদ্ধান্ত সার গ্রন্থ কৈল দশম টিপ্পনী : ক্রমণ লীলারস প্রেম যাহা হৈছে জানি ৮ চরিভক্তিবিলাস কৈল বৈক্ষব আচার: বৈষ্ণবের কর্তবোর শাহা পাই পার। আর যত গ্রন্থ কৈল, কে করে গণন ? মদন গোপাল গোবিনের কৈল সেবাভাগন ।

রূপ গোঁসাঞি কৈল রুমামুত সিক্সার; कलानकि वात्रव संदर्भ शहिरम विस्ताद । উজ্জ্বনীলম্পি নাম গ্রন্থ কৈল আর: কলবাদালী লাবসের ইছে। পাইয়ে পার। বিদগ্ধ মাধ্য ললিভ মাধ্য নাটক যুগল: कस्थलीला तम ग्रेंडा शाहित्य मकन । मागरतनी (कोमनी कामि नक श्रष्ठ देवन : সেই দৰ গ্ৰন্থে ব্ৰন্থ বিচাৰিল। ভাঁর লম্ ভ্রাতা শ্রীবল্লভ অনুপম: তাঁর পত্র মহাপণ্ডিত জীজীব গোঁসেই নাম। স্কৃত্যাগী ভিঁহ পিছে আইলা ৰুক্'ক্ন; ভিহ ভক্তি শাস্ত্র বহু কৈল প্রচারণ। ভাগবত সন্দর্ভ নাম কৈল প্রস্ত সার : ভাগবড় সিদ্ধান্তের শাঁচা পাইয়ে পার। গোপাল চম্পুনাম আর গ্রন্থ কৈল: বজ প্রেম লীলারস সব দেখাইল। বট সন্দর্ভে রুফ প্রেম তত্ত প্রকাশিল: চারি লক্ষ গ্রন্থ দেঁছে বিস্তার করিল। জীব গোঁদাই গৌড় হইতে মধুরা চলিলা; নিতানিক প্রভুঠাঞি আজে৷ মাগিলা ৷ প্রভ প্রীতে তাঁর মাথে ধরিল চরণ: ক্লাপ দলতেন সকলে কৈল আলিজন। প। আলে। দিল 'শীজাভূমি যাও বুলগবনে : তোমার বংশেরে প্রভু দিয়াছেন সেই স্থানে । তার আজন লঞা আইলা আজলাফল প্রেল: শ স্থাকরি বহু কাল ভক্তি প্রচারিক। এই তিন ওক আর ১ খুনাথ দাস ; ইহাসবার চরণ বলেঁ। যার মুঞ্জি দ†সাং এইভ কহিল পুনঃ সনাতন সঙ্গমে; প্রভুর আশয় জানি বাহার শ্রবের।

হৈতত চরিত এই ইক্ষণ সম; চর্মন করিতে হয় রম আমাদন। শ্রীরূপ রমুনাথ পদে যার আদা; হৈতন্যচরিতামুত কহে ক্ষুদাম।

ইভি এ তৈত অচরিতায়তে অন্ত্যথণ্ডে পুনঃ দনাত্তনসক্ষেৎ-দ্ব নাম চতুর্থ পরিছেদঃ॥ ৪ ॥

পঝম পরিচেছদ। অস্থকারস্থা।

ৈ বৈগুণ্যকীটকলিনঃ পৈশুন্সত্ৰণপীড়িতঃ। দৈন্যাৰ্ণবে নিমশ্লোহহং চৈতন্মবৈদ্যমাশ্ৰয়ে॥ ৮১ ॥

'অহং' 'বৈগুণাকীটকলিনঃ' বৈগুণারপেণ জীবাপকাররপেণ কীটেন শংশিতঃ 'বৈগুন্য ব্রুপীড়িতঃ'হিংসারপ্রধেন ক্লিষ্টঃ তথা'দৈন্যাণ্ধে নিম্মঃ' সন্ 'চৈত্যুবৈদ্যং' স্থাচিকিৎসকং জীচেত্নাঃং 'কাশ্রে'। ৮১।

জীবাপকার রূপ কীটে দফ, হিংদাত্রণে পীজ্ত এবং দৈন্যান্বে নিমগ্ন হইয়া আমি স্চিকিৎদক জীচৈতত্তের আপ্রায় লইলাম ॥৮১॥

জার জার শাচীক্ত আঁকুঞ্চৈটিতনা !
জার জার রূপামার প্রাভূ নিত্যানন্দ !
জারাবৈত রূপাসিক্ষু ! জার ভক্তনণ !
জার স্বরূপ গদাধর রূপ সনাতন !
এক দিন প্রাচুঃস্থানিশ্র প্রভূব চরণে
দেওবং করি কিছু করে নিবেদনে ।
'শুন প্রাভু ! মুঞি দীন গৃহস্থ স্থাম ;
কোন ভাগো গাঞাছি ছোমার হুমু ভিচরণ !

শুক্ত কথা গুনিবারে মোর ইন্ডা হর;

কৃষ্ণ কথা কহু মোরে ইইরা সদম'।

প্রভূতকে 'কৃষ্ণ কথা আমি নাহি জানি;

সবে রামানক জানেনু, তার মুখে গুনি।
ভাগ্য ভোমার কৃষ্ণ কথা গুনিতে হৈল মন;

রামানক পাশ যাই করহ প্রবদ।

কৃষ্ণ কথার কৃচি ভোমার বড় ভাগ্যবান্;

বার কৃষ্ণ কথার কৃচি চেই ভাগ্যবান।

তথাহি জীমন্তাগবতে প্রথমক্ষদ্ধে দ্বিতীয়াধ্যায়ে অফ্রম-শ্লোকে সৌনকাদীন প্রতি সূত বাক্টে।

> 'ধর্মঃ স্বসুষ্ঠিতঃ শুংসাং বিষক্সেনকথাস্থ যঃ। নোৎপাদয়েদ্যদি রতিং শ্রেমএব হি কেবলং'॥৮২ঞ

'পুংসাং' জনানাং 'ঘঃ' 'ধর্মঃ' ইতি প্রানিদ্ধ: 'অনুষ্ঠিত হ' স্থানীরমন্থ টিতে হিলি 'যদি' 'বিশক্ষেনকথাস্থ' হরিকথাস্থ 'রতিং' আসজিং 'ন' 'উৎ-পাদরেৎ' ন প্রাণয়েৎ তহি স ধর্ম্ম 'কেবলং' 'শ্রুম এর' কিফলশ্র্যা ভবতি। ৮২।

লোকে যাহাকে ধর্ম বলিয়া থাকে, তাহা হুন্দররূপে অনুষ্ঠিত হইলেও যদি তদারা হরিকথায় রতি না হয়; তাহা হইলে সে ধর্মানুষ্ঠানে কেবল শ্রমমাত্র সার হয়। ৮২।

> ভবে প্রদায় মিশ্র গেলা রামানন্দ স্থানে;
> রারের সেবক ভাঁরে বসাইক আসনে।
> রারের দর্শন না পাঞা মিশ্র সেবকে পুছিল;
> রারের বুডান্ত সেবক কহিতে লাগিল।
> 'ছই দেবকন্যা হয় পরমাস্ক্রনী;
> নৃত্য গীতে নিপুণতা বয়সে কিশোরী। ভাঁহা দেঁশহা লঞা বায় নিভ্তে উদ্যানে;
> নিজ নাটকের গীত শিখার নর্ভনে।

'তুমি ইহা বসি রহ ক্ষণেকে আসিবেন: ভবে বেই আজা দেহ সেই করিবেন'। ভবে প্রভায়মিশ্র জাঁহারহিলাবসিয়া। রামানশ রায় সেই ছই জন লঞা স্বহস্তে করেন ভার অভ্যক্ষ মর্মন: মহন্তে করান লান গাতে সন্মার্জন : স্থত সেরান বস্তু সর্কাল মণ্ডন ; ভবু নির্কিকার রায় রামানক্লের মন। কাষ্ট্র পাষাৰ স্পর্শে হর থৈছে ভাব: ভরণী স্পর্শেরায়ের ভৈছে স্বভাব। (नवावृद्धि चार्वाशिया करवन (नवन : স্বাভাবিক দাক্তভাব করি আরোপণ। মহাপ্রভুর ভক্তপণের হুর্মম মহিমা; ভাচে রামানদ্বের ভাব ভক্তি প্রেম দীমা। তবে সেই ছই জনে ৰুত্য শিখাইল; গীতের গৃঢ় অর্থ অভিনয় করাইল। সঞারী সাভিক স্থায়ী ভাবের লক্ষণ: মুখে নেত্রে অভিনয় করে প্রকটন। ভাব প্রকটন লাস্য রায় যে শিখায়: জগলাথের আবে দোঁতে প্রকট দেখায়। ভবে সেই ছই জনে প্রসাদ থাওয়াইল: নিভূতে দোঁহারে নিজ ঘরে পাঠাইল। প্রতিদিন রায় ঐছে করার সাধন: কোন জানে ক্ষুদ্র জীব কাঁছা তাঁর মন ? মিশ্রের আগমন রায়ে সেবক কহিলা: শীয় রামানন্দ তবে সভাতে আইলা। মিশ্রে নমস্কার করে সম্মান করিয়া: নিবেদন করে কিছু বিনীভ হইয়া। 'বহুক্ষণ আইলামোরে কেহ নাকহিল: তোমার চরণে মোর অপরাধ হৈল।

ভোমার আগমনে মোর পবিত হৈল ঘর : আজা কর কাঁচা করে তোসার কি**ত্তর** । মিশ্র করে 'ভোমা পেথিতে হৈল আগমনে: অপিনা পরিত্র কৈল জোমা লরশলে'। অভিকাল দেখি মিশ্র কিছ না কহিলা: বিদায় হটয়া মিশ্র নিজ ঘরে পেলা। আর দিনে মিশ্র আইলা প্রভু বিদ্যমানে ; প্ৰাভু কহে 'কুক্ কথা গুনিলে রায় স্থানে' ? ভবে মিশ্র রামানন্দের রুতান্ত কহিলা: ভনি মহাপ্রভু ভবে কহিছে লাগিলা:--'আমিত সন্ন্যাসী আপনা বিরক্ত করি মানি; দর্শন দূরে প্রকৃতির নাম যদি গুনি ভবঁহি বিকার পায় মোর ভন্নমন। প্রকৃতি দর্শনে ভির হয় কোন জন গ রামানক রায়ের কথা গুন স্ক্রন: কহিবার কথা নহে আশ্চর্যা কথন। वाक (प्रवामी चात्र समती एक्नी: ভার সব জ্বল সেবা করেন জ্ঞাপনি। श्रानामि कतात्र शतात्र वात्र विकृषणः গুহ অঙ্গ হয় তাঁর দর্শন স্পর্শন। তবু নির্কিকার রায় রামাননের মন: নানা ভাবোকাম ভারে করায় শিক্ষণ। निर्क्तिकात (पर मन कार्ड পायान मम: আশ্চর্য্য তরুণী স্পর্শে নির্বিকার মন। এক রামানন্দের হয় এই অধিকার: তাতে জানি অপ্রাক্ত দেহ ভাঁচার। তাঁহার মনের ভাব তিঁহ জানে মাত্র: তাহা জানিবারে আর দ্বিতীয় নাহি পাত্র। কিন্তু শাস্ত্র দৃষ্টে করি এক অনুমান; শ্রীভাগবভের স্লোক ভাহাতে প্রমাণ।

'বজবধু সলে ক্ষেত্ৰ রাসাদি বিলাস;
যেই জন কছে ভানে কৰিব। বিখাস।
আন্তোপ কাম ভান ভৎকালে হর কর;
ভিন ভণ কোভ নহে, মহাধীর হয়।
উজ্জ্বল মধুর রস প্রেম ভক্তি পায়;
আনন্দে কৃষ্ণ মাধুর্য্যে বিহুরে স্পায়।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমস্কন্ধে ত্রয়স্ত্রিংশাধ্যায়ে উন-চন্ধারিংশশ্লোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুকবাক্যং।

'বিক্রীত্থ ব্রজবধৃভিরিদঞ্চ বিষ্ণোঃ শ্রদান্বিতোহনুশৃণরাদ্ধ বর্ণয়েদ্যঃ ভক্তিং পরাং ভপবতি প্রতিলভ্য কামং হুদ্রোগমাধপহিনোত্যচিরেণ ধীরঃ' ॥৮৩॥

'বজবধ্ভিঃ' সহ 'বিজোঃ' ভগৰতঃ 'ইদঞ্চ' 'বিক্রীড়িতং' বিহারং 'বঃ' যো জনঃ 'শ্রদ্ধান্বিতঃ' 'অহুশৃধুয়াৎ' 'কথ' অনন্তরং 'বর্গয়েৎ' সঃ 'ভগ-বভি' 'পরাং' 'ভকিং' 'প্রভিলভাঃ' প্রাণ্য 'অচিরেণ' 'ধীরঃ' সন্ 'হৃদ্রোগং' 'কামং' 'আভে' 'অপহিনোভি' পরিভাক্তি। ৮০০।

ভগবান বিষ্ণুর অজবধ্গণ সহ এই ক্রীড়া যে ব্যক্তি শ্রদায়িত হইয়া শ্রবণ ও বর্ণন করেন, তিনি ভগবানে পর। ভক্তি লাভ করিয়া অচিরে স্থার হওত হৃদয়ের রোগরূপ কাম শীত্র পরিত্যাগ করিবেন।৮৩।

> 'যে ভনে যে পড়ে তার ফল এতাদুদী। দেই ভাবাবিষ্ট ষেই সেবে অহনিশি; ভার ফল কি কহিব ? কহন না ষায়; নিতা সিদ্ধ সেই, প্রায় সিদ্ধ ভার কায়। রাগাস্থ্যা মার্গে জানি রাষের ভজন;

'আমিও রায়ের স্থানে শুনি রুক্ষ কর্বা:: শুনিতে ইচ্ছা হয় যদি পুনঃ হাও তথা। মোর নাম লইও "ভিঁহ পাঠাইল মোদে: ছোমার ভালে ক্ষণ কথা ঋনিবার তরেঁ'। শীস্ত্র হার হারৎ জিন্ন আচেন সভাতে': এত ভনি প্রচায় মিশ্র চলিলা ছরিভে। রাম পাশ গেলা, রাম প্রণতি করিল; ্ৰজাজাকর যে লাগিয়া আগমন হইল'। মিশ্র করে মহাপ্রভু পাঠাইল মোরে; তোমার স্থানে ক্ষকথা গুনিবার তরে'। শ্রুনি রামানক মনে চুটল সম্বোধে: কহিতে লাগিলা কিছু মনের হরিযে। 'প্রভ আজায় কৃষ্ণকথা গুনিতে আইলা এপা: ইহা বই মহাভাগ্য আমি পাব কোথা' ? এত কহি তাঁরে লঞা নিভতে বসিলা: 'কি কথা গুনিতে চাহ ?' মিশ্রেরে পুছিলা। তিঁহ করে 'বে কহিলা বিদ্যানগরে; সেই কথা ক্রমে ভূমি কহিবে আমারে। মন্যের কি কথা ? তুমি প্রান্থ উপদেষ্টা : আমিত ভিক্ষক বিপ্র, তুমি মোর পোষ্টা। ভাল মন্দ কিছু আমি পুছিতে না জানি : দীন দেখি কপা কবি কছিবে আপনি⁷। তবে রামানক ক্রমে কহিতে লাগিলা :: ক্ষফকথা রসামৃত সিন্ধ উথলিলা। আপনি প্রশ্ন করি পাছে করেন সিদ্ধান্ত: ভূতীয় প্রাহর হৈল নহে কথা আছে। বক্তা শ্রোভা কহি শুনি দেঁতে প্রেমালেশে আত্মত্ত নাহি, কাঁহা জানিবে দিন শেষে হ (भवक कहिल भिन्न देवल कावमान -ভাবে বাষ কথ্যকথা কবিল দিশাল।

वह मचान कति शिट्य विशास विन: 'কুডার্থ হটমু' বলি মিশ্র নাচিতে লাগিল। খবে পিয়া মিশ্র কৈল স্থান ভোজন ; সন্যাকালে দেখিতে আইলা প্রভুর চরণা প্রভর চরণ বন্দে উলাসিত মন ; প্রভু কছে 'কুষা কথা করিলে শ্রবণ ?' মিশ্র কছে প্রভু মোরে কৃতার্থ করিলা ; কৃষ্ণকথামূভার্ণবে মোরে ভুবাইলা। রামানন রায় কথা কহিলে না হয়: মহযা নতে রার ক্ষভক্তি রসময়। আর এক কথা রায় কহিল আমারে: "ক্লফকথা বক্তা করি না জানিও যোরে। মোর মুখে কথা কছে আপনি গৌরচক্র; বৈছে কলার তৈছে কহি যেন বীণা যন্ত্র। মোর মুথে কছে কথা করে পরচার; পৃথিবীভে কে জানিবে এ লীলা তাঁহার'' ? যে সব শুনিল কৃষ্ণর সের সাগর; ত্রকার এ সব রগ নাহয় গোচর। হেন রস পান মোরে করাইলে তুমি[:]; জ্ঞাে ভ্রেড ভামার পায় বিকাইলাম আমি'। প্রভুক্তে 'রামানন্দ বিনয়ের ধনি ; আপনার কথা পর্যুতে দেন আনি মহামুভবের এই মত স্বভাব হয়: আপনার গুণ নাহি আপনি ক্যয়'। রামাননা রায়ের এই কহিল গুণলেশ: প্রছাম মিশ্রেরে বৈছে কৈল উপদেশ। গৃহস্থ হঞা নহে রায় বড়্বর্গের বশে: विश्वी इहेश महाामीदा छेश्रामत्म । এট সব গুণ ভাঁর প্রকাশ করিতে ; মিলো পাঠাইল ভাঁহা প্রবণ করিছে।

क यह भी

ভক্তগণ প্ৰকাশিতে প্ৰাভু ভাগ আৰে; নানা ভঙ্গীতে প্রকাশি নিজ লাভ মানে। আর এক স্বভাব গৌরের শুন ডক্তগণ ! এখার্যা স্বভাব গুড় করে প্রকটন। সন্ত্রাসীপজিত্তগরণর করিতে পর্কনাশ: নীচ শুরু হারা করে ধর্মের প্রকাশ। ভক্তিতত প্রেম কছে রায়ে করি বকাঃ আপনি প্রকার মিল বহ হয় প্রোভা। চরিদাস হারা নাম মাহাতা প্রকাশ : সনাতন দাবা ভক্তিসিদ্ধান্ত বিলাস। জ্ঞীরূপ হারা ব্রহ্মরূদ **প্রেম্নী**শা: কে ব্ঝিতে পারে গন্তীর চৈতনাের থেলা 📍 শ্রীচৈতন্য শীলা এই অমৃতের সিন্ধু ; জগৎ ভাদাইতে পারে যার এক বিদ্ধ। চৈতভাচরিতায়ত নিডা কর পান: যাহা হৈতে প্রেমানক ভক্তিত জান। এই মত মহাপ্রভু ভক্তগণ লঞা; बीलांচल विशंद्रद्य **अख्ति श्राहातियाः**। বঙ্গদেশী একবিপ্র প্রভার চরিতে নাটক করি লঞা আইলা শুনাইতে : ভগবান আচার্য্য সনে ভারে পরিচয় : তাঁরে মিলি ভাঁর ঘরে করিল আলেয় 🕨 প্রথমে নাটক ভিঁহ তাঁরে ভনাইল: তার দঙ্গে অনেক বৈঞ্চব নাটক শুনিল। मत्त्रे अभारम नावेक भन्नम छेख्य : মহাপ্রভূকে শুনাইতে স্বার হৈল মন। গীত খোক গ্ৰন্থ আদি ধেই কিছু আনে; প্রথমে শুনায় সেই ক্ষপের স্থানে। স্বরূপ ঠাঞি উত্তরে ঘলি, লঙ্গে তাঁর মৃদ্য তবে महाळाजू ठाँ कि अतात्र अवन ।

রসাভাস হয় যদি নিভাত বিরোধ ঃ সহিতে কা পারে প্রভূ মনে হর ক্রেধে। অতএৰ প্ৰস্তৃ কিছু আগে নাহি ওনে ; अहे मर्गाता टाक् क्रिजाटक निज्ञा चक्रां के हैं। कि जाहारों। देवन निरंदेशन इ 'এক কবি প্রভুৱ নাটক করিবাছে উত্তম আদৌ তুমি শুন ফদি তোমার মন মানে 🕫 পাছে মহাপ্ৰভূকেও করাবো শুৰুপে । ক্ষ্মপ কৰে 'তুমি গোপ প্ৰম উদাৰ ; বে দে শাল ভনিতে ইচ্ছা উপজে ভোমার চ বন্ধা ভবা কৰিব বাকেন হয় বসাভাস ; সিদান্ত বিক্ষা শুনিতে না হয় উল্লাস। রুষ রুষাভাষ ধার নাতিক বিচার : ভক্তি দিছাত দিলু নাহি পায় পার। ৰ্যাক্রণ না জানে, না জানে অল্ছার ; मांक्रेकानकारत क्यांन माहिक शहात : কৃষ্ণলীলা বৰ্ণিতে না ভানে সেই ছার; বিশেষ ছুৰ্গম এই চৈত্তস্ত বিহার। कुक्कवीना शोदनीना त्म कहत्र वर्गन ; (शोदशामश्रम यात्र इत्र व्याप थन । গ্রাম্য কবিত্র কবিত্ব শুনিতে হয় ছঃখ ; विषयः आश्रीय कावा अभिएक्ट सूध । ক্লপ বৈছে তৃই কাব্য করিয়াছে আরক্ত; শুনিতে আনন্দ বাড়ে ধার মুথবন্ধ'। ভগবান জাচাৰ্য্য কৰে 'শুন একবার ; ভূমি ভনিলে ভাল মৰ জানিবে বিচার'। চুই ভিন দিন জাচাৰ্য্য জাগ্ৰহ করিল ; তাঁর আগ্রহে স্বরূপের শুনিতে ইচ্ছা হৈল। স্বা লঞা অন্ধণ গোঁদাঞি শুনিতে বদিলা; ভবে সেই কবি নান্দী শ্লোক পছিলা।

তথাহি বঙ্গদেশীয়বিপ্রস্থা ।

পবিকচকমলনেত্রে শ্রীজগন্ধাথসংজ্ঞে কনকরুচিরিহাত্মখাত্মতাং যঃ প্রপন্ধ প্রকৃতিজড়মশেষং চেতরন্ধাবিরাদীৎ সাদিশতু তব ভবাং কৃষ্ণ চৈতম্মদেবঃ'॥ ৮৪॥

'নঃ' 'কনকর্নচিঃ' স্বর্ণবর্ণঃ সৌরালঃ 'ইছ' অমিন নীলাচলে 'বিকচনলনেত্রে' 'প্রীজগলাধনংজ্ঞে' জগলাধনাত্রি 'আছ্মি' শরীরে 'আছ্ডাং' কাছ্মডাং 'প্রপারঃ' সন্ 'অশেষং' অগণাং 'প্রকৃতিজড়ং' ভক্তিশ্নাং লোকং চতরন্' 'জাবিরাসীৎ' প্রকৃতীবভূব 'দঃ' 'কুঞ্চৈতন্যদেবঃ' হে স্থে 'ভব' ব্যং' মললং 'বিশতু' দলাতু ॥৮৪॥

যিনি কনকবর্ণ ধারণ করিয়া এই নীলাচলে কমলনয়ন গেলাথ নামক দেবের সহিত অভিমান্তা, হইয়া অগণ্য জড়-ক্ষিতি লোকের চেতদা দিয়াছেন; সেই কৃষ্ণ চৈত্তগুদেব তামার মঙ্গল করুন্॥৮৪॥

লোক শুনি দর্ক লোক ভাষারে বাথানে;
স্বরূপ কছে 'এই লোক করছ ব্যাশ্যানে'।
কবি কছে 'অগনাথ ফুল্লর শরীর;
চৈতন্ত গোঁলাঞি ভাহে শরীর মহাবীর।
গহর জড় অগভের চেতন করাইতে;
নীলাচলে মহাপ্রেডু হৈলা আবির্ভু তেওঁ।
শুনিরা স্বার হৈল আনন্দিত মন;
ছংখ পাঞা শুরুপ কহে স্ক্রোধ বচন।
'আরে মুর্বা; আপনার কৈলি সর্ক্রাশ;
ছইত ঈখরে ভোর নাহিক বিখান।
পূর্বানন্দ চিংশ্রুপ জগরাথ রার;
ভারে কৈলি জড় নশ্বর প্রাক্কত কার।

তথাহি লঘুভাগবতামূতে পূর্ববিত্তে লোকপালাগমনোত্ত্তে ন্রবমাকপ্পতকোর্ম্যং ।

'দেহদেহিবিভাগোইয়ং নেশ্বরে বিদ্যতে কচিৎ' ॥৮৫॥

'ইশবে' ভগবতি 'জয়ং' 'দেহদেহিবিভাগঃ' দেহক দেহীচ তলেবিভাগঃ
ভেষঃ 'কচিৎ' কদাচিৎ 'ন' 'বিদ্যতে' ॥৮৫॥

ঈশ্বরে কথন দেহদেহীভেদ ধাকে না ॥৮৫॥

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্ষকে নবমাধ্যায় তৃতীয়শ্লোকে কুমারাদীন্ প্রতি ব্রহ্মবাক্যং 1

> নাতঃ পরং পরম যদ্ভবতঃ স্বরূপ-মানন্দমাত্ত মবিকল্পমবিদ্ধবর্তঃ পশ্যামি বিশ্বস্কনেকমবিশ্বমাত্মন্ ভূতেন্দ্রিয়াত্মকমদ স্ত উপাত্রিতোহিস্মি' ॥ ৮৬ ॥ টীকা ও বাাধ্যা মধ্যঃ ৫৩১ লোঃ ৬৬০-৩১ পুঃ দেব ॥৮৬॥

তথাহি তত্ত্রৈব নবমাধ্যায়ে চতুর্বশ্লোকে কুমারাদীন্ শ্রতি ব্রহ্মবাকাং।

> 'তৰা ইদং ভূবনমঙ্গল মঙ্গলায় ধ্যানে স্ম নো দৰ্শিতং ত উপাদকানাং

তিয়ে নমে৷ ভগৰতে২কুবিৰেম ভূভ্যং যো নাদূতো নরকভাগ ভিরসংগ্রসকৈঃ ৪৮৭॥

जिका ७ वाम्या मदाइ ००१ (माः ७७) पृः (इय ॥৮१॥

'কাঁহা পূণানলৈখায় ক্ষণ মাৰেখার; কাঁহা কুমে জীব হংখী মারার কিছর'।

ভথাহি শ্ৰীভগবৎসন্দৰ্ভে শ্ৰিয়া পুক্ট্য। ইত্যস্থ ব্যাখ্যায়াং শ্বতং সৰ্ববিজ্ঞসূত্ৰং।

> 'ফ্লাদিন্যা সম্বিদাল্লিউঃ সচ্চিদানন্দ ঈবরঃ। স্থাবিদ্যাসংব্রতো জীবঃ সংক্রেশনিকরাকরঃ' ম৮৮॥

'ঈখরঃ' 'জ্বালিন্যা' অননমশক্যা তথা 'সম্বিদা' হৈতন্যশক্যা 'আলিষ্টঃ' যুক্তং দন্ 'সচিদানক্যং' নিতাচৈতন্যঃ আনক্ষরস্বিশ্বহং স্যাৎ; 'জীবং' 'স্বাবিদ্যাসংহৃতঃ' স্বকীয়াবিদ্যয়া আচ্ছন্নঃ দন্ 'সংক্ষেশনিক্রাক্রঃ' সংক্ষেশনাং জ্বায়ৃত্যুজ্বাদীনাং নিক্রাণাং স্থ্যানাং আক্রঃ স্যাৎ ৪৮৮॥

আনন্দ ও সমিৎ শক্তিযুক্ত ভগবান্ সচ্চিদানন্দ; আর জীব স্বীয় অবিদ্যাচ্ছম হইয়া অশেষ ক্লেশনিকর ভোগ করিয়া থাকে ॥৮৮॥

ভনিয়া স্বার মনে হৈল চমংকার !
সত্য কহেন গোঁলাঞি করেছেন ভিরন্ধার।
ভনিয়া কবির হৈল লজ্জা ভর বিশ্বয়;
হংস মধ্যে বক বেন কিছু নাহি কয় ।
তাঁর তুংগ দেখি বরূপ পরম সদয়;
উপদেশ কৈল ভাঁরে যৈছে হিভ হয় ।
বাহ ভাগবত পড় বৈঞ্চবের ভা্নে;
একান্ত আশ্রম কর চৈতন্য চরণে।
চৈতনাের ভক্রপণের নিত্য কর স্ক ;
ভবে জানিবে সিছাত্তসমুদ্রভর্ক।

'তবেত পাণ্ডিতা তোমার ছইবে সফল;
ক্রুকের স্বরূপ লীলা বনিবে নির্মাণ ।
এই শ্লোক ক্রিয়াছ পাইয়া সস্তোম;
তোমার স্থদরের অর্থে ছঁহার লাগে দোব।
ভূমি যৈছে তৈছে কছ না জানিয়া বীতি;
সবস্থতী সেই শব্দে ক্রিয়াছে স্তৃতি।
থৈছে দৈভাদি করে ক্ষের ভর্মন;
সেই শব্দে সরস্থতী করেন স্তবন।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমক্ষমে পঞ্চবিংশাধ্যায়ে পঞ্চম-শ্লোকে গোপালমুদ্দিশ্য ইন্দ্রবাক্যং।

'বাচালং বালিশং স্তব্ধমজ্ঞং পণ্ডিতমানিনং।

কৃষণং মর্ত্ত্যমুপাশ্রিত্য গোপা মে চক্রে রপ্রিয়ং' ॥ ৮৯ ॥
'গোপাং' নন্দাদয়ং 'মর্তাং' মরণশীলমন্ত্যাং 'রুফং' 'উপাশ্রিত্য' আপ্রিত্য 'মে' মম 'অপ্রিয়ং' 'চকুং' কুতবস্কঃ । কুঞং কীদৃশং' ? 'বাচালং' বহুভাষিণং 'বালিশং' বালকং 'পণ্ডিভমানিনং' পণ্ডিতম্মন্যং অতঃ 'স্কর্মং' অবিনীতং 'অজ্ঞং' মূর্থং ইতি নিন্দায়াং ঘোজিতাপীক্রস্য ভারতী প্রীক্তমং ভৌতি; তথাহি 'বাচালং' শাল্রঘোণিং এবমপি 'বালিশং' শিশুবরিরভিমানং; 'স্কর্মং' অন্যাস্য বন্দ্যাস্যাভাষাৎ অনমং; 'অজ্ঞং' নান্তি জ্ঞো যম্মান্তং সর্কজ্ঞ-মিত্যর্থঃ; 'পণ্ডিভমানিনং' বন্ধবিদাং বহুমাননীয়ং; 'কুঞ্মং' সদানন্দরপং পরং বন্ধ; 'মর্ভাং' তথাপি ভক্তবাৎসল্যামন্ত্র্যাত্যা প্রতীষ্ক্রমানমিতি ॥৮৯॥

ইন্দ্র ক্ষেত্র নিন্দা করিবার উদ্দেশে বলিলেন :— কৃষ্ণ একটা বাচাল, বালক, অবিনীত, অজ্ঞ, পণ্ডিতাভিমানী মানুষ বই নয়; গোপগণ তাহাকে আশ্রেয় করিয়। আমার অপ্রিয় করিল। কিন্তু দেবরাজের এই নিন্দাবাকো কৃষ্ণের স্তবই হইল; কারণ বাচাল শব্দের অর্থ শাস্ত্রযোনি; কৃষ্ণ ভজ্ঞপ হইয়াও বালিশ অর্থাৎ শিশুর নাায় নিরভিমান; স্তর অর্থাৎ তাঁহার অন্য বন্দনীয় না থাকায় তিনি অন্য; অজ্ঞ অর্থাৎ তাঁহার অন্য বন্দনীয় না থাকায় তিনি অন্য; অজ্ঞ অর্থ তিনি ত্রহ্মজ্ঞপণ্ডিতদিগেরও মাননীয়; কৃষ্ণ অর্থাৎ দদানন্দর্মী পরত্রহ্ম হইয়াও ভক্তবাৎদল্য জন্ম মানুষের ভায় প্রতীয়মান॥৮৯॥

> 'ঐ খৰ্ষামদে ফল ইন্দ্ৰ ফেন মাতে যোল ; বন্ধি নাশ হৈল কেবল নাহিক সম্ভাল। ইল বলে "মঞি ক্লের করিয়াছি নিম্পন" ; তারই মুখে সরস্বতী করেন স্তবন। 'বাচাল' কছিয়ে বেদ প্রবর্ত্তক খনা : 'বালিশ' ভথাপি শিশু প্রায় গর্বশূন্য। বন্যাভাবে অনুম 'স্ক' শঙ্গে কয়: যাচা হৈতে অনা বিজ্ঞ নাহি সেই 'অজ্ঞ' হয়। পণ্ডিভের মানাপাত হর 'পণ্ডিভ্যানী': ভথাপি ভক্ত বাৎসল্যে মহুষ্য অভিমানী ে জরাস্ক্র কতে "রুঞ্জ পুরুষ অধ্য; ভোর সঙ্গে না যুঝিমু যাহি আয়ুহন"। বাঁহ। হৈছে অন্য পুরুষ সকল অধ্ম: সেই হয় পুরুষোত্তম সরস্তীর মন। বান্ধে সবারে তাতে অবিদ্যাবস্কু হয়; অবিদ্যানাশক 'বলুহন' শলেক্ষ। এই মত শিশুপাল করিল নিক্ষন: সেই বাকো সরস্ভী করেন ভবেন। তৈছে এই স্নোকে ভোমার অর্থে নিকা আইলে : সরস্বতীর অর্থ শুন যাতে আছি ভাষে জগরাধ হর ক্লেণ্ডর আতা করপ: কিছ ইহ দারুত্রক স্থাবরের রূপ। তাঁহা সহ আত্মতা এক রূপ হঞা : বুঞ্চ এক তব্দ্ধপ হুই রূপ হঞা। শংসার ভারণ হেছু যেই ইচ্ছা শক্তি; जारात मिनात कहि अक्छा **आ**शि ।

পিকল সংগারী লোকের করিতে উদ্ধার :: গৌর জঙ্গা রূপে কৈল অবভার। জগরাথ দরশনে খণ্ডায় সংসার: नव (मर्गंद नव (नाक नाद कानिवाद ! শ্রীকৃষ্ণ চৈতন্যপ্রভু দেশে দেশে যাঞা : সব লোক নিস্তারিল জক্তম ব্রহ্ম হঞা। मद्रश्रुडीय व्यर्थ क्षेत्र देवन विवद्रन : এও ভাগা ভোমার, ঐচে করিলে বর্ণন। ক্লফে গালি দিতে করে নাম উচ্চারণ: সেই নাম হয়- তার মুক্তির কারণ।' ভবে সেই কবি স্বার চরণে পডিয়া: স্বার শ্রণ লৈল দক্তে তণ লঞা। ভবে সব ভক্ত তাঁরে অঙ্গীকার কৈল; ভার গুণ কহি মহাপ্রভরে মিলাইল। দেই কৰি সৰ ছাডি বহিলা নীলাচলে : গৌর ভক্তগণ কুপা কে কহিছে পারে ? এই ভ কহিল প্রছায় মিশ্র বিবরণ: প্রভু ভাভার কৈল কৃষ্ণ কথার শ্রবণ। ভার মধ্যে কচিল রামানলের মহিমা व्यापनि औमृत्थ अञ्च वर्त्यात नीमा। প্রেক্তাবে কভিল কবির নাটক বিবরণ: অভ্ত হঞা শ্রদায় পাইল প্রভুর চরণ। শ্রীক্ষ চৈভন্য লীলা অস্তের সার ; এক লীলা প্রবাহে বহে শত শত ধার। শেলাকবি এই লীলা যেই জন অনে: গৌর লীলা ভক্তি ভক্ত রস ভব জানে। এরপ রখুনাথ পদে যার আশ; চৈতন্যচরিতামূত কছে কৃষ্ণাস।

ইতি জ্রীচৈতক্মচরিতামূতে অন্ত্যথণ্ডে প্রত্নন্ত্রমিশ্রোপা-শ্যান নাম পঞ্চমপরিচেদেঃ॥ ৫॥

ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থা।

কৃপাগুণৈ র্যঃ কুগৃহান্ধকূপাছুদ্বত্য ভঙ্গ্যা রঘুনাথদাসং।
ন্যস্থ স্থরূপে বিদ্ধেহন্তরঙ্গং

শ্রীকৃষ্ণচৈতন্যমুং প্রপদ্যে॥ ৯০॥

'यः' পৌরচন্দ্র: 'কুপাগুলৈঃ' 'কুগৃহান্ধকুপাং' সংসারক্ষপাং 'রমুনাথ দাসং' 'ভঙ্গা' 'উন্ভা' 'অকপে' স্বরূপ দামোদরে 'নাস্ত' ডং সমর্প্য 'অস্তরজ্ঞং' গুপু দেবাং 'বিদ্ধে' 'অমুং' 'কুফ চৈতনাং' অহং 'প্রপদ্যে' ।৯•।

যিনি কুপা করিয়া রঘুনাথ দাদকে সংসাররূপ কুগৃহান্ধ-কুপ হইতে ভঙ্গীতে উদ্ধার করিয়া আনিয়া স্বরূপের হস্তে সমর্পণ করতঃ অন্তরঙ্গ সেবা দিয়াছেন, আমি সেই চৈতত্তের শরণাপন্ন হই। ৯°।

জয় জয় ত্রীটেডনা ! জয় নিজানন্দ !

য়য়াবৈত চন্দ্র ! জয় গৌরভক্তবৃন্দ !

এই মত গৌরচন্দ্র ভক্তগণ সলে;

নীলাচলে নানা লীলা করে নানা রঙ্গে ।

যদ্যপি অস্তরে কৃষ্ণ বিয়োগ বাধরে;

বাহিরে না প্রকাশয়ে ভক্ত হঃথ ভয়ে।

উৎকট বিরহ হঃখ যবে বাহিরায়;

ভবে যে বৈকলা প্রভ্র বর্ণন না যায়।

রামানন্দের কৃষ্ণকথা, স্বরূপের গান;

বিরহ বেদনায় প্রভ্রের রাধরে পরাণ।

দিনে প্রভ্ নানা রঙ্গে হয় অনা মনাঃ;

রাত্রিকালে বাড়ে প্রভ্রের বিরহ বেদনা।

তাঁর হুথ হেতু দকে রহে ছই জনা; কৃষ্ণ লীলা ক্লোক গীতে করেন সাভনা। স্থল থৈছে পূর্বে কৃষ্ণ স্থাধের সহায়: গৌর স্থ দান হেডু ভৈছে রামরায়। পূর্বে থৈছে রাধার সহায় লালিতা প্রধান ; তৈছে স্বরূপ গোঁদাই রাথে প্রভুর প্রাণ। এই ছই জনার সৌভাগ্য কহন না যায়: প্রভুর অন্তরঙ্গ বলি লোকে ঘাঁরে গায়। এই মত বিহরে গৌর লঞা ভক্তপণ : রঘুনাথ মিলন একে ভন ভজগণ ! পূর্বে শান্তিপুরে রখুনাথ যবে আইলা; ৰহাপ্ৰভু কুপা করি তাঁবে শিথাইলা। (১) প্রভুর শিকাভে তিঁহ নিজ ঘরে যায়; মর্কট বৈরাগ্য ছাড়ি হইলা বিষয়ী প্রায়। ভিতরে বৈরাগ্য বাহিরে করে দর্ক কর্ম্ম; দেখিয়াত মাতা পিতার আনন্দিত মন। মধুরা হৈতে প্রভু আইলা বার্তা যবে পাইলা ; প্রভু পাশে চলিবারে উদ্যোগ করিলা। হেন কালে মূলুকের মেচ্ছ অধিকারী; मश्र थाम मूलूटकत (महे हम्र ख (होधूती। हित्रगुप्तान भूनुक निल नक्षा कतिया ; ভার অধিকার গেল মরে দে দেখিয়া। वांत नक (मन्न तांकांत्र मार्थ विभ नक ; সে তুড়ুক কিছু না পাঞা হৈল প্রভি পক। রাজঘরে কৈফিয়ত দিয়া উলির আনিল; हिवगामात्र भनाहेला, त्रधुनात्थ वास्तिल । প্রতি দিন রখুনাথে করয়ে ভর্সনা; 'ৰাপ জ্যেঠা আন নহে পাইবে বাডনা' **৷**

১ পুর্বে শান্তিপুরে-শিকাইলা-মধ্যঃ ৩৭৪ পৃঃ দেধ।

माहिटक व्यानदा, यकि क्टिय दश्नार्थ: মন ফিরি যার ভবে না পারে মারিছে । বিশেষে কারতবদ্ধ্যে অস্তরে করে ভর: মুথে তৰ্জে গঞ্জে মারিতে সভয় অক্তর। ভবে রখুনাথ কিছু চিক্তিল উপার ;-মিনভি করিয়া কছে সেই শ্লেছ পায়; 'আমার পিতা জোঠা হন ছোমার ছই ভাই:-ভাই ভাই কল্ফ কর ভোমরা সর্বলাই। কভ কলহ, কভ প্রীতি, ইহার নিশ্চর নাঞি; কালি পুদঃ ভিন ভাই হবে একঠাঞি। আমি বৈছে পিডার ভৈছে জোমার বালক:: ভামি ভোমার পাল্য, ভূমি আমার পালক। পালক হঞা পাল্যেরে তাড়িভে না যুরার; তুমি দৰ্কশান্ত জান, জিলাপীর প্রায়⁷। ं थे छ छनि राष्ट्रे सिर्का सम आर्स देशन :. দাভি ৰচি অঞা পতে কান্দিতে লাগিল। য়েচ্ছ বৰে 'আজি হৈতে ভূমি মোর পুত্র_া আজি তোমা ছাড়াইব করি কোন স্ত্রা'। উজিরে কহিয়া রযুনাথে ছাড়াইল; ত্রীভি করি রঘুনাথে কহিছে লাগিল। 'ভোমার জোঠা নিবুজি আই লক্ষ ধার 😜 আমি ভাকী আমারে কিছু দিবারে যুৱার : ষাহ ভূমি ভোমার জ্যেঠা মিলাহ আমারে:-যে মতে ভাল হয় করুন ভার দিল তাঁরে'। রখুনাথ আসি ভবে জোঠা মিলাইল: ८अष्ठ महिक वन् देकन, नव नाक देहन । এইমত রফুনাথের বংগরেক পেল: বিতীয় বৎসৱে পলাইতে মন কৈকা। রাতে উঠি একেলা চলিলা পলাইরা : দুরে হৈতে পিতা ভারে আনিল ধনিয়া।

এই মত বারে বারে পলার, ধরি আর্নে : ভবে ভাঁর মাভা কহে ভাঁর পিতা সনে। 'পুত্র বাছল হৈল রাথছ বান্ধিয়া': ভার পিভাবলে ভারে নির্কিল চ্ট্রান रुख नम धेर्यका, सी चल नता नम ; এ সব বান্ধিতে নারিলেক যার মন। দাভির কর্মনে কাঁরে রাখিবে কেমভে **গ** জন্মদাতা পিতা নারে প্রারক্ষ থণ্ডাইছে। ৈচৈতত চল্ডের কুপা হইয়াছে ইহারে: চৈত্ত প্রভুর বাউল কে রাখিতে পারে' **গ**ন ভবে রখুনাথ কিছু বিচার করি মনে; নিত্যানক গোঁসাঞি পাশ চলিল। আর দিনে। পানিহাট গ্রামে পাইল প্রভুর দর্শন : কীর্তনীয়া মেবক সঙ্গে আর বছ জন। গঙ্গাভীরে ব্রক্ষ্ণে পিগুার উপরে বলিয়াছেন প্রভ বেন সুর্য্যোদয় করে। ভলে উপরে বছ ভক্ত হঞাছে বেষ্টিভ; দেখিয়া প্রভুর প্রভাব রযুনাথ বিস্মিত। দশুবৎ হয়ে পড়িলা কভ দুরে; সেবক কছে 'রখুনাথ দওবৎ করে'। छनि প্রভুকতে চোরা शिल দরশন: আয় আয় আফি তোর করিবদণ্ডন'। প্রভুবোলার ভিঁহ নিকটে নাকরে গমন ; অম্ক্রিয়া প্রভু তার মাথে ধরিল চরণ। কৌতকী নিত্যানন্দ সহজে দয়াময়; त्रजुनात्थ करह किছू रुरेत्रा मनत्र। र्गनकटो मा चाहेन (চারা ভাগ দূ<ে দূরে ; আজি লাগি পাইয়াছি দণ্ডিব তোমারে। স্ধি চিডা ভক্ষণ করার মোর গণে'। क्रमिया जानक देश्य त्रचुनात्थ्य मत्न ।

সেইকলে নিজ লোক পাঠাইল প্রামে : ভক্ষা দ্ৰব্য লোক সৰ প্ৰাম হৈছে আমে। किए। पृथि कुछ म्हान आदि किनि क्ला: আনি আনি প্রভুর আগে সকল ধরিলা । মতোৎসৰ নাম শুনি ত্ৰাকাণ সজ্জন: আসিছে লাগিল লোক অসংখা গণন ৷ আর প্রামান্তর হৈতে দামগ্রী আনিল: শত ছই চারি ছেলিনা মাগাইল। বড় বড় মুৎ কুন্তিকা আনাইল পাঁচ সাতে; এক বিপ্র প্রভ লাগি ভিজাইল তাতে। এক ঠাঁঞি তপ্ত হয়ে চিড়া ভিজাইয়া; कार्किक छानिल मधि छिनि कला मिशा। অর্দ্ধেক ধনাবর্ত্ত ছার্মেডে ছানিল: চাঁপা কলা চিনি মত কপুর ভাতে দিল। ু ধৃতি পরি প্রভু যদি পিণ্ডাতে বসিদা ; স্ভি কৃতি বিপ্র তাঁর অগ্রেতে ম্রিলা। চব্তরা উপরে যত প্রভুর নিজগণ; বড বড লোক বদিল। মগুলী বন্ধন। ্রামদাস, স্থান্ত্রিক, দাস গদাধর: मुताति, कमलाकत, नमाणिव, शुद्रव्यत्र । धनक्षत्र, कशनीम, शत्रामधन नाम: মহেশ, গৌরীদাস, ছোড রুঞ্চাস। উদ্ধারণ আদি যত আর নিজ জন : উপরে বদিলা দব; কে করে গণন ?' ত্ৰনি পণ্ডিত ভট্টাচাৰ্য্য যত বিপ্ৰা আইলা; মান্ত করি প্রভু স্বারে উপরে বসাইলা। इहे इहे मुश्कृष्ठिका नदात चार्ग हिन : একে ছগ্ধ চিড়া, আরে দবি চিড়া কৈল। কোন কোন বিপ্র উপরে স্থান না পাইয়া: ছই **ছোলনার চিড়া ভিজায় গছাতীরে গিয়া**ু ভীরে ভান না পাইয়া আর কভ জন: ফলে নামি চিডাদ্ধি কব্যে ভক্কণ। কেছ উপরে কেছ ভলে কেছ গঙ্গাভীরে: বিশ জন কিন সাঁঞি প্রিবেশন করে। হেন কালে আইলা তাঁহা রাঘ্য পণ্ডিত: হাসিতে লাগিলা দেখি হইয়া বিশ্বিত। নিস্ক্ডি নানা মত প্রসাদ আনিল: প্রভরে আগে দিয়া ভক্ত গণে বাঁটি দিল। প্রভবে কছে 'তোমা লাগি ভোগ লাগাইল: ভুমি ইছা উৎসব কর ঘরে প্রশাদ রহিল'। প্রস্তু কহে 'এ দ্রব্য দিনে করিয়ে ভোজন: বালে ভোমার ঘবে প্রসাদ কবিব ভক্ষণ। গোপ জাতি আমি বছ গোপগণ সঙ্গে: আম সুধ পাই এ পুলিন ভোজন রকে'। রাঘবে বদায়ে ছই কুণ্ডী দেয়াইল; রাঘর ছিবিধ চিডা ভাতে ভিজাইল। जकन (लारकत हिड़ा शूर्व यद रहन; ধ্যানে তবে প্রভুমহাপ্রভুরে আনিল। মচাপ্ৰভ আইলা দেখি নিতাই উঠিলা: ভাঁরে লঞা সবার চিড়া দেখিতে লাগিলা। সকল কুণ্ডী হোলনার চিড়া এক এক এগে; মহাপ্রভুর মুথে দেন করি পরিহাস। হাসি মহাপ্রভু আর এক গ্রাস লঞা; ঠার মুখে দিয়াখাওয়ান হাসিয়াহাসিয়া। এই মত নিভাই বুলে সকল মণ্ডলে; मालाहेबा बच्च (मर्थ देवस्थव मकला। কি করিয়া বেড়ায় ইছো কেহ নাহি জানে: মহাপ্রভুর দর্শন পায় কোন ভাগাবানে। ভাৰ আসি নিভানিক বিদলা আসনে: हाति कुछी चारताया हिए। ताथिण छाहिता।

আসন দিয়া মহা গভু তাঁহা বসাইলা; ছুই ভাই তবে চিড়া থাইতে লাগিলা। দেখি নিত্যানন্দ প্রভু আনন্দিত হৈলা; কত কছে ভাবাবেশ প্রকাশ করিলা। অন্তর দিল হরি বলি করহ ভোজন; ্হরি ছরি ধ্বনি উঠি ভরিল ভুবন ! ত্রি ত্রি বলি বৈষ্ণব কর্মে ভোজন; পুলিন ভোলন স্বার হইল স্মর্প। নিত্যানন্দ মহাপ্রভু কুপালু উদার; রঘুনাথের ভাগ্যে এড কৈল অঙ্গীকার। নিড্যানল প্রভুর কুপা জানিবে কোন্ জনাৰ মহাপ্রভ আনি করায় পুলিন ভোজন। ত্রীরামদাদাদি গোপ প্রেমাবিষ্ট হৈলা: গঙ্গাতীরে যমুনা পুলিন জ্ঞান কৈলা। মছোৎসব জুনি পদারি নানা গ্রাম হৈতে: किए। मधि मत्मम केना आनिन (विकास) যত জাবাল্পঞা আহিসে সব মূলোলায়; তারি দ্রব্য মূল্য দিয়া ভাগারে থাওয়ায়। কৌতৃক দেখিতে আইল ষত যত জনঃ সেও চিডাদ্ধি কলা করিল ভক্ষণ। ভোজন করি নিত্যানন্দ আচমন কৈল: চারি কুণ্ডীর অবশেষ রঘুনাথে দিল। আর তিন কুণ্ডিকার অবশেষ ছিল; গ্রাস গ্রাস করি প্রভু সব ভক্তে দিল। পুষ্পামালা বিপ্র আনি প্রভু আগে দিল ; (১) শীহতে প্রভু স্বাকারে,বাটি দিল।

"পুল্প মালা বিধা আনি প্রভূ গলে দিল ; চলন আনিয়া শ্রভুষ সুকালে লেপিল

১ অন্পঠএই:—

আনন্দিত রখুনাথ প্রভুর শেষ পাঞা:... আপনার গণ সভিত থাটল বাঁটিয়া। এইত কহিল নিজানন্দের বিভার : চিডা দ্ধি মুহহাৎসৰ থাতি নাম যার। প্রাম্থ বিশ্রাম কৈল যদি, দিম শেষ হৈল : রাঘ্ব মন্দিবে ভবে কীর্নন আনব্রিক। ভক্তগণে নাচাইয়া নিত্যানক বায়: শেষে নৃত্য করে. প্রেমে জগৎ ভাসার। মহাপ্রভু-তার নৃত্য করেন দুর্শন ; সবে নিভাবিদ দেখে, না দেখে অঞ্জন। নিত্যানদের নৃত্য যেন তাঁহারই নর্তন: উপমা দিবারে নাহি এতিন ভুবন। নৃত্যের মাধুরী কে বা পারে বর্ণিবারে 🔊 মহাপ্রভ কাইদে বাঁর নৃত্য দেখিবারে। নুত্য করি প্রভুমবে বিশ্রাম করিলা; ভোজনের লাগি পণ্ডিত নিবেদন কৈলা। ভোজনে বদিলা প্রভুনিজগণ লঞা; মহাপ্রভুর আসন ডাহিনে পাতিয়া। মহাপ্রভু আসি সেই আসনে বসিলা; দেখি রাঘবের মনে আনন্দ বাডিলা। তুই ভাই আগে প্রসাদ আনিয়া ধরিল: সকল বৈষ্ণবে শেষে পরিবেশন কৈল। নানা প্রকার পায়স পিঠা, দিব্য শালার; অমৃত নিলয়ে ঐছে বিবিধ বাজন। রাখবের ঠাকুরের প্রাসাদ অমৃতের সার; মহাপ্রাভু যাহা থাইতে আইসে বার বার-।

> সেবক তাশুল লয়েকরে সমর্পণ; হাসিয়া হাসিয়া প্রভুকরেরে চকবি। মালাচলন তাখুল শেষ যে আছিল; প্রাহত্তে প্রভূসবাকারে বীটি দিল।"

পাক করি রাঘর যবে ভোগ লাগায: মহাপ্রভু লাগি ভোগ পুথক বাড়য়। প্রতিদিন মহাপ্রভু করেন ভোজন; মধ্যে মধ্যে প্রভ তাঁরে দেন দরশন। ছই ভাইকে আনি আনি রাঘৰ পরিবেশে ; আমনি যভ করি থাওয়ায়নারহে আর্বশেকে। কত উপহার আনে হেন নাহি জানি: রাঘবের গ্রহে রাজে রাধা ঠাকরাবী। ত্রকাদার সাঁঞি তিঁহ পাইয়াছেন বরে: অমৃত হৈতে তাঁর পাক অধিক মধ্রে। হুগন্ধি মুন্দর প্রসাদ মাধুর্য্যের সার: ছই ভাই থাঞা পাইল সস্তোষ **অপার।** ভোজনে বসিতে রখুনাথে কহে স্কল্পন : পণ্ডিত কহে ইই পাছে করিবেন ভোজন। ভক্তগণ আকণ্ঠ ভরি করিল ভোজন : হরিধ্বনি করি উঠি কৈল আচমন। ভোজন করি ছই ভাই কৈল আচমন; রাঘব আনি পরাইল মালা চন্দ্ন। বিঁড়া খাওয়াইয়া কৈল চরণ বন্দ্র : ভ कु गर्ग किन विं डा माना **क्ल**न। রাঘবের মহাক্রপা রম্মাথের উপরে; ছই ভারের অবশিষ্ট পাত্র দিল ভারে। কহিল 'চৈত্ত প্ৰভু করিয়াছেন ভোজন; ভাঁর শেষ পাইলে. ভোমার থণ্ডিল বন্ধন'। ভক্তচিত্তে ভক্তগৃহে প্রভুর দদা ভাবস্থান ; কভু গুপ্ত কভু ব্যক্ত স্বতন্ত্ৰ ভগবান। সর্বত ব্যাপক প্রভু সদা সর্বত বাস; ইহাতে সংশয় যার সেই যায় নাশ। প্রাতে নিত্যানন্দ গঙ্গালান করিয়া: নেই বৃক্ষমূলে বসিলানিজগণ লঞা।

রম্বাথ আসি কৈল চরণ বন্দন: রাঘব পণ্ডিভ ছারা কিছু কৈল নিবেদন। 'অধম পামর মুই হীন জীবাধম; মোর ইচ্চাহ্য পাঙ্গৈ চৈছল চৰণ। বামন হইয়া চল ধরিবারে চায়: অনেক যত্ন কৈছু তাতে কভ সিদ্ধ নয়। ষত বার পলাই আমি গহাদি ছাডিয়া: পিতামাতা ছই জনে রাখেন বাক্কিয়া। তোমার কুপা বিনা কেছ চৈত্র না পায় : তুমি কুপা কৈলে ভাঁরে অধমেও পায়। অযোগ্য মুই নিবেদন করিতে করি ভয়: মোবে কৈজন লাভ গোঁসাই হট্যা সল্ল। মোর মাথে পদ ধরি কর্ছ প্রসাদ: নির্বিছে চৈত্ত পাঙ কর আশীর্বাদ'। ভূনি হাসি কহে প্রভূসব ভক্তগণে: 'ইহার বিষয় সূথ ইলা স্থসমে। চৈত্ত রূপাতে দেও নাহি ভার মনে : সবে আনীকাদ কর, পাঙ চৈত্র চরণে। কৃষ্ণ পাদপ্রাগ্র যেই জান পায়: ব্রহ্ম লোক আদি স্থখ তারে নাহি ভার'।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে পঞ্চমক্ষকে চতুর্দ্বশাধ্যায়ে দ্বিচন্ধা-রিংশক্ষোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুকদেববাক্যং।

'যো তুত্তজোন্ দারস্তান্ স্থত্তাজ্যং হৃদি স্প_্শঃ। জহে যুবৈব মলবত্তমংশ্লোকলালদঃ'। ৯১। টকাও ব্যাথ্যা মধ্যং ২৪০ শ্লোং ৫৮২ পৃঃ দেখ। ৯১।

> ভবে রঘুনাথে প্রভু নিকটে বোলাইলা; ভার মাথে পদ ধরি কহিতে লাগিলা:— 'ভূমি করাইলে এই পুলিনভোষন; ভোমার কুণা করি গৌর কৈল আগমন।

'কুপা করি কৈল চিড়া হগ্ধ ভোজন; নতা দেখি রাত্রে কৈল[া]প্রদাদ ভক্ষণ। তোমা উদ্ধারিতে গৌর আইলা আপনে; ছটিল ভোমার যত বিশ্বাদি বন্ধনে। স্বরূপের স্থানে ভোমা করিবে সমর্পণি : অস্তরক ভতা করি রাখিবেন চরণে। নিশিচক হট্যা যাও আপন ভবন ; আহিবে নির্কিলে পাবে চৈত্রাচবণ'। সবভাক্তগণে তাঁরে আশীর্বাদ করাইল: তাঁদবার চরণ রঘুনাথ বন্দিল। প্রভ আজ্ঞালঞা বৈষ্ণবের আজ্ঞা লৈল: রাখাব সহিভে নিভৃতে যুক্তি করিল। যক্তি করি শতমুদ্রা সোনা তোলা সাতে; নিভতে দিলা প্রভুর ভাণ্ডারীর হাতে। তারে নিষেধিল 'প্রভকে এবে না কহিবে : जिल्ल चारव गारव गारव जारव जिल्लाहरू । তবে রাঘব পণ্ডিত তাঁরে ঘরে লঞা গেলা: ঠাকুর দর্শন করাঞা মালা চলদন দিলা। অনেক প্রদাদ দিল পথে থাইবার তরে: ভবে রখনাথ দাস কহে পণ্ডিতেরে। 'প্রভুর সঙ্গে যভ প্রভুর ভৃত্যাশ্রিত **জন**; পুজিতে চাহিয়ে আমি সবার চরণ। विण, श्रकाण, एम, वात, श्रक्षण, प्रयु: মন্ত্রা দেই বিচারিরা যোগ্য যাহা হয়'। সব লেখা করিয়া রাঘব পাশ দিলা: ষার নামে যত রাঘর চিঠি লেখাইলা। একশত মৃদ্রা আর সোনা ভোলা হর; পণ্ডিতের আগে দিলা করিয়া বিনয়। তাঁর পদধূলি লঞা স্বপৃহে জাইলা: নিভ্যানন্দরপা পাঞা রভার্থ মানিলা।

সেই হৈতে অভ্যন্তরে নাকরে গ্যনঃ বাহিরে ভূপামগুপে করেন শ্রন। তাঁহা জাগি রহে স্ব রক্ষকগণ: পলাইতে করেইনানা উপায় চিত্তন। হেনকালে গৌড়দেশের সব ভজ্জগণঃ প্রভুদেখিতে নীলাচলে করিলা গমন । ত্রীসবার সঙ্গে রখুনাথ ধাইতে না পারে: প্রসিদ্ধ প্রকট সঙ্গ, ভবহি ধরা পড়ে। অইমত চিন্তিতে দৈবে এক দিনে : বাহিতে দেবীমথপে করিয়াছে শহরে। দও চারি রাতি যবে আন্ডেক্ বশেষ: যতনন্দন আচার্য্য ভবে করিল প্রবেশ। বাস্ত্রদেব দত্তের ভিঁহ হয় অনুগণীত : রঘুনাথের গুরু তিহ হয় পুরোহিত। জ বৈত আচার্য্যের তিঁহ শিষা অন্তরক : আচাৰ্যা আজ্ঞাতে মানে চৈত্তল প্ৰাণধন। অঙ্গনে আসিয়া ভিঁহ ধবে দাঁডাইলা: র্মুনাথ আসি তবে দশুবৎ কৈলা। তার এক শিষা তাঁর ঠাকুরে দেবা করে: সেবা ছাডিয়াছে: ভারে-সাধিবার ভরে রঘুনাথে কছে 'ভার করহ দাধন ; সেরা বেন করে আরে নাহিক ব্রাহ্মণ' । এত কহি রখুনাথে লইয়া চলিলা; বক্ষক সব শেষরাত্রে নিদ্রায় পডিলা। আচার্যোর ঘর ইহার পূর্ব্ব দিশাতে ; কহিতে গুনিতে গুঁহে চলে সেই পথে। আর্মপথে রঘুনাথ কছে গুরুর চরণে; 'আমি সেই বিপ্রে সাধি পাঠাব ভব স্থানে। তুমি ঘর যাহ হুথে, মোরে আছকা হয়'; এই ছলে আছে। মাগি করিল নিশ্চর।

'সেবক রক্ষক আর কেছ নাছি সঙ্গে; প্লাইতে আমার ভাল এইভ প্রসং**ল**। এত চিল্তি প্রমিথে করিলা গমন; উলটিয়া চাতে পাছে নাহি কোন জন। শ্রীবৈত্ত র নিত্যারন্দ চরণ চিক্তিয়া: পথ ভাতি উপপথে যায়েন ধাইয়া। গ্রামে গ্রামে পথ ছাডি যার বনে বনে: কাষ্মনোবাজো চিত্তে চৈত্ৰাচরণে। পঞ্চদশ কোেশ চলি গেলা এক দিনে: जक्राकारल दहिला এक शास्त्रव वांशास्त्र । উপবাসী দেখি গোপ ছগ্ধ আনি দিলা: সেই হয় পান করি পড়িয়ারহিলা। এথা তাঁর দেবক রক্ষক তাঁরে না দেখিয়া: তাঁর গুরুপাশ বার্তা পুছিলেন গিয়া। ঠিতোকতে 'আছৱা মাগি গেলা নিজ ঘব'। পলাইল রঘুনাথ হৈল কোলাহল। তাঁর পিতা কহে 'গৌডের দব ভক্তগণ প্রভু স্থানে নীলাচলে করিল গমন। সেই সজে রঘুনাথ পেলা পলাইরা; দশক ন যাহ ভারে কানত ধরিয়া'। শিবাননে পত্তী দিল বিনয় করিয়া: 'আমার পুত্রেরে তুমি পাঠাবে বাছড়িয়া'। কাঁকরা পর্যান্ত গেল সেই দশ জন: ঝাঁকরাতে পাইল গিয়া বৈঞ্চবের গ্রা পত্রী দিয়া শিবান স্কে বার্ছাপুছিলা: শিবানন্দ কহে 'তিঁহো এথা না আইলা'। বাছডিয়া সেই দশক্ষন আইল হর: তাঁর মাতা পিতা হৈল চিস্তিত অক্সর। এথা রখুনাথ দাস প্রভাতে উঠিয়া: পূৰ্কমুখ ছাড়ি চলে দক্ষিণ মুখ হকা।

ছত্রভোগ পার হঞা ছাডিয়া সরান : কুঞাৰ দিয়া দিয়া করিল প্রয়াণ। ভক্ষণ নাহি সমস্ত দিবস গমন: ক্ষণা নাহি বাধে, চৈতক্ত চরণ প্রাপ্তি মন। কভু চর্কণ, কভুরস্কন, কভু হুগ্ধ পান; যবে যেই মিলে তাভে রাথে নিজ প্রাণ। বার দিনে চলি গেলা 🕮 প্রুষোত্তম : পথে তিন দিন মাত্র করিল ভোজন। স্ক্রপাদি সহ গোঁসাঞি আছেন বসিয়া: হেন কালে রঘুনাথ মিলিল আসিয়া। অঙ্গনেডে দুরে রহি করে প্রণিপাত; মুকুল দত্ত কহে 'এই আইল রঘুনাথ'। প্রভুকতে 'আইস', ভিঁহো ধরিল চরণ; উঠি প্রভু কুপায় তাঁরে কৈল আলিজন। স্বরূপাদি সব ভক্তের চরণ বন্দিলা: প্রভু কুপা দেখিঁ সবে আলিঙ্গন কৈলা। প্রভু করে 'রুঞ্জুপা বলিষ্ঠ স্বা হৈতে: ছোমাকে কাডিল বিষয় বিঠাগৰ্ভ হৈতে'। রঘুনাথ কহে 'আমি কৃষ্ণ নাহি জানি; ভব কুপা কাড়িল আমায়, এই আমি মানি'। প্রভু কহেন 'ভোমার পিতা জ্যেঠা ছই জনে; চক্রবর্তী সম্বন্ধে হাম আবজা করি মানে। চক্রবর্তীর দোঁতে হয় ভ্রাভ রূপ দাস: অতএব তাঁরে আমি করি পরিহাস। ই হার বা ভ্যেঠা বিষয় বিষ্ঠাগর্কের কীডা; স্থুপ করি মানে বিষয়, বিষয় মহাপীড়া। যদ্যপি ব্রহ্মণ্য করে, ব্রাহ্মণের সহায়; **७६ देवकव नटह. देवकद्वब श्रीव ।** তথাপি বিষয় স্বভাব করে মহাজভ: সেই কৰ্ম করার যাতে হয় ভব বন্ধ।

হেন বিষয় হৈতে ক্লফ উদ্ধারিশেন তোমা: ক হনে না যায় ক্লক কুপার মহিমা'। রঘুনাথের কীণতা মালিনা দেখিয়া; স্বরূপেরে কহে কুপা আর্ড্র চিত্ত হঞা। 'এই রখুনাথে আমি সঁপিছ ভোমারে; পুত্র ভূত্যদ্ধপে ইহায় কর অঙ্গীকারে। ভিন রঘুন্থে নাম হয় মোর ভানে; স্থ্রপের রম্ব, আজি হৈতে ইহার নামে'। এত কহি রঘুনাথের হস্ত ধরিল ; স্থরপের হস্তে ভাঁরে সমর্পণ কৈল। স্থারপ করে 'মহাপ্রভুর যে আভ্রা হইল'; এত কহি রঘুনাথে পুনঃ আলিফিল। চৈতনোর ভক্তবাৎসল্য কহিতে না পারি: গোবিদেরে কছে রখুনাথে দয়া করি। 'পথে ইহ করিয়াছেন বছত লজ্বন; কত দিন কর ইহার ভাল সম্ভর্পণ । রখুনাথে কহে 'যাঞা কর সিন্ধু সান; জগদ্বাথ দেখি আসি করিছ ভোজন'। এত বলি প্রভু মধ্যাহ্ন করিছে উঠিলা; রখুনাথ দাস সব ভক্তেরে মিলিলা। রখুনাথে শ্রভুর কুপা দেখি ভক্তগণ; বিশ্বিত হঞা করে তাঁর ভাগ্য প্রশংসন। রঘুনাথ সমুদ্রে যাঞা স্নান করিলা; জগরাথ দেখি পুনঃ গোবিনদ পাশ আইলা। প্রভুর অবশিষ্ট পাত্র গোবিন্দ তাঁরে দিল; আনন্দিভ হঞারঘুনাথ প্রসাদ পাইল। এই মত রহে ঠিহ স্বরূপ চরণে; গোবিন্দ প্রসাদ তাঁরে দিল পঞ্চদিমে। আর দিন হৈতে পুশাঞ্চলি দেবিয়া: সিংহ ছারে থাড়া রহে ভিক্ষার লাগিয়া।

क्रश्रहारथन रमवक यक विषत्रीत्राव : সেবা সারি রাত্তে করে গুছেতে গমন। मिश्वषादा कामार्थी देवसका (मश्रिया : পদারির ঠাঁঞি আর দেন কুপাঁত করিয়া। এই মত দৰ্ককাল আচে ব্যৱহার : নিকিঞ্চন ভক্ত থাড়া হয় সিংহ্রার : नर्जनिन करत रेवस्थव नाय नक्षीर्खन ; স্বিচ্ছ কেরেন জগরাথ দর্শন। কেই ছতে যাঞা খায় যেবা কিছু পায়: কেই রাত্রে ভিক্ষা লাগি সিংহয়ারে বয়। মহাপ্রভুর ভক্তগণের বৈরাগ্য প্রধান; বাহা দেখি প্রীত হয় গৌর ভগবান। व्यक्रिक शाविन करह 'त्रवृताथ व्यनाम ना नव : রাতে সিংহছারে খাড়া হঞা মাগি খায়'। শুনি ভট হঞা প্রভ কহিছে লাগিলা: 'ভাল কৈল বৈরাগা ধর্ম আচেরিলা। বৈরাগীর ধর্ম সদা নাম সঙ্কীর্তন: মাগিয়া থাইয়া কবে জীবন বক্ষণ। বৈরাগী চট্টা যে বা করে পরাপেকা: কার্যা দিদ্ধি নহে, কৃষ্ণ করেন উপেকা। বৈরাগী হইয়া করে জিহবার লালস; পরমার্থ যায় আনে হয় রসের বশ । বৈবাগীর কভা সদা নাম সংকীর্জন: শাক পতাফল মলে উদর ভরণ। জিহবার লালনে যেই ইডি উতি ধার; শিশোদর পরায়ণ রুফা নাহি পায়'। कांत्र मित्न त्रचुनाथ चत्रभ हत्रतः; আপেনার কতা লাগি কৈল নিবেদনে। 'कि नात्रि छाडाहरन यह ना जानि डेक्स. কি মোর কর্ত্তবা ? প্রভ কর উপদেশ'।

প্রভু আগে কথা মাত্র না কছে রঘুনাথ; স্বরূপ গোবিন্দ ছারা কছে নিজ বাড। প্রভু আগে স্বরূপ নিবেদিল আর দিনে; রঘুনাথ নিবেদর প্রভুর চরণে। 'কি মোর কর্ত্তব্য ? মুক্তিনা জানি উদ্দেশ; আপেনি শ্রীমথে মোরে করুন উপদেশ'। হাসি মহাপ্রভুরখুনাথেরে কহিল; 'কোমার উপদের। ক্রি প্ররূপেরে দিল। সাধ্য সাধন ভত্ত শিখ ইহার স্থানে: আমি ভত নাহি জানি ইহো যভ জানে। তথাপি আমার আজ্ঞায় যদি শ্রদা হয়: আমার এই বাক্য তুমি করিহ নিশ্চয়। গ্রাম্য কথা না গুনিবে, গ্রাম বার্তা না কহিকে: ভাল নাখাইবে আহার ভাল না পরিবে। অমানী মানদ ক্লঞ্জনাম সদা লবে: ব্রজে রাধা ক্লফা সেবা মানসে করিবে। এই ত সংক্ষেপে আমি কৈল উপদেশ: স্বরূপের ঠাঁঞি ইহার পাবে সবিশেষ।"

তথাহি পদ্যাবল্যাং বিংশাঙ্কপ্ততং শ্রীকৃষ্ণচৈতক্যচন্দ্রে-ণোক্তং পদ্যং।

'তৃণাদপি স্থনীচেন তরোরিব সহিষ্ণুনা।
অমানিনা মানদেন কীর্ত্তনীয়ঃ সদা হরিঃ' ॥৯২॥
টাকা ও বাাব্যা আদিঃ ১৯৮ শ্লোঃ ৩৬৮ পুঃ দেখ। ৯২।

এড শুনি রখুনাথ বন্দিল চরণ;
মহাপ্রভু কৈল তাঁরে কুপা আলিকন।
পূন: সমর্পিল তাঁরে স্বরূপের স্থানে;
অন্তরক সেবা করে স্বরূপের সনে।
বেন কালে আইলা সব গৌড়ের ভক্তগণ;
পূর্ক্বিৎ প্রভু স্বায় ক্রিল মিলন।

দ্বা লঞা কৈল প্রভু গুণ্ডিচা মার্জন ; সবা লঞা কৈল প্রভু বন্ত ভোজন। त्रथं याखात्र में ने ने किया कितिन नर्खन ; দেখি রখনাথের চমৎকার হৈল মন। त्रयुनाथ मान यत्य नवादत मिनिना; অহৈত আচার্য্য ভাঁরে বহু কুপা কৈলা। শিবানন সেন ভাঁরে কছেন বিবরণ; 'জোমা লইতে ভোমার পিভা পাঠাইল দশ জন'। ভোমারে পাঠাইডে পত্রী পাঠাইল আমারে: ঝাকরা হইতে ভোমা না পাইয়া গেল ঘরে'। চারি মাদ রহি ভক্তগণ গৌড়ে গেলা; ভনি রঘুনাথের পিভা মহুষ্য পাঠাইলা। সে মহুষ্য শিবানক সেনেরে পুছিলা; **"মহাপ্রভু স্থানে এক বৈঞ্চব দেখিলা ?** গোৰদ্ধনের পুত্র তিঁহো নাম রঘুনাথ; নীলাচলে পরিচয় আছে ভোমার সাত' ৪ भिवानम करह 'छिंदश इब श्रेष्ट्र द्वारत ; পরম বিখ্যাত তিঁহো, কেবা নাহি জানে ? স্থরূপের স্থানে তাঁরে করিয়াছেন সমর্পণ: প্রভুর ভক্তগণের ভিঁহো হয় প্রাণ সম। রাত্রি দিন করে তিঁহো নাম সংকীর্ত্তন : ক্ষণমাত্র নাহি ছাড়ে প্রভুর চরণ। পরম বৈরাগ্য ভাঁর, নাহি ভক্ষ্য পরিধান : যৈছে তৈছে আহার করি রাখয়ে পরাণ। দশদপ্ত রাত্রি গেলে পুস্পাঞ্জলি দেখিয়া; সিংহয়ারে খাড়া হয় আহার লাগিয়া। কেহ যদি দেয় তবে করয়ে ভক্ষণ; क जू जै न वांत्र क जू क दबन हर्वन '। এত শুনি সেই মছুষ্য গোবৰ্দ্ধন স্থানে; कहिल शिशा प्रव त्युनाथ विवद्रव ।

গুনি, তাঁর পিতা মাতা ছঃখিত ছইলা;
পুত্র ঠাঁই স্থবা, মসুষা পাঠাইতে মন কৈলা।
চারি শত মুজা, ছই ভূতা, এক জান্ধণ;
শিবানন্দের ঠাই পাঠাইল ততক্ষণ।
শিবানন্দ কছে 'তুমি সব যাইতে নারিবা;
আমি যাই যবে আমার সঙ্গে যাইবা।
এবে ঘর যাও, মবে আমি সব চলিব;
ভক্তে প্রোমা সবাকারে সঙ্গে লঞা যাব'।
এইত প্রস্তাবে শীকবি, কর্ণপুর;
রঘুনাথের মহিমা গ্রেছে লিখিলা প্রচুর।

তথাহি চৈতত্মচন্দ্রোদয় নাটকে দশমাস্কে তৃতীয়**লোকে** রঘুনাথদাসায়েষণং প্রতি শিবানন্দবাক্যং।

'আচার্য্যে যতুনন্দনঃ স্থমধুরঃ শ্রীবাস্থদেবপ্রিয় স্তচ্ছিষ্যো রঘুনাথ ইত্যথিগুণঃ প্রাণাধিকো মাদৃশাং শ্রীচৈতন্যকুপাতিরেকঃ সতত স্লিগ্ধঃ স্বরূপপ্রিয়ো বৈরাগ্যৈকনিধি ন^কস্থ বিদিতো নীলাচলে ভিষ্ঠতাং'॥৯৩॥

'শ্রীবাস্থদেবপ্রিরং' বাস্থদেবদন্তক্ত শিবাং 'স্মধুরং' মধুরচরিত্রং 'বজ্নন্দনং' 'আচার্যাং' অধিকারী আসীদিভিশেবং। 'ভচ্চিবাং' 'রমুনাধদাস ইভি' রমুনাধদাসনামা ভাবং; কীনৃশং সং? 'অধিভাং' অধিকাঃ শুণাং বিদ্যান্দাং' অধিকাং শুণাং বিদ্যান্দাং' প্রাণাধিকং' প্রিয়ভমং; পূনং 'শ্রীচৈত্ত কাণাভিরেকঃ' চৈভন্তক কুণারা অভিরেকো যদ্মিন্ সং; পূনং 'সতভল্পরেং' অভিশীতল সভাবং; 'স্ক্রপপ্রিয়ং' পূনং 'বৈরাইগ্রুকনিধিং' বৈরাগাং এক এব নিধি ধনং বহা সং৷ 'নীলাচলে' 'ভিঠভাং' জননাং মধ্যে 'ক্তু' জনত 'ন' 'বিদিভং' আভাঃ; সর্কে হি তং জানকীত্যুর্থং। ১০।

শ্রীবাহুদেবদতের প্রিয়শিষ্য মধুরচরিত্র যতুনন্দন শাচার্য্য; রঘুনাথ দাদ ঐ যতুনন্দনের শিষ্য; রঘুনাথ বহু গুণের আধার, আমাদের প্রিয়ত্র; জ্রীচৈড্ডেক্সের অভিশর কুপা পাত্র; স্বরূপগোসামীর প্রিয় ও অতি স্লিগ্ধসভাব; একমাত্র বৈরাগ্য নিধিই তাঁহার অবলম্বন; নীলাচল বাসী দিগের মধ্যে তাঁহাকে কে না জানে ? ॥৯৩॥

তথাহি তত্ত্বৈব দশমাঙ্কে চতুর্পল্লোকে রঘুনাথাদ্বেষণং প্রতি শিবানন্দবাক্যং।

> 'যং দৰ্বলোকৈ কমনো ভিক্নচ্যা । দৌভাগ্যস্থঃ কাচিদকৃষ্টপচ্যা। যস্যাং সমারোপণতৃল্যকালং তৎপ্রেম দৌধ্যং ফলমুজ্জিজ্ ভে' ॥১৪॥

'দৰ্কলোকৈ কমনোভিক্চা।' সৰ্কলোকানাং একক্স মনসং অভিক্চা। অভিলাবেণ করণরা 'যং' রঘুনাথং 'কাচিং' 'অকুষ্টপচাা'ন কৃষ্টা অকৃষ্টা ভত্যাং পচ্যতে ইতি 'সৌভাগ্যভূং' সৌভাগাত্ত ভূমিকংপজিছানরপা তাং; বতাং' ভূমো 'সমারোপণত্ল্যকালং' অভিক্চিরপ্রীজ্বোপ্রম্মকালং 'তংপ্রেমসৌধাং' তংপ্রেমের সৌধাং 'কলং' 'উজ্জিজ্জে' বিক্সভি কল-ভীতার্থ:। ৯৪।

সকললোক একমনে রঘুনাথকে প্রীতি করার তিনি যেন অকুষ্টপচ্যা সোভাগ্য ভূমির ন্যায় হইলেন; ঐ ভূমিতে অভিক্রচিবীজ রোপণ মাত্রই উহা ফলবতী হইয়। প্রেমস্থর রূপ ফল প্রসব করিত। ১৪।

শিবানন্দ বৈছে সেই মহুবো কহিল;
কণপুর দেই রূপে শ্লোক বর্ণিন।
বর্ষাপ্তরে শিবামন্দ চলিলা নীলাচলে;
রত্নাথের সেবক বিপ্রে তার সন্দে চলে।
সেই বিপ্রে ভূডা চারি শভ মূলা লঞা
নীলাচলে রত্নাথে মিলিলা আসিয়া।
রত্নাথ দাস অদীকার না করিল;
অব্য লঞা হই অম ভাহাই রহিল।

ভবে রঘুনাথ করি অনেক যতন ; মাসে ছই দিন কৈল প্রভুর। নিমন্ত্র। জুট নিমন্ত্ৰণ লাগি কৌড়ি অষ্টপণ; বান্ধণ ভূত্য ঠাই করে এতেক প্রহণ ধ এইমত নিমন্ত্রণ বর্ষ ছই কৈল; পাছে রখুনাথ নিমন্ত্রণ ছাড়ি দিল। নাস ছই যবে রঘুনা করে নিমন্ত্র, স্বন্ধার্প পুছিল তবে শচীর নন্দন। 'রখ কেন আমার নিমন্ত্রণ ছাড়ি দিল' 🕈 স্বরূপ কছে 'মনে কিছু বিচার করিল। "বিষয়ীর দেবালঞা করি নিমন্ত্রণ: প্রসন্ন হয় ইহায় জানি প্রভুর মন। এমার চিত্রেলবা লৈভে নাহিয় নির্মাণ : এই নিমন্ত্রে দেখি প্রভিষ্ঠা মাত্র ফল। উপরোধে প্রভু মোর মানে নিমন্ত্রণ; না মানিলে ছঃখী হৈবে এই মূর্য জন ।" এভ বিচারিয়া নিমন্ত্রণ ছাড়ি দিলা'। ভুনি মহাপ্রভু হাসি বলিতে লাগিলাঃ— 'বিষয়ীর অল থাইলে মলিন হয় মন; মলিন মন হৈলে নতে ক্ষেত্র আরেণ। বিষ্ণীর অলুহয় রাজস নিম্রূপ: দাতা ভোক্তা দোঁহার মলিন হয় মন। ইচার সঙ্কোচে আমি এত দিন নিল: ভাল হৈল জানিয়া সে আপনি ছাঁড়িল'। কত দিনে রঘুনাথ সিংহ্ছার ছাড়িল; ছতে যাই মাগি থাইতে আরম্ভ করিল। গোবিন্দ পাশ শুনি প্রভু পুছে স্বরূপেরে; 'রঘুভিজনালাগি ঠাড়না হয় সিংহলারে' 🤊 স্বরূপ কছে 'সিংহয়ারে হুঃথ অন্ন চাঞা; ছতে মাগি খায় মধ্যাক কালে গিয়া'।

প্ৰভূ কহে 'ভাগ কৈল ছাড়িল দিংছদার;
দিংছদারে ভিক্ষাবৃত্তি বেখার জাচার।
তথা হি শ্রীকৃষ্ণ চৈত্যুদেবস্থা।
'আয়মাগচছতি আয়ং দাস্থাতি
অনেন দত্তং আয়মপারঃ।
সমেত্যয়ং দাদ্যতি অনেনাপি
ন দত্যস্থাঃ সমেষ্যতি সাদাস্থাতি ধা৯৫॥

বৈরাগ্যাশ্রিভ: জন: নির্কাক্ নিশ্চিত্তশ্চ ভিচ্ছাং প্রহিষ্যতি। 'জারং' জন: 'আগাচ্ছতি' অনেন জনেন বিগতদিনে মহুং দত্তং জাতএব 'জারং' নাং আরং দান্ততি; 'জারং' জনঃ 'অপরঃ' স মাং ন দান্ততি; 'আরং' 'সমেতি' আয়াতি স মাং 'দান্ততি'; অথবা 'জনেনাপি' জনেন 'ন' 'দত্তং' স মাং ন দান্ততি; 'জান্তঃ' জনঃ 'সমেষ্যতি' 'সং' 'দান্ততি' ইতি সংকল্পং বিকল্পং ন কুর্যাং ।১৫।

'এই ব্যক্তি আসিতেছেন, ইনি আমাকে পূর্বব দিনে
অন্ন দিয়াছেন; অতএব আজও দিবেন। এ অপর
ব্যক্তি, ইনি দিবেন না; এই যে আসিতেছেন, ইনিই
দিবেন; না! ইনি কখন দেন নাই, ইনি দিবেন না;
অন্য আর কেহ আসিবেন, তিনিই দিবেন'; ভিক্ষা হলে
যাইয়া ভিক্ষার্থী এইরূপ সংকল্প বিকল্প করিবেন না। ৯৫।

'ছবে সিয়া যথা লাভ উদর ভরণ;
অন্য কথা নাহি স্থে কৃষ্ণ সংকীর্ত্রন'।
এত বলি তাঁরে পুনঃ প্রসাদ করিল;
গোবর্দ্ধনের শিলা গুঞ্জামালা তাঁরে দিল।
শঙ্করানন্দ সরস্থতী বুন্দাবন হৈতে আইলা;
তিহু সেই শিলা গুঞ্জামালা লঞা গোলা।
পাশে গাঁথা গুঞ্জামালা, গোবর্দ্ধনের শিলা; (১)
ছুই বস্তু মহাপ্রাভুর আগে আনি দিলা।

[›] পালে গাঁথা—সকল এছেই 'পাৰ্থে' পাঠ আছে ; ইহা শুদ্ধ বলিয়া বোধ হয় না ; বোধ হয় লিপি ক্রের এমাধ বশতঃ 'পাশ' হানে পার্থ ইইরাছে।

সুই অপুর্ব বন্ধ পাঞা প্রভু তু**ই হৈলা**ঃ স্বৰণেৰ কালে গলে পৰে অঞ্চামালা। গোবর্দ্ধনের শিলা প্রভু হৃদরে নেত্রে ধরে : কভ নাসায় জ্বাণ লয় কছু ধরে শিরে। নেত্র জলে সেই শিলা ভিজে নিরম্ভর: শিলাকে কহেন প্রভু রুঞ্চকলেবর। এই মত ভিন বংসর শিলা মালাধরিল:: कृष्टे रुक्ता भिना माना त्रधुनात्थ मिन। প্রভু কছে 'এই শিলা কুফের বিগ্রহ; ইহার সেবা কর তুমি করিয়া আগগ্রহ। এই শিলার কর ভূমি দাভিক পূজন; অচিবাতে পাবে তবে ক্ষণ্ড প্রেমধন। এক কুঁলাজল আর তুলসী মঞ্জী; সাহিক সেবা এই ঋদভাবে করি। ছুই দিগে ছুই পত্ৰ মধ্যে কোমল মঞ্জরী; এই মত অষ্ট মঞ্চরী দিবে শ্রহা করি'। **बीहरस भिना मिया এই बाखा मिना :** আনন্দে রঘুনাথ সেবা করিতে লাগিলা। এক বিভস্তি ছুই বস্ত্র, পিঁড়া একথানি ; স্বরূপ দিলেন কুঁজা আনিবারে পাণী। এই মত রঘুনাথ করেন পূজন; পূজাকালে দেখে শিলায় ব্ৰজেন্দ্ৰন। প্রভুর সহস্ত দক্ত গোবর্দ্ধন শিলা; এই চিছি রঘুনাথ প্রেমে ভাসি প্লেলা। জল তুলসীর সেবার তাঁরে যত স্মুখোদয়; ষোড়শোপচারে পূজার তত স্থ নয়। **এইমত দিন কতক করেন পূজন**; তবে স্বরূপ গোঁসাঞি তাঁরে কহিল বচন:--'অট কৌড়ির থাজা সন্দেশ কর সমর্পণ; শ্রহাকরি দিলে দেই অমৃভের সম'।

एटव चहे को ज़ित्र थाका करत ममर्भाग: স্থরপ আজ্ঞার গোবিক করে সমাধানে। রখুনাথ সেইশিলা মালা যবে পাইল; গোঁদাঞির অভিপ্রায়ে এই ভাবনা করিল :---শিলা দিয়া মোরে গোঁসাঞি সমর্পিল গোর্ডনে : शुक्षामाला पिया पिन बाधिकाठब्रा ; আননের রঘুনাথের বাহা বিস্মরণ: কায়মনে সেবিলেন গৌরাজ চরণ। व्यम् छन त्रश्नात्यत (क कतित्व (नश) ? রশ্বনাথের নিয়ম যেন পাষাণের রেখা। সাডে সাত প্রছর যায় বাঁহার স্মরণে : আহার নিজা চারি দণ্ড, সেও নহে কোন দিনে ৷ বৈরাগ্যের কথা তাঁর অস্তুত কথন; আজনান। দিল জিহবায় রসের স্পর্শন। हिँ जा कानि कांथा विना ना शत दमन ; সাবধানে প্রভুর কৈল আজ্ঞার পালন। প্রাণরক্ষা লাগি যেবা করেন ভক্ষণ; তাহা খাঞা আপনাকে করে নির্কেদন।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে সপ্তমক্ষরে পঞ্চদাধ্যারে এক-ত্রিংশশ্লোকে মুধিষ্ঠিরং প্রতি নারদবাক্যং।

'আত্মানঞেৰিজানীয়াৎ পরং জ্ঞানধুতাশয়ঃ। কিমিচছন্ কস্ত বা হেতোদে হং পুষ্ণাতি লম্পটঃ'॥৯৬ I

'চেৎ' যদি জনঃ 'জ্ঞানধুতাশরঃ' জ্ঞানেন ধৃতা নিরস্তা আশরা বাসনা যক্ত তাদৃশং সন্ 'পরং' 'আত্মানং' ব্রহ্ম 'বিজানীরাৎ' তদা সঃ 'কিং' বস্তু 'ইচ্ছন্' 'কত্ম বা হেতোঃ' 'লম্পটঃ' লোল্পঃ সন্ 'দেহং' শরীরং 'পুঞ্চিতি' তক্ত লোলামেব ন সম্ভবতীতার্থঃ। ৯৬।

জ্ঞান দারা যাঁহার সমস্ত বাসনা নিরস্ত হইয়াছে ও যিনি পরব্রহ্মকে জানিতে পারিয়াছেন; তিনি কি অভিলাবে ও কিসেরই বা জন্ম লোভপরবশ হইয়া দেহপোষণ করিবেন' १। ৯৬।

> প্রসাদার পদারীর যত না বিকায়: ছুই তিন দিন হৈলে ভাত সঙ্গি যার। সিংহলারে গাবী আগে সেই ভাত ডারে: সভা গরে তৈলক গাই থাইতে না পারে। সেই ভাভ রঘুনাথ রাত্রে ঘরে আনি; ভাত ধুঞা ফেলে ঘরে দিয়া বহু পাণি। ভিতরেতে দভভাত মাজি যেই পার: মুন দিয়া রঘুনাথ সেই অল খার। এক দিন স্বরূপ তাহা করিতে দেখিল: হাসিয়া তাহার কিছু মাগিয়া থাইল। স্বরূপ কহে 'ঐছে অমৃত থাও নিতি নিতি; আমা দ্বায় নাহি দাও, কি ভোমার প্রকৃতি ? গোবিন্দের মুখে প্রভু সে বার্তা ভনিলা; আর দিনে আসি প্রভুকহিতে লাগিলা। 'কাঁহা বস্তু থাও দবে আমায় না দেও কেন ?' এভ বলি এক গ্রাস করিল ভক্ষণ। আর গ্রাদ লৈতে অরূপ হাতেতে ধরিলা: 'ভব যোগ্য নছে' বলি বলে কাডি নিলা। প্রভু বলে 'নিভি নিভি নানা প্রসাদ থাই: ঐছে স্বাহ আর কোন প্রসাদে না পাই'। এই মত মহাপ্রভুনানা লীলা করে; রমুনাথের বৈরাগ্য দেখি সম্ভোষ অন্তরে। আপন উদ্ধার এই রঘুনাথ দাস ; চৈতভা স্তব করাবৃক্ষে করিয়াছে প্রকাশ।

তথাহি স্তবাবল্যাং চৈতন্মস্তবকল্পরক্ষে একাদশশ্লোকে:। 'মহাসম্পদারাদপি পতিত্যুদ্ভুত্য কুপয়া স্বরূপে যঃ স্বীয়ে কুজনমপি মাং নুস্ত মুদিতঃ

উরো গুঞ্জাহারং প্রিয়মপি চ গোবর্দ্ধনশিশং

मर्ता टम दुर्गातारका क्रमग्र क्रमग्रचाः मनग्रकिं॥ ৯० ॥

'বঃ' গৌরাজ: 'মহাসম্পদারাৎ' ধনৈ ব্যাশীসকাশাৎ 'পভিডং' মাহ 'কপরা' 'উদ্ভা' 'কুলনমপি' 'মাং' 'বীরে' নিজজনে 'বরূপে' 'নতু' সমর্প্য 'মৃদিভঃ' হরিতঃ সন্ 'প্রিয়মপি' 'উরোগুঞ্জাহারং' উরসঃ বক্ষসঃ গুঞাহারং 'গোবর্জনশিলাং' 'চ' 'মে' মহুং 'দদৌ'; স 'গোরাঙ্গু মম 'জ্বরে' 'উলয়ন্' প্রক্রমন্সন্ 'মদয়তি' হর্মভি মানিভিশেষঃ। ৯৭।

আমি কুজন হইলেও যিনি কুপা করিয়া কামিনীকাঞ্চন হইতে উদ্ধার করতঃ স্থীয় আত্মীয় স্বরূপের নিকট আমাকে সমর্পন করিয়াছিলেন; যিনি হাউ হইয়া স্থীয় বক্ষের প্রিয় শুস্পাহার ও গোবর্জন শিলা আমাকে দিয়াছিলেন; সেই স্পৌরাঙ্গ আমার হৃদয়ে উদিত হইয়া এখনও আমাকে আনন্দে উন্মত করিতেছেন। ১৭।

এইত কহিল রঘুনাথের মিলন; ইছা যেই শুনে পায় চৈতনাচরণ। - প্রীক্লপ রঘুনাথ পদে যার আশ; চৈতনাচরিতামৃত কহে কুফদান।

ইতি ঐতিচত অচরিতামতে অন্তর্থতে ঐরিঘুনাথদাস-মিলনং নামষ্ঠপরিচেছদঃ

সপ্তম পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থ ।

চৈতন্মচরণাম্ভোজমকরন্দলিহঃ সতঃ। ভজে যেষাং প্রদাদেন পামরোহপ্যমরো ভবেৎ ॥৯৮॥

'ৈ চৈত ক্লচরণাভোজ মকরন্দলিহঃ' চৈত ক্লচরণপদ্ম সুমধ্নি লিহন্তি আবাদিরন্তি যে তান্ 'সভঃ' সাধ্ন্ অহৎ 'ভজে' বলে। 'যেযাং' সভাং 'প্রসাদেন' 'গান্রোছিপি' অতিপাষ্ত জনোছিপি 'অমরঃ' দেবতুল্যঃ 'ভবেৎ'। ৯৮।

চৈতভাচরণপদ্মের রসাফাদী সাধ্দিগের ভজনা করি; ভাঁহাদের প্রসাদে অধমব্যক্তিও দেবতুল্য ইইতে পারে ১৯৮

> জর জরা জীচৈতনা। জর নিত্যাননা ! জয়াবৈভচকা। জয় গৌরভজ বৃন্দ ! বর্ষান্তরে যত গৌডের ভক্তগণ আইলা: পূর্ববৎ মহাপ্রভু স্বারে মিলিলা। এই মভ বিলাদ প্রভুর ভক্তগণ লঞা; হেনকালে বল্লভ ভট্ট মিলিলা আসিয়া। (১) আসিয়াবনিকাভট্ট প্রভুর চরণ; প্রভু ভাগবত বুদ্ধো কৈল আলিকন। মানা করি প্রভ ভাঁরে নিকটে বসাইলা; বিনয় কবিয়া ভট কভিতে লাগিলা :---বৈছ দিন মনোরথ ভোমা দেখিবারে: জগন্নাথ পূর্ণ কৈল, দেখিল ভোমারে। তোমার দর্শন হেই পায় সেই ভাগ্যবাক্; ভোমাকে দেখিয়ে যেন সাক্ষাৎ ভগবান। তোমাকে যে স্মারণ করে সে হয় পবিত : দৰ্শনে পবিত হয় ইথে কি বিচিত ?

তথাহি শ্রীমন্তাপবতে প্রথমক্ষকে একোনবিংশাধ্যায়ে ত্রিংশশ্লোকে শুকদেবং প্রতি পরীক্ষিধাক্যং।

'যেষাং সংস্মরণাৎ পুংসাং সদ্যঃ শুধ্যন্তি বৈ গৃহাঃ। কিং পুনদ শ্নম্পর্মপাদশোচাসনাদিভিঃ'॥ ৯৯॥

'যেষাং' সাধুনাং 'সংশ্বরণাৎ' শ্বরণপ্রভাবাৎ 'পুংসাং' জনানাং 'গৃহাঃ' অপি কিং পুন: কলত্রপুত্রদেহাঃ 'বৈ' নিশ্চিতং 'ওধ্যস্তি'; 'তেবাং' দর্শনশর্শপাদশৌচাসনাদিভিঃ' করণৈঃ 'ওধ্যস্তি ভক্ত 'কিং' 'পুনঃ' বক্তব্য-মিভিশেষঃ। ১৯।

বাঁহাদিগের স্মরণপ্রভাবেই লোকদিপের গৃহ দদ্য পবিত্র হয়; ভাঁহাদিগের দর্শন, স্পার্শন, পাদপ্রকালন এবং

> वन्रक्षण्डे—रे रात्र पूर्व द्वाष्ट्र वशः >> शतित्व्हण वरण्—वण्ड शः तमा

উপবেশনাদি দারা যে শুদ্ধ হইবে তাহাতে আর সন্দেহ কি ? ৯৯।

'কলিকালের ধর্ম রঞ্চনামসংকীর্ত্তন;
রঞ্চশক্তি বিনা নহে ভার প্রবর্ত্তন।
ভাহা প্রবর্ত্তাইলে তুমি এইত প্রমাণ;
রক্ষশক্তি ধর তুমি ইথে নাহি ম্মান।
জগতে করিলে তুমি রক্ষ প্রেম প্রবাশে;
বেই ডোমা দেবে সেই ক্লক্ষ প্রেমে ভাগে।
প্রেম পরকাশ নতে রক্ষশক্তি বিনে;
রুষ্ণ এক প্রেমাভা শাস্ত্রের প্রমাণে'।

তথাহি লঘুভাগবতায়তে পূর্ববণ্ডে পরাবস্থায়াং এক্ষ-বিষয়ে বিতীয়াকধূতবিল্লমঙ্গলাকেঃ।

'সন্তবতারা বহবঃ পক্ষজনাভস্য সর্বতো ভদ্রাঃ। ক্ষুণাদন্যঃ কো বা নতেষ্পি প্রেমদো ভবতি'॥ ১০০॥ জীকা ও ব্যাধ্যা আদিঃ ৬১ খোঃ ৭৪—৭৫ গুঃ দেখ ১১০০।

মহাপ্রত্যুত্ত কহে 'শুন ভট্ট মহামতি!
মায়াবাদী সল্লাদী আমি না জানি কৃষ্ণভক্তি।
অবৈত আচার্য্য গোঁসাঞি সাক্ষাৎ দিখন;
তাঁর সঙ্গে আমার মন হইল নির্মাল।
সর্কাশালে কৃষ্ণভক্তের নহে বাঁর সম;
অভএব অবৈত আচার্য্য তাঁর নাম।
বাঁহার কুণার সেভেরে হর কৃষ্ণভক্তি;
কে কহিতে পারে তাঁর বৈষ্ণবড়া শক্তি?
নিড্যানক্ষ অবধৃত সাক্ষাৎ দিখর;
ভাবোন্মাকে মত্ত, কৃষ্ণ প্রেমের সাগর।
বড় দুর্শনবেতা ভট্টাচার্য্য সার্ব্যতেম;
বড়দর্শনে জগক্ষ্য ভাবভাত্তম।
ভিত্ত দেশাইল মোরে ভক্তিযোগ পার;
ভার প্রসাদে কানিল কৃষ্ণ ভক্তি যোগ সার।

'রামানন্দ রার ক্ষার্যের নিধান;

তিহ জানাইল ক্ষা স্থা: তগবান।
তাঁতে প্রেমভক্তি প্রুষার্থ শিরোমণি;
রাগমার্গে প্রেমভক্তি সর্বাধিক জানি।
দাশু স্থ্য বাৎসল্য মধুর ভাব আর;
দাস স্থা গুরু কান্তা আগ্রয় বাঁহার।
ক্রিশ্বর্যজ্ঞানযুক্ত কেবলাভাব আর;
ক্রিশ্ব্যজ্ঞানে না পাই ব্যেক্সকুমার

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমক্ষমে নবমাধ্যায়ে ষোড়শ-শ্লোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুকদেববাক্যং।

নায়ং স্থথাপো ভগবান্ দেহিনাং গোপিকাস্কতঃ।
জ্ঞানিনাঞ্চাত্মভানাং যথা ভক্তিমভামিহ'॥ ১০১ ॥

ব্যিকা ও ব্যাখ্যা মধ্যঃ ১০৭ শ্লোঃ ১৮১ পৃঃ দেখ। ১০১।

'আত্মভূত' শব্দে কহে পারিবদ্গণ; ঐশ্ব্যজ্ঞানে লক্ষী না পাইল ব্ৰজেন্তনন্দন।

তথাহি তত্ত্রৈব দপ্তচত্বারিংশাধ্যায়ে ত্রিপঞ্চাশৎ শ্লোকে গোগীঃ প্রতি উদ্ধববাক্যং।

নামং শ্রেমেইস উ নিতান্তরতেঃ প্রদাদঃ
স্ব র্যোষিতাং নলিনগদ্ধরুচাং কুতোহন্তাঃ
রাদোৎদবে হস্ত ভুজদওগৃহীতকণ্ঠ
লকাশিষাং য উদগাদ্ধ জন্মন্দ্রীণাং'॥ ১০২॥
টীকা ও ব্যাথ্যা মধ্যঃ ৭৬ সোঃ ১৫২ শৃঃ দেখ। ১০২।

'গুজভাবে সথা করে ককে আরোহণ; গুজভাবে ব্রজেশ্বরী করিল বন্ধন। 'মোর স্থা, মোর পূঅ', এই গুজ মন; অতএব গুক ব্যাস করে প্রশংসন। তথাতি শ্রীমন্তাগবতে দশমক্ষমে অন্তমাধ্যায়ে ষট্ ত্রিংশ-স্লোকে শুকদেবং প্রতি পরীক্ষিদাক্যং।

'নন্দঃ কিমকরোদ্মন্ কেন্ কের এবং মহোদয়ং। যশোদা বা মহাভাগা পপে) যস্তাঃ স্তনং হরিঃ'॥ ১০৩॥ দীকা ও বাাধ্যা মধাঃ ৭৪ লোকে ১৪৮ পঃ দেখ। ১০০।

> 'ঐখর্ব্য দেখিলেও শুদ্ধের ঐখর্ব্য না হয় জ্ঞান ; অতএব ঐখর্ব্য হইতে কেবলাভাব প্রধান।

তথা তত্ত্বৈব অফ্টমাধ্যায়ে পঞ্জিংশশ্লোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুকদেববাক্যং।

'ত্রয়া চোপনিষন্তিশ্চ সাংখ্যমোগৈশ্চ সাত্বতিঃ। উপগীয়মানমাহাত্ম্যং হরিং সামত্তাত্মজং'॥ ১০৪॥ টীকা ও ব্যাধ্যা মধ্যঃ ২৪৭ লোঃ ৪৪৯ গু: দেখ। ১০৪।

'এ সব শিক্ষাইল মোরে রাম রামানক্ষ;
বাঁহার প্রসাদে জানি এজের গুদ্ধভাবজন্ত।
দামোদর স্বন্ধপ প্রেমেরস মৃর্জিমান;
বাঁর সক্ষে হৈল এজের মধুর রসজ্জান।
শুদ্ধপ্রম এজদেবীর কামগদ্ধহীন;
কৃষ্ণস্থা ভাৎপুৰ্য্য এই ভার চিন।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমস্কম্মে একত্রিংশাধ্যায়ে ষোড়শ-শ্লোকে শ্রীকৃষ্ণমুদ্দিশ্য গোপীবাক্যং।

> 'পতিস্থতাশ্বয়ভাতৃবাদ্ধবা নতি বিলজ্য তেহস্তাচুতোগতাঃ। গতিবিদ স্তবোদগীতমোহিতাঃ কিতব যোধিতঃ কস্তাজেদ্ধিশি'॥ ১০৫॥

विका अ वार्षा मधाः २०५ ह्याः ८०५ पः तन्य। ५००।

'পর্কোভম ভলন ইহার সর্কভক্তি জিনি; অভএব কৃষ্ণ কহে আমি তার ঋণী।

তথাহি তত্ত্বৈৰ দ্বাত্তিংশাধ্যায়ে একবিংশশোকে গোৰী: প্ৰতি শ্ৰীকৃষ্ণবাক্যং ব

ন পারয়েহহং নিরবদ্যসংযুজাং
স্থান্ত্র্যং বিবুধারুষাপি বঃ।
যা মা ভজন্ তুর্জ্জয়গেহশৃত্বলাঃ
সংবৃশ্চ্য তদ্বঃ প্রতিষাতু সাধুনা'॥ ১০৬॥
জীকা ও ব্যাখ্যা আদিঃ ১০৫ শ্লোঃ ১০৯ গৃঃ দেব। ১০৬॥

'ঐখর্যাজ্ঞান হৈভে কেবলা পরম প্রধান ; পৃথিবীতে ভক্ত নাই উদ্ধব সমান। তিঁহ যাঁর পদ্ধূলি করেন আংথন ; স্বরূপের সঙ্গে পাইন্থ এসব শিক্ষণ। হরিদাস ঠাকুর মহাভাগবত প্রধান; দিন প্রতি লয় ভিঁহ তিন লক নাম। নামের মহিমা জামি তাঁর ঠাঁঞি শিধিল : ভার প্রদাদে নামের মহিমা জানিল। আচার্ব্য রত্ন, আচার্ব্য নিধি, পণ্ডিত গদাধর : জগদানক, দামোদর, শকর, বজেখর ; कानीचंत्र, मूकून, वाद्यालव, मूताति ; আর যত ভক্তপণ গৌডে অবছরি: কুঞ্নাম প্রেম কৈল জগতে প্রচার: ইহা স্বার সংক্ষ ক্রম্বভুক্তি যে আমার'। ভটের হৃদরে দৃঢ় অভিযান জানি: ভিদি করি মহাপ্রভু কহে এত বাণী। 'আমি দে বৈক্ষৰ ভক্তি সিদ্ধান্ত সৰ জানি; আমি সে ভাগৰত অৰ্থ উত্তম বাথানি'।

ভট্টের মনেতে এই ছিল দীর্ঘ গর্ম : প্রভার বচন ভানি হইল সে ধর্ব। প্রভুর মুখে বৈক্ষবভা শুনিয়া স্বার : ভট্টের ইচ্ছা হৈল ভাঁসবারে দেখিবার। ভট্ট কহে 'এ সব বৈকাৰ রছে কোন স্থানে ? ধকান্ প্রকারে পাইব ইহা সবার দর্শনে 🖓 প্রভু কহে 'কেহ ইহা, কেহ গঙ্গাভীরে: স্ব আসিয়াছে রথযালা দেখিবারে ৮ ইহাই রহেন সবে বাসা নানা ভানে : ইহাই পাইবে তুমি দবার দর্শনে'। ভবে ভট্ট কহে বহু বিনয় বচন : বহু যত্ন করি প্রভুর কৈল নিমন্ত্রণ। আর দিনে স্ব বৈষ্ণ্য প্রভু স্থানে আইলা 😜 সবা সনে মহাপ্রভু ভট্টে মিলাইলা। বৈষ্ণবের তেজ দেখি ভট্টের চমৎকার; ভাঁ সবার আগে ভট থল্যোত আকার। তবে ভট্ট বছ মহাপ্রসাদ আনাইলা: গণ সহ মহাপ্রভুকে ভোজন করাইলা। পর্মানন্দ পুরী সঙ্গে সন্ত্রাসীর গণ: একদিকে বৈসে সবে করিতে ভোজন। অবৈত নিত্যানক রায় পার্যে হুই জন; মধ্যে প্রভূ বদিলা আগে পাছে ভক্তগণ। গৌডের ভক্ত যত গণিতে না পারি; অক্রে বসিলাসব হঞা সারি সারি। প্রভার ভক্তগণ দেখি ভট্টের চমৎকার; প্রত্যেকে স্বার পদে কৈল নমন্ধার। चत्रभ, कश्मानक, कानीश्रद, भक्रत, পরিবেশন করে আর রাঘর, দামোদর। মহাপ্রসাদ বলভ ভট্ট বছ আনাইল; প্রভু সহ সন্ন্যাসীগণে আপনি পরিবেশিল।

প্রসাদ পার, বৈষ্ণবর্গণ বলে হরি হরি: চরিধ্বনি উঠিল দব ব্রহ্মাও ভরি। মালা চক্ৰ গুৱাক পাৰ অনেক আনিল: স্বার পূজা করি ভট্ট আনন্দিত হৈল। রথযাত্রা দিনে প্রভু কীর্ত্তন আরম্ভিল; পূৰ্ববৎ সাত সম্প্ৰদায় পৃথক করিল। অবৈত, নিত্যানন্দ, ছরিদাস, বক্তেশব: শ্রীবাস, রাখব পণ্ডিভ, গদাধর, সাত জন সাত ঠাঞি করেন কীর্ত্তন : হরিবোল বলি প্রভু করেন ভ্রমণ। চৈদি মাদল বাজে উচ্চ সংকীর্ত্তন: একেক মর্ত্তকের প্রেমে ভাসিল ভূবন। দেখি বল্লভ ভটের হৈল চমৎকার • আনন্দে বিহৰণ, নাহি আপনা সম্ভাল। তবে মহাপ্রভু সবার নৃত্য রাখিলা; পূর্ববং আপনি মৃত্য করিতে লাগিলা। প্রভুর সৌন্দর্য্য দেখি আর প্রেমোদর: 'এই সাক্ষাৎ কৃষ্ণ' ভটের হটল নিশ্চয়। এই মত রথ যাত্রা সকল দেখিল: প্রভুর চরিত্তে ভট্টের চমৎকার হইল। যাত্রাস্তরে ভট্ট আইলা মহাপ্রস্কু স্থানে ; প্রভুর চরণে কিছু কৈল নিবেদনে:---'ভাগবভের চীকা কিছু করিয়াছি লিখন : আপনি মহাপ্রভু যদি করেন প্রবরণ। প্ৰভূ কহে 'ভাগবভাৰ্য ব্বিতে না পারি ; ভাগবতার্থ শুনিছে আমি নহি অধিকারী। ক্ষণনাম বসি মাত্র করিয়ে প্রহণে: সংখ্যানাম পূর্ণ মোর নহে রাজি দিনে। ভট কহে 'कुक नारमत कर्य, ब्राक्शास्त्र বিস্তার করিয়াছি, তাহা করহ প্রবংব'।

প্রভূকতে 'কৃষ্ণ নামের বহু সর্থ না মানি ; ভাষস্থলর, যশোদানলন, মাত্র জানি'।

তথাহি তথাহি জ্রীকৃষ্ণসন্দর্ভে অনর্থোপশম ইত্যক্ত ব্যাখ্যায়াং ধ্বতো নামকৌমুদ্যাং শ্লোকঃ।

'তমাল্ট্যামলত্বিষি শ্রীযশোদান্তনন্ধয়ে। কৃষ্ণনান্ধো রুঢ়িরিতি দর্বশাস্ত্রবিনির্ণয়ঃ'॥ ১০৭॥

'তমাল ভাষণ দিবি' তমালবং ভাষলা ভাষবর্ণ। ছিট্ কান্তির্যন্ত তত্মিন্
'শ্রীষশোদান্তনদ্ধরে' বশোদারাঃ ন্তনপারিনি বালকে 'রঞ্চনারঃ' রঞ্চ ইতি শক্ত 'রুটিঃ' বৃদ্ধিঃ ভাৎ ক্রফণক্ষেন বশোদান্তনদ্ধর উচাত ইত্যর্থঃ
'ইতি' 'সর্ক্রশান্তবিনির্থঃ' সর্ক্রেষাং শাল্লাদীনাং শ্রীমাংসা ভর্ষৎ ১১০৭।

কৃষ্ণ শব্দের রুঢ়ি অর্থে তমালশ্যামল যশোদা নন্দন বুঝায়; ইহাই সকল শাস্ত্রের মীমাংসা॥ ১০৭॥

> 'এই অর্থ মাত্র আমি জানিয়ে মির্দার; আর সব অর্থে হোর নাহি অধিকার'। कन ७ वन ७ त थाव छाडेत मद वार्था ; সর্বজ্ঞ প্রভু ভাহা জামি করিল উপেকা। বিমনা হইয়া ভট্ট গেলা নিফ খর; **थ**ज्विषय ७क्टि किছू **१रेग मा**स्त्र। ভৰে ভট গেলা পণ্ডিত গোঁদাঞির ঠাঁঞি: নানামত প্রীতি করে ভাঁর ঠাই বাই। প্রভুর উপেক্ষায় সব নীলাচলের জন; ভট্টের ব্যাখ্যান কিছু না করে শ্রবণ। লজ্জিত হইল ভট্ট, হৈল অপমান ; ত্র:খিত হইয়া গেল পঞ্জিতের স্থান। দৈল করি কছে 'নিল ভোমার শ্রণ; তুমি ক্লপা করি রাখ আমার জীবন। क्रक नाम व्याधा यनि क्रवर क्षेत्र : তবে যোর লক্ষাপক হয় প্রকালন'।

সঙ্কটে পড়িল পণ্ডিভ করত্বে সংশ্র: 'কি করিব ? ইহা করিতে না পারি নিশ্চর'। বদাপি পণ্ডিভ না কৈল অধীকার: ভটু যাই ভব পড়ে করি বলাৎকার। অভিজাত্যে পঞ্জিত করিতে নারে নিষেধন : 'এ সম্ভটে রাথ ক্লফ লইফ শরণ। অন্তর্যামী প্রভু জানিবেন মোর মন: ভাঁরে ভয় নাহি কিছু, বিষম তাঁর গণ্ঁ। যদাপি বিচারে পণ্ডিভের নাতি দোষ: তথাপি প্রভুর গণ করে তাঁরে রোষ। প্রত্যহ বর্জ ভট্ট আইদে প্রভু স্থানে : फेक्सा व्यक्ति कांत्र कहत चार्काशाहि महन । যেই কিছ করে ভট্ট সিদ্ধান্ত স্থাপন : ভনিতেই আচার্য্য ভাছা করেন খণ্ডন। আচাৰ্য্যাদি আগে ভট্ট ধৰে ধৰে বায় : রাজহংস মধ্যে ধেন রহে বক প্রায়। এক দিন ভট পুছিল আচার্যোরে: 'জীব প্রকৃতি, পতি করি মানয়ে কুফোরে। প্তিব্রজা প্তির নাম নাহি লয়: ভোষরা কৃষ্ণ নাম লও, কোন ধর্ম হয়' 💡 জ্বাচার্য্য কহে 'আগে তোমার ধর্ম মুর্ত্তিমান : ইংহারে পুছ, ইহ কহিবেন ইহার প্রমাণ'। প্রভুকহেন 'তৃমি নাজান ধর্মমুক্তি: খামী আজা পালে এই পভিব্ৰভাধৰ্ম। পভির আজা নিরস্তর তাঁর নাম লৈতে: পতি আজ্ঞাপতিব্ৰতানাপাৱে লভিনতে ৮ অতএব নাম লয়, নামের ফল পার: नारमत्र करण कुकाशरण (थाम छेश्रस्त्र ! अभिन्न। वज्ञक छद्वे देशन निर्वाहन : यदत्र यांचे छः थ मत्न कदत्रन हिन्छनः---

^ৰনিভা আমার এই সভায় হয় ককপাত:: এক দিন উপরে যদি পড়ে মোর বাত। ভবে তথ হয় আবে সব লজ্ঞা যায়: স্থবচন স্থাপিতে আমি কি করি উপার' গ আবার দিন্দে আসি বসিলা প্রভুনম্ভারি ; সভাতে কহেন কিছু মনে গৰ্ব করি। ভাগবড়ে স্থামীর ব্যাথ্য করিয়াছি থ্ওন : লইতে নাপারি জীব বাাধানে বচন। সেই ব্যাখ্যা করে বাঁহা যেই পড়ে জানি : এক বাক্যতা নাহি, ভাতে স্বামী নাহি মানি' ব প্ৰভু হাঁসি কহে 'স্বামী না মানে মেই জন; বেখ্যার ভিডরে ভারে করিয়ে গণন'। এত কহি মহাপ্রভুমৌন করিলা; ক্ষমিষা স্বার মনে স্কোষ হইলা। জগতের হিত লাগি গৌর অবভার: অক্তবের আক্রভিন্যান জানেন জাঁচাব। नाना जनकारन छाष्ट्रे ल्यास छनेवान : ক্রফ বৈছে খণ্ডিলেন ইন্দ্রের অভিমান। অজ্ঞ জীব নিজ হিতে অহিত করি মানে: গৰ্ক চূৰ্ণ হৈলে পাছে উঘারে নয়নে। খরে আসি রাত্রে ভট্ট চিস্তিতে লাগিলা; 'পূর্বের প্রয়াগে মোরে মহাক্রপা কৈলা। স্থগণ সহিতে মোর মানিল,নিমন্ত্রণ; এবে কেন প্রভুর মোরে ফিরি গেল মন ? আমি জিতি এই গৰ্ক শৃত হউক চিত; 🕏 শ্বর শ্বভাব করে স্বাকার হিত। আপনা কানাইতে আমি করি অভিযান : সে গর্ব ধ্ঞাইভে মোর করে অপমান। আমার হিত করেন ইছোঁ, আমি মানি ছঃখঃ कुरक्षत्र উপরে যেন কৈল ইব্র মূর্থ'।

এত চিত্তি প্রাতে মাসি প্রভূর চরণে देवन कवि चक्रि करडीनतम वहरत । 'আমি অজ জীব, অজোচিত কর্ম কৈল : ভোষার আগে বুর্থ পাণ্ডিভ্য প্রকাশিল। ত্যি ক্রম্ব নিজোচিত ক্লপা যে করিলাঃ অপ্যান করি সর্ক গর্ক থকাটল।। আমি অজ হিত ভানে মানি অপমান : हेस (यन क्रक्शिनमा क्रिया अस्तान। ভোষার রূপা অঞ্জনে এবে গর্বা জন্ধা প্লেল ভূমি এত কুপা কৈলে, এবে জ্ঞান হৈল। অপরাধ কৈছু ক্ষম লইজু শ্রণ : কুপা করি মোর মাথে ধরছ চয়ণী। প্রভু করে "ভূমি পণ্ডিভ মহাভাগবভ: ছই ভণ বাঁহা, তাঁহা নাহি গৰ্ম শৰ্মছ। बीयत यामी निमित्र निक है का कत : শ্রীধরত্বামী নাহি মান, এত গর্ক ধর ? · ভীধরস্বামী প্রসাদে ভাগবত জানি ; জগদগ্র জীধরস্বামী, গুরু করি মানি। শ্রীধর উপরে গর্কে যে কিছু লিখিবে; অৰ্থ ব্যস্ত লিখন সেই লোক না মানিবে। শ্রীধরের অফুগত যে করে লিখন: সব লোক মান্ত করি করিবে গ্রহণ। শ্রীধরামূগত করি ভাগবছ ব্যাখ্যান : অভিমান ছাড়ি ভক্ত ক্লফ ভগ্বান। অপরাধ ছাড়ি কর ক্লঞ্চ সংকীর্ত্তন: অচিরাতে পাবে ভবে ক্সঞ্চের চরণ'। ভট্ট কহে 'বলি মোরে হইলা অসল: এক দিন পুনঃ মোর মান নিমন্ত্রণ'। প্ৰাভূ অবভীৰ্ব হৈলা জগৎ ভারিছে; মানিলেন নিমন্ত্ৰণ ভাঁরে অধ দিতে।

জগভের হিত হউক এই প্রভর মন : দ'ও করি করে তাঁর জদম শোধন। স্বগণ সহিত প্রভুর নিমন্ত্রণ কৈলা: মহাথেড ভাঁরে ভবে প্রদন্ন হইলা। জগদানৰ পণ্ডিতের গুদ্ধ গাঢ় ভাব: সভাভামা প্রায় প্রোমের বামা স্বভাব। বার বার প্রণয়কলহ করে প্রভুসনে : অভোভে থটমটি চলে ছইজনে। গদাধর পণ্ডিতের শুদ্ধ গাঢভাব: রুক্মিনী দেবীর বৈছে দক্ষিণ স্বভাব। তাঁর প্রণয় রোষ দেখিতে প্রভর ইচ্চা হয়: ঐপর্যাজ্ঞানে তাঁর রোষ না উপজয়। এই লক্ষ্য পাঞা প্রভ কৈলা রোষাভাষ: শুনি পণ্ডিভের চিত্তে উপজিল তাস। পূর্বে যেন রুফ যদি উপহাস কৈল; শুনি কৃষ্ণীর মনে তাদ উপজিল। বল্লভ ভটের হয় বাংসলা উপাদন : বালগোপাল মস্ত্রে ভিঁছে। কবেন সেবন। পণ্ডিতের দনে তাঁর মন ফিরি গেল: কিশোর গোপাল উপাসনায় মন হৈল। পজিতের সাঁঞি চাছে মন্ত্রাদি শিথিতে: পণ্ডিত কছে 'এই কৰ্ম নহে আমা হৈছে। আমি পরভক্ত, আমার প্রভুগৌরচক্তঃ তার আজ্ঞাবিনা আমি নাহই স্বত্রা। তুমি যে আমার ঠাঁঞি কর জাগমন; তাহাতেই প্রভু মোরে রূদন ওলাহন'। এইমভ ভট্টের কত দিন গেল: শেষে যদি প্রভূতারে স্থাসর হৈল। নিমন্ত্রের দিনে পণ্ডিতে বোলাইলা: खन्न श क्रामानम शावित्म शाठीहेना ।

পথে পণ্ডিতে স্কুপ কহেন বচন : 'পরীকিছে প্রভ ভোমায় কৈল উপেকণ। ভূমি কেন্ডাসি তাঁরে না দিলে ওলাহন; ভীত প্রায় হঞা কেন করিলে সহন ?' পণ্ডিত কহেন 'প্রেভ স্ক্তি শিরোমণি; তার সনে হঠকরি ভাল নাহি মানি। যেই কছেন সেই সৃহি নিজ শিরে ধরি: আপনি করিবেন কপা দোষাদি বিচারি' 4 এত বলি পণ্ডিত প্রভু ছানে আইলা; রোদন করিয়া প্রভুর চরণে পড়িলা। ঈষং হাসিয়া প্রভু কৈল আলিখন ; স্বা ভ্নাইয়া কহেন মধুর বচনঃ---'আমি চালাইল তোমা, ভূমি না চলিলা; কোধে কিছু না কহিলা সকলি সহিলা। আমার ভঙ্গিতে তোমার মন না চলিলা: স্থদ্য সরল ভাবে আমারে কিনিলা'। পণ্ডিভের ভাব মুদ্রা কহন না যায়; গদাধর প্রাণনাথ নাম হৈল যায়। পণ্ডিতে প্রভুর প্রসাদ কহন না যায়: গদাইগোরাজ বলি বারে লোকে গাল। চৈত্র প্রভুর লীলা কে বৃথিতে পারে **?** এক লীলায় বহে গঙ্গার শত শত ধারে। পণ্ডিতের সৌজন্ত বহাণাতা গুণ: দুঢ় প্রেমমুদ্রা লোকে করিল খ্যাপন। অভিমানপ**ত** ধুঞা ভটেরে শোধিল ; সেই ছারা আর সব লোকে শিখাইল। অন্তরে অমুগ্রহ বাহে উপেক্ষার প্রার: ৰাভ অৰ্থ যেই লয়, সেই নাশ যায়। মিপুর চৈডন্তলীলা বুঝিভে কার শক্তি ? সেই কুৰে গৌরচজে দুচ্ যার ভক্তি।

দিনাত্তরে পণ্ডিত কৈল প্রভুর নিমন্ত্রণ;
প্রান্থ ভিকা কৈল লয়ে ভক্তগণ।
ভাঁহাই বলভভট্ট প্রভুর কাজন লৈলা;
পণ্ডিত ঠাঞি পূর্ব সব প্রার্থিত সিদ্ধি কৈলা।
এইত কহিল বলভভট্টের ফিলন;
যাহার প্রবণে পাই গোর প্রেমধন।
শ্রীরূপ রঘুনাথ পদে যার আশ;
চৈত্তাচরিভায়ত কহে কুঞ্লাস।

ইতি ঐতিচত অচরি তামতে অস্ত্যুপতে বল্লভভটুমিলনং
নাম দপ্তম পরিছেদেঃ। ৭।

অফম পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থ ।

তং বন্দে কৃষ্ণচৈতক্তং রামচন্দ্রপুরীভয়াৎ। লোকিকাহারতঃ স্বং যো ভিক্ষারং সমকোচয়ৎ॥ ১০৮॥

'বং' 'রামচক্রপুরীভরাৎ' 'লৌকিকাহারভং' লোকানাং মন্ত্রাণাং আহারাৎ নির্মিতভোজনাদিতার্থঃ 'বং' স্বকীরং 'ভিক্ষারং' ভোজনারং 'সম্কোচরং' অল্লমাত্রমকরোং; 'তং' 'রঞ্চৈতভং' অহং 'বলে'। ১০৮।

রামচন্দ্রপুরীর ভয়ে যিনি স্বীয় নিয়মিত ভোজনালের মাত্রা সক্ষোচ করিয়াছিলেন; আমি সেই কৃষ্ণচৈতভাদেবের বন্ধনা করি॥ ১০৮॥

> জার প্রীচৈতক্ত করণাসিজ্ পারবোর ! ব্রহ্মাশিবাদিক ভক্তে চরণ বাঁহার । জার জার জ্ববধ্তচন্দ্র নিভানিক্ষ ! জাগত বাঁধিল বিঁহ দিরা প্রেম ফক্ষ । জায় জার জ্বৈত ঈশ্বর স্বব্দার ! ক্লয়ঃ জাবভারি কৈল জাগত নিজ্ঞার ।

জয় জয় শ্রীবাসাদি যভ ভক্তগণ। শ্রীকৃষ্ণ চৈত্ত গ্রপ্ত থার প্রাণধন। এইমত গৌরচজানিজ ভক্ত সঙ্গে: নীলাচলে ক্রীড়া করে কৃষ্ণপ্রেমরঙ্গে। হেনকালে রামচন্দ্রপুরী গোঁসোঞি আইলা; (১) প্রমানস্প্রী আর প্রভরে মিলিলা। भत्रमानम्भूती देकन ठत्रविस्त ; পুরীগোঁদাঞিকে কৈল ভিঁহ দৃঢ আলিলন। মহাপ্রভ কৈল তাঁরে দণ্ডবৎ প্রণতি ; আলিঙ্গন করি ভিঁহে। কৈল রুঞ্মাভি। তিন জনে ইইগোঞ্চি কৈল কভক্ষণ: জগদানন্দ প্ৰিড তাঁবে কৈল নিম্পুৰ। জগরাথের প্রসাদ আনিল ভিক্ষার লাগিয়া: যথেষ্ঠ ভিক্ষা কবিল ভিঁহে। নিন্দার লাগিয়া। ভিক্ষাকরি কহে পুরী 'শুন জগদাননা। অবশেষ প্রাদাতৃমি করহ ভক্ষণ'। আঞাহ করিয়া তাঁরে বসি খাওয়াইল : আপেনি আগ্রহ কবি প্রিবেশন কৈল। আতাহ করিয়া পুনঃ পুনঃ থাওয়াইল: আচমন কৈলে নিকা কবিতে লাগিল। **'ভনি চৈত্**ভাগণ করে বছভ ভক্ষণ : সত্য সেই বাক্য সাক্ষাৎ দেখিল এখন। সল্যাসীকে এভ থাওয়াইয়া কর সর্কনাশ: বৈরাগী হইয়া এত খাও, বৈরাগ্যে নাঁহি ভাস'। এইত সভাব তাঁর, আগ্রহ করিয়া পিছে নিন্দা করে আগে বহুত থাওয়াইয়া। शृत्ति यदव माधदवस भूती कदत कार्सान : রামচন্দ্র পুরী ভবে আইলা ভার স্থান।

রামচল্র পুরী—মাধবেল পুরীর জবৈক শিষা। ১চততের ওক ঈশ্বর প্রীও মাধবেলের শিষা; স্তরাং রামচলপুরী চৈততের ওক্ব লাতা পুলনীয়।

পুরীগোঁদাঞি করে কুঞ্চনামদংকীর্ভন; 'মথুরা নাপাইফু' বলি করেন ক্রন্দন। রামচন্দ্রপারী ভবে উপদেশে তাঁরে: শিষ্য হঞা শুরুরে কতে ভয় নাছি করে। 'তুমি পূর্ণব্রহ্মানন্দ করহ মরণ: ব্রহ্মবিৎ হঞা কেন করহ রোদন' গু শুনি মাধবেক্রমনে ক্রোধ উপজিল: 'দুর দুর পাপী' বলি ভৎসিনা করিল। 'রুফানাপাই ফুমুই, নাপাই সুমথুরা; আপন তঃথে মরে"।, এই দিতে আইল,জালা। মোরে মুখ না দেখাবি তুঞি যা যথি তথি; জোরে দেখি মৈলে মোব হবে অসকাজি। কৃষ্ণ না পাইতু মুই, মরোঁ আপন ছঃখে: মোরে ব্রহ্ম উপদেশে এই ছার মুর্থে। **এই যে बीमाधरवस्य উপেका क**रिन : সেই অপরাধে ইহার বাদনা জন্মিল। ৩০% ব্ৰহ্মজ্ঞানে নাহি ক্ষেত্ৰ সময় : সর্বলোকে নিন্দা করে নিন্দাভে নির্বান্ধ। ঈশ্বরপুরী করেন শ্রীপাদ দেবন; স্বহস্তে করেন মল মৃত্রাদি মার্জন। নিরস্তর কৃষ্ণনাম করান স্মরণ: ক্লফলীলাগ্লোক শুনান অনুক্ৰণ। তুষ্ট হঞা পুরী তাঁরে কৈল আলিমন; বর দিলেঁন 'ক্ষেও তোমার হউক প্রেমধন'। সেই হৈতে ঈশ্বরপুরী প্রেমের সাগর; রামচলাপরী হৈল সর্কানিকাকর। মহদমুগ্রহ নিগ্রহের সাক্ষী ছই জন: **এই হুই घाরा শিক্ষাইল জগজন।** कशनग्र भाषदिक कति तथामनान ; এই শ্লোক পডি ভিঁহো কৈল অন্তর্ধান।

তথাহি পদ্যাবল্যাং চতুঃশততমাকপ্তমাধবেক্সপুনী-বাক্যং।

> 'গ্যায় দীনদয়ার্দ্ধ নাথ হে মথুরানাথ কদাবলোক্যদে হৃদয়ং ছদলোককাতরং দয়িত ভ্রাম্যতি কিং করোম্যহং'॥ ১০৯ ॥

চীকা ও ব্যাথ্যা মধ্যঃ ২৯ শ্লোঃ ৮৬ পৃঃ দেখ। ১০৯।

এই শ্লোকে রুঞ্চপ্রেম কৈল উপদেশ; ক্লফের বিরহে ভজের ভাববিশেষ। পৃথিবীতে রোপণ করি গেলা প্রেমাস্কর: সেই প্রেমাকুরের বুক্ত চৈতভাঠাকুর। প্রস্তাবে কহিল পুরীগোঁসাঞির নির্বাণ: যেই ইহা ভানে সেই বড ভাগাবান। রামচত্তপুরী ঐছে রহিলা নীলাচলে: বিরক্ত সভাব কভু রহে কোন স্থলে। অনিমন্ত্রণ ভিক্ষা করে নাছিক নিগর: অতোর ভিকার ডিভির লয়েন নিশ্চয়। প্রভুর নিমন্ত্রণে লাগে কৌডি চারিপণ: কভুকাৰীখন গোবিদ খান তিন জন। প্রভাহ প্রভুর ভিকা ইতি উত্তি হয়; কেহ যদি মূল্য আনে চারিপণ নির্বা প্রভুর স্থিতি রীতি ভিক্ষা শরন প্ররাণ : রামচন্দ্রপুরী করে সর্বাত্মদ্ধান। প্রভুর যতেক গুণ স্পর্শিতে নারিল: ছিজ চাহি বুলে কাহো ছিজ না পাইল। 'স্ব্যাসী হইরা করে মিষ্টার ভক্ষণ; धेर ८ डार्ग किए इस रेक्सिय बार्ग ?

এই নিন্দা করি কছে স্বলোক ছানে;
প্রাভূকে দেখিতে অবস্তু আইলে প্রতিদিনে।
প্রাভূ গুরুবুদ্দা করে সম্ক্রম সন্মান;
ভিঁহো ছিন্তু চাহি বুলে, এই তার কাম।
বত নিন্দা করে প্রাভূ তাহা সব জানে;
তথাপি আদর করে বড়ই সন্ত্রম।
এক দিন প্রাতঃকালে আইলা প্রভূর দর;
পিশীলিকা দেখি কিছু কহেন উত্তর।

তথাহি রামচক্রপুরীবাক্যং।

'রাত্রাবত্ত ঐক্ষবমাদীৎ তেন পিপীলিকাঃ দঞ্চরন্তি। অহে। বিরক্তানাং দম্যাদিনামিয়মিন্দ্রিয়লালদেতি ক্রবমুখায় গতঃ'॥ ১১০॥

'আবা' গৃহে 'রাতৌ' 'অকবং' ইক্সম্ভীরং মিটারং 'ভাদীৎ' 'তেন' হেতুনা 'পিদীলিকাঃ' 'সঞ্চরম্ভি' ইতস্তভঃ ভ্রমন্তি; 'বিরক্তানাং' বৈরাগ্যং কুর্কভাং 'সন্ন্যাসিনাং' 'অহো' বিশ্বরে 'ইরং' 'ইক্রিয়লালদা' 'ইভি' 'ক্রবন্' সন্স রামচক্রপুরী 'উথার' 'গডঃ'। ১১০।

এই গৃহে গত রজনীতে মিফীন্ন ছিল; সেইজন্ম এত পিপীলিকা বেড়াইতেছে। অহো! বিরক্তসন্ম্যানীদিগের এত ইন্দ্রিয় লালসা! এই বলিমা রামচন্দ্র পুরা উঠিয়া চলিয়া গেলেন ॥ ১১০ ॥

> প্রজ্ পূর্ব্ধ পূর্ব্ধ নিন্দা করিয়াছেন প্রবণ; এবে শাক্ষাৎ তনিলেন করিত নিন্দন। সহক্ষেই শিশীলিকা সর্ব্বত বেড়ায়; ভাঁহা ভর্ক উঠাইয়া দোষ লাগায়।

শুনিতেই প্রভুর সংকাচ ভর মন; लावित्म वानाका किছ करहन वहनः -'আজি হৈতে ভিকামোর এইড নিরম: পি গুভোগের এক চোঠি' পাঁচ গণ্ডারীবাঞ্চন। ইছা বই অধিক আঁর কিছ না আনিবা: অধিক আনিলে আমা এথা না দেখিব। । मकल देवश्रद द्याविन कहिन धरे वाछ ; ভুনি স্বার মাথায় যেন হৈল ব্জুপাত। রামচক্রপরীকে দবার দেয় ভিরস্কার: 'এই পাপী আসি প্রাণ লইল সবার'। সেট দিন এক বিপ্র কৈল নিম্লেণঃ এক চৌঠি ভাত পাঁচ গঞাৰ বাস্ত্ৰন এইমাত্র গোবিন কৈল অঙ্গীকার: মাথায় হা মাৰে বিশ্ৰে কৰে হাহাকাৰ। সেই ভাত ব্যঞ্জন প্রভু অর্দ্ধেক থাইল; যে কিছু রহিল তাহা গোবিন্দ পাইল। অর্জাশন করে প্রভু গোবিন্দ অর্জাশন : সব ভক্তগণ তবে ছাড়িল ভোজন। গোবিল কাশীখনে প্রভু কৈল আজ্ঞাপন: 'হঁহে অভাত মাগি কর উদর ভরণ'। এইরপে মহাতঃথ দিন কত গেল: শুনি রামচক্রপুরী প্রভূপাশ আইল। প্রণাম করি কৈল প্রস্তু চরণ বন্দন: প্রভুরে কহয়ে কিছু হাসিয়া বচনঃ 🛶 'স্রাসীর ধর্ম নহে ই জিল্ল তপ্ণ: থৈছে তৈছে করে মাত্র উদর ভরগ। ভোমাকে ক্ষীণ দেখি শুনি কর অর্দ্ধাশন: এই एक रेबरागा नट्ट महाामीत धर्मा। যথাযোগ্য উদর ভরে না করে বিষয় ভোগ: সন্যাশীর ভবে সিদ্ধ হয় জ্ঞানযোগ'।

তথাহি শ্রীভগবন্দীতারাং ষষ্ঠাধ্যারে ষোড়শলোকে অৰ্জ্বনং প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যং

'নাত্য শ্নতোহপি ষোগোহস্তি ন চৈকান্তমনশ্নতঃ। নচাতি স্থশীলস্থ জাগ্রতো নৈব চাৰ্চ্জন'॥ ১১১॥

বোগাভাগেন ঠিল্যাহারাদি পিশ্বমমাহ হে 'অর্জুন' 'অত্যন্নভঃ' অত্যস্ত মধিকং ভূঞানদা জনদা 'যোগঃ' সমাধিঃ 'ন' ভবভীতিশেষঃ ; 'একাস্তং' অত্যন্তঃ' অভ্যানদা 'অপি' 'ন'; তথা 'অভিস্থানীলভা 'ন' 'জাগ্রত চে' নি এব যোগো ভবভীত্যুৰ্থঃ। ১১১।

হে অর্জুন! অতিভোজনশীল, একান্ত অনশনশীল, আতি নিজোলু এবং নিতান্ত জাগরণশীল ব্যক্তির যোগ হইতে। পারে না। ১১১।

তথা তত্ত্বৈ ষষ্ঠাধ্যায়ে সপ্তদশশ্লোকে অৰ্জ্জ্নং প্ৰতি শ্ৰীকৃষ্ণবাক্যং

'যুক্তাহারবিহারস্থ যুক্তচেফস্থ কর্মান্ত। যুক্তস্বপ্লাববোধস্থ যোগো ভবতি তুঃখহা'॥ ১১২॥

"পুকাখারবিহারক" বুকো নিয়ত আহারো বিহারশ গতি বঁত তত্ত; 'কর্ম্ম' কার্যোর্ 'মুক্তচেষ্টতা' মুকা নিয়তা চেষ্টা যক্ত তত্ত; 'মুক্তম্পাব-বোধতা' মুক্তেন নিয়তে স্বপাববোধে নি নালাগরে যত তত্ত জনত 'হৃঃথহা' হৃঃধানুরস্ক্তিকা 'বেগাগঃ' 'ভবতি' সিধাতি। ১১২।

বাঁহার আহার, বিহার, (গতি) কর্মচেকী, নিদ্রা ও জাগরণ নিয়মিত ; ভাঁহারই ছঃথনিবর্ত্তক যোগ সাধন হইতে পারে। ১১২।

> প্রভ্ কছে 'জজ বালক মুঞি শিষা ভোমার; মোরে শিক্ষা দেও এই ভাগ্য আমার'। এড ওনি রামচক্রপুরী উঠি গেলা। ভক্তবাণ অর্জাশন করে গোঁদাঞি ওনিলা।

আর দিনে ভকগণ, প্রমানক্ষ্মী,
প্রভু পাশে নিবেদিল দৈন্যবিনয় করিঃ—
'রামচন্দ্রপুরী হয় নিক্ষুক স্বভাব;
ভার বোলে অয় ছাড়ি কিবা হবে লাড'?
পুরীর স্বভাব যথেই আহার করিয়া;
যে থার তারে থাওয়ায় যভন করিয়া।
খাওয়াইয়া পুনঃ ভায় করেন নিক্ষন;
'এত অয় থাও ? ডোমার কড আছে ধন ?
সর্যাসীকে এড থাওয়াও, কর ধর্মনাশ;
অতএব আনিম্ ভোমার কিছু নাহি আস '।
কে কৈছে ব্যবহারে, কে বা কৈছে থায়;
এই অমুসন্ধান তিঁহো করেন সদায়।
শাত্রে বেই ছুই কর্ম করিয়াছে বর্জন;
সেই কর্ম নিরক্ষর ইহার করণ।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে একাদশক্ষমে অকীবিংশাধ্যায়ে প্রথমশ্লোকে উদ্ধবং প্রতি শ্রীকৃষ্ণবাক্যং

পরস্বভাবকর্মানি ন প্রশংদের গছ রেং।

বিখনেকাত্মকং পশুন্ প্রকৃত্যা পুরুষেণ চ'॥ ১১৩॥
'পরস্বভাবকর্মাণি ' পরেষাং স্বভাবান্ শাস্তবোরাদীন্ তথা কর্মাণি 'ন'
'প্রশংসেং' 'ন' 'গর্হমেং' নিক্সেং; 'প্রকৃত্যা' 'পুরুষেণচ' ঈ্খরেণ সং
'বিখং' 'একাত্মকং' 'পশুন্' সন্ পৃথিত স্তিষ্টেদিভিশেষঃ। ১১০।

অপরের স্বভাব ও কর্মকে প্রশংসা বা নিন্দা করিবেনা; এই বিশ্বকে প্রকৃতিপুরুষের একাত্মক্র দর্শন করাই সাধু দিগের কর্ত্তব্য ॥ ১১৩॥

> 'ডার মধ্যে প্রবিধি প্রশংলা ছাড়িয়া; পরবিধি নিন্দা করে বলিষ্ঠ আনিরা। তথাহি পাণিনিসূত্রং। 'পূর্ববিধারায়া মধ্যে প্রবিধি ব্লবান্'॥ ১১৪॥

'যার ওণ শত আছে না করে গ্রহণ : धन मर्था करल करत स्माय कार्यालन । ইহার স্বভাব ইহা কহিছে না যুৱায়; তথাপি কহিলে কিছু মর্গ্ম ছঃখ পায়। ইহার বচনে কেন অল ত্যাপ কর প পূর্ববং নিমন্ত্রণ মান স্বার বোল ধর'। প্রভু কহেন 'সবে কেন পুরীকে কর রোষ ? সহজ ধর্ম কহেন তিঁহো, তাঁর কিবা দোষ ? যতি হঞা জিহবালপাট অত্যন্ত অন্তায়: যভিধর্ম প্রোণ রাথিতে আহার মাত্র থায়'। ভবে দবে মিলি প্রভুরে বছ যত্ন কৈল; সবার আগ্রহে প্রভু অর্কেক রাখিল। ছই পণ কৌড়ি লাগে প্রভুর নিমন্ত্রণে; কভু দুই জন ভোক্তা, কভু তিন জনে। অভোজ্যার বিপ্রায়দি করেন নিমন্ত্রণ: প্রসাদ মূল্য লইতে লাগে কৌড়ি ছুই প্র। ভোজ্যার বিপ্র যদি নিমন্ত্রণ করে; किছু श्रमार चारन, किছू भाक करत घरत। পণ্ডিত গোঁদাঞি, ভগবাৰ আচাৰ্য্য, দাৰ্কভৌম: निमञ्जरणद मिरन यमि करत निमञ्जल: তাঁ স্বার ইচ্ছার প্রভু তাঁহা করেন ভোগন ; তাঁহা প্রভুর সাজ্জা নাই থৈছে তাঁর মন। ভক্তগণে স্থুখ দিতে প্রভুর অবভার; चै: हा থৈছে, যোগ্য তাহা করেন ব্যবহার। কভ লৌকিক রীভি যেন ইতর জন; কভ স্বতন্ত্র করেন ঐশর্য্য প্রকটন। কভ রাশচন্ত্রপুরীর হন ভূত্যপ্রায়; कचू फुँ। दि नाहि यान मिर्थ एव थाइ। ঈশারচরিত প্রভুর বুদ্ধি অগোচর; ब्रुट्ट (यह क्टूबन अञ् दमहे मरमाहत।

এইমত রাম্চত্রপুরী নীলাচলে দিন কভ রহি গেলা তীর্থ করিবারে । তিঁহো গেলে প্রভুগণ হৈল হরবিতে; শিরের পাথর যেন পড়িল ভূমিতে। স্বচ্ছল নিমন্ত্র, প্রভুর কীর্ত্তন নর্ভন ; স্বচ্চদে করেন সবে প্রসাদ ভোজন। গুরু উপেকা কৈলে ঐচে ফল হয়: ক্রমে ঈশ্বর পর্যাক্ত অপরাধে ঠেকর। যদাপি গুরু বুদ্ধো প্রভু তাঁর দোষ না লইল; তাঁর ফল ীছারা লোকে শিক্ষা করাইল। শ্রীচৈত্তভাচরিত্র যেন অমৃতের পূর; ভানিতে প্রবণে মনে লাগমে মধর। চৈত্তচরিত্র লিখি শুন একমনে: অনারাসে পাইকে প্রেম জীরফচরণে। জীরপ রখুনাথ পদে যার আশ: চৈতস্চরিতামৃত কহে কুঞ্দাস।

ইতি প্রীচৈতত্মচরিতামূতে অন্তঃখণ্ডে ভিক্ষাসংস্কাচ-নামান্টম পরিচেছদঃ।৮।

নব্ম পরিচেছদ। গ্রন্থকারস্থা

অগণ্যধন্য চৈতন্মগণানাং প্রেমবন্মরা। নিন্মেহধন্মজনস্বান্তমরুং খ্যদনুপতাং॥ ১১৫॥

'অগণ্যধন্ত চৈত্ত গণানাং' অগণ্যানাং অসংখ্যানাং ধন্তানাং প্রম-ভাগবতানাং চৈত্ত স্যা গণানাং অন্তর্গাং 'প্রেমবক্তমা' করণ্যা 'অধন্ত-জন বাত্তমকং' 'অধ্যত জনানাং মৃচ জনানাং স্বান্ত মেব জন্ত করণ্যের মক তং 'শ্বং' নিরন্ত বং 'অন্প্তাং' জলপ্লাবিত স্থানতাং 'নিত্তে'। ১১৫।

জ্ঞীচৈতত্ত্বের পরমভাগবত অসংখ্য অসুচরবর্গের প্রেম-

বভার মৃঢ়দিণের চিত্তমক নিরন্তর প্রেমজনে আপ্লাবিত হইয়া গেল॥ ১১৫॥

> क्य क्य औद्रक्ष्टेन्ड्ल स्वाम्य ! জয় জয় নিত্যাননদ করুণহাদয়। क्ष बारेन का नार्या क्या । क्या प्रशासना । • জায় গৌরভক্ত গণাস্ব রসময়। এইমতে মহাপ্রভ ভক্তগণ সঙ্গে : নীলাচলে বাস কৰে কফাঞোম র**জে** । অস্তর বাহিরে কুঞ্বিরহ ভরক: নানাভাবে ব্যাকুল মন আর অঙ্গ। দিনে নৃত্য কীর্ত্তন জগলাথদরশন : রাত্রে রায় স্বরূপ স্থে রস আস্থাদন। ত্রিজগতের লোক আসি করে দরশন : (यह (मध्य (महे भाग कृष्ण अमधन। মনুষোর বেশে দেব গদ্ধর কিরব: সপ্রপাভালে যভ দৈত্য বিষধর: সপ্রদীপে-মরথতে বৈদে যত জন: নানা বেশে আদি করে প্রভুর দর্শন। श्रक्ताम विन व्याम एकांनि मुनिशन; প্রভূ ভাসি দেখে, প্রেমে হয় ভচেতন। বাহিরে ফুকারে লোক দর্শন না পাঞা; 'কৃষ্ণ কহ' বলে প্রভু বাহিরে আসিয়া। প্রভুর দর্শনে স্ব লোক প্রেমে ভাসে; এইমভ যায় প্রভুর রাত্রি দিবদে। এক দিন লোক আদি প্রভুরে নিবেদিল; 'গোপীনাথকে বড জানা চাঙ্গে চড়াইল। তলে থড়া পাতি তার উপরে ডারিবে: প্রাভুরকাক রেন যবে তবে নিস্তারিবে।

'मद्राम (डामाद (मदक खरानश द्रोह ; তাঁর পুত্র ভোমার দেবক রাখিতে যুরায়'। প্রভ কৰে 'রাজা কেন কররে ভাতৃন ?' एटव त्महे लोक करह मव विवत्रण । পোপীনাথ প্রনায়ক রাম রামের ভাই: সর্বাল হয় সেই রাজবিষয়ী ভাই। गानकार्रा। मध्यभारते जांत व्यक्तित : সাধি পাতি আনি সেবা দিল রাজ্বার । कुट नक कारन खात हाई वाकी देशन : ছই লক্ষ কাহন কৌডি রাজা বে মাগিল। তিঁহ কছে " সুল দ্ৰব্য নাহি যে গৰিয়া দিব : ক্রেমে ক্রেমে বেচি কিনি স্পর্য ভবিব। 'ঘোঁড়া দশ বারো হয়, লছ মূল্য করি : এত বলি খেীড়া আনি রাজহারে ধরি। এক রাজপুত্র ঘোড়ার মূল্য ভাল জানে: ভাবে পাঠাইল বাজা পাত মিতে সভে। সেই রাজপুত্র মূল্য করে ঘাটাইরা; গোপীনাথের ক্রোধ হৈল মূল্য ওনিয়া। সেই রাদপুত্রের স্বভাব গ্রীবা ফিরার: উদ্ধ্যথে বার বার ইতি উতি চার। তারে নিন্দা করি কছে দগর্কা বচনে : "রাজা কুপা করে তাতে ভয় নাছি মানে। আমার বোড়ার শ্রীবা উচ্চ, উর্দ্ধে নাহি চার: তাতে ঘোড়ার ঘাটি মূল্য করিতে না জুরার?'। ভনি রাজপুত্র মনে ক্রোধ উপজিল; রাজার ঠাঁঞি যাই বছ লাগানি করিল। "'को जि नाहि निद्य अहै विजात ज्ञा कति : व्याखा कर हाटक हडाईशा नहें दर्शेडिंग। वाका वरण "(यह जान कब त्रहे बाहे ; বে উপায়ে কৌড়ি পাই কর নে উপার"।

'রাজপুত্র আসি তাঁরে চাকে চডাইল: খড়েল ফেলাইতে ভলে থজা পাছিল'। ভনি প্রভুক্তে কিছুক্রি প্রণয়রোব: बाक्टकोड़ि निवात नट्ट बाबात किया त्माय १ রাজবিলাত সাধি খার নাতি রাজভর: मां जी ना देशांक निया करत नाना वाय । যে চতর সে করুক রাজবিষয়: রাজ জাব্য শোধি পার ভাহা করে ব্যয়'। হেনকালে আর লোক আইলা ধাইয়া: वाणीमाथानि नवः (भ लका (शल वाधिया। প্রেক্ত কতে রোজা আপেন লেখার দ্রব্য দইব: আমি বিরক্ত সন্যাসী তাঁহা কি করিব' গ তবে স্বরূপাদি গোঁদাঞির ভক্তগণ: প্রভুর চরণে সবে কৈল নিবেদন। 'রামানন্দ রাবের গোটি সব তোমার দাস: তোমার উচিত নতে করিতে উদাস'। ভূমি মহাপ্রভু করে সজোধ বচেন ; 'মোরে আবজা দেও সবে যাই রাজভানে ? ভোষা স্বার এই মত রাজ্ঠাই যাঞা: কৌডি মাগি লই আমি আঁচল পাভিয়া। পাঁচগণ্ডার পাত হয় সন্ন্যাসী প্রাক্ষণ: याशितन वा (कन मित्व छहे नक काहन' ? হেনকালে আর লোক আইল ধাইয়া: 'ৰজ্যোপরে পোপীনাথে দিছেছে ডারিয়া'। শুনি প্রভুর গণ প্রভুকে করে অমুনয়; প্ৰভু কৰে 'আমি ভিক্ষুক, আমা হৈতে নয়। ভারে রক্ষা করিতে যদি হয় স্বার মনে; সবে মিলি যাও জগরাথের চরণে। ঈশ্বর জগরাথ ভাঁর হাতে দব অর্থ: কর্ড মকর্ড মক্তথা করিতে সমর্থ।

ইহা যদি মহাপ্রভু এতেক কহিলা; • হরিচন্দন পাত যাই রাজারে কহিলা। পোপীনাথ শট্রবায়ক সেবক ভোমার: সেবকের প্রাণদ্ধ নতে ব্যবহার। বিশেষে ভাহার ঠাঁই কৌডি বাকি হয়: প্রাণ লৈলে কিবা লাভ ? নিজ ধন কর। ঘথাৰ্থ মূল্যে ঘোড়া লহ যেৰা বাকি হয় ; জ্ঞান ক্রমে দিবে, বার্থ প্রাণ কেন লয়' ? য়াজা কছে 'এই বাড আমি মাহি জানি : প্রাণ কেন লৈব ? ভার দ্রব্য চাহি আমি। তুমি যাই কর ভাঁহা সর্কা সমাধান : क्षेत्रा देशक कांट्रेट्स कर्मत संभ खाँच लान'। ভবে হরিচনদন আসি জানারে কচিল: চালে হৈতে গোপীনাথে শীগ্র নামাইল। 'দ্রব্য দেহ, রাজা মাগে' উপায় পুছিল: 'যথাৰ্থ মূল্যে ঘোড়া লহ' ভিঁহ ত কহিল। 'ক্রমে ক্রমে দিব আমি যভ কিছু পারি; অবিচারে প্রাণ লহু, কি বলিভে পারিং 🕈 যথাৰ মূল্য করি ঘোড়া মূল্যে লইল; আর জবোর মুদ্দিভি করি ঘরে পাঠাইল। এথা প্রভূ দেই মহুদ্যের প্রশ্ন কৈল: 'বাণীনাথ কি করে, যবে বাঁদ্ধির। আদিল'। 'বাণী নাথ নিউল্লেডে লয় কুঞ্চনাম: रदिक्ष, रदिक्ष, कहा व्यविद्राप्त। সংখ্যা লাগি ছই হাতে অঙ্গুলিতে লেখা; महत्वानि भून रेहरन चरक कार्ड दाश'। ত্নি মহাপ্রভুর হৈল পরম'আমশ; কে ব্ৰিতে পারে গৌরের রূপার ছদ্দ বন্ধ ? হেন কালে কাশীমিশ্র আইলা অভুত্বানে; প্রভু তাঁরে করে কিছু সোবেগ বচনে:-

'ইহা রহিতে নারি আমি যাব আল্লনাথ: নানা উপদ্ৰবে ইহা না পাই সোয়াও। खरानत्मत (शांक्रिकद्व दोक्राद्धविषय : নানা প্রকারে করে রাজদেবা বাষ। রাজার কি দোষ ? রাজা নিজ দ্রবা চার : দিতে নারে ক্রব্য ভারা আমারে জানায়। রাজা গোপীনাথে যদি চাকে চভাইল: চারি বার লোক আদি মোরে জানাইল। ভিক্ষক সন্মাসী আমি নির্জ্জনবাসী: আমায় হঃথ দেন নিজ হঃথ কহি আসি। আজি তাঁরে জগলাথ করিল রক্ষণ: কালি কে রাখিবে ? যদি না দিবে রাজধন। বিষয়ীর বার্তা শুনি ফুরু হয় মন: তাহে ইহা রহি:(মার নাহি প্রয়োজন'। কাশীমিশ্র কছে প্রভুর ধরিয়া চরণে ; 'তুমি কেন এই বাভে কোভ কর মনে ? সন্ন্যাসী বিরক্ত ভোমার কার সনে সম্বন্ধ ? বাবহার লাগি যে তোমাভজে সে আজান অক । ভোমার ভজন ফল ভোমাতে প্রেমধন: বিষয় লাগি যে ভোমা ভজে সেই মচ জন। তোমা লাগি রামানক রাজ্য ভ্যাগ কৈল: ভোমালাগি স্নাভন বিষয় ছাডিল। তোমা লাগি রঘুনাথ সব ছাড়ি আইল; তেথায় ভাচার পিতা বিষয় পাঠাইল। ভোমার চরণ কপা হঞাছে ভাহারে: ছতে মাগি খায় বিষয় স্পূৰ্ণ নাহি করে। রামানক্রে ভাই গোপীনাথ মহাশয়: ভোমা হই ভে বিষয় বাঞ্চা তাঁর ইচ্ছা নয়। ভাঁর হুঃথ দেখি তাঁর সেবকাদিগণ; ্তোমাকে জানাইল যাতে জনগুশরণ।

'দেই শুদ্ধভক্ত ভোমা ভবে তোমা লাগি; আপনার সুখ জুংখে হয় ভোগভোগী। ভোমা অনুকম্পা চাহে ভবে অনুক্ষণ; অচিরাতে পায় দেই তোমার চরণ।

তথাছি জীমন্তাগবতে দশমক্ষমে চতুর্দশাধ্যায়ে অইম-শ্লোকে জীকৃষ্ণং প্রতি অক্ষবাক্যং

> 'ততেহসুকম্পাং হৃদমীক্ষ্যমাণো ভূঞ্জান এবাত্মকৃতং বিপাকং হৃদ্যাধপুভি বিদধ্মমস্তে জীবেত যো মুক্তিপদে স দায়ভাক্'॥ ১১৬॥

টীকা ও ব্যাখ্যা মধ্যঃ ৫৪ শ্লোঃ ১৩০ পৃঃ দেখ। ১১৬।

'তুমি বিস রহ কেন যাবে জালালনার্থ ?
কেহ তোমা না শুনাবে বিষয়ীর বাত।
যদি বা তোমার তারে রাখিতে হয় মন;
আজি যে রাখিলে দেই করিবে রক্ষণ'।
এত বলি কাশীমিশ্র গেলা স্বমন্দিরে;
মধ্যাক্লে প্রতাপকন্দ্র আইলা তাঁর ঘরে।
প্রতাপকন্দ্রে এক আছরে নিয়মে;
যত দিন রহে তিঁহ প্রীপুক্ষোত্তমে;
নিত্য জাসি করেন মিশ্রের পাদসম্বাহন;
জগলাথের করেন সেবাকৌশল প্রবণ।(১)
রাজা মিশ্রের চরণ যবে চাপিতে লাগিলা;
ভবে মিশ্র তাঁবে কিছু ইন্দিতে কহিলাঃ—
'দেব! শুন আর এক জপরূপ বাত;
মহাপ্রভু ক্ষেত্র ছাড়ি যান জালালনাথ'।

ভনি রাজা হ:থী হৈলা, পুছেন কারণ ; তবে মিশ্র কহে তাঁরে সব বিবরণঃ— 'গোপীনাথ পট্টনায়কে যবে চাঙ্গে চড়াইলা; ভাঁর সব সেবক আসি প্রভুরে কহিলা। ভূনিয়া কোভিত হৈল মহাপ্রভুর মন ; ক্রোধে গোপীনাথে কৈল বছত ভংসন। অজিতে জিয়হঞাকরে রাজবিষয়: নানা অসৎ পথে করে রাজদ্রব্য ব্যয়। বাসাস অধিক এই হয় রাজধন: তাহা হরি ভোগ করে মহপোপীরন। রাজার বর্তন থার আর চুরি করে; वाकामका वस (महे भारताव विकारत । নিজ কৌছি মাগে রাজা নাহি করে দণ্ড: রাজা মহাধার্মিক, এই পাপী ভও। রাজকৌড়ি না দেয়, আমাকে ফুকুরে; এই মহাতঃথ, ইহা কে সহিতে পারে ? জালালনাথে যাই তাঁহা নিশ্চিন্তে রহিব: বিষয়ীর ভালমন্দ বার্ত্তা না অনিব'। এত তুনি কহে রাজাপাঞামনে বাথা: 'স্ব দ্রব্য ছাড়িযদি প্রভুর্হে এথা। এক ক্ষণ প্রভুর যদি পাইয়ে দর্শন; কোটি চিন্তামণি লাভ নহে তার সম। কোন ছার পদার্থ এই ছই লক্ষ কাহন ? প্রাণ রাজ্য করেঁ। প্রভূপদে নির্মান্থন'। মিশ্র করে 'কৌড়ি ছাড়িবে নহে প্রভুর মন; ভারা ছঃথ পার এই না যার সহন'। ताका करह 'ठादत कामि इःथ नाहि नित्य ; চাঙ্গে চড়াখড়েলাডারা আমি নাজানিয়ে। পুরুষোত্তম জানারে তিঁহ কৈল পরিহাস ; দেই জানা তাঁরে দেখাইল মিথ্যা আদ।

'তুমি ষাই প্রস্তুরে রাথহ যদ্ধ করি; এই মুঞি ভাঁহারে ছাড়িয় সব কৌড়ি'। মিশ্র কছে 'কৌড়ি ছাড়িতে নহে প্রভুর মনে; কৌ ছি ছাড়িলে প্ৰস্কুকদাচিৎ সূথ মানে'। রাজা কহে 'তাঁর লাগি কৌড়ি ছাড়ি, ইহা না কহিবা; সহজে মোর প্রির তারা ইহা জানাইবা। ভবানক রায় আমার পূজা গর্কিভ; ভাঁর পুত্রগণে মোর সহজেই প্রীভ'। এত বলি মিশ্রে রাজানমকরি গেলাঃ গোপীনাথে বড জানা ডাকিয়া আনিলা। বাজা করে 'সব কৌডি তোমারে ছাডিল: দেই মালজেঠ্যা পাঠ পুনঃ তোমায় দিল। আর বার ঐচে না থাইও রাজধন: আজি হৈতে দিল ভোমায় বিগুণ বর্তন'। এত বলি নেতথাট তাঁরে পরাইল: 'প্রভ আজ্ঞা লঞা যাও, বিদার ভোমা দিল'। প্রমার্থে প্রভার রূপা সেও বহুদূরে: অনন্ত ভাহার ফল কে বলিভে পারে ৮ রাজা বিষয় ফল এই কুপার আভালে: ভাহার বর্ণনা কাহার মনে না আইসে। কাহা চাকে চড়াইয়া লয় ধনপ্রাণ ? কাঁহা সব ছাডি সেই রাজ্য দিল দান ? কাঁহা সৰ্বস্ব বেচি লয় দেয়া না যায় কোডি ৪ কাঁহা দিওণ বর্তন পরায় নেতধডি গ প্রভুর ইচ্ছা নাহি ভারে কৌড়ি ছাড়াবারে: দিওণ বর্ত্তন করি পুনঃ বিষয় দিবারে। ज्यानि जांत रायक जानि देवन निर्वासन : তাতে কুৰু হৈল যবে মহাপ্ৰভুৱ মন। বিষয় সুথ দিতে প্রভুর নাহি মনোবল: নিবেদন প্রভাবে তবু ফলে এভ ফল।

কে কহিছে পারে গোরের আশ্রুয়া সভাব ? ব্ৰহ্মা শিব আদি বাঁর না পায় অস্তভাব। এথা কাশী মিশ্র আসি প্রভুর চরণে त्राकात हित्रक मय देकन बिरवस्टन। প্রভুক্তে কাশীমিশা কি তুমি করিলে ৫ রাজপ্রতিগ্রহ তুমি মোরে করাইলে গ মিশ্র কহে 'ভন প্রভুরাজার বচন: অকপটে রাজা এই কৈল নিবেদন:--"প্রভু যেন নাহি জানে আমার লাগিয়া; ছুই লক্ষ কাহন কড়ি দিলেন ছাডিয়া। ভবানন্দের পুত্র দব মোর প্রিয়তম: ইহা স্বাকাৰে আমি দেখোঁ আঅসম। অতএব বাঁহা তাঁহা দেই অধিকার : थाय लिएय लुटि विलाय ना करवा विहात । রাজমহীন্দ্রের রাজা কৈন্দ্র রামরায়: যে থাইল, যে বা দিল, নাহি লেখা দায়। গোপীনাথ এই মত বিষয় করিয়া: ছুই চারি লক্ষ কাহন রছেত খাইয়া। किছू प्रमा किছू ना (प्रमान) कति विहात; কানা সহিত অপ্রীতে ত্রঃধ পাইল এবার। জানা এড কৈল মুঞি ইহা নাহি জানোঁ: ভবানকোর পুত্র দব আবাসম মানোঁ। তাঁর লাগি জবা ছাড়ি ইহা মতি মানে: সহজেই মোর প্রীভি হয় তাঁহা সনে।" ভ্নিয়া রাজার বিনয় প্রভুর আনন্দ; হেনকালে অটেল তথা রায় ভবানক। পঞ্পুত্র সনে আসি পডিল চরণেঃ উঠাইয়া প্রভু তাঁরে কৈল আলিকনে। রামানক রায় আদি সবেই মিলিলা: ভাৰানন্দ বায় ভাবে বলিতে লাগিলা।

'তোমার কিন্ধর এই মোর সব কুল: এ বিপদে রাখি প্রভু পুনঃ নিলে মূল। ভকতবাৎসল্য এবে প্রকট করিলে: পূর্বে যেন পঞ্চপাওবে বিপদে ভারিলে'। নেতথটি মাথে গোপীনাথ চরৰে পড়িলা: রাজার রূপাবভাস্ত সকলই কহিলা। 'বাকী কোডি বাদ, বিশুণ বর্ত্তন করিল; পুনঃ সেই বিষয় দিয়া নেভধটি দিল। কাঁহা চাঙ্গের উপর সেই মরণ প্রমাদ প কাঁহা নেতথটি পুনঃ এ সব প্রসাদ গ চাঞ্চের উপরে তোমার চরণ ধ্যান কৈল : চরণ মারণ প্রেকাবে এট ফল পাটল। লোক চনৎকার মোর এ সব দেখিয়া: প্রশংসে তোমার রূপা মহিমা গাইরা। কিন্ত তোমা স্মরণের নছে এই ফল; ফলাভাৰ এই, যাতে বিষয় চঞ্চল। রাম রায় বাণীনাথে কৈলে নির্কিষয়: সে রূপা আমারে নাই যাতে ঐছে হয়। ভদ্ধ কুপা কর গোঁসাঞি! ঘুচাও বিষয়; নির্কিপ হইলে সোভে বিষয় নারয়'। প্রভু কহে 'নলানী যবে হবে পঞ্জন: কুটুম বাহুল্য ভোমার কে করে ভরণ 🗡 মহাবিষয় কর কিবা বিরক্ত উদাস: জমে জমে তৃমি পঞ্মোর নিজ দা**দ।** কিন্তু মোর করিও এক আজ্ঞার পালন; ব্যয় না করিও কভু রাজার মূল ধন। রাজার মূল ধন দিয়া বে কৈছু লভ্য হয়; সেই ধন করিও নালা ধর্মকর্মে বায়। অস্ব্যর না করিও, যাতে তুই কোক যায়'; এত বলি সৰাবে প্ৰভু দিলেন বিদাৰ।

রাম্মের ঘরে প্রভুর ক্বপাবিবর্ত্ত কহিল; ভক্তবাৎসলা গুণ যাতে বাকে হৈল। नवा चानित्रिया প্রভু विদায় यदा দিল। ; হরিধ্বনি করি সব ভক্ত উঠি গেলা। অভ্র রূপা দেখি স্বার হৈল চমৎকার গ ভাহারা বুঝিতে নারে প্রভুর ব্যবহার। ভারা সব যদি কুপা করিতে সাধিল; 'আমা হৈতে কিছু নহে' প্রভু তবে কৈল। त्शानीनात्थन विन्ताः चात्र चानन निर्द्यन ; এই মাত কৈল, ইহার কে বুনিবে ভেদ ?' कानी शिट्य ना नाधिन, त्राकाय ना नाधिन; উদ্যোগ বিনা এতদুর ফল ফলিল। হৈতক্ত চরিত্র এই পরম গন্তীর; সেই ব্রে ভার পদে মন যার হির। যেই ভানে প্রভুর ভক্তবাৎসল্য প্রকাশ; শ্রেমভক্তিপায় ভার বিপদ যায় কাশ। ঞীরূপ রযুনাথ পদে যার আশ; হৈতভাত বিভামৃত কহে রঞ্চাস।

ইক্তি ঐতিচতশ্যচরিতায়তে অন্ত্যথণ্ডে গোণীনাথপট্ট-নায়কোদ্ধার নাম নবম পরিচ্ছেদঃ ॥ ৯॥

দশম পরিচ্ছেদ। গ্রন্থকারস্থা।

বন্দে শ্রীকৃষ্ণচৈতত্তং ভক্তানুগ্রহকারকং। যেন কেনাপি সস্তুষ্টং ভক্তদত্তেন শ্রদ্ধয়া॥ ১১৭॥

ভিজ্ঞানুপ্রহকারকং' 'প্রীকৃষ্ণতৈতভ্রুৎ' 'বন্দে'; কীদৃশং 'প্রদ্ধরা' করণরা ভিজ্ঞদত্তেন' 'যেন' 'কেনাপি' বস্তুনা বংসামান্তবস্তুনা 'সম্ভইং'। ১১৭।

ভক্তাসুএহকারক জীকৃষ্ণচৈতন্য প্রভুর বন্দনা করি;

শ্রেদাপূর্বক ভক্তগণের দত্ত **অতি** যৎগামান্য বস্তুতেও তাঁহার মন্তোষ॥ ১১৭॥

> জয় জয় গৌরচন্দ্র জয় নিভানেক ! জয়াধৈতচক্র। জয় গৌরভক্তবুন্দ ! বর্ষাস্করে দর ভক্ত প্রভরে দেখিতে পর্ম আনকে সবে নীলাচলে যাইভে। অবৈত আচাৰ্য্য গোঁদাঞি সৰ অগ্ৰগণ্য: काहार्यात्रक, काहार्यानिधि, बीवात्रापि धक्र। যদ্যপি প্রভুর আজ্ঞা গৌড়ে রহিতে; ভুগাপি নিভাগনক প্রেমে চলিল। দেখিতে। অনুরাগের লক্ষণ এই বিধি নাহি মানে: ভার আজা ভালি তাঁর সঙ্গের কারণে। রাদে থৈছে ঘরে যাইতে রুফ গোপীরে আজ্ঞা দিলা; তাঁর আজ্ঞা'ভাঙ্গি তাঁর দঙ্গে দে রহিলা। আজার পালনে ক্ষেত্র যত পরিভোষ: প্রেমে আজ্ঞা ভাঙ্গিলে হর কোটি স্থধ পোষ। বাস্থদেব দত, মুরারি গুপ্ত, গলাদাস; শ্রীমানসেন, শ্রীমান পশ্তিত, অকিঞ্চন রুঞ্দাস। মুরারি পণ্ডিত, গরুড় পণ্ডিত, বৃদ্ধিমন্ত থান: সঞ্জয়, পুরুষোত্তম, পণ্ডিত ভগবান। শুক্লাম্বর, নৃসিংহানন্দ আরে যত জন; স্বাই চলিলা: নাম না যায় প্ৰন। क्लीनशामी, খঙবাসী, मिलिला जानिया: শিবানক সেন চলিলা স্বারে লইয়া। রাঘব পণ্ডিত চলে ঝালি সাজাইয়া: দময়ন্তী যভ শ্রব্য দিয়াছে করিয়া। নানা অপূর্ব ভক্ষাদ্রব্য প্রভুর যোগ্য ভোগ; বৎসরেক প্রভু যাহা করে উপযোগ।

আম কাশনিং, আলা কাশনিং, ইবাল কাশনিং নাম;
নেসু আলা আমকলি বিবিধ সন্ধান ।
আমসিং, আমখণ্ড, তৈলাম, আমভা;
যক্ত করি গুণা করি প্রাণ স্কুতা।
অকুতা বলিয়া অবজ্ঞা না করিছ চিতে;
অকুতা বলিয়া অবজ্ঞা না করিছ চিতে;
অকুতা বলিয়া অবজ্ঞা না করিছ চিতে;
অকায় যে অখ প্রভুর নহে পকাম্তে।
ভাবগ্রাহী মহাপ্রভু নেহ মাত্র লন্ধ;
অকাপাভা কাশনিতে মহাস্থ হর।
মহাবৃদ্ধি দময়ভী করে প্রভুর পায়;
ভক্ক ভোজনে উদ্বে প্রভুর আম হঞা যায়;
অক ভোজনে উদ্বে প্রভুর আম হঞা যায়;
অক ভোজনে উদ্বে প্রভুর আম হঞা যায়;
স্কো থাইলে আম হইবেক নাশ;

তথাহি ভারবো অফমসর্গে বিংশতিতমশ্লোকঃ।

'প্রিয়েণ সংগ্রথ্য বিপক্ষদন্নিধাবুপাছিতাং বক্ষদি পীবরস্তনী।
ক্রজং ন কাচিদ্বিজহো জলাবিনাং
বসন্তি হি প্রেন্ধি গুণা ন বস্তনি'॥ ১১৮॥

'কাচিং' 'পীবরস্তনী' লাগিকা 'প্রিয়েণ' স্বীয়কান্তেন 'জলাবিনাং' ইতস্তত: সংজড়িতাং 'প্রজং' 'সংগ্রথ্য' গুদ্দনং কৃত্য 'বিপক্ষদরিধৌ' 'বক্ষদি' 'উপাহিতাং' নিক্ষিপ্তাং সতীং 'ন' 'বিজহৌ' ন ত্যক্তবতী; 'হি' বতঃ 'গুণাঃ' ক্ষব্যগুণাঃ 'প্রেম্নি' 'বসন্তি' 'ন' 'বস্তনি' বসন্তীভার্থঃ। ১১৮।

বিপক্ষমীপে পীবরস্তনী কোন নায়িকার বক্ষোপরে তাহার প্রিয় কর্তৃক একছড়া পুষ্পমালা নিক্ষিপ্ত হইকো কামিনী তাহা পরিত্যাগ করিল না; কারণ প্রেমেই বস্তগুণ থাকে, বস্ততে উহা থাকেনা॥ ১১৮॥

> ধনিল। মোছরী তঙ্ল চুর্ণ করিলা; নাড়ু বান্ধিলাছে চিনি পাক করিলা।

ভগ্ঠীগণ্ড নাড় আর আমপিত হর; পুথক পৃথক বানিয়াছে কুখলী ভিতর। (कानिक्धी, कानिवृत, कानिथ्य भात; কত নাম লব যত প্রকার আনচার। নারিকেল খণ্ড নাড়, নাড় গঙ্গাজল; চিরস্থায়ী থও বিকার করিল সকল। চিরস্থায়ী ক্ষীরসার মণ্ডাদি বিকার; অমৃত কপুর আদি অনেক প্রকার। শালিকা চুটি ধাত্তের আতপ চিঁড়া করি; নতন বঙ্গের বড় কুথলী সব ভরি; কথক চিঁড়া হড়ুম করি মতেতে ভাজিয়া; চিনিপাকে नाष्ट्र देकल कर्भू दानि निशा। শালি তণুল ভাজা চুর্ণ করিয়া; খুত সিক্ত চূর্ণ কৈল চিনিপাক দিয়া। কপুর মরিচ এলাচ লবন্দ রসবাস; চুৰ্ণ দিয়া নাড়ু কৈল পরম স্থ্বাস। শালি ধান্তের থই ঘডেতে ভাজিয়া: চিনি পাকে উথড়া কৈল কপুরাদি দিয়া। ফুট কলাই চুৰ্ণ করি ম্বতে ভাজাইল; हिनि পাকে कशू व निया नाफ देकन। কহিতে না জানি নাম এ জন্মে যাহার ; ঐছে নানা ভক্ষ্য দ্রব্য সহস্র প্রকার। রাঘবের আহতা আরে করে দময়স্তী: ছঁ হার প্রভুতে স্নেহ পরম শক্তি। গলামুত্তিকা আনি বল্লেতে ছাঁকিয়া; পাঁচ কুড়ি করি দিল গন্ধপ্রব্য দিয়া। পাতল মৃৎপাত্তে সোন্দাদি নিল ভরি; আর সব বস্তু ভরে বল্লের কুথলী। गामाना वानि टेश्ड विश्व वानि देवन : পরিপাটী করি সব বালি সাজাইল।

यानि वाकि साहत मिन आधार कतिया : তিন বোঝারি ঝালি বছে ক্লেম করিয়া। नः कारण कहिन वह वानित विहात : রাঘবের ঝালি বলি থ্যাতিইয়াহার। ঝালিরটেপর মুনসিব মকরধ্বজাকৈর: প্রাণরূপে ঝালি রাখে চইষা তৎপর। এই মতে বৈষ্ণব সব নীলাচলে আইলা: দৈবে সেই দিন জগন্নাথের জললীলা। নরেক্রের জলে গোবিন্দ নৌকাতে চড়িয়া; জলক্রীভা করে সব ভক্তরণ লঞা। সেইকালে মহাপ্রভু ভক্তগণ সঙ্গে नदित्य वार्थेना पिषिए कन्दर्भनि दक्षा সেই কালে আইলা গৌডের ভক্তগণ: নরেক্রেডে প্রভুসঙ্গে হইল মিলন। ভক্তগণ পড়ে আসি প্রভুর চরণে; উঠাইয়া প্রভু স্বারে কৈল∑আলিঙ্গনে। গৌডিয়া সম্প্রদায় সব করয়ে কীর্ছন: প্রভর মিলনে উঠে প্রেমের ক্রন্দন। জনক্রীডা, বাদ্য, গীত, নর্মন, কীর্তুন: মহাকোলাহল তীরে, সলিলে খেলন। গৌডিয়ার কীর্ত্তন আর রোদন মিলিয়া: মহাকোলাহল হৈল ব্ৰহ্মাণ্ড ভরিয়া। স্ব ভক্ত লঞা প্রভুনামিলেন ফলে; नवा नया जनकी जा करत्र कुरू हरन। প্রভর এই জলক্রীড়া দাস বৃন্দাবন; ১৯জন্স মকলে বিস্তারি করিয়াছেন বর্ণন। (১)

১ প্রভুর এই জলকীড়া—বৰ্ণন—চৈতনাভাগৰত অভাগত বঠ অধ্যায়ের শেৰতাগ বেধা

श्राः देश वर्तिल श्राक्ति श्राः ঁবার্থ লিখন হয় আর গ্রন্থ বাড়য়। জললীলা করি গোবিন্দ চলিল আলর; নিজগণ লঞা প্রভু গেলা দেবালয়। জগরাথ দেখি পুনঃ নিজ ঘরে আইলাঃ প্রসাদ আরাইয়া ভক্তগণে থাওয়াইলা। ইছলোটি কভক্ষণ স্বাল্ঞাকৈল: নিজ নিজ পূর্বে বাঁসায় স্বায় পাঠাইল। গোবিক ঠাঁঞি রাঘ্ব ঝালি দমপিল: ভোজন গুছের কোণে ঝালি গোবিন্দ রাথিল ৷ পূর্ববংসরের ঝালি আজাড় করিয়া; দ্রবা ভরিবারে রাখে অক্স গৃহে লঞা। আর দিনে মহাপ্রভু নিজগণ লঞা; ক্ষরতার দেখিলের শ্যোথানে যাঞা 🕻 বেডা কীর্ত্তনের তাঁহা আমারস্ক করিল: সাত সম্প্রদায় তবে গাইতে লাগিল L সাত সম্প্রদায়ে নৃত্য করে সাত জন; অহৈত আচার্য্য আর প্রভু নিত্যানন্দ; বক্রেশ্বর, অচ্যতানন্দ, পণ্ডিত জীবাদ; সতারাজ থান আর নরহরি দাস ৷ সাত সম্প্রদায়ে গ্রন্থ করেন ভ্রমণ; 'মোর সম্প্রদায়ে প্রভু' ঐছে স্বার মন। সংকীর্ত্তন কোলাহলে আকাশ ভেদিল: সৰ জগলাধবাসী দেখিতে আইল। রাজা আদি দুরে দেখে নিজগণ লঞা: রাজপত্নী সব দেখে অট্রালী চডিয়া। कीर्खन आदिरम शृथिवी कदत हेनमन : হরিংবনি করে লোক, হৈল কোলাহল। এইগত কভক্ষণ করাইল কীর্ত্তন; আপনি নাচিতে প্রভুর তবে হৈল মন।

সাত দিকে সাত সম্প্রদার গার বাজার;
মধ্যে মহাপ্রেমাবেশে নাচে গৌররার।
উড়িয়া পদ মহাপ্রত্বে স্থাতি হৈল;
স্বরূপেরে সেই পদ গাইতে জাজ্ঞা দিল।

তথাহি পদং।

'জগমোহন পরিমুগু। যাউ'। ১১৯।

এই পদে নুভা করে আপন আবেশে: সব লোক চৌদিকে প্রভার প্রেমে ভাদে। 'বোল বোল' বলেন প্রভ বাত ভলিয়া: হরিধ্বনি করে লোক আনন্দে ভাসিয়া। প্রভুপড়িম্চলুযান খাস নাহি আরে: আচ্ছিতে উঠে প্রভু করিয়া হক্কার। স্খন পুলকে খেন শিম্লারে তকঃ কভ প্রাকৃনিত আস কভ হয় স্ক। প্রতিরোমে হয় প্রস্থেদ রক্তোদগম: 'জ জ 'গ গ' পরি 'ম ম' গদগদ বচন। এক এক দম্ভ স্ব পৃথক পৃথক নড়ে; লোকে দেখে দস্ত যেন ভূমে থসি পড়ে। ক্ষণে কণে বাডে প্রভার আমন্দ আবেশ: ত্তীয় প্রহর হৈল নৃত্য তবুনহে শেষ। স্ব লোকের উথলিল আনন্দ সাগর: সব লোক পাশরিল দেহ আত্ম পর। ভবে নিত্যানন্দ প্রভু স্থলিল উপায়; क्राय क्राय की खेनी हा बाचिन नवाह । অকপের সঙ্গে মাতে এক সম্প্রদায়: স্থার সেরে সেও মন্দ্ররে গায়। কোলাহল নাছি, প্রভুর কিছু বাহা হৈল: ছবে নিজানন স্বার শ্রম জান।ইল।

ভক্ত अस बानि देवन की ईन नमानन : স্বাল্ঞা আসি কৈল সমুদ্রে স্প্ন। স্বা লঞা প্রভু কৈল প্রসাদ ভোজন; সবারে বিদার দিল করিতে শ্রন। গজীবার ভারে কৈল আপেনি শয়ন: গোবিন আইল করিতে পাদসম্বাহন। স্ক্ৰিল আছে এই দুচু নিয়ম; প্রভুষদি প্রসাদ পাঞা করেন শয়ন; গোবিক আসিয়া করে পার সমাহন: ভবে যাই প্রভুর শেষ করেন ভোজন। স্ব স্থার যুড়ি প্রভুক্রিয়াছেন শয়ন; ভিতরে যাইতে নারে, গোবিশ করে নিবেদন। 'এক পাশ হও মোরে দৈহ ভিতরে যাইতে ;' প্ৰভু কহে 'শজি নাহি অস চালাইতে।' বার বার গোবিন্দ কছে এক দিক হৈছে: প্রভুকহে 'অঙ্গ আমি নারি চালাইতে'। (शादिक करह 'कदिएक हाहि शाम मचाहन': প্রভু কহে 'কর বা না কর ষেই ভোমার মন'। एत शाविक छाँव विक्तिम छेगत किया : ভিতর বরে গেলা মহাপ্রভুকে লভিনয়া। शाम मधारन देवन कृषि शृष्टे हाशिन ; মধুর মর্দ্ধনে প্রভুর পরিশ্রম গেল 🕽 অথে নিদ্রা হৈল প্রভুর গোবিন্দ চাপে অঙ্গ : मण इरे वरे श्रजूत देशन निजा छन । शावित्म (मिथा श्रेष्ठ्र वरन क्रुफ रका; 'আজি কেন এতক্ষণ আছিদ বদিয়া 🕫 নিজা হৈলে কেন নাহি গেলা অসাদ খাইতে ?' भाविक करह 'बारत करेंगा, यारेरक नाहि भर्य'। প্রভু কহে 'ভিতরে ভবে আইলে কেমনে ? दिएए किन अरोब देना देना क्रिया नारा ?

গোবিশা মনে কছে 'আমার সেবার নিয়ম : অপরাধ হউক কিবা নরকে গমন। সেবা লাগি কোট অপরাধ নাতি গণি: স্বনিমিত অপরাধ আভাসে ভয় মানি'। এত সব মনে করি গোবিশ রহিল: প্রভুষে পুছিল। তার উত্তর না দিল। প্রত্যহ প্রভুনিদা গেলে যার প্রদাদ লইতে: সে দিবদের শ্রম জানি লাগিলা চাপিতে। যাইতেও পথ নাহি যাইবে কেমনে : মহাঅপরাধ হয় প্রভুর লজ্বনে। এই সব হয় ভক্তিশাস্ত্রের স্করণর্ম; হৈত তোর কপায় জানে সেই ধর্মার্ম। ভক্তগণ প্রকাশিতে প্রভ বছ রঙ্গী: এই সব প্রকাশিতে কৈল এত ভঙ্গী। সংক্ষেপে কহিল এই পরিমুগু। নৃত্য: অদ্যাপিও গার যাহা চৈভত্তের ভূতা। এইমত মহাপ্রভু লঞানিজগণ: শুভিচা গ্রের কৈল কালন মার্জন। পূর্ববৎ কৈল প্রভু কীর্ত্তন নর্ত্তন ; পূৰ্কবিৎ টোটাতে কৈল বস্ত ভোজন। পূর্ববিৎ রথ আগে করিল নর্ত্তন : ट्याडा १ कमी (याजा देवन महमन। চারিমাস বর্ষা রছিলা সব ভক্তগণ : खन्माडेमी जानि याचा देवन नत्रभन। পুর্বেষ দি গৌড় হৈতে ভক্তগণ আইলা; প্রভুরে কিছু থাওয়াইতে স্বার ইচ্ছা হৈলা। क्ट कान थाना चानि (मन शांविक र्रांकि ; 'ইছা যেন অবশ্ব ভক্ষণ করেন গোঁদাঞি'। কেহ পেড়া, কেহ নাড়ু, কেহ পিঠাপানা; बङ्ग्ला थनान थकात यात नाना।

'क्यूक अहे मिश्राट्ड' (शांविक करत निर्वतन ; 'ধরি রাথ' বলি প্রভুনা করে ভক্ষ। ধবিতে ধরিতে ঘাষর ভবিল এক কোণঃ শত হানের ভক্ষা যত হৈল সঞ্চর। গোবিনের সবে পুছে করিয়া যতন ; 'আমা দত্ত প্রসাদ প্রভু কি করিলেন ভক্ষণ' ? कारी किছ करि शीविक करतम वर्षम। আর দিনে প্রভুকে কহেন নির্কেদ বচন:-'আচার্যাদি মহাশ্য করিয়া যতনে: ভোমাকে থাওয়াইতে বস্ত দেন মোর তালে। ভূমি সে না খাও তাঁরা পুছেন বার বার: কভ বঞ্চনা করিব, আমার কেমনে নিস্তার প আছে কহে 'আদিবভা!ছ:খ কাছে মনে ? কেবা কি দিয়াছে তাহা আনহ এথানে'। এত বলি মহাপ্রভূবিদিলা ভোলনে; मार्थिति धति ८ शांविन्त करत निर्वत्ता । 'আচার্য্যের এই বৈড়া নানা রস পুণি; এই অমৃত মণ্ডা, এই কপূরি কুপী। গ্রীবাস পণ্ডিভের এই অনেক প্রকার: পীঠাপান। অমৃত মণ্ডাপল চিনি আরে। আচার্য্য রড়ের এই সব উপহার: আচার্য্য নিধির এই অনেক প্রকার। বাস্থদেব দভের, মুরারি গুপ্তের আর ; वृक्षिमञ्ज थाटनत धारे विविध ध्यकात । শ্ৰীমান দেন, শ্ৰীমান পণ্ডিত, আচাৰ্য্য নন্দ্ৰ; का मदाद पछ बहे कहर का बन । কুলীন গ্রামীর এই আগে দেখ যড়; খণ্ডবাসী লোকের এই দেখ ভড়'। थे ए नवात नाम गका श्राप्त चारत श्राह नद्धे रहेवा श्रेष्ठ् गर (जांकन करत्।

যদ্যপি মাসেকের বাসি মুকুরা নারিকেল; অমৃত গুটকা আদি পানাদি সকল। তথাপি নৃতন প্রায় সব জব্যের স্থাদ; वानि विश्वाम नाइ, अञ्च अनाम। শত জনের ভক্ষা প্রভু দণ্ডেকে ধাইল: 'আর কিছু আছে' ? বলি গোবিদে পুছিল। গোবিন্দ ৰলে 'রাখবের ঝালি মাত্র আছে': প্রভু কছে 'আজি রহক তাহা দেখিব পাছে'। আর দিনে প্রভু যদি নিভূতে ভোজন কৈল; রাঘবের ঝালি খুলি সকলদেখিল। नव खरवात किছ किছ উপযোগ किन: স্বাত স্থপন্ধি দেখি বছ প্রশংসিল। বংসরের তরে জার রাখিল বাঁধিয়া: ভোজন কালে শুরূপ পরিবেশে খুসাইয়া। কভ রাত্রিকালে কিছু করে উপযোগ; ভক্তের প্রদার ক্রব্য অবশ্ব করে ভোগ। এই মত মহাপ্রভু ভক্তগণ দকে; চাতুৰ্যাক্ত গোঙাইল ক্লফ কৰা বলে। मत्था मत्था चाठायादि कदा निमञ्ज् : বরে ভাত রাদ্ধে আর বিবিধ ব্যঞ্জন। মরিচের ঝাল মধুরায় আর; আদা লবণ লেবু হ্% দবি থণ্ড সার। শাক ছই চারি আর স্কুভার ঝোল; নিম্বার্তাকু আর ভ্রষ্টপটোল। **बहै क्नदिष्, डाका मुन्गानि रु**न ; বিবিধ ব্যঞ্জন রাজে প্রভুর ক্ষতি অমূরপ। জগলাথের প্রসাদ আনে করিতে মিশ্রিত: কাঁছা একা যান, কাঁছা গণের সহিত। चाठार्या तक, चाठार्या निधि, नमन, त्राचव ; **এ**বাস আদি বত বিপ্র ভক্ত সব

क्षेत्र क्षा क्षा करत यह कवि। वाञ्चरणव शरायत ७७ मूताति, क्नीनबाभी थछवात्री जात रह जन. জগরাথের প্রসাদ আনি করে নিমন্ত্রণ। भिवासक रमानद्र छन निमञ्जनायान : শিবানদের বড় পুরের চৈত্ত দাস নাম। প্রভকে মিলাইডে তারে দকে আনিল; মিলাইলে প্রস্থ ভারে নাম পুছিল। চৈত্ত দাস নাম গুনি কছে পৌর রায়: 'কি নাম ধরিয়াছ ? বুকান,'না যার'। সেন করে 'যে জানিল সে নাম ধরিল'; এত বলি মহাপ্রভকে নিমন্ত্রণ কৈল। জগরাখের প্রসাদ বহুসূল্যে আনাইলা; ভক্তগণে লঞা প্রভু ভৌজনে বদিলা। निवासत्मन शोत्रद श्रेष्ठ कतिन ভाषन ; **অভি ওক ভোজনে প্রভুর প্রদর নহে মন।** च्यात किरन टिज्ज काम देवन निमञ्जन : প্রভুর অভীষ্ট বুঝি আনিল ব্যঞ্জন। দধি লেখু আদা আর সুগবড়ি লবণ ; সামগ্রী দেখিয়া প্রভুর প্রসন্ন হৈল মন। थाजु करह 'व वानक जामात्र में क कारन ; मञ्जे हरेनाम चामि रेहात निमञ्जल'। এত বলি দ্ধিভাত করিল ভোজন: टेठण्ड मार्गरत मिन छेक्छिडे (छायन। চারি মাস এইম্ছ নিমন্ত্রে বার : কোন কোন বৈষ্ণৰ দিবস নাহি পার। গদাধর পণ্ডিত, ভট্টাচার্য্য সার্ব্যভৌম: ইহা সবার আছে ভিকার দিবস নিয়য। (शाशीनांशाहार्या, कशमानम, कानीचंत : छ्यरान, त्राम छ्डाठार्या, भडत, बटक्स्त ।

মধ্যে মধ্যে খর ভাতে করে নিমরণ : অভ্যের নিমন্ত্রে প্রসাদের কৌ ছি ছই পণ। ल्यथाम आहिन निर्सक्ष्यकि श्री ११: রামচক্রপুরীভয়ে বাটাইলা নিমন্ত্রণ। চারিমাস রহি গৌড়ের ভক্তে বিদার দিলা; নীলাচলের সঙ্গী ভক্ত সঙ্গেই রহিলা। এই ত কহিল প্রভুর ভিক্ষা নিবস্ত্রণ : ভক্তদত্ত বন্ধ বৈছে কৈল আশাদন। कांत्र मरशा त्राचरवत्र कानि विवत्रन : ভার মধ্যে পরিমুগ্ডা নুত্যের কথন। শ্রদাকরি ভানে যেই চৈতভের কথা; হৈতজ্ঞ চরণে প্রেম পাইবে সর্বধা। ভুনিতে অমৃত সম জুড়ায় কর্ণ মন; সেই ভাগ্যবান ষেই করে আমাদন। এরপ রবুনাথ পদে যার আশ; চৈতন্ত চরিতামূত কহে কৃঞ্দান।

ইতি শ্রীচৈতত্মচরিতামূতে অস্ত্যুথতে ভক্তদভাস্থাদনং নাম দশম পরিচেহদঃ॥ ১০॥

একাদশ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থ।

নমামি হরিদাসং তং চৈতভা তঞ্চ তংগ্রভুং। সংস্থিতামপি যম্ভিং স্বাক্ষে কৃষা ননৰ্ভ যঃ॥ ১২০॥

'তং' 'হরিদাসং' 'নমামি'; 'তংপ্রভুং' হরিদাসপ্রভুং 'তং' 'চৈডতঞ্চ'
নমামীতার্থা। 'ঘ' দৈডভুঃ 'ব্যুর্তিং' যত হরিদাসত সূত্রমীরং 'সংহিতামপি' 'স্বাডে' সীর ক্রোড়ে 'কুছা' 'নমর্ত্ত' ॥ ১২০॥

দেই ছরিদাসকে নমস্কার করি; এবং তাঁহার প্রস্কৃ

সেই চৈতত্মকেও নমস্কার করি; বাঁহার (হরিদাদের) মৃতদেহ
স্থৃপতিত হুইলেও যিনি (চৈতত্ম) স্বীয় ক্রোড়ে ধারণ করিয়া
নৃত্য করিয়াছিলেন। ১২০।

अब अब की देव क्या । **अब प्रशास**ता ! ক্ষাকৈত প্রিয় । নিত্যানন্দ প্রিয় ক্ষয় । জর জীনিবাসেখর। হরিদাস নাথ। জয় গদাধরপ্রিয় । স্বরূপ প্রাণনাথ ! क्य काशीश्रद कश्रमानक त्यार्थित । জয় রূপদনাতন র্ঘুনাথেখর ! জর গৌরদেহ ! রুফ স্বয়ং ভগবান ! কুপা করি দেহ প্রভু । নিজ পদ দান। নিভানকচল জয় ! চৈতত্তের প্রাণ : তোমার চরণারবিন্দে ভব্তি দেহ দান। জয় জয়াৰৈতচক্ত ! চৈতকোর আচাৰ্য্য: चहत्रण खिल एक क्यारिक कार्या। জয় গৌরভক্তগণ ! গৌর যার প্রাণ : সব ভক্ত মিলি মোরে ভক্তি দেহ দান। জয় রূপ সনাতন জীব রঘুনাথ! রঘুনাথ গোপাল জয় । ছয় মোর নাথ। এ দব প্রদাদে লিখি চৈতক্ত লীলা গুণ: বৈছে তৈছে লিখি করি আপন পাবন। এই মত মহাপ্রভুর নীলাচলে বাস: সঙ্গের ভক্তগণ লঞা কীর্ত্তন বিলাস। দিনে নৃত্য কীর্ত্তন ঈশ্বর দরশন : রাত্রেরার স্বরূপ সনে রস আস্বাচ্ন। এই মত মহাপ্রভুর ভুথে কাল বার: ক্লফের বিরহ বিকার অঙ্গে নানা হয়। मित्न मित्न वार्फ विकास बाद्य अख्यात : চিন্তা উবেগ প্রলাপাদি বত শালে কর।

র্বরূপ গোঁশাঞি আর রামানন রায়: রাত্রি দিনে করে দোঁতে প্রভর সহার। একদিন গোবিল মহাপ্রসাদ পুইয়া হরিদাসে দিতে গেল আনন্দিত হঞা। দেখে হরিদাস ঠাকুর করিয়াছেন শয়ন; মন্দ মন্দ করিতেছেন সংখ্যা সংকীর্ত্তন। গোবিন্দ করে 'উঠ আদি করহ ভোজন': হরিদাস কহে 'আজি করিব লংখন। সংখ্যা কীৰ্ছন নাছি পুলে কেমনে থাইব গ মহাপ্রসাদ আনিয়াছ কেমনে উপেক্ষিব'। এত বলি মহাপ্রসাদ করিল বন্দন: ध्वक तक लाजा स्रोत कतिल सक्ता আর দিনে মহাপ্রভু তাঁর ঠাই আইলা: 'সুস্থ হও হরিদাস' ? তাঁহারে পুছিলা। নমস্বার করি ভিঁহো কৈল নিবেদন: 'শরীর স্মৃত্তর মোর, অসুত্ত বৃদ্ধি মন'। প্ৰভু কছে 'কোন ব্যাধি ? কছ ত নিৰ্ণয়': তিঁহো কহেন 'সংখ্যা সংকীর্ন্তন না পুরয়'। প্রভু কছে 'বুদ্ধ হৈলা সংখ্যা অল কর: সিদ্ধদেহ সাধনে তুমি আগ্রছ কেন ধর ? লোক নিস্তারিতে এই ডোমার অবভার: নামের মহিমা লোকে করিলা প্রচার। এবে অল সংখ্যা করি কর সংকীর্ছন'। रुदिमान करह 'खन त्यांत निर्वेशन : হীনজাতি জন্ম মোর নিন্দ্য কলেবর: হীনকর্মেরত মুই অধম পামর। অদুখ্য অস্পৃথ্য মোরে অসীকার কৈলে; त्रोवव टेश्ट कृति त्यादव देवकूर्छ हकाहरत। খতন্ত্র কথার তুমি ছও ইচ্ছামর; অপৎ নাচাও যাবে যৈতে ইচচা হয়।

'व्यानक बाहारम्बरमारत अनाम कतिता : विट्यतं आद्याज थार्रेस स्त्रक रहेता। **धक वाक्षा बन्न त्यात वक्ष क्रिस देवटक :** লীলা সম্বরিবে তুমি লয় মোর চিতে। সে লীলা প্রান্ধ মোরে কভু না দেখাইবা : আপ্রার ভারে মোর শরীর পাডিবা । জদরে ধরিব ভোমার কমল চরণ : নয়নে দেখিব ভোমার টাদ বদ্দ ; জিহবার উচ্চারিব ভোমোর কুঞ্চৈভক্ত নাম: এই মড়মোর ইচ্ছা ছাডিব পরাণ। (भाव केव्हा अहे. यनि (**डामात आतान कत**ः **७३ निर्दर्ग भाव कत नवामय।** এই নীচ দেহ মোর পড়ে তব আগে: এই বাঞ্চা দিছি মোর ভোমাতেই লাগে' ৷ প্রভু কছে 'হরিদাস ! ভূমি বে মাগিবে; কুক্ত কুপামর ভাহা অবশ্র করিবে। কিন্তু আমার যে কিছু সুধ সব তোমা লঞা: তোমার যোগ্য নহে যাবে আমারে ছাড়ির।'। চরণে ধরি কলে হরিকাস 'না করিছ মারা: ব্দবস্থা মোতাধ্যে প্রভুকর এই দরা। মোর শিরোমণি কভ কত মহাশর: ডোমার লীলার সহায় কোট ভক্ত হয়। भागा दश्न यति अक की है मति त्रान ; क भिनीनिका रेयरन प्रविशेत काहा शनि रेहन ? ভকতবংসল প্রভু মুঞি ভক্তাভাস; অৰশ্ৰ পুরিবে প্রভু মোর এই আশ। মধ্যাত্র করিতে প্রভু চলিলা আপনে; क्रेचंद्र (पश्चित्र) कानि ब्रिट्ट प्रदर्गान'। তবে মহাপ্রভূতিরে করি ভালিখন; बशास् कति । जबूत्य कतिना श्रम्म ।

थां छ:कारन केचत सिंच जब कक्क नका : হরিদাসে দেখিতে আইলা শীম করিরা। रुतिरारमत जारम जानि विव वृत्रभन : হরিদাস বৈশিল প্রভুর আর বৈঞ্বচরণ। এতু কহে 'হরিদান ! কহ সমাচার' ? হরিদাস কহে 'প্রভুবে আজন ভোমার'। भक्त भात्रित अडु म्हानः कीर्डमः বক্রেশ্বর পণ্ডিভ জাঁচা করেন নর্মন। স্তরপ গোঁসাঞি আদি যত প্রভুর গণ ছরিদাদে বেভি করে নাম সংকীর্ত্তন। রামানক সার্কভৌম স্বার অর্থতে ছরিদাসের ওপ প্রভুলাগিল কহিতে। हतिनारमत् छन कहिएक देहना शक्षमूथ; কহিতে কহিতে প্রভুর বাড়ে মহাস্ত্র। হরিদাসের গুণে স্বার বিশ্বিত হয় মন: সর্বভক্ত বন্দে হরিদাসের চরণ। হরিদাস নিজাগ্রেছে প্রভুরে বসাইল; निक दिक इरे इक मूच्याक विण। স্থদ্ধে আনি ধরি প্রভুর চর্ণ; সর্ব্ব ভক্ত পদরেণু মন্তকে ভূষণ। ঞ্জিক চৈত্ত নাম বলে বার বার; প্রভূমুখমাধুরী পীরে নেত্রে জলধার। **জিক্ষাট্রতন্ত শব্দ করিতে উচ্চারণ :** নামের সহিতে প্রাণ কৈল উৎকামণ। महार्थार्थ्यत्र व्यात्र चारूक्क्क्वत्रः ভীলের নির্যাণ স্বার হইল স্বরণ। হরি হরি ক্লফ শব্দে করে কোলাহন: **(अयामत्म महाक्ष** इरेगा विस्तत । হরিদানের তত্ত্ব প্রভু কোলে উঠাইয়া; जन्त नाटन ट्रज् त्यमाविष्ठ रका।

প্রভুর আবেশে অবশ সর্বা ভক্তগণ : (श्रमादियम मृद्य नार्त करवन कीर्फन । এই মত নৃত্য প্রভ করে কতক্ষণ : স্বরূপ পৌসাঞি প্রভবে কৈল নিবেদন। হরিদাস ঠাকুরে ভবে বিমানে চডাইয়া: সম্ভে লইয়া গেলা কীর্ত্তন করিয়া। আগে মহা এভ চলেন নৃত্য করিতে করিতে: পাছে নুড্য করে বক্রেশ্বর ভক্তগণ সাভে। হরিদানে সমুদ্রজনে মান করাইল: প্ৰভ কছে 'দম্ভ এই মহাতীৰ্থ হৈল'। হরিদাসের পালোদক পীরে ভক্তগণ: क्रविवास्त्रत व्यक्त किल क्षत्रीक हमान। ডোর কডার বস্ত অকে দিল: বালুকার গর্ভ করি ভাহে শোরাইল। চারিদ্বিক ভক্তপণ করেন কীর্ত্তন : ব্যক্রেশ্বর পণ্ডিত করেন আনন্দে মর্ছন। ভবিবোল ভবিবোল বলে পৌররায়: আপনি শ্রীহন্তে বাল দিল ভার গায়। তাঁরে বালু দিয়া উপরে পিশু বান্ধাইল: চৌদিকে পিগুার মহা আবরৰ কৈল। ভবে মহাপ্রভু কৈল কীর্ত্তন নর্ভন: ছরিধ্বনি কোলাছলে ভরিল ভূবন। তবে মহাপ্ৰভূ সৰ ভক্তপৰ সঙ্গে; সমুদ্রে করিলা স্থান ভলকেলি রঙ্গে। হরিদাসে প্রদক্ষিণ করি আইলা সিংহ্ছারে : इतिकीर्खेन (कानाइन नकन नगरतः। निःश्वादा **जानि श्र**ञ्जनातीत श्रें।कि ; আঁচল পাতিয়া প্রবাদ মারিল তথাই। 'হরিদাদ ঠাকুরের মছোৎপ্রের ভরে: व्यनाम मानिएवं किका तम्बद्ध काबादा'।

ভনিয়া পদারী দৰ চালড়া উঠাইয়া: প্রদাদ দিতে আদে তারা আনন্দিত হৈছা। यक्षण (गाँगांकि शमादीक निरम्धिन : চালভা লইয়া পদারী পদারে বদিল। স্বরূপ গোঁদাঞি প্রভকে মরে পাঠাইল: চারি বৈক্ষর চারি পিছাড়া সঙ্গে রাখিল। স্তরূপ গোঁসাঞি কছিলেন দ্ব প্রারীরে: 'একেক সাব্যের একেক প্রা আনি দেহ যোগে'। এইমতে নানা প্রসাদ বোকা বাদ্ধাইয়া: লঞা আইলা চারি জনের মস্তকে চডাইয়া। বাণীনাথ পট্টনায়ক প্রসাদ আনিলা: कामीशिश चात्रक क्षत्राम शांठीहेना। मद देवकारवात अञ्चल वनाहेन। नाति नाति : আপনি পরিবেশে প্রভুলঞাজনাচারি। মহাপ্রভুর শ্রীহন্তে অর না আইনে: একেক পাতে পঞ্জনার ভক্ষ্য পরিবেশে। অরপ কছে 'প্রভু! বসি কর দরশন: আমি ইহা দ্বা লঞা করি পরিবেশন'। चक्रभ, कश्रमानम्, कानीयत्, महत्रः চারি জন পরিবেশন করে নির্ভরে। প্রভুনা খাইলে কেহ না করে ভোজন; প্রভকে সে দিনে কাশীমিশ্রের নিমন্ত্রণ। আপুনি কাশীমিশ্র আইলা প্রসাদ লইয়া: প্রভকে ভিকা করাইলা আগ্রহ করিয়া। পুরী ভারতীর মঙ্গে প্রভু ভিক্ষা কৈল: সকল বৈঞ্চৰ ভবে ভোজন করিল। আক্ঠ পুরিঞা স্বায় ক্রাইল ভোজন; '(पर (पर' विन शकु वरनम वहन। (डाखन कतिया मदद देवन चांत्रमन : नवादत भत्राहेन अंकु माना हमान ।

त्थ्रमाविष्ठे स्का श्रेष्ठ करत वत्रमान : ভনি ভক্তপণের জুড়ার মন কাণ। 'व्यापारम्य विषयां देशक प्रतिका प्रतिका । य जांश नृष्टा देकन, त्य देकन कीर्खन। যে তাঁরে বালু দিতে করিল গমন: তাঁর মহোৎসবে যে বা করিল ভোজন : অচিরে হটবে স্বার ক্ষাপ্রেম প্রাধি: হরিদাস দরশনে হর ঐচে শক্তি। क्रेश क्रि क्रक स्थादि निशंकित नह : খতত্র ক্রফের ইঞ্ছা কৈল সঞ্চ ভল। ছরিদাসের ইচ্চা যবে হইল চলিতে: আমার শক্তি জাঁরে নারিল রাখিতে। ইচ্ছামাত্র কৈল নিজ প্রাণ নিকামণ; পূর্বে বেন ভ্রিয়াছি ভীমের মরণ। হরিদাস আছিলা পৃথিবীর লিরোমণি; ভাঁহা বিনারত্বশুক্ত হইল মেদিনী। অন্তরিদাস। বলি কর হরিধ্বনি'। এত বলি মহাপ্রভু নাচেন আপনি। সবে গায় 'জয় জয় জয় হরিদাস। নামের মহিমা যেই করিল প্রকাশ'। ভবে মহাপ্রভু সব ভক্তে বিদায় দিল : হর্ষ বিষাদে প্রভু বিশ্রাম করিল। এইত কহিল হরিদানের বিজয়: যাহার প্রবণে ক্রফে দচভক্তি হয়। চৈতক্তের ভক্তবাৎসলা ইহাতেই জানি: ভক্তবাস্থা পূৰ্ব কৈল ভাসী শিরোমণি। (णव कार्ल मिल छाद्र मर्भन न्यर्भन ; ভাঁরে কোণে করি কৈল আগনি নর্ছন। व्यापनि बीहरक क्यात वान छ। दत किन : षाणिन अगाम मात्रि मत्हादनय देकल ।

মহাভাগবত হরিদাল পরম বিশান;
এ সৌভাগা লাগি আগে করিল প্রান।
চৈতভাচরিত এই অমুডের সিজু;
কর্ণ মন তৃপ্ত করে যার এক বিন্তু।
ভবসিন্ধু তরিবারে আছে যার চিন্ত;
শ্রহা করি গুন সেই চৈতভাচরিশ্র।
জীরপ রব্নাথ,পদে যার আশ;
চৈতভাচরিভায়ত কচে রফাদান।

ইতি শ্রীচৈতভাচরিতায়তে অস্তাধণ্ডে **জীহ্**রিদাস নির্বাণ-বর্ণনং নাম একাদশ পরিচেদঃ॥ ১১।

দ্বাদশ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থ ।

শ্রুষরতাং শ্রুষরতাং নিত্যং গীরতাং গীরতাং মুদা।
চিন্ত্যতাং চিন্ত্যতাং ভব্তাংশুক্তমানত মুদা।

হে 'ভজ্ঞাং' বুমাভিঃ 'চৈড্সচরিতামুডং' 'মুদা' হর্ষেণ পুনঃ পুনঃ 'শ্রমভাং' 'গীরতাং' 'চিস্কাভাং' ॥ ১২১ ॥

হে ভক্তগণ ! তোমরা পরমানন্দে চৈত্যচরিতামৃত্ত বার বার প্রবণ, কীর্ত্তন ও মনন্ কর ॥ ১২১ "

জর জয় জীতৈত । জর দ্যামর !
জর জর নিতানিক ! কুপাসির জর !
জয়াবৈত্তক ! জয় ককণাসাগর !
জয় গৌরভজ্গণ ! কুণাপুণ(জুর !
অত:পর মহা প্রভূ বিষধ জ্বর ;
কুক্ষের বিরোগ দশা ক্রেনের জর ।
'হাহা ক্ষা ! প্রাণনার ব্যেক্ষ নক্র !
কাঁহা যাও ৪ কাঁহা পাও ? মুরনী বদন'।

वाळि मित्न अहे सभा शासा नाहि सारन : কটে রাজি সোঙার স্থরপ রামানল সনে। এথা গৌড়দেশে প্রভার মত ভক্তগণ क्षक (मश्रिवादा मृद्य क्तिना गमन । শিবানক কেন আর আচার্য্য গোঁদাঞি: নবদীপে সহ ভক্ত হৈল এক ঠাঞি। কুলীন গ্রামবাসী আর যত খণ্ডবাসী; একত মিলিলা সব নবখীপে আসি নিভ্যানন প্রভুৱে যদ্যপি আজা নাই; प्रशामि (प्रशास हात हेहजू (श्रीमाधिक) জীনিবাদ দাবি ভাই সঙ্গেতে মালিনী: আচার্য্য রত্নের সক্ষে তাঁহার গৃহিণী। শিবানন্দ পত্নী চলে ভিন পত্ৰ লঞা: রাঘব পশুত চলে ঝালি সাজাইয়া। দত্ত গুপুবিদানিধি আবে হত জন : ছুই ভিন শভ ভক্ত, কে করে গণন ? শচীমাতা দেখি সবে তাঁর আজা লঞা: আনলে চলিলাকফকীর্থন করিয়া। শিবানক সেন করে ঘাট সমাধান : স্বাকে পালন করি স্থাথ লঞা যান। সবার সব কার্যা করেন দেন বাসাভান; শিবানন্দ ছানে উডিয়া পথের সন্ধান। এক দিন সব লেকে ঘাটিতে রাথিলা: সবা ছাডাইয়া শিবানন্দ একেলা রহিলা। সবে গিয়ারহিল গ্রামের ভিতর বক্ষতলে: শিবানন বিনা বাসাতান নাহি মিলে। নিত্যানন্দ প্রভু ভোকে ব্যাকুল হইয়া খিবানদে গালি পাড়ে বাসা মা পাইরা। 'ডিন পুত্র মকক শিবার, এবেও না আইল ? च्चारक मति शिक्ष त्मादत बाना ना त्मशाहेन' । তনি শিবানলের গছী কাঁনিতে লাগিল: (श्वकारण विवासना चाहि देहरक कार्यक s निर्वानत्मत्र भन्ने जाँदा कददन काँ किया: 'পুতে শাপ দিছেন গোঁসাঞি বাসা না পাইয়া'। ভিছো কৰে 'বাউনি ৷ কেন মরিস কান্দিয়া » মকক মোর ছিন পুত্র জার বালাই লক্ষা'। এত বলি প্রভু পাশে গেলা শিবানক: উঠি তাঁরে নাথি মাইল প্রকু নিজ্যান । আনিন্দিত হৈল শিবাই পাদপ্রহার পাঞা: শীভ বাসাঘর কৈল গৌডঘরে গিছা। চরণে ধরিয়া প্রভুকে বাসায় লঞা গেলা ঃ বাসা দিয়া ছাই হঞা কছিতে লাগিলা:---'আজি মোরে ভুতা করি অঙ্গীকার কৈলা; ছেম্ম অপবাধ ভাছেতে বোগাফল দিলা। শান্তি ছলে ক্লপাকর এ তোমার করুবা: ত্রিজগতে ভোমার চরিত বুঝে কোন জনা ? ব্ৰজার ত্রুভি ভোমার জীচরণরেণু; হেন চরণ স্পর্ম পাইল মোর অধ্য ভকু। আজি সফল হৈল মোর জন্ম কুল কর্ম্ম: আজি পাইত কৃষ্ণভক্তি অর্থ কাম ধর্ম । শুনি নিত্যানক আন্তর কানকিও মন ; উঠি শিবাননে কৈল প্রেম আলিম্বন। আনন্দিত শিবানক করে সাবধান : काहार्राम देवकारवटव किन वामकान । নিত্যানন্দ প্রভুর চরিত্র সব বিপরীত ; জুদ্ধ হঞা নাথি মারি করে ভার হিত। শিবানজের ভাগিনা শ্রীকার গেন নাম: মামার অগোচরে কছে করি অভিযানঃ--'হৈতক্ত পার্বদ মোর মাতৃলের খ্যাতি: ঠাকুরালি করে গোঁদা জি তাঁরে মারি নাথি'।

क्ष वित कि का स्व वानक चारत छनि यान ; সঙ্গ ছাড়ি আগে গেলা মহাপ্ৰভুৰ স্থান ៖ পেটাজি গায় করে দশুবৎ নমন্তার: গোবিন্দ কছে 'জীকান্ত। জাগে পেটাঙ্গি উতার'। প্ৰভ কৰে 'শ্ৰীকান্ত আদিয়াছে পাঞা মনোছ: খঃ किছ ना वंशिष्ट कक्रक शांटि हैशात सूप' » देवकदवत नमाठांत (गाँनां कि शृहिन; अरक शरक भवात नाम किकास सामाहेल। 'দ্রাপ পাঞা আসিয়াছে' এই প্রাক্তর বাক্য ভনি ; 'জানিলা সর্বজ্ঞ প্রভূ' এত অহুমানি। শিবলেকে নাথি মারিলা ইছা না কহিলাঃ এথাসর বৈক্ষরগণ আসিয়ামিলিলা ৷ পূর্বাবিৎ কৈল প্রভু স্বার মিল্ম ; भी गव पृत रेश्ट किन প্রভু দরশন r বাসা ঘর পূর্ববৎ স্বারে দেয়াইল; মহাপ্রসাদ ভোজনে স্বারে কোলাইল। শিবানন ভিন পুত্র গোঁষাইকে মিলাইল : शिवासम्म नच्या नवात्र वह कुला देवन । ছোট পুত্র দেখি প্রভু নাম পুছিল ; প্রমানক দাস নাম. সেন জানাইল ৮ পূর্বে যবে শিবানশ এতু স্থানে আইনা; তবে মহাপ্ৰভূ জাঁৱে কহিছে লাগিলা ৷ 'এবার ভোমার যেই হইবে কুমার : 'পুরীদাস' বলি নাম ধরিও তাহার'। তবে মারের গর্ভে হয় সেই ভ কুমার ; भिवासना चरत त्शाल खना देवन खात । প্রভু আজ্ঞার ধরিল নাম প্রমানক দান : পুরীদাল বলি প্রভু করে উলহাস। भिवानम (गरे वानक वरव विनाहेन : মহাপ্রভু পাদাকুর ভার মূবে দিল ।

শিবানন্দের ভাগ্যবিদ্ধ কে পাইবে পার ? বাঁর সব গোটিকে প্রভ করে আপনার। हर मन एक नका करिन (जानम : शाविद्यार आका पिन कवि आहमन। 'শিবাদদ্যের প্রক্রতি পুত্র ফবেৎ এথায়: আমার অবশেষ পাত্র ভারা যেল পায়' ঃ নদীরাবাদী মোদক তার নাম পরমেশর: মোদক বেচে প্রভুর ঘরের নিকট ভার ঘর। ৰালককালে প্ৰভু ভার মবে বার বার বান ; ত্ত্বপশুমোদক দের প্রভু তাহা থান। প্রভবিষয় স্বেহ ভার বালক কাল হৈছে; সে বংসর সেও আইল প্রভুকে দেখিতে। 'পরমেশরা মুঞি' বলি দগুবং কৈল: ভারে দেখি শীতে প্রভু তাহারে পুছির 1 'পরমেশ্ব কুশল হয় ? ভাল হৈল আইলা'; 'মুকুলার মাতা আসিয়াছে' প্রভুকে কহিলা। মুকুলার মাতার নাম শুনি প্রভুর সংকাচ হইলা: তথাপি ভাহার প্রীতে কিছু না বলিলা। श्राम भागन एक देवनकी ना कारन : অন্তরে সুখী হইলা প্রভু তার দেই গুণে। পূर्वद नवा मका शिवा मार्कन ; রথ ভাগে পূর্কবৎ করিলা নর্ভন। চাতুর্মান্ত সব যাজা কৈল দরশন ; मानिनौ अञ्चि अञ्चल देवन निमञ्जन। প্রভুর প্রিয় নানা স্তব্য আনিয়া দেশ হৈছে; সেই ব্যঞ্জন করি ভিক্ষা দেন ঘর ভাতে। দিনে নানা ক্রীড়া করেন লঞা ভক্তগণ; त्राजिएक कृष्ण विष्कृत्म करत्रन्रै (त्रामन । এইমত নানা নীলার চাতুর্মাক্ত গেল: গৌভ দেশে বাইতে তবে ভক্তে আজা দিল।

मत छक्तभा करवेम श्रेष्ठत निमञ्जन : ग्र ज्ञाल करहन टीज मध्य कहन। 'প্রতিবর্ধে আইন সবে আমারে দেখিতে : আনিতে মাইতে হ:ৰ পাও বহু মতে। তোমা সবার হুঃখ জানি চাহি নিবেধিডে; তোমা স্বার সঙ্গ স্থা লোভ বাড়ে চিস্তে। নিজানিকে আজা দিল গৌডেতে হচিতে : चांख्या निष्य चाहेत्नम, कि भाति वनिए १ चाहरतम चाहार्या (गाँताहे बाद्र क्रमा कति: প্রেমঞ্জে বন্ধ জামি লোখিছে না পারি। মোর লাগি স্ত্রী পুত্র গৃহাদি ছাডিয়া . নানা তৰ্মন পথ লভিব আইলেন ধাঞা। আমি এই নীলাচলে রছি যে বলিয়া: পরিশ্রম নাহি মোর স্বার লাগিয়া। नहानी मास्य त्यांत्र नाहि दकान धन: কি দিয়া ভোলবার ঋণ করিব শোধন ? (पह माज धन एकामांत्र देकन् ममर्थन : ভাঁহাই বিকাই বাঁহা বেচিতে ভোমার মন'। প্রভুর বচনে স্বার প্রীত হৈল মন: অবৌর নরমে সবে করেন জ্ঞানন। প্রভু দবার গলা ধরি করেন রোদন: काँपिए काँपिए नवार देवन कानिस्त । স্বাই মহিল কেছ চলিতে নারিল: আর দিন পাঁচ সাত এই মতে পেল। অবৈত অবধৃত কিছু কহে প্রতুপার; 'সহজে ভোষার গুণে জগৎ বিকার। আর ডাভে বান্ধ গ্রছে কুণা বাক্য ভোরে: তোমা ছাড়ি কেবা কাঁহা ঘাইবারে পারে ? **তবে এভু স্বাকারে প্রবোধ করিরা** : नवादत्र विशास शिल ऋचित्र इहेंगा।

নিত্যাননে কহিল 'তুরি না আইস বার বার; ভণা**ই আমার সক হ**ইবে ভোমার'। চলে সৰ ভক্তগণ রোলন করিয়া: মহাপ্রভু রহিলা দরে বিষয় হইয়া। নিজ কুপাগুৰে প্ৰভু বান্ধিল স্বারে; মহাপ্রভুর কুপা ঋণ কে শোধিতে পারে ? যারে বৈছে নাচার প্রভু স্বতন্ত্র ঈশ্বর; ভাতে তাঁহা ছাজি লোক যাম দেশান্তর। কার্ছের পুতলী যেন কুহকে নাচার; ঈশ্ব চরিত্র কিছু বুঝন না যায়। भुक्त वर्ष कश्रमानम् बाह्र मिथिवादा প্রভার আজ্ঞা লয়ে আইলা নদীয়া নগরে। আইর চরণ ধাই করিল বন্দন: क्षश्रहारश्रह वश्च क्षश्राम देकन निरंदमन । প্রভর নাম করি মাতাকে দণ্ডবৎ কৈলা; প্রভুর মিনতি ভাতি মাতারে কহিলা। জগদানদে পাঞা মাতা আনন্দিত মনে: তিঁহো প্রভুর কথা কহে, ওনে রাত্রি দিনে। क्षशतानम करह 'माजा ! टकान टकान निटन : ভোমার এথা আসি প্রভু করেন ভোজনে। ভোজন করিয়া কছে আননিকত হঞা; ''মাভা আজি খাওয়াইল আকণ্ঠ পুরিয়া। আমি যাই ভোজন করি মাতা নাহি জানে; সাক্ষাতে থাই আমি ভিঁহো তথা মানে :'' মাতাকহে কিভুরাছি উত্তম বাঞ্চন; नियाहे हेहा चात्र खेटह हत्र त्यांत यन। পাছে জ্ঞান হর মুঞি দেখিতু স্বপন; পুত ना দেখিয়া মোর করছে নৰ্ন'। এইমত জগদানৰ শচীমাতা সনে: চৈতভের স্থক্ষা কৰে রাজি দিনে।

নদীয়ার ভক্তরণ সবারে মিলিলা : क्र शंगानामा शाका मत्त वानिक देशना । আচার্য্যে মিলিভে তবে গেল জগদানক; জগদানলে পাঞা আচার্যের হটল আনন্দ। বাস্থদেব, মুরারিশুপ্ত জগদানন্দে পাঞা; আনক্ষে রাথেন বরে না দেন ছাড়িয়া। চৈভজের মর্ম কথা ভনে তাঁর মূবে; আগনা পাসরে সবে চৈডস্করণা স্থাপ। ক্রপদানক মিলিজে যার যেই ভক্ত ঘরে: সেই সেই ভক্ত স্থথে আপনা পাসরে। टेन्डटला द्रश्यम्थाक स्वत्रमानक थला : যারে মিলে সেই মানে পাইল চৈত্র। শিবানন সেন গছে যাইয়া রহিল: চন্দ্ৰালি ভৈল ভাঁহা এক মালা কৈল। স্থান্ধি করিয়া তৈল গাগরী ভরিয়া; নীলাচলে লঞা আইল যতন কবিয়া। शावित्सव ठाँहै देखन धतिया वाथिन : 'প্ৰভু অঙ্গে দিও তৈল' গোৰিন্দে কহিল। ভবে প্রভু ঠাই গোবিন্দ কৈল নিবেদন; 'অগদানক চক্ষনাদি তৈল আনিয়াছেন। তাঁর ইচ্ছা প্রভু অর মন্তকে লাগার; পিত বায় ব্যাধি প্রকোপ শান্তি হঞা যায়। এক কলশ স্থান্ধি তৈল গৌড করিয়া: ইহা আনিয়াছেন বছ যতন করিয়া'। थक करह 'महाानीत देखल नाहि व्यविकात ; তাহাতে স্থগদ্ধি তৈল পরম ধিকার। कातारथ त्मर देखन मीरण त्यन करन : তার পরিশ্রম হবে পরম সফলে। **थ**हे कथा त्राविक वननीनरकत्त्र कृष्टिन : योग क्रि तरिव रिक्क क्रिक मा क्रिका

प्रिम प्रम (शत्म (शांविक सामाहेन सामाह : 'প্তিভের ইচ্ছা তৈল করেন অলীকার'। **७ जि श्रेष्ठ करह किछू मर्ट्याथ वहनः —** 'মর্কনিয়া এক রাখ করিছে মর্দন ! এই अर्थ नाति जाति कतिबाहि नताति; আমার স্ক্রাশে তোমা স্বার পরিহাস। ্পত্ন মাউত্ত তৈল গল মোর যে পাইবে: माती महरामी कवि सामादि कहिद्य'। শুনি প্রভুর বাক্য গোবিল মৌন করিলা: आहःकात्न अन्नामन थङ् ज्ञात चारेना । প্রভ কছে 'পণ্ডিত ! তৈল আনিলা গৌড় হৈতে; আমি ত সর্যাসী তৈল না পারি লইতে। कत्रवार्थ (प्रव मध्ये मीर्थ (यन ज्यान ; জোমার সকল শ্রম হইকে সফলে'। প্রতিত করে কৈ তোমাকে করে মিথা বাণী ? আমি গৌড় হইতে তৈল কভু নাহি আনি'। এজ বলি ঘর হৈতে তৈল কল্শ আনিয়া প্রভুর আগে আঙ্গিনাতে ফেলিল ভাঙ্গিরা। ভৈল ভালি সেই পথে নিজ ঘরে গিয়া শুইয়া রুছিল খরে কপাট মারিয়া। ভতীয় দিবসে প্রভু তাঁর বাবে বাঞা: 'উঠহ প**ণ্ডিড**়' করি কছেন ডাকিয়া। 'আজি ভিকা দিবে আমার করিয়া রন্ধনে : अक्षाट्य जानिय काद्य याहे एदण्टन'। এত বলি প্ৰভূ গেলা, পণ্ডিত উঠিলা; লান করি নানা বাঞ্চন রশ্বন করিলা। মধ্যাক করিয়া প্রভু ভাইলা ভোজনে: পাদ প্রকালন করি ব্রিলা আসনে। সম্ভূত শাল্যর কলাপাতে ভূপ কৈল: कतात (जाना कति वासन कोनिटक धरिन ।

অর ব্যঞ্জােশরি ভঙ্গনী মঞ্জী: জগরাথের শিঠাপানা আগে রাথে ধরি। প্ৰভু কৰে 'বিভীয় পাতে বাড় অল ব্যঞ্জন ; তোমার আমায় একত্র আজি করিব ভোজন?। হস্ত তলি রহে প্রেড. না করে ভোলন: তবে পণ্ডিত কৰে কিছু সপ্ৰেম বচনঃ— 'অপেনি প্রসাদ'লউন পাছে মুঞি লইব: ভোমার আগ্রহ আমি কেমনে থণ্ডিব' দ ভবে মহাঞ্জ স্বথে ভোজনে ৰসিলা: বাঞ্চনের স্থাদ পাঞা কছিতে লাগিলা :---'ক্রোধাবেশে পাকের ঐছে হয় এত স্থাদ ১ এওত জানিয়ে তোমার ক্ষের প্রসাদ। আপনি থাইবেন কৃষ্ণ তাহার লাগিয়া ছোমার হত্তে পাক করান উত্তম করিয়া **।** ঐচে অমৃত অলু কৃষ্ণে কর সমর্প : তোমার ভাগ্যের সীমা কে করে বর্ণন' 🕈 পণ্ডিত কৰে 'যে খাইবে দেক পাককৰ্তা : আমি সব কেবল মাত্র সামগ্রী আছর্জ।'। পুনঃ পুনঃ পণ্ডিত নানা ব্যঞ্জন পরিকেশে : ভরে কিছু না বলেন প্রভু থায়েন ছরিকে। আগ্রহ করিয়া পণ্ডিত করাইল ভোজন : আর দিন হৈতে ভোজন হৈল দশগুণ। বার বার প্রভুর হয় উঠিবারে মন: পুনঃ দেই কালে পণ্ডিত পরিবেশে ব্যঞ্জন ৷ কিছু বলিডে নারেন প্রভ খারেন ভরাসে : न। थाटेल खश्रमानम कतिरव खेलवारम । তবে প্রভু কছেন করি বিনর সন্মান : 'দশগুণ খাওয়াইলে, এবে কর সমাধান'। তবে মহা প্ৰভু উঠি কৈল আচমুন ; পণ্ডিত আনি দিল মুখবাস মাল্য চল্পন ।

वसानीना।

ठम्मनांति मध्ये शक्त विना (महे जात्म: 'আমার আগে আজি তমি করছ ভোজনে'। পণ্ডিত কৰে প্ৰেক্ত বাই করুন বিশ্ৰাম ; মুঞি এবে প্রসাদ লইব করি সমাধান। রম্বরের কার্য্য করিয়াছে রামাই রম্বনাথ: ইহা সবার দিতে চাহি কিছু বাঞ্চন ভাত । প্ৰাভু কৰে পোষিনা। ভূমি ইচাই রহিবে: পণ্ডিত ভোজন কৈলে আমারে কচিবে' ৷ এত কহি মহাপ্রভু করিলা গমন। গোবিন্দেরে পঞ্জিত কিছু কছেন বচন :--'ত্মি শীল্ল যাহ করিতে পাদ সম্বাহণে : কহিও পণ্ডিত এবে বসিল ভোজনে। তোমার প্রভুর শেষ রাশিব ধরিয়া: প্রভু নিদ্রা গেলে তুমি ধাইও আসিরা।' রামাই নকাই আবে গোবিকারঘুনাথ; সবারে বাঁটিয়া দিল প্রভর বাঞ্চন ভাত। আপনি প্রভার শেষ করিল ভোজন; তবে গোৰিন্দেরে প্রভু পাঠাইল পুন:। 'দেধ জগদানন্দ প্রসাদ পায় কি না পায়: শীল জাসি সমাচার কভিবে আমায়'। গোবিনা আসি দেখি কহিল পণ্ডিভের ভোজন: ভবে মহাপ্রভু স্বাস্থ্যে করিল শরন। জগদানদে প্রভার প্রেমা চলে এই মতে: সতাভাষা ক্লেফ যেন শুনি ভাগবতে। জগদানদের সৌভাগ্যের কে কহিবে সীমা ? क्षत्रणानत्त्रत्त्व त्री आत्रात्र विष्ट्रे छेपमा। क्रशमानामात्र ८ श्रम विवर्ष छत्न (यह कन : প্রেমের স্থলপ আন্তান পার প্রেমধন ৷

ব্রীরপ রতুনাধ পদে যার আশ । চৈতক্ত চরিতামূত কহে কৃষ্ণদাস।

ইতি ঐতিচতক্সচরিতামতে অস্ত্যবতে জগদানন্দতৈল-ভঞ্জনং নাম দাদশপরিচেদং॥ ১২ ॥

ত্ররোদশ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকরিস্থ।

কৃষ্ণবিচেছদজাতার্ত্ত্যা ক্ষীণে চাপি মনস্তদ্ । দধাতে ফুল্লতাং ভাবৈ র্যস্ত তং গোরমাঞ্জয়ে ॥ ১২২ ॥

'বস্তা' প্রক্রিক করতা 'মনন্তন্' মনত তম্ভ ছে 'ক্রুবিছেদ জাতার্ড্যা' ক্রমতা বিছেদেন জাভয়া আর্ত্ত্যা পীড়য়া 'ক্রীণে' ভবজঃ; 'অপি' 'চ' পুনঃ 'ভাবৈঃ' 'কুলতাং' প্রফ্রতাং 'দধাডে' ধারয়ভঃ; 'ভং' 'পৌরং' জহং 'আ্রারে'। ১২২।

কৃষ্ণবিরহজ পীড়ার বাঁহার মনস্তমু ক্ষীণ হইরাও ভাব-সমূহে চির প্রফুল্ল থাকিড; আমি দেই সোরচন্দ্রের শ্রণা-পন হই। ১২২।

জর জয় ঐটচতন্ত । জয় নিত্যানক ।
জয়াবৈত্তক্ত । জয় কৌর ভক বৃক্ষ ।
হেনমতে মহাপ্রভু অগলানক গলে ।
রুক্ষের বিচ্ছেল ছুংখে কীণ মন কার ;
ভাবাবেশে তর্প্রভু অস্ক্রিত হয় ।
কলার শরলাতে শয়ন কীণ অতি কার ;
শরলাতে হাড় লাগে ব্যথা হয় গায় ।
দেখি সব ভক্তপণ মহাত্থেশায় ;
সহিতে বা পারি অপদানক স্ক্রিল উপায় ।

স্তুর বস্তু আনি গিরি দিয়া রদাইল: সিমূলের তুলা দিয়া ভাষা পুরাইল। धरे जुनिवानीम त्रावित्मत शास्त्र शिन ; 'প্ৰভূকে শোরাইও ইহার' ভাহারে কহিল। স্বরূপ গোঁসাঞিকে কছে জগদানক; 'আজি আপনি যাঞা প্রভুকে করাইও শরন'। नंत्रत्व काल चक्रण छाराहे बहिना : जूनि वानीम रमि अजु ट्यांशविष्ठे देशना। গোবিলেরে পুছে 'ইহা করাইল কোন জন ?' জগদানদের নাম ভনি সম্ভোচ হৈল মন। (शावित्मात कहि (महे जुलि मृत देकल; কলার শবলা উপর শবন কবিল। শ্বরূপ কছে 'তোমার ইচ্ছা, কি কহিতে পারি ? খয়া উপেক্ষিলে পশুষ্ঠ হঃথ পাবে ভারি'। প্রভু কছেন খাট এক আনহ পাড়িভে: জগদানক চাহে আমার বিষয় ভুঞাইতে। সন্ন্যাসী মাহুৰ আমার ভূমিতে শরন; আমারে থাট তুলি বালীশ ! মন্তক মুখন !' স্থারূপ গোঁসাঞি আসি পণ্ডিতে কহিল: ভ নিরা জগদানন মহাছ: ব পাইলু। স্থান্ত প্রাসাঞি তবে স্ফল প্রকার: कालीत क्षमाक जानिम ज्ञाहर নখে চিরি চিরি ভাহা অতি হক্ষ কৈল; প্রভুর বহির্বাদেতে বে সব ভরিল। बहे यक करे देवन उपन शाप्रत ; चनीकांत्र देवन श्रेष्ठ चानक राज्या । তাতে শরন করে প্রভু দেখি দবে স্থী; क्रमानक ভिতর বাছিরে মহাহংবী। शूर्व्स समानात्मन हेक्हा नुन्नावन गहिए ; श्रेष्ठ बाका ना देवन छोटड ना भारत हिन्छ।

ভিডরের জোধ ছাব প্রকাশ না কৈল; মধুরা বাইতে প্রভৃত্বানে আঞ্চা বার্গিল। প্ৰভু কহহ' 'মথুৱা বাবে আমাৰ ক্ৰোধ কৰি; আমাৰ লোষ লাগাইরা হইবে ভিগারী'। জগদানক কছে প্রভার ধরিবা চরণ : 'भूर्स रेट्ट हेक्का त्यात वाहेट मुन्तावन। প্রভু আজা নাহি ডাডে:না পারি যাইডে; वाद जाका एक जयबा वाहेव निक्तिक'। প্রভু প্রতি ভার গমন না করে অস্থীকার; किंहा अज़त ठींहे जाका माल बात बात। चत्र (बाराहेरक शक्षिक देवन निर्वस्त : 'পূর্ব হৈছে রুক্ষাবন বাইতে যোর মন। প্ৰভূ আজা বিনা তাঁহা ৰাইতে না পারি; थरव चांका ना त्कन त्वारव 'तकारब वाठ' वकि'। সহজেট মোর জাঁহা বাইতে মন চয় : প্রভূ আজা শঞা দেহ করিয়া বিনয়'। তবে সত্ত্রপ গোঁলাই কহে প্রভুর চরণে; 'क्षमानरमात्र हेक्का वर्ष बाहेरछ बुन्तावरन । ভোমার ঠাই আৰু। তিহো মাগে বার বার; আঁকা দেহ মধুরা দেখি আইদেন একবার। काहेटक दम्बटि देयाह त्रीकृत्मत्म साम ; टेज्ड धकवांत्र बन्सावन दम्थि आत्र'। স্বরূপ গোঁদাইর বোলে এড়ে আজা দিলঃ व्यवनान्त्व त्यांगादेश काँद्र निकारेन । 'वाजानती भर्याच चक्रत्य बादव भरव : आदि नावशादन वादन कती आदि नादश । ... কেবল গৌড়িরা পাইলে ঘাটপাড় করি বাজেঃ नव जूढि वास्ति बार्थ चार्रेटक विद्याद्य । मधुता त्रारण गमाचन गरक त्रविवा ; मधुनात यांची नरवत प्रतंत समिता।

200

'দুরে রহি ভক্তি করিও সজে নারহিবা; ভাসবার আচার চেটা লইতে নারিবা। সনাজনের সঙ্গে কবিও বন দবখন : স্মাতনের সৃষ্ণ না ছাডিবে এককণ। শীঘ আসিও, ভাঁহানা রহিও চিরকাল: গোবৰ্দ্ধনে না চডিও দেখিতে গোপাল। আমিও আসিভেচি কহিও স্নাভনে : আমার ভরে একস্থান করেন বন্দাবনে'। था उर्वा कामानाम देवन वानिक्रन; জ্বপদাননদ চলিলা প্রভুর বনিদয়া চরণ। সব ভজ্জগণ ঠাঁই আজো মাগিলা; বন পথে চলি চলি বাবাণসী আইলা। ভপন মিশ্র, চক্রশেখর, দোঁহারে মিলিলা: তাঁর ঠাঁই প্রভুর কথা সকল শুনিলা। মথবায় আসি মিলিলা সনাতনে: ছুই জনের সঙ্গে দোঁহে আননিত মনে। সনাতন করাইল জাঁরে দ্বাদশাদি বন: গোকলে রহিলা দোঁতে দেখি মহাবন। সনাতনের গোকাতে দৌহে রহেন এক ঠাই: পণ্ডিত পাক করেন দেবালয়ে যাই। সনাতন ভিকা করেন যাই মহাবনে : কভ দেবালয়ে, কভু ব্রাহ্মণ সদনে। সনাতন পণ্ডিতের করে সমাধান: মহাবনে ভিকাকরি দেন আলে পান। এক দিন স্নাত্নে পণ্ডিত নিম্ফ্লিল: নিতাকতা করি ভিঁহ পাক চডাইল। মকুন্দ সরস্বতী নাম সন্ন্যাসী মহাজনে ; এক বহিবাস তিঁহো দিল সনাতনে। সনাতন সেই বস্তুমস্তকে বান্ধিয়া: জগদানদের বাস ছারে বসিলা আসিয়া।

রাতল বস্তু দেখি পণ্ডিত প্রেমাবিষ্ট হৈলা; মহাপ্রভুর প্রসাদ জানি তাঁহারে পুছিলা :--'কাঁহাতে পাইলে এই রাতৃল বসন १' 'মুকুল সরস্বতী দিলেন' কহে স্নাতন। শ্বনি পণ্ডিভের মনে ক্রোধ উপজিলা: ভাতের ইাভি হাতে লঞা মারিতে আইলা। সনাতন ভাবে জানি লজ্জিত হইলা। বলিতে লাগিলা পণ্ডিভ, হাণ্ডি চুলাভে ধরিলা :---'তুমি মহাপ্রভুর হও পার্বদ প্রধান; তোমা সম মহাপ্রভুর প্রিয় নাহি আন। অন্ত সর্যাসীর বস্ত্র ড্মি ধর শিরে; কোন ঐছে হয় ? ইহা পারে সহিবারে' ? সনাতন কহে 'সাধু পণ্ডিত মহাশয় ! চৈতলোর ভোমা সম প্রিয় কেছ নয়। ঐছে হৈত্ত নিষ্ঠা যোগ্য ভোমাতে: ত্মি না দেখাইলে ইহা শিখিব কি মতে ? যাহা দেখিবারে বস্তমস্তকে বান্ধিল: সেই অপূর্ব প্রেম এই প্রত্যক্ষে দেখিল। রক্ত বস্ত্র বৈষ্ণবের পরিতে না যুয়ায়: কোন প্রবাদীকে দিব, কি কাষ উহায় ?' পাক করি জগদানন চৈতত্তে সমর্পিল: ছুই জন বসি তবে প্রসাদ পাইল। थ्यमान भारे इहे कात देवन चानिकत; टिज्ल विद्रार (मार्ट कदिन कुन्मन। এইমত মাস ছই রছিলা বুন্দাবনে ; চৈত্তা বিরহ জঃথ না যায় সহনে। মহাপ্রভুর সন্দেশ কহিল স্নাভনে; 'আমিহ আদিভেছি, রহিতে করহ এক স্থানে।' জগদানন পণ্ডিত তবে আজা মাগিল: जबांकब लोखान किह तक (यह विक.

রাসস্থলীর বালু আরে গোবর্দ্ধনের শিলা: ভক পক পীলুফল আবে গুঞামালা। জগদানদ পণ্ডিত চলিলা সব লঞা: व्याकृत देशना मनाजन जादा विषाय पिया। প্রভুর নিমিত ^{*}এক স্থান বিচারিল : দাদশাদিতা ঠিলায় এক মঠ পাইল। সেই স্থান রাখিল গোঁদাই সংস্কার করিয়া: মঠের আগে রাখিল এক চালি বান্ধিয়া। শীঘ্র চলি নীলাচলে গেলা জগদানন ; সব ভক্ত সহ গোঁসাই প্রম আনেন। প্রভুর চরণ বন্দি স্বারে মিলিলা; মহাপ্রভু তাঁরে দৃঢ আলিঙ্গন কৈলা। সনাতনের নামে পণ্ডিত দণ্ডবৎ কৈল: রাসহলীর ধূলি আদি সব ভেট দিল। नव खवा ताथित्वन, शीलू कित्वन वाँछिया ; वुन्नावरनव कन विन थाहेन कहे हुआ। যে কেহ জানে আঁঠি চুষিতে লাগিল; যে না জানে গৌড়িয়া পীলু চাবাইয়া থাইল। মুখে তার ঝাল গেল, জিহ্বায় পড়ে লালা; বুন্দাবনের পীলু খাইতে এই এক লীলা। জ্বলান লের আগেমনে স্বার উলাস: এই মতে নীলাচলে প্রভুর বিলাস। এক দিন প্রভুষমেশ্বটোটা যাইভে; দেইকালে দেবদানী লাগিলা গ্লাইভে। (১) ৩০জেরীরাগ লঞা সুমধ্রস্বরে: ্রীত্রগোবিন্দ পদ গায় জগমোহনেরে। দুরে গান শুনি প্রভুর হইল আংবেশ; স্ত্ৰী পুৰুষ কেবা গায় না জানি বিশেষ

১ दिवलात्री---अग्रहाथमन्त्रितः गात्रिका जीगन।

তাঁরে মিলিবারে প্রভু আবেশে ধাইলা; পথে সিজের বারি হয় ফুটিরা চলিলা। অকে কাঁটা লাগিল, কিছু না জানিল; আক্ষের্জে গোবিন জাঁর পাছেতে ধাইলা। ধাইরা যারেন প্রভু, জ্রী আনছে অর দুরে: দ্বীগান বলি গোবিন্দ প্রভু কৈল কোলে। ফ্রীনাম শুনিভে প্রভর বাহ্ন হইলা: পুনরপি সেই পথে বাছড়ি চলিলা। প্রভ কহে 'গোবিন। আজি রাখিলে জীবন; স্বীপরশ হৈলে হৈত আমার মরণ। এ ঋণ শোধিতে আমি নারিব ভোমার'। (गाविन करह 'क्षां शाथ बार्यन, मू है (कान हांब' ? প্রভুকহে 'গোবিনা! মোর সজে বহিবা; বাঁহা তাঁহা মোর রক্ষার সাবধান হৈবা'। এত বলি উলটি শুভু গেলা নিজ স্থানে; শুনি মহাভ্য পাইল সকপাদি মনে। এথা তপন মিশ্রের পুত্র রঘুনাথ ভট্টাচার্য্য; (১) প্রভুকে দেখিতে চলিলা ছাড়ি সর্ব্ব কার্যা। কাশী হইতে চলিলা ভিঁহো গৌড় পথ দিয়া; সক্ষে সেৰক চলে ভারে ঝালি সাজাইয়া। পথে তাঁরে মিলিলা বিখাস রামদাস: বিখাদ খানার কায়ত্তিহো রাজবিখাদ। সর্মশাস্তে প্রবীণ, কাব্য প্রকাশ অধ্যাপক : পরম বৈষ্ণ্র, রঘুনাথ উপাসক। অষ্ট প্রহর রামনাম জপে রাত্রি দিনে;

সক্রোগী চলিলা জগ**রাথ দরশনে।** রব্নাথ ভট্ট সনে পথেতে মিলিলা; ভটের ঝালি মাথে করি বহিয়া চলিলা।

১ রঘুনাথ ভটচোর্যা—মধ্যঃ ১৭ শঃ পরিছেদ ৩৮৮ পুঃ দেখ।

নানা সেবা করি করে পাদ সম্বাহন; ভাতে রঘুনাথের হয় সঙ্কুচিত মন। 'ভূমি বড় লোক পণ্ডিভ মহাভাগবত: সেবা না করিছ স্থাপ চল মোর সাথ'। রামদাস কছে 'আমি শৃত্র অধ্য; ব্রাহ্মণের দেবা এই মোর নিজ ধর্ম। সংকাচ না কর তুমি তোমার আমি দাস; ভোমার সেবা করিতে হয় হদয়ে উল্লাস'। এত বলি ঝালি বছেন, করেন সেবনে : রখুনাথের তারক মন্ত্র জ্পেন রাত্রি দিনে। এইমতে রঘুনাথ আইলা নীলাচলে; প্রভুর চরণে যাই মিলিলা কুতৃহলে। দও প্রণাম করি ভটুপড়িলা চরণে: প্রভু ব্যুনাথ জানি কৈল আলিঙ্গনে। মিশ্র শেখরের দত্তবৎ জানাইলা; মহাপ্রভু তাঁসবার বার্তা পুছিলা। 'ভাল হৈল আইলা, দেখ কমললোচন; আজি আমার এথা করিবে প্রসাদ ভোজন'। (शावित्मद्र कहि अक वात्रा (मख्याहेन; স্বরূপাদি ভক্তগণ সনে মিলাইল। এইমত প্রভুসঙ্গে রহিলা অইমাস; দিনে দিনে প্রভুর কুপায় বাড়য়ে উল্লাস। মধ্যে মধ্যে মহাপ্রভুব করেন নিমন্ত্রণ; ঘর ভাত করে আমার বিবিধ ব্যঞ্জন। র্ঘুনাথ ভট্ট পাকে অভি স্থুনিপুণ; যেই রাখের সেই হয় অমৃতের সম। পরম সস্তোষে প্রভু করেন ভোজন; প্রভুর অবশিষ্ট পাত্র ভট্টের ভক্ষণ। রামদাস বিশাস यদি প্রভুরে মিলিলা; মহাপ্রভু অধিক তারে কুপা না করিলা।

অন্তরে মুমুক্ষ তিঁছো বিদ্যাগকবিল: স্কাচিত্তভাতো প্রভু স্ক্তিভ ভগবান। রামদাস কৈল তবে নীলাচলে বাস: পটনায়কের গোষ্ঠিকে পডায় কাব্যপ্রকাশ। অইমাস রহি প্রভু ভটে বিদায় দিল; 'বিবাছ না করিও' বলি নিষেধ করিল। 'বন্ধ মাতা পিভার যাই করছ দেবন: বৈকাৰ পাশ ভাগৰত কর অধ্যয়ন। পুনরপি একবার আসিও নীলাচলে'। এছে বলি কঠমালাদিল ভার গলে। আলিখন করি প্রভু বিদার তাঁরে দিলা: প্রেমে গরগর ভট কান্দিতে লাগিলা। স্থাপ আদি ভক্ত ঠাঁঞি আজল মাগিয়া: বারাণদী আইল ভট্ট প্রাম্ভ আজ্ঞা পাঞা। চারি বৎসর ঘরে পিতা মাতা সেবা কৈলা: বৈশ্বৰ পণ্ডিত সাঁঞি ভাগৰত পডিলা। পিতা মাতা কাশী পাইলে উদাসীন হঞা: পুন: প্রভুর ঠাঁঞি আইলা গৃহাদি ছাডিয়া। পূর্ববৎ অটমান প্রভুপাশে ছিলা; অষ্টমাস বহি প্রভুপুন: আজ্ঞাদিলা। 'আমার আভেরে রখুনাথ যভে বুলবেনে: ভাঁহা যাই রহ রূপ স্নাত্ন সংলে। ভাগৰত পড় সদা লও কৃষ্ণনাম; অচিরে করিবেন কুপা ক্লফ ভগবান'। এত বলি প্রভু তাঁরে আলিক্সন কৈলা: প্রভুর রুপায় রুফ্তপ্রেমে মত্ত হৈলা: জগরাথের চৌদ হাত তুলদীর মালা: ছুটাপানবিড়া মছে। হেলবে পাঞা ছিলা। সেই মালা ছুটাপান প্রভু তাঁরে দিলা; উইদেব করি মালা ধরিয়া রাখিলা।

প্রভু ঠাই আজা লঞা গেলা বুন্দাবনে; ্তাশ্র করিলা আসি রূপ সনাভনে। রূপ গোঁসোঞির সভায় করে ভাগ্রত পঠন: ভাগবত পড়িভে প্রেমে আলায় তাঁর মন। অঞ কম্প গদগদ প্রভুর কুপাতে: নেত্ররোধ করে বাষ্পা, না পারে পড়িতে। পিকম্বর কণ্ঠ তাতে রাগের বিভাগ; এক শ্লোক পড়িভে ফিরায় ভিন চারি রাগ। ক্লফের সৌন্দর্য্য মাধুর্য্য যবে পড়ে শুনে ; প্রেমে বিহবল হয় ভবে কিছুই না জানে। গোবিল চরণে কৈল আহা সমর্পণ: গোবিক চর্ণার্বিক বাঁরে প্রাণ্ধন। নিজ শিষ্যে কহি গোবিলের মন্দির করাইল: বংশীমকর কুওলাদি ভূষণ করি দিল। গ্রামাবার্জানা ভানেন, নাক ছেন জিছবায়: কৃষ্ণকথা পূজাদিতে অষ্টপ্রহর যায়। বৈষ্ণবের নিন্দ্য কর্ম নাহি শুনে কাণে : সবে কৃষ্ণ ভজন করে এই মাত্র জানে। মহাপ্রভুর দত্ত মালা মননের কালে; প্রসাদ কডার সহ বান্ধি লন গলে। মহাপ্রভুর কুপায় কৃষ্ণ প্রেম অনর্গল; এইত কহিল তাঁতে চৈতন্ত কুপাফল। জগদানদের কহিল বুনদাবনে আগমন; তার মধ্যে দেবদাসীর গান প্রবণ। মহাপ্রভুর রঘুনাথে কুপা প্রেমফল ; এক পরিচেচদে তিন কথা কহিল সকল। বে এই সব কথা ভলে শ্রদা করি; छाटत क्रकाटबायमन तमन त्रीत्रहति।

শ্রীরণ রব্নাথ পদে যার আশ;

চৈতল্লচরিতামৃত কংহ রক্ষণাগ।
ইতি শ্রীচৈতল্যচরিতামৃতে অন্ত্যুথণ্ডে জগদানন্দ র্ন্দাবন গমনং নাম ত্রয়োদশ পরিচেছদঃ ॥১৩॥

চতুর্দশ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থা।

কৃষ্ণবিচ্ছেদবিভ্রান্ত্যা মনসা বপুষা ধিয়া। যদ্যদ্যধ্যও গোরাঙ্গন্তলেশঃ কথ্যতে হধুনা॥১২৩॥

'(গৌরাঙ্গঃ' 'কৃষ্ণবিচ্ছেদ বিভ্রাস্ত্যা' করণয়া 'মনসা' 'বপুষা' শরীরেপ 'ধিয়া' বৃদ্ধিযোগেন 'যদ্যৎ' ভাবচেষ্টাদিকং 'ব্যধত্ত' প্রকটীচকার ; 'অধুনা' সম্প্রতি শেষগ্রন্থে 'তলেশঃ' ভেষাং অলাংশঃ 'কথ্যতে' ॥১২৩॥

শ্রীকৃষ্ণবিরহজনিত ভ্রান্তিবশতঃ শ্রীগোরাঙ্গ মনে, শরীরে এবং বৃদ্ধিতে যে সকল ভাব চেন্টাদি প্রকাশ করিয়াছিলেন; সম্প্রতি গ্রন্থশেষভাগে তাহারই কিছু কিছু বর্ণনা করা যাইতেছে ॥১২৩॥

জয় জয় ঐ ১০ত ছ । য়য়ং ভগবান ;
জয় জয় ৻গৗয়চল্ল ! ভক্তগণ প্রাণ ।
জয় জয় নিতানন্দ ! ১৮ত ছ জীবন ;
জয়াহৈতাচার্য ! জয় ৻গৗয় প্রিয়তম !
জয় য়য়প জীবাসাদি প্রস্কু ভক্তগণ !
শক্তি দেহ করি যেন হৈড ছ বর্ণন ।
প্রভুর বিরহোমাদ ভাব গন্তীর ;
ব্রিতে না পারে কেছ যদ্যপি হয় ধীর ।
ব্রিতে না পারি যাহা বর্ণিতে কে পারে ?
সেই ব্রে, বর্ণে, চৈড ছ শক্তি দেন যারে ।
য়য়প গৌসাঞি আর রম্নাথ দাস ;
এ দোঁহার কড়চাতে এ লীলা প্রকাশ।

েবে কালে এই তুই রহে মহাপ্রভুর পাশে; আর সব কড়চাকর্ত্তা রহে দুরদেশে। ক্ষণে ক্ষণে অনুভবি এই গুই জন: সংক্ষেপ বাছল্যে করে কড্চা গ্রন্থন। স্বরূপ স্ত্রকর্তা, রঘুনাথ বুত্তিকার; তার্থবাছল্য বৈণি পাঁজি টীকা ব্যবহার। তাতে বিখাস করি তেন ভাবের বর্ণন; হইবে ভাবের জ্ঞান, পাইবে ক্রেমধন। কৃষ্ণ মথুরায় গেলে গোপীর বে দশা হইল; কৃষ্ণবিচেছদে প্রভুর সে দশা উপজিল। উদ্ধব দর্শনে থৈছে রাধার বিলাপ: करम करम टेहन। প্রভুর সে উন্মাদ বিলাপ। রাধিকার ভাবে প্রভুর দদা অভিমান; সেই ভাবে আপিনাকে হয় রাধা জ্ঞান। দিব্যোঝাদে ঐছে হয়, কি ইহা বিশ্বয় ? অধিরাটভাবে দিব্যোনাদ প্রলাপ হয়।

তথাহি উজ্জ্বলনীলমণো স্থায়িভাবে সপ্ততিংশাধিক-শতশ্লোকে জ্রিরপগোস্বামিবাক্যং

> 'এতস্থ মোহনাথ্যস্থ গতিং কামপুরপেয়ুয়ঃ ভ্রমাভা কাপি বৈচিত্রী দিব্যোশ্মাদ ইতীর্ঘ্যতে। উদযুর্গাচিত্রজল্পাদ্যা স্তদ্ভেদা বহবো মতাঃ'॥ ১২৪॥

'কামপি' অনির্কাচনীয়াং 'গভিং' দশাং 'উপেয়ুবং' প্রাপ্তবক্ত 'এতন্ত' বৈশহনাখ্যন্ত' অধিরুদ্দহাভাবন্ত 'অমাভা' অনোৎপাদনকারিণী 'কাপি' অনির্কাচনীয়া 'বৈচিত্রী' 'দিব্যোন্মাদঃ' 'ইভি' 'ঈর্যাতে' কথ্যতে। 'উদ্ঘৃর্ধাচিত্রজন্মাদ্যাঃ' 'বহবঃ' 'তডেদাঃ' তন্ত দিব্যোন্মাদন্ত বহবঃ প্রকারভেদাঃ 'মভাঃ' কথিভাঃ। মধ্যলীলায়াঃ অয়োবিংশভিভমপরিচ্ছেদে পঞ্চাশীত্যধিকপঞ্চশভত্রসপৃষ্ঠায়াং ব্যাশাভান্তস্যক্রেয়া॥১২৪॥

অধিরঢ় মহাভাবের মোহনাখ্যভাব কোন অনিকাচনীয়

অবস্থা প্রাপ্ত হইলে গে অমমরী বৈচিত্রী উৎপাদন করে; তাহাকেই দিব্যোশ্যাদ বলা যার। উদ্ঘূর্ণা চিত্রজ্ঞার প্রভৃতি ইহার আবার অনেক প্রকার ভেদ আছে। মধ্য-লালা ২০ পরিচেছদে ৫৮৫ পৃষ্ঠায় ইহার স্বিশেষ ব্যাখ্যা দেখিতে পাওয়া যাইবে॥ ১২৪॥

এক দিন মহাপ্রভ করিয়াছেন শরন; ক্ষারাসলীলাকরে দেখেন স্থপন। ত্রিভঙ্গ স্থানর দেহ মুরলীবদন; পীড়াম্ব ব্যুমালা মদ্মমোহন। মণ্ডলীবন্ধে গোপীগণ করেন নর্ভন: मत्था वार्धाम् बोर्ट उरक्रम् बन्द । দেখি প্রভু সেই রসে আবিষ্ট হইলা: বুন্দাবনে কৃষ্ণ পাইনু এই জ্ঞান কৈলা। প্রভার বিলম্ব দেখি গোবিন্দ জাগাইলা: জাগিলে স্থা জ্ঞান হৈল, প্রভু ছ: বী হৈলা। দেহাভাগে নিভা কুতা করি সমাপন: কালে যাই কৈল জগরাথ দর্শন। যাবৎ কাল দর্শন করে গরুডের আগে: প্রভুর আগে দর্শন করে লোক লাখে লাখে। উডিয়া এক স্ত্রী ভিডে দর্শন না পাঞা: গরুভে চড়ি দেখে প্রভুর স্কল্পে পদ দিয়া। দেখি গোবিন্দ আন্তে বান্তে দেই স্ত্ৰীকে বৰ্জিল: ভারে নামাইতে প্রভ গোবিদে নিষেধিল। 'আদিবভা৷ এই জীকে নাকর বর্জন: করুক যথেষ্ট জগল্পাথ দরশ্ম। আত্তে ব্যক্তে সেই নারী ভূমিতে নামিল: মহাপ্রভুকে দেখি তাঁর চরণ বন্দিল। ভার অতি দেখি প্রভু কহিতে গাসিলাক 'এত ভার্ছি কগরাথ আমারে না বিলা

'জগন্নাথে আবিষ্ট ইহার ভন্ন মন প্রাণে; (मात करका शक निवारक खारा नाहि खारन। অহো ! ভাগাবতী এই, বন্দি ইহার পার: ইহার প্রদাদে ঐছে আর্ত্তি আমার বা হয়। পূর্বে আমি ধবে কৈল জগরাথ দরশন; कश्रवाथ (प्रथि माकार उटकस्मनम्न। স্থাপে দর্শনাবেশে ভজাপ হৈল মন: যাহা তাঁহা দেখি সর্বত মুরলী বদন'। এবে যদি স্ত্রীকে দেখি প্রভুর বাহ্ন হৈল; জগলাথ বলরামের স্থরূপ দেখিল। कुक्रक्का (मधि कुक अहर देश मन ; काँ इन कुरू कि एवं वाहिनाम १ कें हा वृन्तः वन १ व्याख तक शतारेना, जेरह वाध देशना ; বিষয় হইয়া প্রভু নিজ বাঁদা আইলা। ভূমি উপর বসি নিজ নথে ভূমি লিখে; অঞ্পঙ্গা নেত্রে বহে কিছুই না দেখে। পোইছু বুলাবননাথ, পুনঃ হারাইছু; (क त्यांत्र निल्क कुछ ? काँहा मुक्कि चाहेबू? ? স্বপ্নাবেশে প্রেমে প্রভুর গর গর মন ; বাহ্য হৈলে হয় যেন হারাইত্থন। উন্নভের আয়ে প্রভুকরে গান নৃতা; দেহের সভাবে করে স্নান ভোজন কভা। वाि दिश्ल चक्रश वांभानत्म नकाः আপন মনের ভাব কহে উঘারিয়া। তথাহি গোস্বামিপাদোক্তশ্লোকঃ। 'প্রাপ্তপ্রণফীচ্যুত্বিত আত্মা ययो विवादनाङ्गवि उदमर्दशहः গুহীতকাপালিকধর্মকো ষে

जुन्मायनः *स्वि*टिख्यानिकाकुन्मः ॥ ১২৫ ॥

'শব্দ প্রমানন্দী প্রতি চৈত্ত হাকাং। 'মে' মম 'আয়া' 'গৃহীভকাপালিকধর্মকঃ' গৃহীতঃ কাপালিকভা যোগিনঃ ধর্মো যেন স ভাদৃশঃ সন্ 'বৃন্দাবনং' কুঞ্বিহারস্থানং 'ঘ্যৌ'। কীদৃশঃ আয়া ? 'প্রাপ্তপ্রতীচ্তিবিভঃ'
প্রাপ্তঃ সন্ প্রণষ্টঃ অচ্যভ এব বিভঃ রত্বং যেন সঃ। পুনঃ 'বিষাদোজ্বিভদেহগেহঃ' বিষাদেন কুঞ্বিরহেণ হেতুনা উজ্বিভঃ ত্যক্তঃ দেহ এব গৃহং যেন
সঃ। পুনঃ 'ব্রেজির শিষা বৃন্দং' শব্দ ইজিরমনেব শিষাবৃন্দং যতা সঃ॥১২৫॥

স্বরূপ রামানন্দকে শ্রীচৈতন্য বলিতেছেন :—আমার আত্মা কৃষ্ণরত্ম হারাইরা দেহরূপ গৃহ পরিত্যাগ করতঃ কাপালিকের ধর্ম অবলম্বন করিয়া ইন্দ্রিয় রূপ শিষ্যবৃন্দ সঙ্গে বৃন্দাবনে গমন করিয়াছে॥ ১২৫॥

যথারাগঃ।

প্রাপ্ত রত্ন হারাইয়া, ভার গুণ সঙ্রিয়া, মহাপ্রভুদস্তাপে বিহ্বল: রায় স্বরূপের কর্তে ধরি, করে 'হাহা ! হরি ! হরি' ! देशिया (शिल इहेल हिंपण। 'ভন বান্ধব ! কুফের মাধুরী; যার লোভে মোর মন, ছাভিলেক বেদ ধর্ম. যোগী হঞা হইল ভিখারী ॥ ধা ॥ কুফলীলামগুল. শুদ্ধ কুণ্ডল. গড়িয়াছে শুক কারিকর; সেই কুগুল কাণে পরি, ভৃষণলাউ থালি ধরি, আশাঝুলি ক্ষরের উপর। চিন্তা কাছা উড়ে গায়, ধূলি বিভৃতি মলিন কায়, 'হাহা ! কৃষ্ণ' প্রলাপ উত্তর : উদ্বেগ স্বাদশ হাতে, লোভের, বুলনী মাথে, ভিক্ষভোবে ক্ষীণ কলেবর। वाम एकानि यानिश्न, कृष्णचा नित्रअन, ব্ৰে ভার যত লীলাগণ:

ভাগবভাদি শাস্ত্রগণে, করিয়াছেন বর্ণনে, ক্ষেত্রজ্ঞা পড়ি অফুক্ষণ।

দশেক্রিয় শিষ্য করি, "মহবোউল নাম ধরি, শিষ্য লঞা করিফু গমন ;

মোর দেহ সমদন, (১) বিষয় ভোগ মহাধন,

শব ছাড়ি গেলা বুন্দাবন।

বুন্দাবনে প্রজাগণ, যত স্থাবর জন্ম,

বুক্লতা গৃহস্থ আশ্ৰমে ;

ভার ঘরে ভিকাটন, ফল মূল প্রশেন, এই বৃত্তি করে শিধাসনে।

কৃষ্ণগুণ রূপরস্, শব্দ গন্ধ পরশ্,

সে স্থা আন্বাদে গোপীগ৭;

ভাঁ'নবার গ্রান শেষে, আনি পঞ্জের শিষ্যে, সে ভিকার রাখিল জীবন।

শৃস্ত কুঞ্জ মণ্ডপ কোণে, যোগাভ্যাস রুঞ্চধ্যানে, ভাঁহা রছে লঞা শিষ্যগণ ;

ক্লফ আত্মা নিরঞ্জন, সাক্ষাৎ দেখিতে মন, ধ্যানে রাত্তি করে ফাগরণ।

मन कुछ विरयाणी, इःत्थ मन देश्ल रगाणी, ट्र विरयारणीलमा स्य;

সে দশায় ব্যাকুল হঞা, মন গেল পলাইয়া,

শৃত্ত মোর শরীর আলম'। ক্লেডর বিয়োগে গোপীর দশ দশা হয়;

সেই দশ দশা হয় প্রভুর উদয়।

তথাহি উচ্ছলনীলমণো শৃপারভেদকথনে পঞ্ষষ্টিতম-শ্লোকে শ্রীরূপগোস্বামিবাক্যং ।

'চিন্তাত্র জাগরোদেগো তানবং মলিনাসতা প্রলাপো ব্যাধিকুমালো মোহো মৃত্যুর্দ্দশা দশ'॥ ১২৬॥

^{&#}x27; ১ মোর দেহ অসদন—'ফ্রাদন' পঠিও আছে।

'कत' ममार्ज 'मनप्रमाः' कथिताः। मनप्रमाह 'िखा' देष्टेशाश्चरत চিভনং 'জাগরোবেগৌ' জাগর: নিজাভাব: উদ্বেপ: ব্যাকুলত। 'ভানবং' ক্ষীণতা 'মলিনাক্ষতা' 'প্ৰলাপঃ' অসম্বদ্ধভাষণং 'বাাধিঃ' পীড়া 'উন্মাদঃ' বাতুলতা, 'মোহঃ' মৃচ্ছা 'মৃতুঃ' স্পন্দনরাহিত্যং ॥১২৬॥

চিন্তা, অনিদ্রা, উদ্বেগ, ক্ষীণতা, অঙ্গমালিক্ত, প্রলাপ, পীড়া, উন্মন্ততা, মোহ এবং নিস্পান্দতা এই দশ্টী লক্ষণের নাম দশদশা॥ ১২৬॥

> क्री मना मनाय अञ् वाक्ति वाकिमित्न ; কভু কোন দশা উঠে স্থির নহে মনে। এত কহি মহাপ্রভুমৌন করিলা; বামানক বায় প্লোক পড়িছে লাগিলা। স্থারপ গোঁসাঞি করে কুফলীলা গান: ছুইজনে কিছু কৈল প্রভুর বাহাজ্ঞান। এইমতে অর্জরাত্তি কৈল নির্মাহণ : ভিতর প্রকোঠে প্রভুকে করাইল শয়ন। রামানক রায় ভবে গেলা নিজ বরে: স্থাপ গোঁসাই গোবিন গুইলেন স্থারে। সব রাত্রি মহাপ্রভু করে জাগরণ: উচ্চকরি করে রুঞ্চনাম সংকীর্ত্তন। শব্দ না পাঞা স্বরূপ কপাট কৈল দুরে : তিন বার দেওয়া আছে, প্রভু নাছি ঘরে। চিশ্তিত হইল সবে প্রভুনা দেখিয়া; প্রভুচাহি বুলে সবে দিয়াটি জ্বালিয়া। সিংহয়ারের উত্তর দিশার আছে এক ঠাঁঞি: তার মধ্যে পড়িয়াছে টৈতক্ত সোঁদাঞি। দেখি স্বরূপ গোঁসাই আদি আনন্দিত হৈলা : প্রভুর দশা দেখি পুনঃ চিভিড হইলা। প্ৰাভূ পড়িয়াছে দীৰ্ঘে হাত পাঁচ হয় : অচেতন দেহ, নাশায় খাস নাছি কঃ৷ '

একেক হস্ত পাদ দীর্ঘ ভিন হাত: অস্তি প্রস্থিতির, চন্দ্র আছে মাত্র ভাত। হস্ত পাদ গ্ৰীবা কটি অস্তি স্থি বভ: একেক বিভক্তি ভিন্ন হইয়াছে ভত। চর্মমাত্র উপরে সন্ধির আছে দীর্ঘ হঞা; ছঃৰিভ হইলা সবে প্ৰভুকে দেখিয়া। মুখে লালা ফেণা প্রভুর উত্তান নয়ন; দেখিয়া সকল ভক্তের দেহ ছাড়ে প্রাণ। স্বরূপ গোঁসাই ভবে উচ্চ করিয়। ; প্রভুর কাণে কৃষ্ণনাম কছে ভক্ত লঞা। বহু ক্ষণে কৃষ্ণনাম হৃদ্যে পশিল; 'হরিবোল' বলি শ্রভু গর্জিয়া উঠিল। চেতন পাইতে অফি দক্ষি লাগিল; পূর্ব্ব প্রায় যথাবত শরীর হইল। এই লীলা মহাপ্রভুর রঘুনাথ দাস; চৈতন্ত স্তব করবুক্ষে করিয়াছে প্রকাশ।

তথাহি স্তবাশল্যাং চৈতহাস্তবকল্পর্কে চতুর্থ শ্লোকঃ
'কচিন্মিপ্রাবাসে ব্রজপতিস্থতস্যোক্ষবিরহাৎ
শ্লুষণ শ্রীসন্ধিত্বাদ্ধদধিকদৈর্ঘ্যং ভূজপদোঃ
লুঠন্ ভূমে কাকাবাণ্যা বিকলং গদগদবচা
ক্লদন্ শ্রীগোরাকো হুদয় উদয়নাং বদয়তি'। ১২৭ ॥

'শ্রীংগারাঙ্গং' মম 'ক্লেরে' 'উদয়ন্' নন্ 'মাং' 'মদয়তি' বিপুলং কর্ষতি; দ কিং কুর্জন্ ? 'ক্চিং' কৃষ্ণিংশিতং স্মরে 'মিপ্রাবাদে' কাশী মিপ্রভাবাদে 'ব্রন্ধতিত্বভন্ত' ক্ষণ্য 'উক্বিরহাৎ' প্রবলবিরহ্যাতনাজেতোঃ 'প্লণ্ড শ্রীসন্ধিত্বং সংবোগতং তন্মাং হেতৃভূতাং 'তৃত্ব-প্রোং' হন্তপাদরোঃ 'অধিক্টেদ্র্যাং' 'দধং' সন্; পুনঃ 'ভূমো' 'কাকা' 'বাণ্যা' 'সুঠন্' সন্; পুনঃ 'প্লণদ্বচা' ক্রণরা 'বিক্লাং' ব্ধা ভাতথাঃ 'ক্লন্ ১২০৮

কোন সময়ে কাশীমিশ্রের আলয়ে প্রীক্ষের প্রবল বিরহ্যাত্নাহেতু প্রীগোরাঙ্গের অঙ্গসন্ধিদকল শিথিল হইয়া হস্তপদ অতিশয় দীর্ঘ হইয়াছিল; তথন তিনি 'কা, কা' বলিয়া ভূমিতে অবলুঠন করিতে করিতে গদগদ বচনে ও বিকলচিত্তে কত রোদন করিয়াছিলেন। আহা! এখনও দেই ছবি হৃদয়ে উদিত হইয়া আমাকে হর্ষোমান্ত করিয়া ভূলিতেছে॥ ১২৭॥

> সিংহছারে দেখি প্রভুর বিশায় হইল . 'কাঁহা ? কর কি ?' এই স্বরূপে পুছিল। স্বরূপ কহে 'উঠ প্রভুচল নিজ ঘর ; ভথাই তোমারে সব করিব গোচর'। এড বলি প্রভ ধরি ঘরে লঞা পেল: তাঁহার অবস্থা সব কহিতে লাগিল। ভানি মহাপ্রভু বড় হৈল চমৎকার ; প্রভু কহে 'কিছু স্মৃতি নাহিক আমার। সবে দেখি হয় মোর ক্লফ বিদামান; বিহাৎ প্রায় দেখা দিয়াহয় ক্ষন্তর্ধনে'। হেনকালে জগন্নাথের পানি শব্ধ বাজিল; স্থান করি মহাপ্রভুদরশনে পেল। এইত কহিল প্রভুর অভুভ বিকার; যাহার প্রবেণ লোকে লাগে চমৎকার। लाक माहि परिष, के हू गांख नाहि उनि ; হেন ভাব ব্যক্ত করে স্থাসী চ্ডামণি। শাস্ত্রলোকাতীভ যেই যেই ভাব ইয়: ইতর লোকের তাতে না হয় নিশ্চয়। রঘুনাথ দাদের সদা প্রভু সঙ্গে ছিভি; তার মুথে তুনি লিখি করিয়া প্রতীতি।

এক দিন মহাপ্রভু সমুদ্রে বাইতে; চটক পর্বত দেখিলেন আচেষতে। গোবর্জন শৈল জ্ঞানে আবিষ্ট হইলা; পর্বত দিকেতে প্রভু ধাইরা চলিলা।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমক্ষমে একবিংশাধ্যায়ে অফীদশ-শ্লোকে শ্রীকৃষ্ণমুদ্দিশ্য গোপীবাক্যং।

> 'হস্তায়মদ্রিবলা হরিদাসবর্য্যো যদ্রামকৃষ্ণচরণস্পর্শপ্রমোদঃ মানং তনোতি সহ গোগণয়ো স্তয়ো র্যথ পানীয় সূযবস কন্দর কন্দমূলৈঃ'॥ ১২৮॥
> টীকা ও ব্যাখ্যা মধ্যঃ ২২২ শ্লোঃ ৪০৭ পৃঃ দেব ॥১২৮॥

> > এই শ্লোক পড়ি প্রভু চলে বায়ু বেগে; গোবিন্দ ধাইল পাছে নাফি পায় লাগে। ফুকার পড়িল, মহাকোলাইল হৈল; যেই থাঁহা ছিল সেই উঠিয়া ধাইল। স্থরপ, জগদানন্দ, পণ্ডিভ গদাধর; রামাই, নন্দাই, নিলাই, পণ্ডিত শঙ্কর। পুরী ভারতী গোঁদাই আইলা দিয়ুতীরে; ভগবান আচার্য্য থঞ্জ চলিলা ধীরে ধীরে। প্রথমে চলিলা প্রভু ষেন বায়ুগতি; স্তমভাব পথে হৈল, চলিতে নাহি শক্তি। প্রতি রোমকূপে মাংস ত্রণের আকার: ভার উপরে বোমোদগম কদম্প্রকার। প্রতি রোমে প্রস্থেদ পড়ে রুধিরের ধার; কণ্ঠে ঘর্ষর, নাছি বর্ণের উচ্চার। দট নেত ভৱি অবশ্বহয়ে অংপার: সমুদ্রে মিলিলা যেন গঙ্গা যমুনা ধার। ২৯

বৈবৰ্ণশেল্প প্ৰায় শ্বেক হৈল অক : ভবে কম্প উঠে যেন সমদ্র তরক। কাঁপিতে কাঁপিতে প্ৰভু ভূমিতে পছিলা; তবেত গোবিন্দ প্রভার নিকটে আইলা। করজের জালে করে সর্কাজ সিঞ্চন: বহির্বাদ লঞাকরে অঞ্সংবীজন। শ্বরপাদি গণ ভাঁহা আসিয়া মিলিলা: প্রভার অবস্থা দেখি কান্দিতে লাগিলা। প্রভার অঙ্গে দেখে অষ্ট সাত্মিক বিকার: আসচর্যা সাজিক দেখি হৈল। চ্যৎকার। উচ্চ সংকীর্ত্তন করে প্রভুর প্রবণে: সুশীতল জলে করে অঙ্গ সন্মার্জনে। এইমভ বছবার করিতে করিছে: 'হরিবোল' বলি প্রভু উঠিলা আচম্বিতে। আননে সকল বৈষ্ণর বলে হরি হরি: উঠিল মঙ্গল ধ্বনি চতুর্দিক ভরি। উঠি মহাপ্রভু বিশ্মিক ইতি উতি চায়; যে দেখিতে চায় ভাহা দেখিতে না পায়। বৈফাব দেখিয়া প্রভুর অর্দ্ধ বাহা হৈল; স্ত্রপ গোঁসাঞিকে কিছ কহিতে লাগিল:--'গোবর্জন হৈতে মোরে কে ইহা আনিল ? পাইয়া ক্ষেরে লীলা দেখিতে না পাইল। ইহা হৈতে আজি মুক্তি গেমু গোবৰ্দ্ধনে: (मर्थी यनि क्रथः कर्दा शीधन ठावरन। গোবৰ্দ্ধনে চড়ি কৃষ্ণ ৰাজাইল বেণু; পোবর্জনের চৌদিকে চরে সব ধেন্ত। (वन्तान अभि आहिन वाशा ठाकूवानी; স্ব স্থিগণ স্পে ক্রিয়া স্ভেনি। রাধা লঞা কৃষ্ণ প্রবেশিলা কন্দরাতে; স্থিগণ চাহে কেহ ফল উঠাইতে।

'হেন কালে তুমি সৰ কোলাহল কৈলা: তাঁহা হৈতে ধরি মোরে ইছা লঞা আইলা। কেন বা আনিলে মোরে রুথা ছঃথ দিতে ? পাইয়া কুষ্ণের লীলানা পাইনুদেখিতে'। এত বলি মহাপ্রভু করেন ক্রেন ; ভাঁর দশা দেখি বৈষ্ণব করেন রোদন। খেন কালে আইলা পুরী ভারতী ছুই জন: দোঁহা দেখি মহাপ্রভুর হইল সম্রম। নিপট বাহা হৈলে প্রভু দোঁহাকে বন্দিলা; মহাপ্রভুকে ছুইজন প্রেমালিঙ্গন কৈলা। প্রভু কহে 'দোঁহে কেন আইলা এত দূরে' ? পুরী গোঁদোঞি কহে 'তোমার নৃত্য দেখিবারে'। লজ্জিত হইলা প্রভু পুরীর বচনে; সমুদ্রের ঘাটে আইলা সব বৈঞ্চৰ সনে। স্নান করি মহাপ্রভু ঘরেতে আইলা; সবাল্ঞামহাপ্রসাদ ভোজন করিলা। এইত কহিল প্রভুর দিব্যোমাদ ভাব; ব্রহ্মান কভিতে নারে যাহার প্রভাব। চটক গিরি গমন লীলা রঘুনাথ দাব; চৈতগ্রস্তবকল্পকে করিয়াছে প্রকাশ।

তথাছি স্তবাৰ্ল্যাং চৈতন্মস্তবকল্পরক্ষে অকীমশ্লোকে রঘু-নাথ দাদ বাক্যং।

'সমীপে নীলাদ্রেশ্চটকগিরিরাজস্ত কলনাদয়ে গোর্চ্চে গোর্বর্জনগিরিপতিং লোকিছুমিতঃ।
ব্রজন্মন্মীত্যক্ত্বা প্রমদ ইব ধারন্মবধ্নতো গণৈঃ
ধৈ গোঁরাঙ্গো হৃদয় উদধ্যমাং মদয়তি'। ১২৯॥

'নীলাডে:' জগরাথক্ষেত্র 'দনীপে' নিকটে 'চকটগিরিরাজনা' চটক

নামপর্বভরাজস্য 'কলনাৎ' দর্শনাদ্ধেতোঃ 'লোটে' বুলাবনগোটে 'গোব-দ্ধন গিরিপভিং' 'লোকিতৃং' ভাই ম 'ইভঃ' অস্মাৎ স্থানাৎ অহং 'ব্রজন্' গচ্ছন 'অস্মি' 'ইত্যুক্তা' ইতি কথয়িত্বা যো গৌরাকঃ 'প্রমদ ইব' প্রমত ইব 'ধাবন' স্ন 'বৈঃ' স্বকীরেঃ 'গবৈঃ'ভক্ত গবৈঃ পশ্চাৎ 'অবধ্তঃ' ধ্তঃ ; 'অয়ে' বিস্ময়ে সঃ 'গৌরাক্ষঃ' মম 'হাদয়ে' 'উদয়ন্' সন্ 'মাং' 'মদয়তি' অতিশয়েন हर्षयण्डि ॥५२२॥

নীলাদ্রির সমীপস্থ চটকগিরি দর্শন করিয়া 'এখান হইতে আমি বুন্দাবনগোষ্ঠে গোবৰ্দ্ধন দর্শন করিতে ঘাই' বলিয়া যিনি উন্মত্তের স্থায় ধাবিত হইলে পশ্চাৎ আগত নিজগণ কর্ত্তক ধত হইয়াছিলেন; আহা ! সেই গৌরাপমূর্ত্তি আমার হৃদয়ে উদিত হইয়া আমাকে হর্ষোমত তেছে॥ ১২৯॥

> এবে প্রভূ যত কৈল অলোকিক লীলা; কে ব্ঝিতে পারে তাহা মহাপ্রভুর থেলা ? সংক্ষেপ করিয়া করি দিগু দরশন; ইহা যেই শুনে পায় কুষ্ণের চরণ। ঞীরপে রঘুন।থে পদে যার আশ: চৈতভা চরিতামৃত কছে ক্লফদাস।

ইতি শ্রীচৈতন্সচরিতামতে অন্ত্যখণ্ডে চটকগিরিগমন-क्रि मिर्ति । ज्ञान वर्गनः नाम ठ्रङ्कम श्री तिरु हिन ॥ ३८॥

পঞ্চদশপরিচ্ছেদ। গ্রন্থকারস্থা।

তুৰ্গমে কৃষ্ণভাবাকো নিমগ্নোমগ্লচেত্দা। গৌরেণ হরিণা প্রেমমর্য্যাদা ভূরি দর্শিতা॥ ৩০॥ 'ছর্গমে' ব্রহ্মাদেরপি ছম্প্রাপ্যে 'রুফভাবাদ্ধো' ক্রফভাবসমলে 'নিমগ্নো- নাথ চেতদা' নিমথং উনাথক ভাদমানক চেতে। যত ভেন 'পৌরেণ' 'ছরিণা' ভগবতা 'প্রেমমর্যাদা' 'ভূরি' অপর্যাপ্তং 'দর্শিতা' ॥১৩০॥

ব্রহ্মাদিরও অগম্য কৃষ্ণভাবদাগরে নিমগ্ন ও ভাদমান হইয়া গৌরহরি অপর্য্যাপ্তরূপে প্রেমমর্য্যাদা প্রদর্শন করি-লেন। ১৩০।

> জয় জয় জীরুফাচৈতনা অধীখর। জয় নিত্যানক ! পূর্ণানক কলেবর। জয়াবৈভাচার্য্য ! কুঞ্চৈতন্য প্রিয়তম ; জয় জয় শ্রীবাদাদি! প্রভুর ভক্তগণ। এই মত মহাপ্রভু রাত্রি দিবসে; আত্মকুর্ত্তি নাহি কৃঞ্ভাবাবেশে। কভু ভাবে মগ্ন, কভু অদ্ধবাহৃদ্্তি; কভু বাহস্ট্রের্ডি, তিন রীতে প্রভুর হিভি। न्नान, पर्यन, (ভाজন, प्रश्चलाद्य इय ; কুমারের চাক যেন সভত ফিরয়। এক দিন করে প্রভু জগরাথ দরশন; জগনাথে দেখে সাক্ষাৎ ব্ৰজেল নেলন। একবারে ক্ষুরে প্রভূর ক্তেরে পঞ্জণ ; পঞ্জেণে করে পঞ্চেন্দ্রি আনকর্ষণ। এক মন পঞ্জিকে পঞ্জণ টানে: টানাটানি প্রভুর মন হৈল অগেয়ানে। হেনকালে ঈশবের উপলভোগ সরিল; ভক্তগণ মহাপ্রভুকে ঘরে লঞা আইল। স্বরূপ রামানন্দ এই ছই জন লঞা; বিলাপ করেন দোঁহার কঠেতে ধরিয়া। ক্রফের বিয়োগে রাধার উৎক্ষিত মন; বিশাখাকে কছে আপন উৎকণ্ঠা কারণ। সেই শ্লোক পড়ি আপনে করে মনস্তাপ; শ্লোকের অর্থ শুনার ট্রাহারে করিয়া বিলাপ।

তথাহি গোবিন্দলীলামতে অঊমসর্গে তৃতীয়শ্লোকে বিশাখাং প্রতি শ্রীরাধিকাবাক্যং

'দৌন্দর্য্যায় তসিন্ধুভঙ্গললনাচিত্তান্দ্রিশংপ্লাবকঃ কর্ণানন্দিসনর্মারম্যবচনঃ কোটীন্দুর্শীতাঙ্গকঃ দৌরভ্যায়তসংপ্লবাস্বতজগৎ পীযূ্বরম্যাধরঃ শ্রীকোপেন্দ্রস্কৃতঃ স কর্ষতি বলাৎ পঞ্চেন্দ্রিয়াণ্যালি মে'॥১৩১

সৌন্দর্য্য রূপ অমৃতিসিন্ধুর তরঙ্গাঘাতে ললনাদিগের চিতাদ্রিকে প্লাবিত করিয়া, সন্মিত মধুর বচনে কর্ণযুগলের আনন্দ বর্দ্ধন করিয়া, কোটিচন্দ্রের আায় স্থশীতল অঙ্গ বিভাস করিয়া, সৌরভের অমৃতসংপ্লবে জগৎ ব্যাপ্ত করিয়া, ও পীযুষ তুল্য অধরকান্তি বিকাশ করিয়া,গোপেন্দ্রনন্দন আমার পঞ্চেন্দ্রিয়েকে বলপূর্ব্বক আকর্ষণ করিনতেছেন। ১৩১।

যথা রাগ।

'রুফারপ শব্দ স্পর্শ, শেরভ অধররস, যার মাধুয়া কহন না যায়; · 'দেখি লোভে পঞ্জন, এক অখামোর মন, চড়ি পঞ্চ পাঁচ দিকে ধায়। স্থি হে শুন মোর ছঃথের কারণ ! মোর পঞ্জেরিরগণ. মহালম্পট দুরুপেণ. সবে কহে 'হর পরধন'॥ এল॥ এক অশ একক্ষণে, পাঁচে পাঁচ দিকে টানে. এক মন কোনুদিকে ধায় ? এক কালে সবে টালে, গেল ঘোড়ার পরাণে, এই ছঃথ সহন না যায়। हेक्तिया ना कति द्वांष, हेश मवांत काँहा त्नाय, কুফারাপাদি মহা আকর্ষণ: ক্রপাদি পাঁচ পাঁচে টানে. গেল ঘোডার পরাণে. মোর দেহে নারহে জীবন। কৃষ্ণর পামৃত সিন্ধু, ভাহার তরক বিন্দু. এক বিন্দু জগত ড্বায়; ত্রিজগতে যত নারী, ভার চিত্ত উচ্চ গিরি, তাহা ডুবায় আগে উঠি ধায়। কুফের বচন মধেুরী, নানারস নর্মধারী, তার অভায়ে কহন না যায়; জগতের নারীর কাণে, মাধুরীগুণে বান্ধি টানে, টানাটানি কাণের প্রাণ যায়। কুষ্ণ অঙ্গ সুশীতল, কি কহিব ভার বল? इतीय जिस्म (कांनिक् हन्मन ; मरेगल नातीय वक्क. जाहा আ कर्षिए ज क्क. আকর্ষয়ে নারীগণ মন। ক্ঞান্স সৌরভ্য ভর সুগমদ মনোহর, নীলোৎপলের হরে গর্বধন। জগত নারীর নাসা, তার ভিতর পাতে বাঁসা,

নারীগণে করে আকর্ষণ।

'কুফের অধরামূভ, ভাহে কপুর মন্দির্ভ, স্বমাধুর্য্যে হরে নারীমন: অন্তত্ত ছাড়ায় লোভ, না পাইলে মনকোভ, ব্রজনারীগণের মূল ধন'। এত কহি গৌরহরি, ছুই জনার কণ্ঠ ধরি, কহে ভিন স্বরূপ রামরায়। कैं। का करता १ कें। वा कें। कि १ कें। वा ताल कुक शी छ १ দোঁহে মোরে কহ সে উপায়'। এইমভ গৌর প্রভু প্রতি দিনে দিনে; বিলাপ কবেন স্বৰূপ বামানন সনে। তুই জন প্রভুকে করেন আখাসন ; স্বরূপ গায়, রায় করে শ্লোক পঠন। কর্ণামত, বিদ্যাপতি, শ্রীগীতগোবিন্দ; ইহার শ্লোক গীতে প্রভুর করায় আনন্দ। এক দিন মহাপ্রভু সমুদ্রে যাইতে; পুষ্পের উদ্যান তথা দেথে আচম্বিতে। বুন্দাবন ভ্ৰমে তাঁহা পশিল ধাইয়া: প্রেমাবেশে বুলে ভাঁহ। রুষ্ণ অন্বেষিয়া। রাদে রাধা লঞা কৃষ্ণ অন্তর্জান কৈল: পাছে স্থীগণ থৈছে চাহি বেডাইল। সেই ভাষাবেশে প্রভু প্রতি তরুলভা; লোক পড়ি পড়ি চাহি বুলে যথা তথা।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমক্ষে ত্রিংশাধ্যায়ে নবম-শ্লোকে বৃক্ষাদীন্ প্রতি গোপীবাক্যং। 'চৃতপ্রিয়ালপনসাসনকোবিদার-জন্মকবিল্লবক্লাত্রকদম্বনীপাঃ। থেহন্তে পরার্থভাবকা যমুনোপক্লাঃ শংসন্ত কৃষ্ণপদবীং রহিতাক্মনাং নঃ'॥ ১৩২॥ হে 'চ্তপ্রিয়ালপন দাসনকোবিলার জম্বর্ধির বকুশার কদম্বনীপাঃ' চ্তার্রর রাজ্যর মার বাজ্যর মাতি হেল চ্তো লভালভিঃ আরে। বৃক্ষ মাভিঃ, কৃদম্বনীপরাশ্চ ম্বাজ্য মাতি হেল । পনসঃ কটেকীফলং অসনঃ পীড্দালঃ কোবিলার মৃত্যু কুলার কোরিলার ইতি বিস্ক্যাদৌ খ্যাতঃ; হে চূভালয়ঃ! বেণ 'অতে' 'পরার্থভবকাঃ' পরার্থনেব ভবো জন্মো বেষাং তে 'ব্যুনোপ্রলাঃ' যুন্নায়। কুলসনীপে বর্জমানা তীর্থবাসিন ইভার্থঃ। ভে ভবস্তঃ 'রহিভাস্থনাং' শৃভচেভসাং 'নঃ' অমাকং 'রফপদবীং' রফস্ত মার্গং 'শংসস্তু' ক্রম্ব্র ॥১৩২॥

নোপীগণ বিলাপ করিতেছেন :—হে চূত ! হে প্রিয়াল !

হে পনস ! হে অসন ! হে কোবিদার ! হে জম্বু ! হে অর্ক !

হে বিল্ল বকুল ! হে আত্র ! হে কদম্ব ! হে নীপ ! হে অপরাপর বৃক্ষ সকল ! তোমরা যমুনাতীর্থবাদী, পরোপকারের জন্মই
জন্মগ্রহণ করিয়াছ, আমরা কুফ্ডবিরহে আত্মহারা হইয়াছি;
কৃষ্ণ কোন্পথে গিয়াছেন ? আমাদিগকে বলিয়া দাও।১৩২।

তথাহি তত্ত্বৈ সপ্তমশ্লোকে তুলদীং প্রতি গোপীবাক্যং।

'কচ্চিতুলসি কল্যাণি গোবিন্দচরণপ্রিয়ে।

সহ ত্বালিক্লৈ বিজ্ঞদ্ফীতেংতিপ্রিয়োহচ্যতং ॥১৩৩॥

হে 'কল্যানি' 'গোবিন্দচরপপ্রিয়ে' 'ত্লদি' 'অলিক্লৈ' 'দহ' 'ত্বা ত্বাং 'বিজ্বং' তব 'অতিপ্রিয়া' 'অচ্যতং' রুফা তরা 'কচিং' কিং 'দৃষ্টাং' ॥১৩৩॥

হে কল্যানি ৷ গোবিন্দচরণপ্রিয়ে ! তুলসি ৷ ভগবান্ অচ্যুত অলিক্লের সহিত তোমাকে ধারণ করিয়াথাকেন; ভূমি কি তোমার সেই প্রিয়তমকে দেখিয়াছ ? । ১৩৩ ।

তথাহি তত্ত্রৈব অঊমশ্লোকে মালত্যাদীন্ প্রতি গোপীবাক্যং।

'মালত্যদর্শি বঃ কচ্চিমল্লিকে জাতি যূধিকে।

প্রীতিং বে। জনয়ন্ যাতঃ করস্পার্শেন মাধবঃ'॥ ১৩৪॥ হে 'মালতি' হে 'মজিকে' হে 'জাভি' হে 'যূ বিকে' যুমাভিঃ 'কচিৎ' कर 'तः' वृद्याकर 'माधतः' 'अप्तर्मि' पृष्टेः । 'कत्रण्यार्मिन' 'चः' यूद्याकर 'श्रीिखर' 'জনয়নৃ' সন্ সঃ 'যাভঃ' কিং ॥১৩৪॥

হে মালতি ! মল্লিকে ! জাতি ! যৃথিকে ৷ তোমরা কি তোমাদের মাধবকে দেখিয়াছ ? করস্পার্শে তোমাদের প্রীনি জনাইয়া তিনি কি এই পথে গিয়াছেন ? 1 ১৩৪।

> 'আন্থানসাপিয়াল ৷ জমু ৷ কোবিদার ! তীর্থবাদী সবে, কর পর উপকার। ক্লফ তোমার ইহা আইলা গুপাইলা দর্শন প ক্ষের উদ্দেশ কৃতি রাখ্য জীবন'। উত্তর না পাঞা পুনঃ করে অমুমান ; 'এ সব পুরুষ জাতি স্থার স্মান: এ কেন কহিবে ক্লেখ্য উদ্দেশ আমায় ? এই স্ত্রীজাতি লতা আমার স্থী প্রায়: অবশ্র কঁহিবে ক্লফের পেয়েছে দর্শনে'। এত অভুমানি পুছে তুলভাদিগণে:--'তুলি ! মালভি ! য্থি ! মাধ্বি ! মলিকে ! তোমার প্রিয় কৃষ্ণ আইলা ভোমার অন্তিকে গ তুমি সব হও আমার স্থীর স্মান; ক্ষোদেশ কহি সবে রাথহ পরাণ'। উত্তর না পাঞা পুন: ভাবেন অন্তরে: 'बहे कुछनात्री, ভत्र ना करह आमारत'। चार्ण मुग्रग एक विक्रमान गक्त भावा: ভার স্থথ দেখি পুছেন নির্ণয় করিয়া।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমক্ষমে ত্রিংশাধ্যায়ে একাদ শ্লোকে হরিণীং প্রতি গোপী বাক্যং।

'অপ্যেণপত্যপূর্গতঃ প্রিয়য়েহ গাত্তৈ স্তম্ম দৃশাং স্থি স্থনিবিভিম্যুত্যে ব. কান্তাঙ্গদসকুচকুঙ্গুমরপ্তিতায়াঃ কুন্দব্ৰজঃ কুলপতেরিহ বাতি গন্ধঃ'॥ ১৩৫ 🗗

হে 'সবি' 'এণপত্নি' মৃগপত্নি! 'অচ্যতঃ' প্রীক্ষঃ 'প্রিয়রা' প্রধান-গোপ্যা সহ 'গাতৈঃ' স্থলবন্ধবাহবাদিভি: 'বঃ' যুত্মাকং 'দৃশাং' নেজানাং 'স্থনিবিভিং' পরিছপ্তিং 'ভয়ন্' বিভারেরন্সন্ 'ইহ' অমিন্ স্থানে 'উপগতঃ' সমীপং গতঃ 'অপি' কিং ? যছজং ডৎ দ্যোতর্ত্তি, ষতঃ 'কুলপতেঃ' কৃষ্প ক্র 'কৃষ্প সানালারাঃ 'গদ্ধঃ' 'ইহ' 'বাতি' আগচ্ছি। কীদৃশারাঃ কৃষ্প্রজঃ ' 'কাস্তালক্চক্ত্মরঞ্জিতারাঃ' কাস্তারা৷ অক্সক্ত তংক্চক্ত্মেন রঞ্জিতারাঃ। ১০৫॥

হে সথি মুগপত্বি! অচ্যুত স্বীয় কান্তার সহিত এখানে আসিয়া তদীয় স্থন্দরাঙ্গ দেখাইয়া তোমাদের কি নয়নরঞ্জন করিয়াছিলেন ? কারণ তাঁহার কুন্দমালা তদীয় কান্তার কক্ষঃ সংসর্গ হেতু কুচকুঙ্কুমে রঞ্জিত হইয়া যে গন্ধ বিকীর্ণ করিয়াছিল, সেই গন্ধ এখানে পাওয়া যাইতেছে। ১৩৫।

'কহ মৃগি! রাধা সহ জ্ঞাহুক্ষ সর্কথা।
তোমায় সুথ দিতে আইলা ?—নাহিক অফ্রথা।
রাধার প্রেয়সখী মোরা নহি বহিরক;
দ্র হৈতে জানি ভার যৈছে অকগন্ধ।
রাধাঅসসকে কুচকুকুমভূষিত
ক্রফ কুন্দমালা গন্ধে বায়ু অ্বাসিত।
ক্রফ ইহা ছাড়ি গেলা, ইহ বিরহিনী;
কিবা উত্তর দিবে ? এই না শুনে কাহিনী।
আাগে বুক্ষগণ দেখি ফল পুস্ভেরে;
শাখা সব পড়িয়াছে পৃথিবী উপরে।
ক্রেক্কে দেখি এই সব করে নমস্বার';
ক্রক্ষেণ্যমন পুছে ভারে করিয়া নিশ্বার।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমক্ষমে ত্রিংশাধ্যায়ে দাদশ শ্লোকে তরুন্ প্রতি গোপীবাক্যং ৷

> 'বাহুং প্রিয়াংস উপধায় গৃহীতপদ্মো রামানুজস্তুলসিকালিকুলৈ ম্দাক্ষৈঃ। অন্বীয়মান ইহ ব স্তর্বঃ প্রণামং কিধাভিনন্দতি চর্ন প্রণয়াবলোকৈঃ'॥ ১৩৬।

হে 'ভরবঃ' 'রামাহজঃ' প্রীক্ষঃ 'গৃহীতপদ্মঃ' গৃহীতং লীলাপদ্মং যেন সঃ 'প্রিয়াংদে' প্রিয়ায়া করে 'বাহং বামভুজং 'উপধায়' সংরক্ষ্য 'মদাকৈঃ' 'তুলসিকালিকুলৈঃ' তুলসিকায়াঃ অলিকুলৈঃ অভস্তদামাদমদাকৈঃ 'অধীয়মানঃ' অফ্গম্যমানঃ 'ইহ' অস্মিন্ হানে 'চরন্' সন্ 'বঃ'
যুশাকং 'প্রশামং' 'প্রণয়াবলোকৈঃ' 'কিং' 'বা' 'অভিনন্দতি' অস্পীক্রোডি ? ॥ ২০৬॥

হে বৃক্ষগণ! প্রিয়ার ক্ষম্মে বামভুজ স্থাপন পূর্বক দক্ষিণকরে লীলাকমল প্রহণ করিয়া ভুলদীগদ্ধে উমাত্ত আলকুল কর্তৃক অনুস্ত হইয়া রামানুজ কৃষ্ণ এখানে ভ্রমণ করিতে করিতে প্রেমপূর্ণনয়নে তোমাদের প্রণাম কি অসীকার করিয়াছেন ? । ১৩৬।

'প্রিয়মুখে ভ্রুপ পড়ে, তাহা নিবারিডে;
লীলাপল চালাইডে হৈল অন্তচিতে।
তোমার প্রণাম কি করিয়াছে অবধান ?
কিবা নাহি করে ? কহ বচন প্রমাণ।
ক্ষের বিয়োগে এই সেবক ত্থিড;
কিবা উত্তর দিবে ইহার নাহিক সম্বিড'।
এত বলি আগে চলে যমুনার ক্লে;
দেবে তাঁহা কৃষ্ণ হয় কদম্বের ভলে।
কোট মন্মথ্যোহন মুরলীবদন;
অপার দৌক্ষেহ্য হরে অগতের নেত্র মন।

সৌন্দর্য্য দেখিয়া ভূমে পড়ে মৃদ্ধ্য পাঞা;

হেনকালে স্বরূপাদি মিলিলা আদিয়া।

পূর্ব্বৎ সর্বাচ্নে সান্তিক সকল;

অন্তরে আনন্দ আসাদ বাহিরে বিহ্নল।

পূর্ব্বৎ সবে মিলি করাইল চেতন;

উঠিয়া চৌদিকে প্রভু করেন দর্শন।.

'কাঁহা গোলা কৃষ্ণ ? এখনি পাইফু দর্শন;

যাঁহার সৌন্দর্য্য মোর হরিল নেত মন।
পুন: কেন না দেখিয়ে ম্রলী বদন?
ভাঁহার দর্শন লোভে ভ্রমমে নয়ন'।

বিশাথাকে রাধা থৈছে শ্লোক কহিলা;

সেই শ্লোক মহাপ্রভু পড়িভে লাগিলা।

তথাহি গোবিন্দলালায়তে অঊমসর্গে চতুর্থশ্লোকে বিশাখাং প্রতি গ্রীরাধিকাবাক্যং।

'নবাস্থ্দলসদু তি র্নবতড়িমনোজ্ঞাম্বরঃ স্থচিত্রমুরলীমুখঃ শরদমন্দচন্দ্রাননঃ। ময়ুরদলস্থিতঃ স্বভগতারহারপ্রভঃ

স মে মদনমোহনঃ সথি তনোতি নেত্রস্পৃহাং' ॥১৩৭॥ হে 'সখি' বিশাবে ! 'সঃ' 'মদনমোহনঃ' মদনং কামং কামনারূপং মোহিন্দির্ম শীলং যক্ত স নন্দনন্দনঃ 'মে' মম 'নেত্রস্থাং' নয়নানন্দং 'তনোতি' বিস্তারয়তি; 'কীদৃশঃ সঃ' ? 'নবামুদলসদ্যতিঃ' নবমেঘানাং লস্কী দীপান্ধী ছাভিরক্ষকান্ধি র্যস্য সঃ। পুনঃ 'নবভড়িমনোজ্ঞাম্বঃ' ন্তনবিত্যদং মনোজং শোভনং অম্বরং পীতবল্ধং যস্য সঃ। পুনঃ 'ম্ভিত্রম্রলীমুখঃ' মুভিত্রারজাদিভিরলস্কৃতা মুরলী বংশী মুখে যস্য সঃ। পুনঃ 'মারদমনচন্দ্রাননঃ' শরৎকালীনপুণ্চন্দ্রবং শোভনং আননং যান গুনঃ 'মার্বদলভ্যিতঃ' মার্বিভির্বস্কৃতঃ; পুনঃ 'ম্ভত্যভারহার প্রভা' স্ভব্যং স্কুন্দিভিঃ কর্মেঃ বক্ষসি হারসা প্রেলা যক্ত সং॥ ১৩৭॥

হে স্থি! মদন্মোহন নন্দনন্দন আজ আমার নয়নের আনন্দ্রব্দিন করিতেছেন। ন্বঘন প্রভায় তাঁহার অঙ্গকান্তি দীপ্যমান: মব সোদামিনীর ন্যায় তাঁহার পিতাম্বর মনোজ্ঞ; উাহার মুখে রত্নখচিত মুরলী শোভা পাইতেছে; তাঁহার মুখমগুল শরচ্চন্দ্রের ন্যায় স্লিগ্ধশোভাযুক্ত; ময়ুরপুচ্ছে শিরোদেশভূষিত ; এবং স্থন্দর মুক্তাহারের প্রভায় বক্ষঃস্থল সমুজ্জ্লা ১৩৭ |

> 'নবখন স্লিগ্ৰহণ, দলিতাপ্তৰ চিকণ, ইন্দীবর নিন্দি স্থকোমল; জিনি উপমারগণ, হরে স্বার নয়ন, ক্লফাকান্তিপরম প্রকল। কহ স্থি। কি করি উপায়? কুফান্ত বলাহক, মোর নেত্র চাতক, নাদেখি পিয়াদে মরি যায় ॥ এল।। मोलामिनी भीजायत, वित नटह नितस्त्रत, মুক্তাহার বকপাঁতি ভাল; ইন্দ্রধন্থ শিথিপাথা, উপরে দিয়াছে দেখা, আর ধরু বৈজয়ন্তী মাল। মুরলীর কলধ্বনি, মধুর গর্জন তনি, वृक्तावत्न नांद्रक मशुत्र हत्र ; অকলত্ব পূৰ্ণকল, লাবণ্য জ্যোৎসা ঝলমল, চিত্রচন্দ্র তাহাতে উদর। শীলামত বরিষণে, সিঞ্চে চৌদভ্বনে, (इन (भच यद दम्था मिन ; তুর্দির কঞা পবনে, মেঘ নিল অক্ত হানে, মরে চাভক, পীতে না পাইল'। পুন: কহে 'হায় ! হায়'! পড় পড় রামরায়' ! কহে প্রভুগদাদ আখ্যানে; রামানন্দ পড়ে খোক, শুনি প্রভুর হর্ব শোক, আপনি প্রভু করেন ব্যাখ্যানে।

তথাহি শ্রীমন্তাপবতে দশমক্ষমে একোনত্রিংশাধ্যায়ে ষট্-ত্রিংশশ্লোকে একৃষণ প্রতি গোপীবাক্যং। 'বীক্ষ্যালকারতমুখং তবকুওল্ভা গণ্ডস্থলাধরম্বধং হসিতাবলোকং ৷ দত্তাভয়ঞ্চ ভুজদণ্ডযুগং বিলোক্য বক্ষঃ প্রিরৈকর্মণঞ্চ ভবাম দাস্যঃ' ॥ ১৩৮ ॥ টীকা ও ব্যাথ্যা মধ্যঃ ৪৫০ সোঃ ৬০৬ পৃঃ দেখ।। ১৩৮।। যথা রাগঃ। 'কৃষ্ণ জিতি পদ্মচান্দ, পাতিয়াছে মুখকান্দ, ভাতে অধ্যমধুরিমত চার; ব্ৰদারী আসি আসি, ফান্দে পড়ি হয় দানী, ছাড়ি লাজ পতি ঘর মার। বান্ধব ! কৃষ্ণ করে ব্যাধের আচার; नाहि মানে ধর্মাধর্ম, হরে নারীমূগীমর্ম, করে নানা উপায় ভাহার ॥ এল॥ গণ্ডস্থল ঝলমল, নাচে মকর কুণ্ডল সেই নৃত্যে হরে নারীলয়; স্থাত কটাক্ষ বাণে, তাসবার হৃদয়ে হানে, নারী বধে নাহি কিছু ভয়। অভি উচ্চ স্থবিস্তার, লক্ষা এবংস অলস্কার ক্ষের যে ডাকাভিয়া বক্ষঃ: ব্রজদেবী লক্ষ লক্ষ, তা স্বার মন বক্ষঃ হরি দাসী করিবারে দক। ম্ব্রলিত দীর্ঘার্থল, কুঞ্বের ভুজ্মুগল ভুজ নছে কৃষ্ণসূপিকায়; इटे देनन ছिट्य देशान, नातीत श्रमत्त्र परान মরে নারী সে বিষজালার। ক্ষুষ্ণকরপদত্তল, কোটিচন্দ্র স্থানীয

জিনি কপুর বেণামূল চন্দন;

व्यक्तीत्र चारत च्याची चार्या चार्याची विवनात्म. यात न्लार्स लक् नातीयन'। অভেক বিলাপ করি, বিযাদে আইগোরছরি. এই কথে পিড়ে একলোক; এই খোক পাঞা রাধা. বিশাথাকে কছে রাধা. উভারিরা জদরের শোক।

তথাহি গোৰিশলীলায়তে অউমদর্গে সপ্তমল্লোকে বিশাথাং প্রতি জীরাধাবাকাং।

> 'হরিথাণিকবাটিকা প্রতিহারি বক্ষঃস্থলঃ স্মরার্ত্তরুণীমনঃকলুষহারিদোরর্গলঃ। স্বাংশুহরিচন্দনোৎপলসিতাভ্রমীতাঙ্গকঃ স মে মদনমোহনঃ সথি তনোতি বক্ষঃস্পৃহাং' ১০৯॥

एर 'मिथ' 'मः' 'मननामाहनः' नक्तमनानः '(म' मम 'वक्कः प्राट्टा वक्रमः লালসাং তমালিক্ষিত্মিতার্থঃ 'তনোতি' বিস্তারয়তি। কীদৃশঃ সঃ ? 'হরিশাণিকবাটকাপ্রভতিহারিবক্ষঃস্থলঃ' হরিশাণিভিঃ ইন্দ্রনীলমণিভিঃ খচি-ভায়াঃ ক্বাটিকায়াঃ যা প্রভিডিঃ বিভারঃ তং হর্ভুং শীলং যস্য তৎসদৃশং বক্ষঃস্থলং যদা দঃ; পুন: 'মরাউভিজণীননংক নুদহারিলোরর্গনঃ' মরার্জাণাং **কন্দর্পণী**ড়িভানাং ভরণীনাং যুবভীনাং মনসাং কলুষং পীড়াদিকং হ**র্ড**ুং শীলং ষদ্য তৎসদৃশং দোরের বাহুযুগলমের অর্গলং বক্ষঃস্থলকরাটিকায়াঃ বন্ধন-কাষ্ঠং ষস্ত দঃ ; পুন: 'স্থধাংশুহরিচন্দোৎপলসিতাভ্রশীতাঙ্গকঃ' সুধাংশুঃ চল্স-কিরণং হরিচন্দনং শীতলচন্দনবিশেষঃ উৎপলং নীলপদ্মং সিতাভ্রঃ কপুরঃ এতেভ্য: শীত: শীতল: অঙ্গ: গাত্রং যস্ত সং ॥ ১৩৯॥

হে স্থি ! মদনমোহন নন্দনন্দন তাঁহাকে আলিঙ্গন করাই-বার জন্য আমার বক্ষঃলালদা বর্দ্ধন করিতেছেন। আহা। তাঁহার বক্ষঃস্থল মরকতমণিথচিত কবাটিকার বিস্তার-কেও পরাজিত করিয়াছে; ভুজরূপ অর্গল স্মরপীড়িত যুবতীদিগকে সাবদ্ধ করিয়া ভাষাদের মনের ক্লেশাদি হরণ

করিতে স্থদক; আর চন্দ্রকিরণ, হরিচন্দন, নীলোৎপল এবং কপূরিদি হইতেও তাঁহার অঙ্গ স্থাপ্তল। ১৩৯।

প্রভ্ কছে 'ক্ষণ মুঞি এখনি দেখিত্ত;
আপনার তুর্কিবে পুনঃ হারাইত।
চক্ষণ স্বভাব ক্ষণের নারয় এক ত্থানে;
দেখা দিয়া মন ছবি করে আছে গ্রেকী

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমীক্ষকে একোনত্রিংশাধ্যারে ত্রিচড়ারিংশ শ্লোকে পরীক্ষিতং প্রতি শ্রীশুকবাকাং।

> 'তাদাং তৎদোভগমদং বীক্ষ্য মানঞ্চ কেশবঃ। প্রশ্নায় প্রদাদায় তত্তিবাত্তরধীয়ত'॥ ১৪০॥

ভাসাং' ভাদশীনাং গোপীনাং 'তংমৌতগমদং' তং সৌতাগ্যহেতৃকং গর্কাং 'মানঞ্চ' তং মানঞ্চ 'বীক্ষ্য' 'কেশবং' কণ্চ ব্রন্ধাচ ঈশণ্চ শিবণ্চ ভৌব্যতে যঃ সং সর্কশক্তিমানিত্যর্থঃ গর্কাং প্রতি 'প্রশমার' দমনার মানত্ত প্রতি 'প্রশাদার' প্রসাদনার 'তবৈব' স্থানে 'অস্তরধীরত' অন্তরধাং ॥ ১৪০॥

সেই গোপীদিপের সোভাগ্যজনিত অহন্ধার ও মান দেখিয়া তাহার প্রশমন ও তাঁহাদের প্রতি প্রসমতা প্রদর্শন জন্য সর্বশক্তিমান্ কেশব সেইখানেই অন্তর্হিত হই-লেন । ১৪০ ।

> স্বন্ধপ গোঁদাঞিকে কছে 'গাও এক গীত; যাতে আমার হৃদরের হয় ত সম্বিত'। স্বন্ধপ গোঁদাঞি ভবে মধুর করিঞা গীতগোবিস্কের পদ গায় প্রভূকে শুনাঞা।

তথাছি পদং পীতগোবিন্দে দ্বিতীয়সর্গে দ্বিতীয়শ্লোকে স্বধীং প্রতি শ্রীরাধিকাবাক্যং।

'রাদে হরিমিহ বিহিতবিলাদং। শুরুতি মুনো মম কৃতপরিহাদং'॥ ১৪১॥ হে 'দখি' ! 'ইং' বুলাবনপুলিনে 'রাদে' মহারাসবিষয়ে 'মম' 'মনঃ' 'হিরিং' 'য়য়ভি'। কীদৃশং १ 'বিহিত বিলাসং' বিহিতো বিরচিতো বিলাদোর রসকৌত্কং যেন তং; পুনঃ 'রভপরিহাসং' রুভঃ বিস্তারিভঃ পরিহাসঃ মন্দ্রিতাদিকং যেন তং ॥ ১৪১ ॥

হে দথি! যিনি এই রুন্দাবনবিপিনে মহারাসসময়ে বিবিধ বিলাস পরিহাস প্রকাশ করিয়াছিলেন; আজ আমার মন সেই হরিকে স্মরণ করিতেছে। ১৪১।

> স্বরূপ গোঁসাই যবে এই পদ গাইলা; উঠি প্রেমাবেশে প্রভু নাচিতে লাগিলা। অষ্ট দান্ত্ৰিক অঙ্গে প্ৰাকট হইল: हर्षानि वाভिচाती मव उपनिन। ভাবোদয়ে ভাবসন্ধি ভাবসাবলা; ভাবে ভাবে মহাযুদ্ধ নবার প্রাবল্য। সেই পদ পুনঃ পুনঃ করায় গায়ন; পুনঃ পুনঃ আস্বাদ্যে, করেন নর্ত্তন । এই মত নুভা যদি হৈল বছক্ষণ: স্কলপ গোঁদোঞি পদ কৈল সমাপন। 'বোল বোল' বলি প্রভু কছে বার বার; না গায় স্বরূপ গোঁদাঞি শ্রম দেখি ভার। 'বোল, বোল' প্রভু বলে, ভক্তগণ শুনি চৌদিকেতে সবে মিলি করে হরিধ্বনি। রামানন্দ রায় তবে প্রভুকে বসাইল; বীজনাদি করি প্রভুর শ্রম ঘুচাইল। প্রভু লঞা গেলা তবে সমুদ্রের তীরে; স্থান করাইয়া পুন: লঞা আইলা ঘরে। ভোজন করাইয়া প্রভুকে করাইল শয়ন; রামানন আদি সবে গেলা নিজ স্থান। এই ত কহিল প্রভুর উদ্যান বিহার; ব্ৰন্দাৰন অমে বাঁহা প্ৰবেশ ভাঁহার।

বিলাপ সহিত এই উন্মান বর্ণন ; জ্ঞীরূপ গোঁদাঞি ইহা করিয়াছে লিখন।

তথাহি স্তবমালায়াং শ্রীচৈতন্যদেবস্তবে ষষ্ঠিশ্লোকে শ্রীরূপগোস্থামিবাক্যং

'পয়োরাশে স্তীরে ক্যুরতুপবনালিকলনয়া মুহুর্ন্দারণ্যুরণজনিতপ্রেমবিবশঃ কচিৎ কৃষ্ণার্তিপ্রচলরদনো ভক্তিরদিকঃ

স চৈত তাঃ কিং মে পুনরপি দৃশো হাঁত তি পদং' ॥১৪২॥

যদৈত তাঃ 'প্যোগাশে:' সমুজ তাঁরে' উপক্লে 'কুরত্পবনালিক লনরা' কুরতঃ প্রকাশমানত উপবনানাং আলোঃ প্রেণাঃ কলনরা দর্শনেন
হেত্ত্তরা 'মৃহঃ' বারম্বারং 'বৃল্লারণাম্মণস্থনিত প্রমিবিশঃ' বুলাবনন্ত ম্মরণাথ জনিতেন প্রেয়া বিবশোহত্থ; যদ্ধ 'ক্চিং' ক্মিংদিচদ্পি
সময়ে 'কুফার্ত্তি প্রচলরসনঃ' কৃষ্ণত আর্ত্তা। কৃষ্ণনামোচ্চারণেন প্রচলা
চঞ্চলা রসনা যদ্য স তাদৃশোহত্থ। যদ্ধ 'ভক্তিরসিকঃ' ভক্তিরসামাদকঃ স্থানীৎ; 'সঃ' 'চৈতনাঃ' 'মে'মম 'দৃশোঃ' নয়নয়োঃ 'পদং' 'পুনর্শি'
বিধ্যাতি' কিং॥১৪২॥

সমুদ্রতীরে উপবন্ধা দর্শন করিয়া রুলাবনস্থৃতি জাগরিত হওয়াতে যিনি মুহুমূ্হিঃ প্রেমে বিবশ হইয়া পড়িতেন; কোন কোন সময়ে কৃষ্ণনামোচচারণে যাঁহার রসনা চঞ্চল হইয়া পড়িত; যিনি ভক্তিতত্ত্বের নিগুঢ়রস আস্বাদন করিয়াছিলেন; সেই চৈতন্য কি আর আমার নয়নের বিষয়ীভুত হইবেন ?॥ ১৪২॥

অনস্ত হৈত্ত লীলা না যায় লিখন;

দিঙ্মাত্র দেখাইয়া করিল,স্থচন।
জ্ঞান্ত্রপ্রত্নাথ পদে যার আশ;
১৮ভন্তচিরতামৃত কহে কঞ্চাদ।
ত্রি জ্ঞীচৈতন্মতারিতামৃতে অন্ত্যুথতেও উদ্যানবিহারো নাম পঞ্চদশ পরিডেফ্টঃ। ১৫।

িষোড়শ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থ।

বন্দে শ্রীকৃষ্ণচৈতভাং কৃষ্ণভাবামৃতং হি যঃ। আস্বাদ্যাস্বাদয়ন ভক্তান প্রেমদীক্ষামশিক্ষয়ৎ॥ ১৪৩॥

'ঞ্জীক্ষটেতন্যং' অবং 'বন্দে'। 'য' কৈতন্য: 'ক্ষভাবামূভং' 'হি' নিশিচভং স্বরং 'আসাদ্য' 'ভকান্' 'আসাদয়ন্' সন্তান্ ভকান্ 'এেমদীকাং' 'অশিক্ষয়ং' উপদিদেশ ॥ ১৪০॥

শ্রীকৃষ্ণ চৈতন্মের বন্দনা করি; যিনি কৃষ্ণভাবামৃত স্বয়ৎ আস্বাদন করিয়া এবং ভক্তদিগকে আস্বাদন করাইয়া তাঁছা-দিগকে প্রেমবিষয়ে দীক্ষিত করিয়াছিলেন। ১৪৩।

> জর জয় এ চৈত্তা। জয় নিত্যানন্দ ! জয়াবৈতচন্দ্র জয় গৌরভক্তরন্দ ! এই মত মহাপ্রভ রহে নীলাচলে: ভক্তপণ সঙ্গে সদাপ্রেম বিহ্বলে। বর্যান্তরে আইলা সব গৌডের ভক্তগণ : পূর্ববং আসি কৈল প্রভুর মিলন। তাঁ স্বার সঙ্গে প্রভুর চিত্তে বাহ্ন হৈল; পূর্ববৎ রথযান্তায় নৃত্যাদি করিল। তাঁসবার সঙ্গে আইল কালীদাস নাম: ক্লফনাম বিনা তিঁছো নাহি জানে আন। মহাভাগবত ভিঁহো সরল উদার: কৃষ্ণনাম সক্ষেতে চালায় ব্যবহার। কৌতুকেতে তিঁহো যদি পাশক থেলায়; 'হরেক্সঞ্, হরেক্সঞ্' করি পাশক চালায়। রপুনাথ দাসের ভিঁহ হয় জ্ঞাতি খুড়া; देवस्थरवत উच्छिष्टे थाहेर्छ जिंह हरेन वृद्धा।

त्शीजल्ला इत्र यक देवस्थ्यत्रश्न : সবার উচ্চিষ্ট তিঁচ করিলা ভোজন। ব্ৰাহ্মণ বৈষ্ণৰ যন্ত ছোট বড হয়: উত্তম বন্ধ ভেট লঞা তাঁর ঠাঁঞি যায়। তাঁর ঠাঁঞি শেষপাত লয়েন মালিয়া: কাঁহাও না পান যবে রহেন লকাইয়া। ভোজন করিলে পাত ফেলাইয়া যায়: লুকাইয়া দেই পাত্র আসি চাটি খার। শুদ্র বৈষ্ণবের ঘরে যায় ভেট লঞা: এইমত তার উচ্ছিষ্ট থায় লুকাইয়া। ভূমিমালী জাতি বৈষণৰ ঝড় তাঁর নাম; আন্রফল লঞা তিঁহো গেলা তাঁর স্থান। আম ভেট দিয়া ভাঁর চরণ বন্দিল: জোঁৰ পভীকে ভাবে নমস্কাৰ কৈল। পত্নীর সহিত তিঁহো আছেন বসিয়া: বচ সমান কৈল কালীদাসে দেখিয়া। ইটগোষ্টি কতক্ষণ করি তাঁর সনে: ঝড়ু ঠাকুর কহে তাঁরে মধুর বচনে ঃ— 'আমি নীচজাভি, তুমি অভিথি সর্কোত্তম; কোন প্রকারে করি আমি ভোমার সেবন ? আজা দেহ ব্রাহ্মণ ঘরে অল লঞা দিয়ে; তাঁহা তুমি প্রসাদ পাও তবে আমি জীয়ে'। কালীদাদ কছে 'ঠাকুর! কুপা কর মোরে; ভোমার দর্শনে আইফু মুঞি প্রিভ পামরে। পবিত হইতুমুঞি পাইতুদর্শন ; কুতার্থ হইনুমোর সফল জীবন। এক বাঞ্চাহয় যদি রূপা করি কর; পদরজঃ দেহ, পাদ মোর মাথে ধর'। ঠাকুর কহে 'ঐছে বাত কহিতে না জুয়ায়; আমি নীচমাতি, তুমি স্থসজ্জন রার'।

ভবে কালীদাস শোক পড়ি ভনাইল; ভনি ঝড় ঠাকুরের বড় হংখ হৈল।

তথাহি হরিভক্তিবিলাসভা দশমবিলাসে একনবতি-তমাঙ্কপ্রতং ইতিহাসসমূচ্চয়ে ভগবছাক্যং।

'ন মে ভক্ত শ্চতুর্বেদী মন্তক্তঃ খপচঃ প্রিয়:। তব্মৈ দেয়ং ততে। গ্রাহাং দ চ পূজ্যো যথাছহং' ॥১৪৪॥ किका e वाक्षा मधाः २३० ह्याः १२७ प्रः एन्थ ॥ ३८४ ॥

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দপ্তমক্ষন্ধে নবমাধ্যায়ে নবমশ্লোকে নরসিংহং প্রতি প্রহলাদবাক্যং।

'বিপ্রাদ্দিষড় গুণযুতাদ রবিন্দ নাত-পাদারবিন্দবিমুখাৎ খপচং বরিষ্ঠং। মন্যে তদর্পিতমনোবচনে হিতার্থ-প্রাণং পুনাতি স কুলং ন তু ভূরিমানঃ' ॥ ১৪৫ ॥ विका छ वारिया मधाः २०० (औः ८७) — ७२ शः (नथ ॥ ১৪० ॥

তথাহি তত্ত্বৈ দ্বিতীয়ক্ষন্ধে ত্ৰয়ন্তিংশাধ্যায়ে অইম-শ্লোকে দেবহুতিং প্রতি কপিলদেববাক্যং।

'অহোবত ! শ্বপটোহতো গরীয়ান যজ্জিহ্বাতো বর্ত্ততে নাম তৃভ্যং। তেপু ত্তপ তে জুত্বু: সমুরার্য্যাঃ ব্ৰহ্মানুচু নাম গুণস্তি যে তে'॥ ১৪৬॥ हिका ও बार्या मधाः ১৫৫ জाः २७১—७२ पृः (नथ ॥ ১৪७ ॥

> ভনি ঠাকুর কহে 'শাস্ত্র এই সভ্য হয়; সেই শ্রেষ্ঠ ঐছে ফাতে ক্লফভক্তি হয়। আমি নীচ জাতি, আমার নাহি কৃষণভক্তি; অসত ঐছে হয়; আমার নাহি শক্তি'।

তাঁরে নমন্তরি কালীদাস বিদায় মাগিলা: ঝড় ঠাকুর তবে তাঁরে অনুত্রজি আইলা। **उ**ंदित विशास शिया ठीकृत विश घटत आहेला ; তাঁহার চরণ চিহ্ন যে ঠাঁঞি পডিলা: मिहे पूना नाम कानीनाम मर्काष्ट्र तिशिव_ा ভার নিকট এক হানে লুকাঞা রহিল। ঝড় ঠাকুর ঘরে যাই দেখি আফ্রফল; মনে সেই কৃষ্ণচন্দ্রে অর্পিল সকল। কলার পাট্যাথোলা হৈতে আম্র নিক্সিয়া তার পত্নী তারে দেন খায়েন চ্যিয়া। চুষি চুষি চোকা আঁটি ফেলিল পাটুয়াতে; তাঁরে থাওয়াইয়া পদ্মী থাইল পশ্চাতে। অাটি চোকা সেই পাটুয়াথোলাতে ভরিয়া বাহিরে উচ্চিষ্টগর্জে ফেলাইল লঞা। সেই থোৱা আঁটি চোকা চুষে কালীদাস; চুষিতে চুষিতে হয় প্রেমের উলাস। এইমভ যত বৈষ্ণব বৈদে গৌড়দেশে: কালীদাস ঐছে স্বার নিল অবশেষে। (प्रहे कानीमाप्र यद नीलाहरल काहिना; মহাপ্রভু ভাঁর উপর মহারূপা কৈলা। প্রভু যদি যান জগল্পাথ দরশনে ; জনকরঙ্গ লঞা গোবিন্দ যায় প্রভুদনে। সিংহম্বারের উত্তরদিকে কপাটের আডে; বাইস পদার ভলে আছে নিমু গাডে। সেই গাড়ে করি প্রভু পাদপ্রকালন ক্রে করিবারে যান ঈশ্বর দর্শন। গোবিন্দেরে মহাপ্রস্থ করিয়াছে নিয়ম; থোর পাদজল যেন না লয় কোন জন।' প্রাণীমাত্র লইছে না পার সেই জল; অন্তর্গ ভক্ত লয় করি কোন ছল।

অকলিন প্রভূ তাঁহা পাছ প্রকালিতে;
কালীবান আনি তাঁহা পাছিলেন হাতে।
এক কালি, মই আনি
তাব প্রতিত্ত তাঁহে বান বিলি শীল;
তবে কালিছ তাঁহে বান বিলি ।
'অতঃপর কাল কালি নিমর্কার;
এতাকজনিবাহা পূর্ব করিল তোমার।'
সর্বজ্ঞ লিরোমনি চৈতত ঈখর;
বৈষ্ণবে তাঁহার বিখাল ভানেন অন্তর।
সেইগুল লঞা প্রভূ তাঁহের তুই হৈল;
আতের ছল্ল প্রসাদ তাঁহারে করিল।
ঘাইশ প্লার পাছে উত্তর দক্ষিণ দিপে;
এক ন্লিংহ মৃত্তি আছে উঠিতে বামভাগে।
প্রতিতি দিন তাঁহের প্রভূ করেন নমস্কার;
নমস্করি এই লোক পড়ে বার বার।
তথাহি নুসিংহ পুরণিং।

'নমস্তে নরসিংহায় প্রহ্লাদাহ্লাদদায়িনে। হিরণ্যকশিপো র্বকঃশিলাটক্ষনথালয়ে'॥ ১৪৭॥

হে প্রভো! 'নন্ধ সিংহার' 'তে' তুতাং 'নমঃ'। কীদৃশার 'প্রকাদাকাদকারিনে' প্রকাদসা ভক্তস্য আনক্ষদায়িনে। পুনঃ 'হিরণ্যকশিপোঃ' দৈত্যভ 'বক্ষংশিলাটকনথালয়ে' বক্ষ এব শিলা প্রভরং তক্তাঃ টক্ষে বিদারণবিষয়ে নথানাং আলি র্থস্য তব্মৈ ॥ ১৪৭ ॥

হে নৃসিংহ দেব ! ভূমি হিরণ্যকশিপু দৈত্যের বক্ষঃরূপ-শিলা বিদারণ জন্য নথরাজি ধারণ করিয়া ভক্তপ্রহ্লাদের আনন্দ বর্দ্ধন করিয়াছিলে; তোমাকে নমকার। ১৪৭।

তথা নৃসিংহ পুরাণং।
'ইতো নৃসিংহঃ পরতো নৃসিংহো
যতো যামে ততো নৃসিংহঃ।

विह नृ निः रहा कारत नृ निः रहा नृ निः हमानिः भत्रनः श्रेष्टनाः । १००० स

'ইত:' অমিন্ ছানে বিরাজত কিন্দের বিরাজত কিন্দের বানেহিপি 'ন্সিংহা' বিরাজতে। অন্তর্ব হি: নক্ষ্মিন্ত বিরাজতে। আতত্তং 'আদিং' 'ন্সিংহং' আহং 'শরবং' প্রেপদ্যে' প্রাম্মেন্ত ১৪৮ দ

এখানে, সেখানে, অন্তরে, বাহিরে, যেখানে যাইতেছি কেবল নৃসিংহই দেখিতেছি; অতএব আমি আদি-পুরুষ নৃসিংহের শরণাপন্ন হুইলাম। ১৪৮।

> তবে প্রভু কৈল জগরাথ দরশন ; ঘরে আসি মধ্যাক করি করিলা ভোজন। বহিদারে আছে কালীদাস প্রত্যাশা করিয়া; গোবিন্দেরে ঠারে প্রভুকহেন জানিয়া। প্রভুর আদেশেতে গোবিন্দ সব জানে; কালীদাসে দিল প্রভুর শেষপাত্র দানে। বৈষ্ণবের শেষ ভক্ষণের এতেক মহিমা; কালীদাদে পাওয়াইলা প্রভুর রূপাদীমা। তাতে বৈষ্ণবের ঝুঠা থাও ছাড়ি ঘুণা লাজ; যাহা হৈতে পাইবে বাঞ্ছিত সব কাষ। क्रस्थित উच्छिष्टे रुव महाश्रमान नाम; ভक्तरंगर देश्त महा महाव्यमानायान । ভক্তপদধূলি আর ভক্তপদজল ; ভক্ত ভুক্ত শেষ এই তিন মহাবল। এই তিন সেবা হৈতে কুফপ্রেমা হয়; পুনঃ পুনঃ সর্কাশন্তে ফুকারিয়া কর। ভাতে বার বার কহি শুন ভক্তগণ! বিশাস করিয়া কর এ তিন সেবন। তিন হৈতে কৃষ্ণনাম প্রেমের উল্লাস; ক্লক্ষের প্রসাদ, তাতে সাক্ষী কালীদাস।

নীলাচলে মহাপ্রভু রহে এই মভে; কালীদাসে মহারূপা কৈল অলক্ষিতে। সে বৎসর শিবানক পত্নী লঞা আইল; পুরীদাস ছোট পুত্রে সঙ্গেতে আনিল। পুত্রসঙ্গে লঞা তিঁহো আইল প্রভুর স্থানে; পুত্রে করাইল প্রভুর চরণ বন্দনে। 'कृष् कर' विन अक् वरन वात वात ; তবুকুঞ্চ নাম বালক না করে উচ্চার। निवानम बानारकत्त वह यञ्च देकन ; **७३ (महे वालक कृक्ष नाम ना कहिल।** প্রভু কহে 'আমি নাম জগতে লওয়াইল; স্থাবর পর্যাস্ত কৃষ্ণ নাম কহাইল। ইহারে নারিল কৃষ্ণনাম কহাইছে'। শুনিয়া স্বরূপ গোঁদাঞি লাগিলা কহিতে:-'তুমি কৃষ্ণনামমন্ত্র কৈলে উপদেশে; মন্ত্র পাঞা কারও আগে না করে প্রকাশে। यत्न यत्न कर्ल, मूर्थ ना करत काशान ; এই ইহার মন কথা করি অনুমান'। আর দিনে কহে প্রভু 'পড় প্রীদাস' ! এই স্লোক করি তিঁহো করিল প্রকাশ।

তথাছি কর্পুরক্তাচার্য্যশতকে প্রথমশ্লোকঃ। 'প্রবসোঃ কুবলয় মক্ষো রঞ্জনমুরসো মহেন্দ্রমানাদাম। কুন্দাবনরমণীনাং মণ্ডনমধিলং হরির্জয়তি'॥ ১৪৯॥

'হরি:' 'জয়ডি'। को দৃশ: স:? 'শ্রহসো:' নয়নয়ো: 'কুবলয়ং' নীলোৎপলসদৃশপ্রীতিকর:; পুন: 'অফ্লো:' চক্ষুবো: 'অঞ্জনং' কজ্ঞলসদৃশ-শোভাজনক: 'উরদঃ' বক্ষুবলভঃ 'মহেক্রমণিদাম' ইক্রনীলমণীনাং মালাসদৃশশোভনং; পুন: 'বৃন্ধাবনয়মণীনাং' গোপবধ্নাং 'অধিলং' দকলং 'মগুনং' ভ্রণং ॥ ১৪৯॥

হরির জয় হউক ! তিনি নীলোৎপলের স্থায় নয়নের আনন্দদায়ক ও কজ্জলের স্থায় প্রীতিজনক, ইন্দ্রনীলমণির মালার স্থায় বক্ষের শোভাকারী এবং গোপবধৃদিং । অথিল ভূষণ স্বরূপ। ১৪৯।

> সাত বৎসরের শিশুনাহি অধায়ন: এছে শ্লোক করে. লোকে চমৎকার মন। চৈভন্ত প্রভুর এই কুপার মহিমা; বেক্ষাদি দেব যার নাহি পায় সীমা। ভক্তগণ প্রভুদকে রহে চারি মাসে; প্ৰভু আজা দিল দব গেলা গৌড়দেশে। তাঁসবার সঙ্গে প্রভুর ছিল বাহাজান; তাঁরা গেলে পুনঃ হৈল উন্মাদপ্রধান। রাত্রি দিনে ক্রে কুফের রূপ গন্ধ রস; সাক্ষাদত্বভবে যেন ক্বঞ্চ উপস্পর্শ। এক দিন প্রভু গেলা জগরাথদর্শনে; সিংহলারের দলই আসি করিল বন্দনে। তারে বলে 'কোথা রুফ্ত মোর প্রাণনাথ ? মোরে কৃষ্ণ দেখাe' বলি ধরে তার হাত। (महे कदर 'हैश व्यं ब्राख्य नन्मन ; আইস তুমি মোর সঙ্গে করাঙ দর্শন'। 'ভূমি মোর সখা দেখাও কাঁহা প্রাণনাথ'? এত বলি জগমোহন গেলা ধরি তার হাত। সেই বলে 'এই দেখ শীপুরুষোভ্য; নেত্র ভরিয়া ভূমি করহ দর্শন'। গরুড়ের পাছে রহি করেন দর্শন; (मर्थन क्रमाथ इस मूत्रली यमन। এই नीना निकथाए त्रम्नाथ नाम ; रेड्डनाख्यकत्रद्राक कतिशाहि ध्येकाम I

তথাহি স্তবাবল্যাং চৈত্যস্তবকল্পরকে সপ্তমশ্লোকে রঘুনাথদাসবাক্যং।

'ক মে কান্তঃ কৃষ্ণস্থ রিতমিহ তং লোকয় সথে।
ছমবেতি দ্বারাধিপমভিবদনু মদ ইব।
ক্রতং গচ্ছদ্রস্টুং প্রিয়মিতি তত্তকেন ধৃত তদুজান্ত গোরাকো হৃদয় উদয়মাং মদয়তি'॥ ১৫০॥

হে 'সংথ' ছারপাল! 'নে' মম 'কান্তঃ' 'কুষ্ণঃ' 'ক' 'কুঅ'? 'ইহ' অমিন্ সময়ে 'হং' 'তমেব' কৃষ্ণমেব মাং 'ছরিতং' শীদ্ধং 'নোকর' দর্শর; 'ইতি' ইহং প্রকারেণ 'উন্মদ ইব' মহোন্মগুপ্রারঃ 'হারাধিপং' ছারপালং 'ক্ষতিবদন্'সন্ 'প্রিরং' ক্ষণং 'ল্রুইং' 'ক্রতং' শীদ্ধং 'গচ্ছ' আগচ্ছ 'ইতি' 'ভত্ত-কেন' হারাধিপবচনেন 'গৃতভভূলান্তঃ' গ্রহং ভন্য ছারাধিপন্য ভূজস্ত অন্তং শেষঃ যেন সঃ 'গৌরাঙ্গং' মম 'হাদ্রে' উদয়ন্' সন্ 'মাং' 'মদয়তি' উন্মত্ত-বং করোভি ॥ ১৫০॥

'হে সথে। আমার প্রাণনাথ শ্রীকৃষ্ণ কোথায়। তুমি এখন
শীন্ত আমাকে তাঁহার দর্শন করাও'; এই প্রকারে প্রমত্তর
ন্থায় দারাধিপকে সম্বোধন করিলো 'তোমার প্রিয়তমকে
শীন্ত দর্শন করিতে চল' দারপাল এই কথা বলিলে যিনি
তাঁহার ভূজান্ত ধারণ করিয়াছিলেন; সেই গোরাঙ্গ আমার
হলয়ে উদিত হইয়া এখনও আমাকে আনন্দে উন্মন্ত করিতেছেন। ১৫০ ব

হেন কালে গোপালবল্প ভ ভোগ লাগাইল;
শাদ্ধ অণ্ট। আদি সব কারতি বাজিল।
ভোগ সরিলে জগল্পাথের সেবকগণ;
প্রাণাল লঞা প্রভ্রে ঠাঁ ঞি কৈল আগমন।
মালা পরাইরা প্রমাদ দিল প্রভ্রে হাতে;
আমাদ রহুক যার গ্রেমন মাতে।

ৰছমূল্য প্ৰসাদ সেই বস্তু সৰ্কোত্ম; তার অল থাওয়াইতে করিল যভন। তার অল্প লঞা প্রভু জিহ্বাতে যদি দিল; ष्यात्र नव त्शावित्मत्र थौं हत्न वाँ धिन। কোটি অমৃতস্থাদ পাঞা প্রভুর চমৎকার; সর্বাঙ্গে পুলক, নেত্রে বহে অশ্রধার। 'এই দ্ৰব্যে এড স্বাদ কাঁহা হৈতে আইল' ? ক্ষের অধ্রামৃত ইথে সঞ্চারিল'। এই বুদ্ধো মহাপ্রভুর প্রেমাবেশ হৈল; জগরাথের সেবকে দেখি সম্বরণ কৈল। 'স্কৃতি লভ্য ফেলামৃত' বলে বার বার ; ঈশ্বর সেবক পুছে 'কি অর্থ ইহার' ? প্রভু কছে 'এই যে দিলে কৃষ্ণাধরামৃত; ব্ৰহ্মাদিহ্ল ভি এই নিন্দ্রে অমৃত। ক্লের যে ভুক্তশেষ তার ফেলা নাম; তার এক লব পায় সেই ভাগ্যবান্। সামান্য ভাগ্য হৈছে তার প্রাপ্তি নাহি হয়; ক্লফের বাঁতে পূর্ণ কুপা সেই ভাহা পায়। 'সুকৃতি' শব্দে কহে কৃষ্ণ কুপা হেতু পুণা ; সেই যার হয় ফেলা পায় সেই ধভা'। এত বলি প্রভূ ভাসবারে বিদায় দিলা; উপল ভোগ দেখি প্রভু নিজ বাঁসা আইলা। মধ্যাক্ত করিয়া কৈল ভিক্ষা নির্বাহণ; কৃষ্ণাধরামূত সদা অন্তরে ক্রণ:। বাহে কৃত্য করে, প্রেমে গরগর মন; কণ্টে সম্বরণ করে আবেশ সম্বন। সন্ধ্যাকৃত্য করি পুনঃ নিজগণসজে; নিভূতে বসিলা নানা কৃষ্ণকথা রঙ্গে। প্রভুর ইঙ্গিতে গোবিন্দ প্রসাদ আনিল; পুরী ভারতীরে প্রভু কিছু পাঠাইল।

রামানন্দ সার্কভৌম স্বরূপাদিগণ :

সবারে প্রসাদ দিল করিয়া বন্টন। व्यनात्मत (मीत्रका माधुर्य) कति जाचामन ; অলৌকিক আত্বাদে স্বার বিশ্বর হৈল মন। প্রভু করে 'এই সব হয় প্রাকৃত দ্রব্য: ঐক্ব কপুর মরিচ এলাইচ লঙ্গ প্রা। तमराम अञ्चक आपि यक मद: প্রাকৃত বন্ধর স্বাদ স্বার অমুভব। এই দ্রব্যের এত স্থাদ গন্ধ লোকাতীত: আন্বাদ করিয়া দেখ সবার প্রতীত। আস্বাদ দূরে রহক গল্পে মাতে মন; আপনা বিনা অন্ত মাধুর্য্য করায় বিশারণ। তাতে এই দ্রব্যে কুঞাধর স্পর্শ হৈল: অধরের তাণ সব ইহাতে সঞ্চারিল। অলৌকিক গন্ধ স্থাদ অহা বিশারণ: মহামাদক হয় এই কৃষ্ণাধরের গুল। অনেক স্থকতে ইহার হঞাছে সম্প্রাপ্তি; সবেই আখাদ কর করি মহাভক্তি'। হরিধ্বনি করি সবে কৈল আখাদম: আত্মাদিজে প্রেমে মত্ত হৈল, স্বার মন। প্রেমাবেশে মহাপ্রভুষবে আজ্ঞা দিলা; রামানন্দ রায় লোক পড়িতে লাগিলা।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমন্তক্ষে একব্রিংশাধ্যায়ে চতুর্দ্দশ-শ্লেকে শ্রীকৃষ্ণমূদ্দিশ্য গোপীবাক্যং। 'হ্লৱতবর্দ্ধনা হেচ্ছু চুম্বিতং। ইতররাগবিস্মারণং নৃণাং বিত্তর বীর নত্তেহধরামৃতং'॥ ১৫১॥ হে 'বীর'! 'ডে' ভব 'শ্বধরামৃডং' 'নঃ' শ্বশুতান্ 'বিতর' দেহি। কীলৃশং ? 'প্রতবর্ধনং' প্রতেষ্য রমণস্য লীলাকৌ তৃকালে বর্ধনং পুনঃ 'শোকনাশনং' শোকছঃথাদিনাশনশীলং পুনঃ 'স্বিভবেণুনা' স্ববিতেন নাদিতেন বেণুনা 'স্টু' স্করং 'চ্ছিডং' বংলগং নাদাম্ভবাসিত্মিতি-ভাব:। পুন: 'নৃণাং' 'ইতররাগবিক্মারণং' ইতরেষু স্থেষু রাগমিচ্ছাং বিশারয়তি বিলোপয়তি তথা তৎ ॥ ১৫১ ॥

হে বীর ৷ তোমার অধরস্থা স্থরতবর্দ্ধক, শোকনাশক, এবং শব্দায়মান বেণুতে স্থন্দররূপে সংলগ্ন; আর উহা মানবগণের ইতরস্থেচছ। বিশ্বত করায়; আমাদিগকে উহা বিতরণ কর। ১৫১।

> লোক ভূনি মহাপ্রভু মহাতৃষ্ট হৈলা; রাধার উৎকণ্ঠা শ্লোক আপনি পড়িলা।

তথাহি গোবিন্দলীলামূতে অউমদর্গে অউমশ্লোকে বিশাখাং প্রতি জ্রীরাধিকাবাক্যং।

'ব্রজাতুলকুলাঙ্গনেতররসালিতৃ**ঞাহ**রঃ প্রদীব্যদধরামৃতঃ স্থকৃতিলভ্যফেণালবঃ।

ু স্বধাজিদহিবল্লিকাস্থদলবীটীকাচর্ব্বিতঃ

স মে মদনমোহনঃ সথি তনোতি জিহ্বাস্প,হাং'॥১৫২॥

হে 'স্থি' বিশাধে 'সঃ' 'মদনমোহনঃ' 'মে' মম 'জিহ্বাস্পৃহাং' রসনায়াঃ লালসাং 'ডনোঙি' বিস্তারয়তি। কীদৃশঃ সঃ? 'অঞাতুলকুলা-**কনেভররসালিতৃঞাহরঃ' রজস্য বৃক্ষাবনস্য অতু**লানাং তুলনারহিতানাং কুলালনানাং গোপীনামিভার্থ: ইতরেষু রসালিষু রস্মৃত্হরু পার্থিরসালিষু ইত্যর্থ: তৃষ্ণাং হর্ছে, শীলং যস্য সঃ; পুনঃ 'প্রদীব্যদধরামৃতঃ' প্রকৃষ্টরূপেন দীবাৎ শোভমানং অধ্যামৃতং যদা; পুন: 'স্কৃতিলভাফেণালবঃ' স্কৃ-ক্ষিভি: পুণ্যবৃদ্ধি: লভা: লভনীয়: প্রাণণীয়: ফেণায়া: অধরামূত্স্য ইত্যুর্থ: नवः অল্লাংশো যস্য; পুন: 'স্থাজিদহিবল্লিকাসুদলবীটীকাচর্বিতঃ' স্থাজিৎ অমৃতনিন্দিতং ভথা অহিবলিকারাঃ নাগণতিকারাঃ নাগণরীর-

স্যেভ্যর্থ: স্থালমিব বাটীকারা: তাম্লস্য চর্বিতং যস্ত मः । ५६२ ॥

হে দখি ! ধাঁহাকে পাইলে ব্রজবধুদিগের ইতররদে স্পূহা থাকে না; যাঁহার অধরায়ত লোভনীয়রূপে শোভা পাইতেছে: অনেক স্বকৃতি না হইলে যে অধ্রামতের কণামাত্র লাভ করা যায় না; এবং যাঁহার নাগবল্লীর ন্যায় স্থগোল তাম্ব লচর্বিত অমতের আস্বাদকেও পরাজয় করি-য়াছে: সেই মদনমোহন আমার আজ রদনার লাল্সা বদ্ধিত করিতেছেন। ১৫২॥

> এত কহি গৌর প্রভু ভাবাবিষ্ট হঞা; হুই শোকের অর্থ করেন প্রলাপ করিয়া।

> > যথা রাগঃ।

'তমুমন করায় ক্ষেভি, বাড়ায় স্থরত লোভ, হর্ষ শোকাদি ভাব বিনাশয়:

পাদরায় অন্তর্স,

জগৎ করে আবাবশ.

লজ্জাধর্ম ধৈর্য্য করে ক্ষয়। নাগর ! শুন ভোমার অধর চরিত (১) মাতার নারীর মন, জিহ্বা করে আকর্ষণ. বিচারিতে সব বিপরীত।

আছক নারীর কাষ. কহিতে বাসিয়ে লাজ তোমার অব্ধর বড়গৃষ্ট রায়:

১ অধর চরিত—অপ্রকট লীলার ভগবানের রসপ্রকৃতি। শ্রুতি বলিয়াছেন তিনি রসম্বরূপ: 'রসে। বৈ হি সঃ'। ভগবানের এই অধর রস পান করিলে হুরতলোভ বা তাঁহার সজোগেচ্ছা উত্তরোত্তর বর্দ্ধিত হয়। মধুররদের ভক্তকে কোমলম্বভাব নারীপ্রকৃতি বলা যায়; কঠোর জ্ঞানীই পুরুষ এবং নোহমুদ্দ অজ্ঞান জীবই অচেতন। এই বস-অকৃতি যথন আদেশবাণীর সহিত সংযুক্ত হইয়া জীবস্ত রূপে মাদুষকে ডাকিতে থাকে ; তথন ভক্ত ও জ্ঞানীর তোকথাই নাই: অজ্ঞান জীবও মোহিত হইবা বার এবং অচেতন পদার্থত महिल्दान मात्र यन कथा करिए थाक। धकर नीवात म्मेशेर्थ।

'পুরুষে করে জাকর্ষণ, আপনা পীয়াইতে মন, অভারস সব পাসরায়।

সচেতন রহু দূরে, আচেতন সচেতন করে,

তোমার অধ্র বড় বাজীকর;

ভোমার বেণু ভক্ষেন,(১) ভার জন্মার ইন্দ্রির মন, ভারে আপনা পীয়ার নির্ভর !

বেপু ধৃষ্ট পুরুষ হঞা, পুরুষাধর পীয়াইয়া, গোপীগণে জানায় নিজ পান:—

''ওতে ওন গোণীগণ! বলে পিঙো ভোমার ধন, ভোমার যদি থাকে অভিমান:

ভবে মোরে ক্রোধ করি, লক্ষ্ণাভয় ধর্ম ছাড়ি, ছাড়ি দিমুকরদিয়া পান।

নহে পিমু নিরস্তর, ভোমায় মোর নাহিক ডর,
আনতা দেখোঁ তণের সমান''।

অধরামৃত নিজস্বরে, (২) সঞ্চারিয়া সেই বলে,
আকর্ষ্যে ত্রিজগত জন ;

আমরা ধর্ম্মে ভর করি, রহি যদি ধৈর্যা ধরি, তবে আমায় করে বিভয়ন।

নীবি থসায় শুক আগে, লজ্জা ধর্ম করায় ত্যাগে, কেশে ধরি যেন লঞা যায়:

আনি করায় তোমার দাসী, শুনি লোক করে হাসি, গুই মত নারীরে নাচায়।

শুক্ষ বাঁশের কাঠিথান, এত করে অপমান ? এই দুশা করিল গোদাঁই :

১ তোমার বেৰু ক্ষেক্ষন ইত্যাদি— অপ্রকট লীলায় ভগবানের আবেশবাণীর ইন্দিকট্ তদীয় বেৰুকাপে বণিত হইয়াছে; ভাগবতে ইহাকে যোগমায়া বনিয়াছেল। 'বোগমায়া মুণাপ্রিক্ত: ইত্যাদি। উহা রসপ্রকৃতির সহিত যুক্ত হইয়া ভক্তিতে প্রকৃতিত হইলে তাহাদিপকে কুল্পপ্রে জলাঞ্চলি দেওয়াইয়া রাগনার্গে লইয়া যায়। রসমূক না হইলে বিবেকবাণী গুক্লাঠের ভায়ে অতি নীরস লাগে, চিত্তকে আকৃষ্ট ক্রিতে সমর্থ হয় না। প্রকট

२ निज्ञचात्र--वःशीचात्र।

'না সৃহি কি করিভে'পারি ? ভাছে রহি মৌন ধরি, চোরার মাকে ডাকি কান্দিতে নাই। অব্ধরের এই রীভি. আর গুন কুনীভি, সে অধর সনে যার মেলা: সেই ভক্ষ্য ভোজ্য পান, হয় অমৃত স্মান, নাম তার হয় কৃষ্ণ ফেলা। সে ফেলার এক লব, না পায় দেবতা সব. এ দত্তে কেবা পাতিযায় ? বহু জন্ম পুণ্য করে, তবে স্তুক্তি নাম ধরে, সে স্কৃতি ভবে লব পায়। কৃষ্ণ যে খার ভাষুল, কহে তার নাহি মূল, ভাহে আর দন্ত পরিপাটী; ভার যে বা উদ্পার, তারে কয় অমৃত্যার, গোপীর মুখ করে আলবাটী। (১) এ সব তোমার কুটিনাটি, ছাড় এই পরিপাটী, বেণু দারা কাছে হর প্রাণ ? আপুনার হাসি লাগি, নহ নারীর বধ ভাগী ? দেহ নিজাধরামৃত দান'। কহিতে কহিতে প্রভার ভাব ফিরি গেল: ক্রোধ মন শাস্ত হৈল উৎকণ্ঠা বাড়িল। 'পরম হলভি এই কৃষ্ণাধরামূত; তাহা যেই পায় তার সফল জীবিত।

যোগ্য হঞা তাহা কেহ করিতে না পায় পান:

তথাপি সে নিল জ রুথা ধরে প্রাণ। অযোগ্য হঞা তাহা কেহ সদা পান করে: যোগাজন নাহি পায় লোভে মাত্র মরে।

করে আলবাটী—অঙ্করাগের ফুগর্জি ত্রব্যরাথার পাত্র। তগবানের প্রদাদ ভত্ত-্মুখে আন্ধিত থাকিবে নাত আর কোথায় থাকিবে ? আলবাটী হইতে হুগন্ধ দ্রব্য মাধি-লেও যেমন তাহাতে ঐ দ্রব্যের অংশ সকল পড়িয়া থাকে ; তেমনি ভক্ত মুথে ঈখর সন্তোগের

'ভাতে জানি কোন ভপদ্যার আছে এত বল; , অবোগ্যেরে দেওয়ার কৃষ্ণাধরামূত ফল। কহ রামরায়! কিছু শুনিতে হয় মন'। ভাব জানি পড়ে রায় গোপীর বচন।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমক্ষমে একবিংশাধ্যায়ে নবম-শ্লোকে বেণুগীতে কাশ্চিন্সোপীঃ প্রতি কাশ্চিন্সোপ্যঃ প্রান্তঃ।

> 'গোপ্যঃ কিমাচরদয়ং কুশলং স্ম বেণু দামোদরাধরস্থধামপি গোপিকানাং। ভূঙ্ত্তে স্বয়ং যদবশিক্তরসং ভূদিভো হুষ্ত্তোহশ্রু মুমুচু স্তরবো যথাধ্যাঃ'। ১৫৩।

তে 'গোপাঃ' 'অয়ং' বেণুঃ' 'কিং' 'ক্শলং' প্ণাং 'আচর এ' কুতবান্ 'আ' বিম্মারে। কথাং ? 'যথ' যামাথ 'গোপিকানাং' জমাকনেব 'ভোগ্যাং' দ্রতীন্দিপ 'গানোদরাধর স্থাং' 'মারং শাত জ্ঞান যথে ইং 'ছঙ্ কে'; কথাং ? 'অব-শিষ্টর সং' অবশিষ্টো রসো রসমাজং যজ ভদ্যথাস্তাও ভথা। যভঃ যাসাং প্রসা অয়ং বেণুঃ পুঠ তা মাতৃত্ব্যা ইতঃথাং 'ছদ্ভিঃ' নদাঃ 'হ্যাস্তাঙা' বিকশিত ক্মলনিযোগত গুলি বোমাঞ্চিতা লক্ষিতাঃ। বেবাং বংশে জাতত্তে 'ভ্রবঃ' মধুবারানিষেণ 'অস্কু' আনন্দাক্ষ 'ম্মুচ্ং'। 'যথা' 'আর্ঘাঃ' ক্লর্লাঃ স্ববংশে ভগবৎসেবকং দৃষ্ট্ৰা হ্যাস্তাঃ অস্কু মুঞ্জি ভ্রদিভ্রেগঃ॥১৫৩॥

কোন কোন ব্রজাঙ্গনা কহিলেন হে গোপীগণ! কৃষ্ণের
যে অধরস্থবা কেবল গোপীভোগ্যা ও রদপরিপূর্ণ; এই বেশু
কি পুণ্য বলে একেলা যথেন্টরূপে তাহা পান করিতেছে ?
বলিতে পারি না। আবার দেখ কুলর্দ্ধ পুরুষেরা স্থ
বংশে ভগবৎপরায়ণ ব্যক্তি জন্মিলে যেমন হাই ইইয়া
আনন্দাশ্রু মোচন করেন; সেইরূপ যাহাদের জলে ঐ

বেণু পুষ্ট হইয়াছিল, মাতৃত্ন্যা সেই নদী সকল কমল বিকাশ করিয়া যেন রোমাঞ্চিত লক্ষিত হইতেছে এবং যাহাদের বংশে দে উৎপন্ন হইয়াছিল, দেই তরুগণও মধুধারা বর্ষণ করিয়া যেন আনন্দাশ্রু মোচন করিতেছে। ১৫৩।

> এই শ্লোক শুনি প্রভু ভাবাবিষ্ট হঞা; উৎকর্পাতে অর্থ করে প্রলাপ করিয়া।

যথা বাগঃ।

'অহো ! ব্ৰফেন্ত্ৰ নন্দন, ব্ৰজের কোন ক্যাগণ, অবেলাক বিবে পরিণয়: বে সম্বন্ধে গোপীগণ, যাকে জানে নিজ ধন. সে সুধা অভ্যের লভ্য নয়। গোপীগণ ! কছ সব করিয়া বিচারে; কোন ভীর্থে কোন তপ; কোন দিদ্ধ মন্ত্রজপ; **এই বেণু কৈল জন্মাস্ত**রে ? ॥ धः ॥ হেন কৃষ্ণাবরস্থা. যে কৈল অমৃত মুদা. যার আশার গোপী ধরে প্রাণ: এই বেণু অযোগ্য জভি. একে স্থাবর পুরুষ জাভি. ্সে হুধাসদাই করে পান। ষার ধন না কহে ভারে. পান করে বলাৎকারে. পীতে তারে ডাকিয়া জানায়: তার তপস্থার ফল, দেখ ইহার ভাগ্য বল. ইহার উচ্ছিষ্ট মহাজনে থায়। मानगान कालिनी, जुवन পावन नहीं, কুষাং যদি তাতে করে স্নান; বেণু ঝুটাধররস, হঞালোভ পরবশ, সেই কালে হর্ষে করে পান। (১).

[ু] মানসগলা কালিনী ইতাাদি—অপ্রকট লীলায় ভগবলীলাশক্তির আরক্ষ। প্রধান

'এত নদী রহ দুরে, বুক্ষস্ব ভার ভী*রে*, ভপ করে পর উপকারী: নদীর শেষরস পাঞা, সুল স্থারে আক্ষিয়া, কেন পীয়ে ? ব্ঝিতে না পারি। নিজাকুরে পুলকিত, পুষ্প হাস্ত বিকদিত, मध् मिर्य वटह काळाधात ; বেগুকে মানি নিজ জাতি, আর্ফ্যের যেন পুত্র নাতি, বৈষ্ণব ভটলে আনন্দ বিকার। বেণুর তপ জানি যবে, সেই তপ করি তবে, এ ত অযোগ্য আমরা যোগ্যনারী: बाहा ना পाঞा इः त्थ मति, ऋषांगा शीरत महिएक नाति, ভাগ লাগি ভপদাা বিচারি'। এতেক বিলাপ করি. প্রেমাবেশে গৌরহরি. ু নঙ্গে লঞা স্বরূপ রামরায়: কভুনাচে কভুগায়, ভাবাবেশে মৃচ্ছ বায়, এইরাপে রাতি দিন যায়। স্বরূপ রূপ স্নাত্ন, রঘুনাথের শ্রীচরণ, শিরে ধরি করি যার আশ: হৈতজ্ঞচরিভাষ্ত, অমৃত হৈতে পরামূত, গায় দীন হীন কৃষ্ণদাস। ইতি শ্রীচৈতন্যচরিতায়তে অন্ত্যখণ্ডে কালীদাস প্রসাদ-

বিরহোন্মাদপ্রলাপো নাম ষোড়শ পরিচ্ছেদঃ ॥১৬॥

গহার রসপ্রকৃতিকে সভোগ করিতেথাকে; তথন লীলারপনরী সকল এবংলীলাপ্রকৃতি লে একাণ্ডের বস্তুরুপী বৃক্ষণণও বেপুর উদ্ভিষ্ট হংকামলপ্রেমরন আক্রাণন করিয়াংশোভঃ গাইয়াথাকে।

সপ্তদশ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থা।

লিখ্যতে শ্রীল গৌরস্থ অত্যন্তুত মলৌকিকং। যৈ দুক্তিং তন্মুখাৎ শ্রুত্বা দিব্যোনাদবিচেষ্টিতং।১৫৪।

'হৈং' ভকৈ: শ্বরপরামানন্দরবুনাখদাসাদিভিরিতার্থ: 'দৃষ্টং' 'ঞ্জীল-সৌরস্ত' 'অভুতং' তথা 'অলৌকিকং' 'বিচেষ্টিভং' ভাবমূদ্রাদিকং 'তনুথাৎ' তেবাং মুথাৎ 'শ্রুয়া' মরা ডচ্চেষ্টাদিকং 'লিখ্যতে' বর্ণাতে॥ ১৫৪॥

শ্রীগোরাঙ্গের অতি অন্তুত ও অলোকিক ভাবচেন্টা বাঁহারা দেখিয়াছিলেন, তাঁহাদের মূথে শুনিয়া আমি তাহ। লিখিতেছি। ১৫৪।

> জয় জয় ঐতিত্ত ! জয় দিতানন্দ জয়াবৈছচল ! জয় গৌরভক্তর্ক ! এই মত মহাপ্রভু রাত্রি দিবদে; উমাদের চেষ্টা প্রলাপ করে প্রেমাবেশে। এক দিন প্রভু স্বরূপ রামানন্দ সঙ্গে; অর্দ্ধ রাত্রি গোঙাইল কৃষ্ণকথা রঙ্গে। যবে যেই ভাব প্রভু করয়ে উদয়; ভাবায়্রপ গীত গার স্বরূপ মহাশয়। বিদ্যাপতি, চণ্ডীদাস, শ্রীগীতগোবিন্দ; ভাবায়্রপ স্লোক পড়ে রায় রামানন্দ। মধ্যে মধ্যে আপনি প্রভু স্লোক পড়িয়া; সোনের অর্থ করেন প্রলাপ করিয়া। এই মতে নানা ভাবে অর্দ্ধরাত্রি হৈলা; গোসাঞিকে শর্মন করাই দেহে ঘ্রে গোলা। গম্ভীরার স্বারে গোধিন্দ করিলা শয়ন;

আচ্বিতে গুনে প্রভু ক্ষবেণুগান; ভাবাবেশে প্রভু তাঁহা করিলা পরান। তিন ঘারে কপাট তৈছে আছে ত লাগিয়া: ভাবাবেশে প্রভুগেলা বাহির হইয়া। সিংহদারের দক্ষিণে আছে তেলাঙ্গা গাবীগণ; তাঁহা বাই পড়িলা প্রভু হঞা অচেতন। এথা গোবিন্দ প্রভুর শব্দ না পাইয়া; স্বরূপেরে বোলাইল কপাট থুলিয়া। স্থার প্রোমাঞি সঙ্গে লঞা ভক্তগণ: দিয়াটি জালিয়া করে প্রভুর অবেষণ। ইভি উভি অবেষিয়া সিংহদারে গেলা: গাভীগণ মধ্যে যাই প্রভুরে পাইলা। পেটের ভিতর হস্ত পাদ কুর্মের আকার; মুথে ফেণ, পুলকাঙ্গ, নেত্রে অঞ্ধার। অচেভন পড়িয়াছে যেন কুমাও ফল; বাহিরে জডিমা, অন্তরে আনন্দ বিহ্বল। গাই সব চৌদিগে সুঁকে প্রভুর প্রীঅঙ্গ; দুর কৈলে নাহি ছাড়ে মহাপ্রভুর সঙ্গ। অনেক করিল যত্ন না হৈল চেতন; প্রভ উঠাইয়া ঘরে আনিল ভক্তগণ। উচ্চ করি শ্রবণে করে নাম সংকীর্ত্তন; অনেককণে মহাপ্রভুপাইল চেতন। চেত্ন পাইলে হস্ত পাদ বাহির আইল; পূর্ব্বৎ যথাধোগ্য শরীর হইল। উঠিয়া বসিয়া প্রভু চাহে ইতি উতি; স্বরূপেরে কহে 'তুমি আমা আনিলে কভি ?। বেণু শব্দ গুনি আমি গেলাম বৃন্দাবন; **(मिथि)गार्छ (वर्ष वाष्ट्राय उटलक्तनम्मन।** সক্ষেত বেণুনাদে রাধা পেলা কুঞ্জ ঘরে; কুঞ্জেতে চলিলা কৃষ্ণ ক্ৰীড়া ক্রিৰারে।

'তাঁর পাছে পাছে আমি করিছ গমন ;
ভূষণ করিছে জামার হরিল প্রবণ ।
গোপীগণ সহ বিহার হাস পরিহাস ;
কঠকনি উক্তি তানি মোর কণোলাস ।
হেনকালে ভূমি সব কোলাহল করি ;
আমা ই হা লঞা আইলা বলাৎকারে ধরি ।
ভারতে না পাইছ সেই ক্ষেত্র সম বাণী !
ভানিতে না পাইছ ভূষণ মুরলীর ধ্বনি'!
ভাবাবেশে স্বরূপে কহে গলাদ বাণী ;
'কর্ণ ভূষণার মরি, পড় রসামৃত শুনি'।
স্বরূপ র্নীয়াঞি প্রভূর ভাব জানিয়া;
ভাগবভের শ্লোক পড়ে মধুর করিয়া।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমস্বন্ধে উনত্রিংশাধ্যায়ে সপ্ত-ত্রিংশশ্লোকে শ্রীকৃষ্ণং প্রতি গোপীবাক্যং। ক্ষান্ত্র্যঙ্গ তে কলপদায়তবেণুগীত-সন্মোহিতার্য্যচরিতান্নচলেল্রিলোক্যাং। ত্রৈলোক্যসোভগমিদঞ্চ নিরীক্ষ্য রূপং

যদেগাদ্বিজক্ৰময়গা পুলকান্তবিভ্ৰন্'। ১৫৫।

होका छ वार्षा। मधाः ८०० त्याः ७०৮ शृः (मथ ॥ ১৫৫ ॥

ন্ডনি প্রভূ গোপীভাবে আবিষ্ট হইলা; ভাগবভের শ্লোকার্থ করিতে লাগিলা।

যথা রাগঃ।

হৈল গোপী ভাবাবেশ, কৈল রাদে প্রবেশ,
কুঞ্চের শুনি উপেকা বচন;
কুঞ্চের মধুরবাণী, ত্যাগে তাহা সভ্য মানি,
রোবে কুফো দেন ওলাহন।
শাগর। কহ তমি করিয়া নিশ্চর:

'এই ত্রিজগত ভরি, আছে যত যোগ্য নারী. তোমার বেণু কাহা না আকর্ষয় ? জ । देकरण अगरा दव् स्वनि, निक मञ्जानि स्वांशिनी. मृठी रका त्यार नाती मन ; মহোৎকণ্ঠা বাড়াইয়া, আর্য্যপথ ছাড়াইয়া, ভানি তোমায় করে সমর্পণ। धर्म हाफां दिव शाद्य, हान कठांक काम्माद्य, লজা ভল সকল ছাড়াও: এবে আমায় কর রোষ, কহ পভিভাগে দোষ, ধার্মিক হঞা ধর্ম শিথাও। অত কথা অত্য মন, বাহিরে অত্য আচরণ. এই সৰ শঠ পরিপাটী: তুমি জান পরিহাদ, হর নারীর দর্জনাশ, ছাড় এই সব কুটিনাটি। বেণুনাদ অমৃভঘোলে, অমৃত সমান মিঠাবোলে, অমৃত সমান ভূষণ শিক্তিত: তিন অমৃতে হরে কাণ, হরে মন, হরে প্রাণ, কেমনে নারী ধরিবেক চিড' ? এত কহি ক্রোধাবেশে, ভাবের তরঙ্গে ভাবে, উৎকণ্ঠা সাগরে ডুবে মন; রাধার উৎকণ্ঠা বাণী, পড়ি আপনি বাখানি, ক্রঞ মাধুর্য্য করে আয়াদন।

পুন র্যথা রাগঃ।

'कर्छत शृक्षीत ध्वनि, नवचन ध्वनि जिनि, यात्र शास्त्र (कांकिन नांक शाह ; ভার এক শ্রুতি কণে, তুবায় জগতের কাণে, পুন: কাণ বাছড়ি না যায়। কহ স্থি ! কি করি উপান্ন ?

'ক্ষের সে শব্দ গুণে. হরিলে আমার কাণে. এবে ন্ন পাই ভকার মরি বায়। এ। বে শীৰুৰ ভাষিত, অমৃত হৈতে পরামৃত,

ন্মিড কপুর তাহাতে মিশ্রিত ;

भक्ष. कार्थ, पृष्टे भंकि. (>) बाबा तम करत वाकि.

প্রতাকরে নর্ম বিভবিত। কর্ণচকোর জীবন, সে অমৃতের এক কণ.

কৰ্ণচকোর জীরে সেই আলে:

ভাগাৰণে কভু পায়, অভাগো কভু নাহি পায়. না পাইলে মররে পিয়াসে।

একবার তাহা শুনি. ্যেবা বেণুক্লংবনি, জগরারীচিত্ত আলুলায়;

बौदिवक পড়ে थनि. दिना मृत्य दश मानी. বাউলী হঞা কৃষ্ণপাশে ধায়।

त्व वा नची ठाकूबानी, डिंट्श धकाकिनी छनि, ক্ষপাশে আইসে প্রত্যাশায়:

না পেরে ক্রেডর সক্ষ. বাডে ত্ঞার তরক. ভপ করে, তবু নাহি পায়।

এই শ্রামৃত চারি. (২) বার হর ভাগ্য ভারি. সেই কর্ণ ইহা করে পান ;

ইহা বেই নাহি ওনে, সে কাণ জন্মিল কেনে ? কাণাকড়ি সম সেই কাণ'।

কবিতে ঐতে বিলাপ, উঠিল উল্বেগ ভাব, मत्म किছू नाहि जानवन ;

উলেগ, विश्वाम, मछि, 'छेरञ्चका, खाम, धुछि, चुछि, माना ভাবে হইল मिलन।

ভাব সাবলো রাধার উক্তি, সীলামুখে হৈল क हैं, সেই ভাবে পড়ে এক প্লোক :

> भक्त, वर्ष, इह मकि-त्वनु नात भक् ; छाहात वर्ष मधुत हान्छ ।

হ প্রায়ত চারি-- শীর্ণভাবিত, সিত, নর্ম, বেণুক্ষনি, এই চারিটাকে কৃষ্কঠের গভীব

উন্মাদের সামর্থো, সেই শ্লোকের করে করে, সেই অর্থ নাহি জানে লোক।

তথাহি কৃষ্ণক্ৰিয়তে দিচ্ছারিংশলোকে বিল্লমঙ্গন-বাক্যস্থ

> 'কিমিহ কৃণুমং কস্থা ক্রমঃ কৃতং কৃতমাশর। কথয়তঃ কথামন্তাং ধন্তামহে। হৃদয়ে শয়ঃ। মধুরমধুরমেরাকারে মনোনয়নোৎসবে

কুপাকুপাণা কুষ্ণে তৃষ্ণা চিরং বত লাছতে । ১৫৬।

অস্ক দিশারাং স্থীং প্রতি জীরাধিকাবাকাং; হে স্থি। 'ইহ' বিষদ্ধে
বিরহে 'কিং' 'কুণুনঃ' যেন তদ্দনিং ভবেৎ রাগোহ্যং; 'কল্প' জনন্ত স্থকে
'ক্রেমং' কং জনং তৎ পৃচ্ছামং যং যুয়মিশি মন্তুলাবিদ্ধাঃ; চিক্রৈয়া। 'আশারা'
তদাশরা যায়া 'কুতং' তৎ 'কুতং' পুনরন্তং ন 'কুর্মঃ; মন্তিরেয়া। তল্ত বার্ত্তাং ভ্যক্ত্বা 'অলাং' 'ধলাং' 'কথায়' 'কথায়হ'; মর্বিদ্য়ঃ। যন্ত কথাং ভাল্ক্ মিচ্ছামি 'আহাং'! কঠং স্ ধ্র্তিঃ মম 'ক্রেমে' 'শায়ং' আলেরে শেতে ভিষ্ঠিভি; আবেদাদয়ঃ। তর্ত্তাগো দ্বেহস্ত 'কুফো' নন্দনন্দনে 'বভ' থেদে মম 'তৃষ্ণা' বাসনা 'চিরং' প্রতিদ্দাং 'লম্বভে' অবলম্বতে অবলম্বা ভিষ্ঠিভীভার্থঃ। কীদৃশী তৃষ্ণা ? 'কুণণকুণণা' উৎকঠ্য়া দীনা; বিষাদেদানঃ। কুষ্ণে কীদৃশে ? 'মধুরমধুরংস্থাকারে' মধ্বামধুরঃ স্মেরাকারঃ মন্দ্রাভ্রপাকৃতিবিশ্বিদ্ 'পুনঃ 'মনোন্যনোৎস্বে' মনোন্যন্রেরাক্রহ স্ক্রেবা যন্ধিন্। ১৫৬ ।

শ্রীকৃষ্ণবিরহের চরমাবস্থায় শ্রীরাধিকা স্থীদিগকে বলিতেছেন, হে সথি! এখন আমি কি করিলে কৃষ্ণদর্শন পাই ? তোমরাও তো আমার মত ব্যাকুলা; তবে কাহা-কেই বা এ ছঃথের কথা বলি ? তাঁহার আশায় যাহা করিয়াছি, দেই ভাল, আর কিছু করিব না। এখন তাঁহার কথা ছাড়িয়া আর কোন সংকথা বল। হায়! তিনি যে আমার হাদয়গুহাশায়ী; তবে কেমন করিয়া তাঁহার কথা ছাড়িব ? আহা! ছাড়া দুরে থাকুক, দেই হুমধুর হাত্ময়,

মন ও নয়নের আনন্দবর্দ্ধক জ্রীনন্দনন্দনে আমার তৃষ্ণা যে চির্দিনই আলম্বিত আছে॥ ১৫৬॥

যথা রাগঃ।

'এই ক্লঞ্চের বিরছে, উদ্বেগমন স্থির নহে, প্রাপ্ত গুণায় চিন্তন না যায়; বিষাদে বাউল মন. যে বা তুমি দখীগণ, কারে পুছেঁ। ? কে কছে উপায় ? হাহা দ্বি ! কি করি উপায় ? काहा करता ? कांश्याह ? कांश्राटिशत कुछ शाह ? ক্ষ বিনা প্রাণ মোর বায়'। ক্ষণে মন স্থির হয়, তবে মনে বিচারয়, বলিতে হটল ভাবোদাম: পিল্লার বচন স্মৃতি. (১) করাইল ভাব মৃতি, তাতে করে অর্থনির্লারণ। 'দেখি এই উপারে, কৃষ্ণ আশা ছাড়ি দিয়ে, আশা ছাডিলে সুধী হয় মন: ছাড়ি কৃষ্ণকথা অধন্য. কহ জান্য কথা ধন্য. যাতে হয় কৃষ্ণ বিশারণ'। कहिए इटेन श्वृति, हिएव देशन कुछ फ र्जि, স্থিকে কহে হুইয়া বিশ্মিতে: 'যারে চাহি ছাড়িতে, সে শুইয়া আছে চিতে. কোন রীতে না পারি ছাডিতে'। রাধাভাবের স্বভাব আন, কুফে করায় কামজ্ঞান, कामख्यान जान देशन हिएछ:

^{*} এই লোকে রাগোদয়, চিন্তা, মতি, মর্ঘ, আসে, বিষাদ প্রভৃতি ভাবোদয়ের বৈচিত্র দর্শিত হইয়াছে।

১ পিক্লার বচন অভি--- শীরাধার প্রতি পিক্সা নামী স্থীর বাক্য বাহা পুর্বোদ্ত লোকে বর্ণিত হইরাছে, তাহা মতি নামক ভাব উদ্তি হইয়া অরণ করাইয়া থিলে এয়াধিকা (भारतीयांक) वर्ष निकाबन कतिरलन ।

কহে 'বে জগৎ মারে, সে পশিল অস্তরে, **धरे देवति ना (** तत्र शांगतिएछ'। ं ওঁৎসুকোর প্রাধানা. জিনি অনা ভাবসৈনা. উদর কৈল নিজ রাজামনে: মনে হৈল লালস. নাহয় আপন বশ. তঃথে মনে করেন ভৎসিনে :— 'मन (मात्र वाम मीन, कल विना यन मीन, कृष्ध विना कर्ण मित्र यात्र ; মধুরহাস্য বদনে, মননেতারসায়নে. ক্লফত্ষ্ণা দ্বিগুণ বাডায় হাহা কৃষ্ণ! প্ৰাণধন! হাহা পলালোচন ! হাহা দিবাসদগ্ণসাগর! হাহা আমস্ত্ৰার! হাহা পিতাম্বরধর। হাহা রাসবিলাস নাগর! কাঁহা গেলে তোমা পাই ? তুমি কহ তাঁহা যাই। এত কহি চলিলা ধাইয়া: শ্বরূপ উঠি কোলে করি, প্রভুরে আনিল ধরি, নিজ স্থানে বসাইল লঞা। ক্ষণে প্রভুর বাহু হৈল, স্বরূপেরে আজ্ঞা দিল. 'অরেপ। কিছু কর মধুর গান'; স্বরূপ সায় বিদ্যাপতি, গীভগোবিন্দ গীভি. শুনি প্রভুর জুড়াইল কাণ। এই মত মহাপ্রভু প্রতি রাত্রি দিনে; উন্মাদ চেষ্টিত হয় প্রলাপ বচনে। এক দিনে যত হয় ভাবের বিকার; সহত্র মুথে বৃণে যদি নাহি পার পার। জীব দীন কি করিবে তাহার বর্ণন ? माथाठल नाम कति पिता प्रमान। ইহা যেই শুনে ভার জুড়ার মন কাণ;

कालीकिक शृह्द्यम (हडी इब कान।

আৰু ত নিগৃত প্ৰেমের মাধুৰ্য মহিমা;
আপনি আখাদি প্ৰভু দেখাইল দীমা।
আৰু ত দয়ালু চৈছনা, আৰু ত বদানা;
ঐছে দয়ালু দাতা লোকে শুনি নাহি অনা।
সৰ্বভাবে ভক্ত পোক! চৈছনা চরণ;
যাহা হৈছে পাবে ক্ষপ্রেমামৃত্যন।
এইত কহিল প্রভুর কুর্মাক্কতি ভাব;
উন্মান্টেটিত ভাতে উন্মান্ত প্রাণ।
এই লীলা খ্রাছে রব্নাথ দান;
চৈতনাত্তবকলবুকে করিয়াছে প্রকাশ।

তথাहि खवावनारः टिज्नाखवकन्नत्रंक शक्ष्माक्षादक

শ্রিরঘুনাথদাসবাক্যং

'অনুদ্বাট্য দারত্রয়মুক্রচিভিত্তিত্রয়মহো বিলজ্যোচৈচঃ কালিঙ্গিকস্থরভিমধ্যে নিপতিতঃ। তন্দ্যৎসক্ষোচাৎ কমঠ ইব কুফোরুবিরহাৎ বিরাজন্ গৌরাঙ্গো হৃদয় উদয়ন্মাং মদয়তি'॥ ১৫৭॥

'গোরাপং' মম 'হাদরে' 'উদয়ন' সন্ 'মাম্' 'মদরতি' হর্ষতি। কিং কুর্কান্? 'কুফোরুবিরহাৎ' কৃষ্ণতা মহাবিচ্ছেদাছেতো: 'বিরাজন্' সন্ক ইব? 'তন্দাৎসকোচাৎ' শরীরস্ত অন্তঃস্কোচাৎ 'কমঠ ইব' কুর্ম ইব। কিং কুর্কান্? মিশ্রাবাসে 'হারত্ররং' 'অনুদ্বাট্য' ন উন্মোচ্য 'আহো' বিশাসের 'উক্চিভিত্তিত্ররং' অভ্যুচ্চং প্রাচীরত্ররং 'উচ্চৈঃ' যথাস্থাত্থা 'বিলঙ্ঘা' 'কালিকিক স্থাতি মধ্যে' কলিকদেশীয়গোগণমধ্যে 'নিপ্তিতঃ' ৷ ১৫৭ ॥

কাশীমিশ্রের আবাদে অর্গলবদ্ধ দারতার উন্মোচন না করিয়া তিনটা অত্যুচ্চ প্রাচীর লজ্মন পূর্বিক যিনি কৃষ্ণের মহাবিরহে শরীরসঙ্কৃচিত কমঠের ভাায়, কলিঙ্গদেশীয়-প্রোগণ মধ্যে নিপতিত হইয়াছিলেন; সেই গৌরাঙ্গ হৃদ্যে উচ্চিত ভইয়া আমাকে মহাহর্ষ প্রদান করিতেছেন ॥ ১৫৭॥ শ্রীরূপ রধুনাথ পদে যার আশ; চৈডক্সচরিতামৃত কহে হক্ষদাস। ইতি শ্রীচৈতন্য চরিতামৃতে অন্ত্যুথণ্ডে কৃশ্মাকারামুভাবোম্মাদ-প্রলাপো নাম সপ্তদশপরিচ্ছেদঃ।। ১৭।।

অফীদশ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থ ।

শরজ্যোৎস্নাসিদ্ধারবকলনয়া জাত্যমুনা-ভ্রমাদ্ধাবন্ যোহস্মিন্ হরিবিরহতাপার্ণব ইব। নিমশ্নো মূচ্ছবানঃ পয়সি নিবসন্ রাত্রিমথিলাম্ প্রভাতে প্রাপ্তঃ ধ্রেরবতুস শচীসূত্রিহ নঃ॥১৫৮॥

'ধঃ' শচীস্ত: 'শরজ্ঞোৎসাসিলোঃ' শরজ্ঞোৎসমা সহ সম্ভত 'অব-কলনয়া' অবলোকনেন 'লাত্যমূনাভ্রমাৎ' লাভো যমূনায়া ভ্রমন্ত শালেভোঃ 'ধাবন' গছেন্ 'মূর্ছোনঃ 'মূর্ছিভিঃ সন্' 'হরিবিরহতাপাণ্বে' 'ইব' 'পয়সি' সম্ভ্রলে 'নিময়ঃ' সন্ 'ভাবিলাং' সকলাং 'য়াভিং' 'নিবসন্' 'প্রভাতে' 'বৈঃ' স্বল্বিঃ 'প্রাপ্তঃ' অভ্ৎ; 'সঃ' 'শচীস্ত্ঃ' 'ইহ' সময়ে 'নঃ' অসমান্ 'অবতু' রক্তু ॥ ১৫৮ ॥

শরৎকালীন কৌমুলীময় সমুদ্র অবলোকন করিয়া বমুনাভ্রমে হরিবিরহতাপার্ণবৈ নিমগ্ন হওয়ার স্থায় যিনি ধাবিত
হইয়া মুচ্ছি তাবস্থায় সাগরজলে নিমগ্ন হইয়া সমস্ত রাত্রি
বাস করিয়াছিলেন; ও প্রভাতে স্বর্গণ যাঁহাকে সেই অবস্থায় প্রাপ্ত হইয়াছিলেন; সেই শচীস্থত এখন আমাদিগকে
রক্ষা করুন ॥ ১৫৮॥

জর জর ঐতিচতন্য । জয় নিত্যানন্দ ! জরাবৈতচক্র । জয় পৌরভক বৃন্দ ! এই মতে মহাপ্রভু নীলাচলে বৈদে; রাত্রি দিনে কৃষ্ণবিচ্ছেদার্পবে ভাসে।

भवरकारणव वािक मन हिन्दिका उष्टिन ; প্রভু নিজগণ লঞা বেড়ান সকল। छेगात छेगात बत्य को जूक दाविष्ठ ; রাসলীলার গীভ শ্লোক পডিতে শুনিতে। প্রভু প্রেমাবেশে করেন গান নর্তন: कञ्च ভाবাবেশে রাসলীলার্সরণ। (>) কভু ভাবোম্বাদে প্রভু ইতি উভি ধার; ভূমে পড়িকভু মৃহ্ছা, কভুগড়ি যায়। রাসলীকার এক শ্লোক ধবে পড়ে শুনে : পূর্ব্বৎ ভবে অর্থ করেন আপনে। এই মত রাসলীলায় হর যত লোক: সবার অর্থ করে প্রভু, কভু হর্ব শোক। त्म मद (श्रीरकत कर्ष. (म मद विकात: সে সব বর্ণিতে গ্রন্থ হয় অতি বিস্তার। मानम वरमदत (व रय नीमा करण करन: অতি বাছলা ভয়ে গ্রন্থে না কৈল লিখনে। পূর্বে যেই দেখাঞাছি দিগ্দরশন; ভৈছে জানিও বিকার প্রলাপ বর্ণ। महत्य वन्ता यत् कहात्र धानखः এক দিনের লীলার তবু নাহি পার অস্ত। कार्डियूत्र शर्याख यनि नित्थन शत्न ; এক দিনের লীলার তবু নাহি পার শেষ। ভত্তের প্রেমবিকার দেখি ক্ষেত্র চমৎকার: কুফ যার না পার অস্ত, কেবা ছার আর ? ভক্তপ্ৰেৰের যত দশা, যে গভি প্ৰকাৰ; যত হ:খ, যত সুথ, যতেক বিকার; কৃষ্ণ তাহা সমাক না পারি জানিতে ভক্ত ভাব অদীকারে ভাষা আত্মানিতে।

^{্ &}gt; রাস্লীলামুসরণ—'রাস্লীলামুকরণ' পাঠও আছে।

ক্ষকেরে নাচার প্রেমা, ভক্তেরে নাচাই
আপনি নাচবে, ভিনে নাচে এক ঠাঁঞি ।
প্রেমার বিকার বর্ণিতে চাহে যেই জন;
চল্ল ধরিকে চাহে যেন হইরা বামন।
বার্ যৈছে সিন্ধুজনের হররে এক কণ;
ক্ষপ্রেমাকণার তৈছে জীবের স্পর্শন।
কণে কণে উঠে প্রেমার ভরক অনন্ত;
জীব ছার কাঁহা ভার পাইবেক অন্ত ?
জীকুফটেভন্ন যাহা করে আঘাদন;
সবে এক জানে ভাহা স্বক্পাদিগ্র।
জীব হঞা করে যেই ভাহার বর্ণন;
আপনা শোধিতে ভার ছোর এক কণ।
এই মত রাসের প্লোক সকলই পড়িলা;
শেবে জলকেলির প্লোক পড়িতে লাগিলা।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমন্ধন্ধে ত্রয়ন্ত্রিংশাধ্যায়ে ত্রয়ো-বিংশশ্রোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুক্বাকাং।

'তাভি বু্তিঃ শ্রমমপোহিত্মঙ্গদঙ্গ
য়্টত্রজঃ স্বকুচকুঙ্কুমরঞ্জিতায়াঃ।

গন্ধবিপালিভিরনুক্রত আবিশ্বাঃ
শ্রান্তাে গলীভিরিভরাড়িব ভিন্নসেতুঃ' ॥ ১৫৯॥

'জলসম্বাইস্কলং' তাবাং গোপীনাং অসদকেন ঘুটাঃ স্বাধিতাঃ বা আক্ পুপানলা ভন্তা, অত্তাবাং 'বক্চক্ৰুম্ন বিতাঘাং' সংছিতিঃ 'গছৰ্জ-পালিভিঃ' গদ্ধপা গদ্ধপত্য ইব গায়ভি যে জলনঃ অমনা 'তৈও্য ক্ততঃ' অফ্গভা দ ক্ষঃ 'তাভিঃ' গোপীভিঃ সহ 'যুতঃ' মিলিভঃ 'প্ৰান্তঃ' সন্ 'শ্ৰমং' 'অপোহিত্ং' দ্মীকৰ্তুং 'গলীভিঃ' বহ 'ইভ্রাট্' মতহতী 'ইব' 'বাং' যমুনায়া জলং 'আবিশং' প্রাবিশং; কীনুশঃ ক্ষয়ং গ 'ভিরসেতুঃ' অভিক্রান্তলোক মর্যালঃ॥ ১৭৯ ৪

প্রমন্ত হস্তী যেমন করিণীগণের সঙ্গে জলকেলি করিয়া

থাকে, লোকিক বিধির অতীত ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ সেইরূপ শ্রেমনিবারণার্থে গোপীগণের সহিত মিলিত হইয়া যমুনা-সলিলে অবগাহন করিলেন; তৎকালে গোপাঙ্গনাদিগের কুচকুষ্ক্মরঞ্জিত কুস্মমালায় কতকগুলি ভ্রমর বনিয়াছিল; তাহারা গন্ধর্কপিতির ভায়ে স্থললিত গান করিতে করিতে তাহার অনুগমন করিতে লাগিল॥ ১৫৯॥

এই মভ মহাপ্রভু লুমিতে লুমিতে; আইটোটা হৈতে সমুদ্র দেখে আচ্ছিতে। চন্দ্রকাস্থ্যে উচ্লিভ তরঙ্গ উচ্চল : ঝলমল করে যেন যমুনার জল। যমুনার অমে প্রভুধাইয়া চলিলা; অলক্ষিতে যাই সিক্জেলে ঝাঁপ দিলা। পড়িতেই হৈল মুচ্ছা, কিছুই নাজানে: কভু ডুবায়, কভু ভাগায় তরঙ্গের গণে। ভরকে বহিয়া ফিরে যেন গুক্ষ কাট; কে ব্ঝিতে পারে এই চৈত্তের নাট ? কোনার্কের দিকে প্রভুকে তরকে লঞা যায়: (>) কভু ভুবাইয়া রাথে, কভু বা ভাষায়। যমুনাতে জলকেলি গোপীগণ সক্তে কুষ্ণ করে, মহাপ্রভুমগ্ন সেই রঙ্গে। ইহা সর্রপাদিগণ প্রভুনা দেখিয়া; 'কাঁহা গেলা' ? সবে কহে চমকিও হঞা। মহাবেগে গেলা প্রভু লখিতে নারিলা: था ह ना मिथिया मः भग्न कतिए ना जिला :--'खगनाथ प्रचिष्ठ किवा प्रवालात राजा ? ष्यक्र डेम्गाटन किया डेम्गाटम পড़िला ?

[ि]र्भ क्षिमिटक विरक्-कानावक ; श्रुवीव ग्रमीशह तम्ब्रक्तीवह श्रीम विरम्ब ।

'গুণ্ডিচা মন্দিরে কিব। ? কিবা নরেক্তে ?'
চটক পর্কতে কিবা ? গেলা কোনার্কেডে' ?
এত বলি সবে কিবে প্রস্তুরে চাহিয়া;
সম্রের তীরে আইলা কত জন লঞা।
চাহিয়া বেড়াইতে ঐছে শেষ রাত্রি হৈল;
অস্তর্জান কৈল প্রস্তু নিশ্চর করিল।
প্রস্তুর বিচ্চেদে কারও দেহে নাহি প্রাণ;
অনিষ্ঠ আশক্ষা বিনা মনে নাহি প্রান।

তথাহি অভিজ্ঞানশকুন্তলনাটকে চতুর্থপরিচ্ছেদে শকুন্তলাং প্রতি প্রিয়ন্থদাবাক্যং।

'অনিকাশকানি বন্ধুহাদয়ানি ভবতি হি'॥ ১৬০ ॥ 'হি' যতঃ 'বন্ধুদ্দয়ানি' 'অনিটাশ্স্কানি' অনিটে অমঙ্গলবিষয়ে আশকা যেষু' ভানি 'ভবত্তি'॥ ১৬০ ॥

বন্ধুদিগের হৃদয়ে অনিফাশক্ষাই উদয় হইয়া থাকে।১৬০।

সম্ভের তীরে আদি যুক্ত করিলা;

চিরায়ু পর্কতিদিকে কত জন গেলা।
পূর্ব দিশার চলে স্বরূপ লঞা কড জন;
সম্ভের তীরে নীরে করে জ্যেবণ।
বিষাদে বিহ্লল সবে নাইক চেতন;
তবু প্রেমবলে করে প্রভুর অংঘ্রণ।
দেখে এক জালিয়া আইসে কালে কাল করি;
হাসে কান্দে নাচে গার বলে হরি হরি।
আলিয়ার চেটা দেখি স্বার চ্ম্বতার;
স্বরূপ গোঁসাঞি তারে প্ছে স্মাচার:—
'কহ জালিয়া! এই দিকে দেখিলে এক জন?'
ভোনার এই দশা কেন? কহ ত কারণ'?
আলিয়ার কহে 'ইং। এক মন্বা না দেখিল;
আল বাহিতে এক মুক্ত মোর আলে আইল।

'বড মংস্থ বলি আমি উঠাইল বতনে; मुख्क प्रिचिख स्मात क्य देश मन्त । জাল থসাইতে তাঁর অক স্পর্ণ হৈল: স্পূৰ্ণ মাত্ৰ সেই ভূত হৃদয়ে পশিল। छात्र कल्ले देश भात (नाज वार जन: গলাল বাণী মোর উঠিল সকল। किया बक्षदेवछा ? किया ७७ ? कहरन ना यात्र ; দর্শন মাত্র মহুষ্টের পৈশে সেই কার। শরীর দীর্ঘল তার হাত পাঁচ সাতঃ এক হস্ত পদ তার তিন তিন হাত। অস্থিসন্ধি ছুটি চর্মা করে নড়বড়ে; ছোহা দেখি প্রাণ মোর নাহি রহে ধরে। মডারূপ ধরি রুছে উত্তান নয়ন: ু কভু গৌুর্গে। করে, কভু রহে অচেডন। সাক্ষাৎ দেখিছ মোরে পাইল সেই ভুড; मूरे देमाल स्मात देकाइ कीरव की शुंख ? সেই ভূতের কথা ভাই! কংন না যায়; ওবা ঠাঁঞি যাইছি যদি সে ভুত ছাড়ায়; একা রাত্রে বুলি মংস্ত মাহিয়ে নির্জ্ঞান ; ভূত প্রেড আমায় না লাগে নুসিংহ স্বরণে। এই ভূত নুসিংহ নামে চাপয়ে বিশুণে; তাহার আকার দেখিতেই ভয় লাগে মনে । ওথা না যাইও আমি নিষেধি ডোমারে: ষ্ঠাহা গেলে সেই ভূত লাগিবে স্বারে'। এড শুনি স্বরূপ গোঁসাই সব তত্ত্বানি ; জালিয়াকে কিছু কয় স্থমধুর বাণী:--'আমি বড় ওকা আমি ভূত ছাড়াইডে'; মন্ত্র পড়ি জীহন্ত দিল ভাহার মাথে। ্ভিন চাপড় মারি কছে 'ভুত পলাইল; ক্ষর লা পাইও'্র বলি ছ'ছির ক্রিল।

একে শোম, ভাতে ভয় বিশুণ অন্তির: ভर ज्यान (गाँत (महे देश किছ धीत। স্ক্রপ কছে 'বাবে ভূমি কর ভত্তান: ভূত নহে, ভিঁহ কৃষ্ণ চৈতন্ত ভগবান। প্রেমাবেশে পড়িল তিঁহে। সমুদ্রের কলে: তাঁরে তুমি উঠাইলে আগনার জালে। कांत्र न्यार्न देशन द्यामात ककार श्रामाग्य : ভূত প্রেত জ্ঞানে তোমার হৈল মহাভর। এবে ভয় গেল ভোমার মন হৈল সিরে: কাঁহা তাঁরে উঠাঞাচ ? দেখাও আমারে'। ভালিয়া কহে 'প্রভুকে দেখিয়াছি বার বার; ভিঁহো নহে, এই অতি বিক্বত আকার'। স্থার প কছে 'ভার হয় শ্রেমের বিকার: অস্থিসন্ধি ছাভি হয় অভি দীর্ঘাকার'। শুনি সেই জালিয়া আনন্দিত হটল: দ্বা লঞা গেল, মহাপ্রভুকে দেখাইল। ভূমিতে পড়িরা আছে দীর্ঘ সব কার; জলে খেত তমু, বালু লাগিয়াছে গায়। অভি দীর্ঘ শিথিল তফু চর্মা নটকার; উঠাইয়া দর পথ আনন না যায়। আর্দ্র কৌপীন দুর করি শুক্ষ পরাইরা; বহির্বাদে শোয়াইল বালুকা ঝাড়িয়া। লবে মিলি উচ্চ করি করে শংকীর্ছনে : উচ্চ করি কৃষ্ণমাম কহে প্রভুর কাণে। কভক্ষণে প্রভুর কাণে শব্দ প্রবেশিণ ; হুদ্ধার করিয়া প্রভু তবহি উঠিশ। छेप्रिएक अधि नव नाशिन निक शाम : জর্জ ব্যাক্ত ইতি উতি করে দরশনে। তিন দশার মহাপ্রভু রহে সর্ক্রাল ; चक्रमा, वाक्रमा, चर्दवाय चाहा

অন্তৰ্দশাৰ কিছু খোর কিছু বাহা জ্ঞান; সেই দশাকে কহে ভক্ত অৰ্জবাছ নাম। অর্ক্তবাহে কহে প্রভ প্রবাপ বচনে: আভাসে কচেন সব কনে ভক্তগণে :--'कालिकी (पश्चिम जामि त्रलां दुक्तावन ; দেখি জলকেলি করে রেজেন্দ্রনান। রাধিকাদি গোপীগণ সঙ্গে একত মিলি: যমুনায় মহারকে করে জলকেলি। তীরে রহি দেখি আমি স্থীগণ সঙ্গে: এক স্থী স্খীগণে দেখায় সেরিছে। (১)

যথা রাগঃ।

পট্ৰেল অলভারে. (২) সমর্পিয়াস্থীকরে. সুক্ষা শুকুৰজা পরিধান:

२ महिन्द जनकाद देवापि-त्रामेगीणा ७ कुश्चरमंबाद जालाम এই धानारमाहिन्छ

১ কালিন্দী দেখিয়া...রঙ্গে।—কালিন্দী বাবিরজানদীর পারে লীলাধাম বুন্দাবন। এই স্থানে শক্তিরূপা নিতা স্থীগণ ভগবানের লীলার সহায় হইরা তাঁহার সহিত দীলা-জলে জীড়া করিতেছেন, আর সাধনসিদ্ধ ভস্তগণ (স্থীগণ) তীরে থাকিয়া সেই লীলা দর্শন ক্ষরিয়া ফুলী হইতেছেন। পরাপ্রকৃতি খ্রীরাধিকার স্হিত পুরুষদিংহ খ্রীকুফের যে রস-ক্রীড়া তাহাই মহারান নামে আখ্যাত; তাহা প্রাকৃত ক্রেমন্থী চেট্টা নহে। "যুত্রাৎ ্হলাদিনীশক্তি বিলাসলক্ষণ তৎ প্ৰেমনংখাবৈৰ। গিরংসা নতু প্রাকৃতকামনগীতি" বৈক্ষব-ভোষণী। এই রাদক্রীড়াবসানে ভগবান স্কল পবিত্রভার বসন পরিছা হৃষ্টিরূপ লীলাজনে পরা-প্রকৃতি ও শক্তিরূপ। নথীগণ লইয়া জলকেলি করিয়া থাকেন। ঐ জলকেলিই ভাগবতের রাসাধ্যারে বর্ণিত হইয়াছে; এবং তাহারই অপাকুভাবভারণা মহাপ্রভুর প্রলাপ্বাক্যে এপানে করা হইয়াছে। সজিদানন্দ পুরুষের স্প্রিনীলা করিতে ইচ্ছা হইলে তিনি আপনার অরপ হইতে পরাপ্রকৃতিকে প্রকৃতি করত উহোর সহিত রমণেচছু হইয়া ভাহাতে আপন চিদ্ৰীৰ্ঘ আধান করেন; উহা হইতে প্ৰকাশ্বছল মহত্ত্বাদি প্ৰসূত হইলে ভগবান দেই পরাপ্রকৃতি ও মহত্তত্ত্বের অভাতত্ত্তে থাকিয়া সৃষ্টির লীলালনে বা কারণার্শনে ভাগাদের সঙ্গে ক্রীড়া করিয়া থাকেন। "স এব প্রকৃতিং সুক্রাং দৈবীং গুণ ময়ীং বিভঃ, যদক্তরা বোপ-গতামভাপদাত লীলয়। " "বিলাং যোনে পর: পুনান, আবস্ত বীর্যাং সামুত মহত্তং हिद्रभाषम्"। "তুৰ্ণৈবিভিজা: প্ৰভাতীং সক্লপা: প্ৰকৃতিং প্ৰজাঃ, বিলোকা মুমুহে সদা: সাইহ জ্ঞানগৃহরেতি "। লীলাশেষ হইলে প্রমপুরুষ আবার প্রাঞ্জুতি শ্রীরাধা ও মহন্তভাদি স্থীগণের সৃহিত স্বধানে যোগনিসাবলয়নে শর্ম করিয়া থাকেন: ভাগরতের ७व ऋकी इ.२७ काशांत (मथ)

'কৃষ্ণ লঞা কান্তাগণ, কৈল জলাবগাহন. জলকেলি বচিল সুঠাম। স্থি হে! দেখ ক্লেফর জলকেলি রজে: কুষ্ণ মত্ত করীবর, চঞ্চল কর পুদ্ধর, গোপীগণ করিণীর সঙ্গে। এ। चात्रस्थित सन्दर्भन, चार्यास्त्र सन रक्षारक्रि. হুডাছড়ি বর্ষে জলধার: সবে জয় প্রাজয়, নাহি কিছ নিশ্চয়, জলযুদ্দ বাড়িল অপার। বর্ষে হির ভড়িদ্দন, সিংখে খাম নব্যুন, ঘন বর্ষে তিভিত উপরে: স্থীগণের নয়ম. ভূষিত চাতকীগ্ৰ. সে অমৃত স্থে পান করে। প্রথমে যুদ্ধ জলাজলি, ভবে যুদ্ধ করাকরি, ভার পাছে যুদ্ধ মুখামুখি; **ख्रा**य युक्त क्षनाक्षानि, ख्राय देशन वानावानि. ্তবে হৈল যুদ্ধ নথানথি। সহস্র কর জল সেকে, সহস্র নেত্রে গোপী দেখে, · সহস্র পদে নিকটে গমনে: শহস্থ চুষ্টে, সহস্ত বপুঃ লক্ষে, গোপী নশ্ম ভনে সহস্র কাণে।

কুষণ রাধায় লঞা বলে, গেলা কঠমগ জলে. ছাড়িল তাঁহা বাঁহা অগাধ পানী; তিঁহো কৃষ্ণকণ্ঠ ধরি, ভাসে জলের উপরি, গজোৎঘাতে ধৈছে কমলিনী।

দেখা ঘাইতেছে। প্রকটলীলা স্পষ্টার্থ । অপ্রকটলীলার প্রেমরাজ্যের অতি উচ্চতম সভ্যের আভাস আছে ৷ ভাগ্যবান ভজের মাধুর্গপুর্ণ চিত্তবৃন্দাবনত প্রেমধনুদার কীলা-**ললে সহাভাবময়ী থারাখিকা মনোবৃত্তি স্থীগণে পরিবৃতা হইয়া ভাষস্করের সঙ্গে সহা**শ वार्य अपूक श्रेटन এই ছবিই দৃষ্ট श्रेश थारक। जगन लोकनच्छात्र बलाञ्चान अनिका পড়ে এবং কত প্রকার ক্রীড়াকোতুক হইরা থাকে। এখর্থ্যের চিত্র পট্রবন্ত্র অলক্ষরিটি বাৰিয়া ভগৰান কৈবল ওল পৰিত্ৰ মাধুৰ্য। ভাবে এই লীবাজলে অবতরণ করেন।

'बंक रंगान छन्तती. 'কুক ভড় রূপ ধরি, न्तात वह कतिल हत्नः वयूनांकण निर्माण, অঙ্গ করে ঝল মল. कुर्थ कुक करत मत्रमन। কৈল কারও নহার, প্রিনীল্ডা স্থীচয়, ভার হল্তে পত্র সমর্পিল: কেহ মক্ত কেশ পাশ. আগে কৈল অধোবাস. হস্তে কেহ কঞুলী ধরিল। ক্রফের কলহ রাধা দনে. গোপীগণ সেই ক্রণে. হেমাজ বনে গেলা লুকাইতে; (১) चाक है बन्न करन देना. यूच माख करन छात्न. পল্মে মুখে না পারি চিনিতে। . এথা কৃষ্ণ রাধা সনে, কৈল যে আছিল মনে, গোৰীগণ অমেবিতে গেলা: জানিয়া দথীর স্থিতি. ভবে রাধা হক্ষমতী. স্থীমধ্যে আসিয়া মিলিলা। ্বত হেমাজ কলে ভাসে,(২)তত নীলাজ ভার পাশে, আসি আসি কররে মিলন; নীলাজ হেমাজে ঠেকে, যুদ্ধ হয় প্রত্যেকে, কৌতক দেখে তীরে গোপীগণ।

> হেমাজবনে গেল ল্কাইয়া—কুকের সহিত আদিনীর পরাকাটা মহাভাবনরী দ্বাবার স্থানির পরাকাটা মহাভাবনরী দ্বাবার স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির হেমাজবনে মিলাইরা বাঙ্যাই আভাবিক। মহালোভির অভাবের কুল কুল লোভি ল্কারিত হইরা বার ; আবার কুল জ্যাভির স্থানিকে স্থানির স্থ

২ হেনাজ্ঞ — নীলাজ্ঞ । — নীলামনী জীবশক্তিই হেনাজ; আর প্রাণমনমিন্ধকর নীলাজ্ঞ তগবানের আনক্ষ চিন্ধন অরূপ। ই'হাকে চক্রবাকও বলা হইরাছে; ছুল ক্ষাতের মহন্তবাদি রক্ষোৎপল, কেননা ভাহারা রাগ বা আসন্তিতে জড়িও। জীব নারাজ্ঞর, একল অতেতন; মহন্তব্য লড়ীর ভাহাতে সেও আচেতন। জীব আসন্তিবিধীব ছইলেই তপ্রান্ধকে কৃতিয়া লইতে চার; কিন্তু মহন্তবাদি অহ্বান্ধ ভাহাকে উহা ক্রিতে গের লা, একনা ক্রিয়া ভাহাকের মধ্যে বিবাহ চলিতে থাকে; জীবল্পা

'চক্ৰবাক মণ্ডল, (১) পথক পথক বুগল, क्षण देशक कतिल छेकाम : উঠিল পদ্ম মণ্ডল. পৃথক পৃথক যুগৰ, চক্রবাকে কৈল আচ্চাদন। উঠিল বছ রভেশংপল. পুথক পুথক্ যুগাল, পদাগণে কৈল নিবারণ: পদা চাছে লুঠি নিতে. উৎপল চাছে রাখিতে. চক্রবাক লাগি দোঁহার রণ। প্রোৎপল অচেডন. চক্ৰবাক সচেভন, চক্রবাকে প্র আস্বাদয়: ইহা দোঁহার উলটা ভিডি. ধর্ম হৈল বিপরী ভি. কুষ্টের রাজ্যে ঐছে ক্সায় হয়। মিতের মিত্র সহবাসী, চক্রবাকে পদা লুঠে আসি. কুকোর রাজ্যে ঐচে বাবহার: অপরিচিত শক্রর মিতা, রাথে উৎপল এ বড় চিতা। এ বভ বিরোধ অল্ভার। অভিশয় উক্তি, বিরোধাভাস, তুই অলঙ্কার প্রকাশ, করি ক্রফে প্রকট দেখাইল; যাহাকরি জাকাদন. আনিশিভ মোর মন. নেত্ৰ কৰ্ব্য জুড়াইল। ঐচে বিচিত্র ক্রীড়া করি, তীরে আইলা শ্রীহরি, সঙ্গে লঞা সব কাস্তাগণ:

প্রকৃতি পূর্বরূপী ভগবানের উপর প্রতিষ্টিত; ইহাই ব্রীপুরুবের বিপরীত দ্বিতি।
ভীবপ্রকৃতি মহতভাগির মধ্যে অবস্থিত; এরন্য উভয়ের সহবাসী বন্ধু। আধার
ভীব পরমান্তার বন্ধু; দ্বা ফ্পর্পা সর্বা স্থায়েতি প্রতি:। কিন্তু মহতভাগি ঈশ্বরপ্রকৃতির
অপরিচিত অর্থাৎ মারার সহিত সথক রাবে বলিরা মহতভাগি ভগবানের ব্যরুপকে শর্প করিতে পারে না; অথচ ব্যন তাব মারাপ্ত হইরা ঈশ্বরকে স্ট্রা বাইয়া আন্থানাং ক্রিভে
ভার, তথন অপরিচিত মহতভাগি তাহা ক্রিভে দেয় ন'; ইহা বিরোধাতাস অলম্বার;
বন্ধ এই স্ট্রীলার্বিচিত্রতা অনভা, এরন্য উহা অভিশ্যোভি অলম্বার।

১ চকুৰাক্ষণ্ডল ইত্যাদি—লীলামর জগৰান এক হইদাও পৃথক পৃথক জীব প্রস্তিদ্ধ অভ্যত্তে অভ্যামীরণে পৃথক প্রদাশিত।

'शक्तरेजन सर्फन, आमनकी छेवर्सन, সেখা করে তীরে স্থীগণ। প্রনর পি কৈল স্থান. শুক্ষ বস্তা পরিধান, ্রভুম্নিরে কৈল আগমন: বুন্দাকুত সম্ভার, (১) গন্ধ পূম্প অলকার, বক্সবেশ করিল রচন। বুন্ধাবনে ভক্লভা, অস্তুড ভাহার কথা, বার মাস ধরে ফুল ফল; बुक्तावरम (प्रवीशंग. কুঞ্জদাসী যত জন, ফল পাড়ি আনিয়া সকল: উত্তম সংস্কার করি, বড়বড় থালি ভরি, রজ মন্দিরে পিণ্ডার উপরে: ভক্ষণের একম করি. ধরিয়াছে সারি সারি. আগে আসন বসিবার তরে। নারিকেল নানা জাভি, এক আম্র নানা ভাতি, কলাকোলি বিবিধ প্রাকার: পনস খর্জুর কমলা, নারজ জাম সম ভারা, ভাক্ষা বাদাম মেওরা যত আর। খরসুজা কীরিলি ভাল, কেশর পানিফল মূণাল, বিল পীলু দাডিমাদি যভ; (कान (मार्थ कार था) कि, तुन्नावान प्रवाद दिक्ति, সহস্ৰ জাতি, লেখা যায় কভ ?

১ বৃহ্বাকৃত সভার......দেখি আমার স্থী হৈল মন া—কুঞ্ল দেবার ছবি। মহারা-সাল্ডে চিত্তবুলাবনের নানালাতীয় ভাবকল ভোজন করিয়া ভগবান তথ্য হন, আবার জাঁচার দত্ত প্রসাদ ভোজনে প্রীরাধিকা ও স্থীরাও চরিতার্থ হন। জীবান্ধারূপিণী রাধিকা প্রশারা কুঞ্চের সভিত সন্মিলিত হইয়া চিত্তমন্দিরে শিয়ন অর্থাৎ চিরবিরাঞ ক্রিলে, প্রণ্শ ভা (উত্তেজিতা) মনোবৃত্তি স্থীগণ্ও তথন নিশ্চিতে যে বাঁহার ক্লে শ্রুন কডিলা গতেকন সার্থাৎ স্বাস্থ কার্যাক্ষেত্রে অটলভাবে অবস্থিতি করেন; অথবা ভূটি জীলাকলানে ভগবান্ পরাপ্রকৃতির সহিত যোগ নিজার নিজিত হন্।

'গলাজল অমৃত কেলি, পীয়ৰ গ্ৰন্থি কপূরি কেলি, সর পুলী অমূত পদাচিনি; थ अ विशिष्ठ मा तुक्क. ঘরে করি নানা ভক্ষা.. রাধা ফাহা কৃষ্ণ লাগি আনি। ভক্ষ্যের পরিপাটী দেখি, ক্রন্ট হৈল মহাস্থাই, বিদি কৈল বহা ভোজন; সঙ্গে লকা স্থীগণ. রাধা কৈল ভোজন. (माटक टेकल मिलाद भारत। কেহ পাদসম্বাহন, কেহ করে বীজন. কেহ করায় তামূল ভক্ষণ; রাধারুফ নিদা গেলা, স্থীগণ শয়ন কৈলা, (पि विश्वामात स्वरीः देशन मन। হেনকালে মোরে ধরি, মহাকোলাহল করি, ভূমি সব ইহালঞা আইকা; কাঁহা বমুনা বুলাবন ? কাঁহা কৃষ্ণ গোপীগণ ? সে স্থ ভঙ্গ করাইলা'। किरिष्ठ करिष्ठ প্রভুর কেবল বাছ হৈল; স্বরূপ গোঁদাঞিকে দেখি তাঁহাকে পুছিল:-'ইহাঁ কেন তোমবা আমারে লঞা আইলা' ৪ স্বরূপ গোসাঞি তবে কহিতে লাগিলা :--'ধমুনার ভ্রমে তুমি সমুদ্রে পড়িলা; সমুদ্র তরঙ্গে ভাসি এভদূর আইলা। এই জালিয়া জালে করি তোমার উঠাইলা : তোমার পরশে এই প্রেমে মত হৈলা। সব রাত্রি সবে বেড়াই ভোমায় অবেধিয়া; জালিয়ার মুখে শুনি পাইল আংসিয়া। তমি মন্ত্ৰিচলে तुन्तावत्न म्य क्लेड़ा; ভোমার মৃচ্ছ। দেখি দবে মনে পাই পীড়া। কুঞ্চনাম লৈভে ভোমার অর্দ্ধ বাহ্য হৈল; ভাতে যে প্রনাপ কৈলে ভাষা যে ভনিল'।

প্রত্ কছে 'স্বপ্নে দেখি গেলাম বৃন্দাবনে;
দেখি কৃষ্ণ রাস করেন গোপীগণ সনে।
কলকীড়া করি কৈল বস্ত ভোজনে;
দেখি আমি প্রলাশ কৈল হেন লয় মনে'।
তবে স্বরূপ গোঁসাঞি ভাঁরে লান করাইয়া;
প্রত্ লঞা বরে আইলা আনন্দিত হঞা।
এইত কহিল প্রত্র সমুদ্রে পতন;
ইহা যেই ভনে পায় চৈতক্ত চরণ।
জীরূপ রখুনাথ পদে যার আশ;
১ৈতক্তচরিভামৃত কহে কৃষ্ণাদা।

ইতি জীচৈততাচরিতামতে অন্তাথতে সমুদ্রপতনং নাম অফাদশ পরিচ্ছেদঃ। ১৮।

ঊনবিংশ পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থ।

বন্দে তং কৃষ্ণচৈতন্তং মাতৃভক্তশিরোমণিং। প্রলপ্য মুখসংঘর্ষী মধুদ্যানে ললাস যঃ। ১৬১।

'মাতৃভক্ত শিরোমনিং' 'তং' 'কৃষ্ণ চৈত্ততং' অহং 'বন্দে'; 'ষং' চৈত্ততঃ 'মুখসংঘৰী' সম্থং সংঘৰ্ষতি যঃ তাদৃশঃ সন্ 'প্রলপ্য' 'মধুদ্যানে' বসস্ত-সময়ে অগলাথবল্লভনামোপবনে 'ললাস' বিরাজলামাস॥ ১৬১।

যিনি মুখ সংঘর্ষণ করিয়া ও প্রলাপবাক্য কহিয়া বসন্ত সময়ে জগমাথবল্লভ নামক পুজ্পোদ্যানে বিরাজ করিয়া-ছিলেন; মাতৃভক্ত শিরোমণি সেই প্রীচৈতত্তের বন্দনা করি। ১৬১।

> জর জর ঐঠিচতন্ত। জর নিড্যানন্দ। জরাইদতচন্দ্র। জর গৌরভক্ত বৃন্দ। এই মডে মহাপ্রাভু ক্লফ প্রোমাবেশে উদ্মাদ প্রদাপ করে রাজি দিবদে।,

প্রভর অত্যন্ত প্রির পণ্ডিত অগদানক : বাঁহার চরিত্রে প্রভ পারেন আনন। প্রতি বংসর প্রভু তাঁরে পাঠান নদীয়াতে ; বিচ্ছেদত্ব:থিত। জানি জননী আখাদিতে। 'নদীরা চলহ মাতাকে কহিও নমস্বার: আমার নামে পাদপর ধরিও তাঁহার। কহিও তাঁহাকে "তুমি করহ স্মরণ; নিতা আসি আমি তোমার বন্দিয়ে চরণ। ষে দিনে ভোমার ইচ্চা করাইতে ভোজন : সে দিনে আসিয়া অব্যাকরিয়ে ভক্প। ভোমার সেবা ছাডি আমি করিল সন্ন্যাস : বাউল হট্যা আমি কৈল ধর্মনাশ। এই অপরাধ তুমি না লইও আমার ; ভোমার অধীন আমি পুত্র সে ভোমার। নীলাচলে আছি আমি তোমার আজাতে; যাবৎ জীব ভাবৎ আমি নারিব ছাডিতে''। लाभनीनाय भाय त्यहे अभान वमत्नः মাতাকে পাঠান তাহা পুরীর বচনে। জগরাথের উত্তম প্রসাদ আনিয়া যতনে; মাতাকে পৃথক পাঠান আর ভক্তগণে। মাতৃভক্ত গণের প্রভু হয় শিরোমণি: সন্ন্যাস করিয়া সদা সেবেন জননী। জগদানৰ নদীয়াতে গিয়া মাতাকে মিলিলা: প্রভুর যত নিবেদন সকল কহিলা। कार्ताशाकि उक्तशा मिनिन धानाक पित्रा ; মাতা ঠাঞি আজা লৈল মাদেক রহিয়া। काहार्यात हैं। कि शिया चाका मात्रित : चार्ठाचा (गाँमाञिः श्रज्रू मत्मम कश्नि। তবজা প্রহেলী আচার্যা করে ঠারে ঠোরে; প্রভূ মাত্র বুঝে কেহ বুঝিতে না পারে।

'প্রভুকে কৃষ্ণি আমার কোটি নমস্কার; এই নিবেদন তাঁর চরণে আমার। ৰাউলকে কহিও লোক হইল আউল: वाछेल कि कहि छ हा है ना विकास हा छेल । (>) বাউলকে কহিও কাষে নাহিক আউল: বাউলকে কহিও ইহা কছিয়াছে বাউল।" এত শ্রুমি জগদানন্দ হাসিতে লাগিল: নীলাচলে আসি ভবে প্রভুকে কহিল। তরজা ভুনি মহাপ্রভ ঈষৎ হাসিলা: ভার এই আজোবলি মৌন করিলা। জানিয়া স্বরূপ গোঁদাঞি প্রভকে পুছিল : 'এই ভরজার অর্থ বৃঝিতে নারিল'। প্ৰভ কহে 'আচাৰ্য্য হয় পুজক প্ৰবল; আগমশাস্ত্রে বিধি বিধানে কুশল। উপাসনা লাগি দেবের করে আবাহন: পূজা লাগি কথক কাল করে আরাধন। পূজা নির্বাহণ হৈলে পাছে করে বিদর্জন; তরজার নাজানি অর্থ কিবা তাঁর মন। মহাযোগেশ্বর আচার্য্য ভরজাতে সমর্থ: আমিও বঝিতে নারি কিবা তার অর্থ'। শুনিষা বিস্মিত হৈল সব ভক্তগণ: স্বরূপ গোঁদাঞি কিছ হইলা বিমন। সেই দিন হৈছে প্রভুর আর দশা হৈল; ক্ষেত্র বিরহ দশা দিকাণ বাডিল। উন্মাদ প্রলাপ চেষ্টা করে রাত্রি দিনে: রাধাভাবাবেশে বিরহ বাড়ে অফুক্ষণে।

১ বাউলকে ইত্যাদি—লোক সকল উচ্ছ্ঝান হইয়াছে, ধর্ম কেছ লইতেছে না। তৎকালে বৈক্ষৰ জগতের উক্ষুত্বল ভাব ও ধর্মহীনভার প্রতি লক্ষ্য করিয়াই বোধ হর অবৈতাচার্যা এই তর্হা বলিয়া পাঠাইয়াছিলেন। মহাপ্রজ্ব মৌনভাব ও স্কল্পের বিমনস্থ ইহাই শ্রমণ করিতেছে।

আচিষিতে ফুরে ক্ষেত্র মধ্রা গমন;
উদ্ধৃণা দশা হৈল উন্মাদ লক্ষণ।
রামানন্দের গলা ধরি করেন প্রলাপণ;
ফানেপে প্ছেন জানি নিজ স্থিজন।
পূর্বের যেন বিশাথাকে রাধিকা প্ছিলা;
সেই খোক পড়ি প্রলাপ করিতে লাগিলা।

ভথাহি ললিতমাধবে তৃতীয়াস্ত্রে পঞ্চলিংশভিতম-শ্লোকে নেপথ্যে শ্রীরাধায়া উৎকণ্ঠাপ্রশ্নবাক্যং। কি নন্দক্লচন্দ্রমাঃ ক শিথিচন্দ্রিকালঙ্কৃতিঃ ক মন্দমুরলীরবঃ ক তু স্তরেন্দ্রনীলন্ত্যতিঃ। ক রাদরসভাগুবী ক স্থি জীবরক্ষোষ্ধি

র্নিধি ম ম হহততমঃ ক বত হন্ত হাধিথিধিং'। ১৬২।

হে 'স্থি' বিশাখে 'নন্দক্লচন্দ্রনাং' মম প্রাণবল্লভঃ কৃষ্ণঃ 'ক' কুত্র;
'শিথিচন্দ্রিকালক্তিঃ' শিথিচন্দ্রিকঃ মনুরপুছে এব অলক্ষ্ডিঃ ভূষণং যন্ত ভাদৃশঃ কৃষ্ণঃ 'ক' কৃত্র। 'নন্দ্রলীরবঃ' 'ক'; 'হু' ভো 'ছ্রেক্ত নীল-ছ্যুতিঃ' ইন্দ্রনীলনণে ছ্যুভিঃ কান্তি বঁল স 'ক' কৃত্র; 'রাসরসভাগুবী' রাসরসে তাগুবোহল্যান্তীতি রাসরসে নর্ভনক্শলঃ 'ক'; 'জীবরক্ষোবাধিঃ' মম প্রাণবক্ষায় ম্যোমধিদ্রপঃ 'ক'; 'মম' 'নিধিঃ' 'হ্ছেত্মঃ' কৃষ্ণঃ 'বভ' আশ্চর্য্যে 'ক'; 'হন্ত' বিষাদে 'হা' থেদে 'বিধিং' 'ধিকু'॥ ১৬২॥

কৃষ্ণবিরহে জ্ঞীরাধা উৎকণ্ঠ। প্রশ্ন করিতেছেন :—হে সথি! নন্দকুলচন্দ্রনাঃ কোথায় ? ময়ুরপুছেভূষণধারী কোথায় ? মছমন্দমুরলী রব ঘাঁহার ; তিনি কোথায় ? ঘাঁহার অঙ্গ কান্তি ইন্দ্র নীলমণির ন্থায়, তিনি কোথায় ? ঘিনি রাসর স নৃত্য করিয়। থাকেন, তিনি কোথায় ? ঘিনি আমার কুলীবনরকার মহোষ্ধি, তিনি কোথায় ? ঘিনি আমার অমূল্য রক্ন ও অ্হত্তম তিনি কোথায় ? হা বিধাতঃ ? তোমাকে ধিক্। ১৬২।

যথা রাগঃ 1

'खाक्क कून इश्वितृ, कृष ভाट शूर्व हेन्दू,

জুলা কৈলা জুলং উজোর:

का छात्रुष्ठ त्यवा शीरत. नित्रस्त्र श्रीता स्त्री रत्र.

खब करावत वस्त करकात।

मि (र 1 (काथा कृष्ण ? कता अ मर्भन ; **'কাণেকে বাঁহার মুথ, না দেখিলে ফাটে বুক**ু

भीख (पंथान ना त्राह कीवन।

बारे बार्क त्रम्पी. कामार्क छश्च कुम्मिनी.

নিজ করামৃত দিয়া দান ;

প্রফুরিভ করে শেই, কাঁহা মোর চল্র সেই 📍 দেখাও দ্ধি ! রাথ মোর প্রাণ।

কুঁছা সে চুড়ার ঠাম ? শিথীপুচ্ছের উড়ান ?

নৰ মেঘে যেন ইক্স ধনু;

পীতাম্ব ভড়িক্যভি, মুক্তামালা বৰপাঁতি, নবামুদ জিনি ভামতহ।

অকবার যার নয়নে লাগে, সদা তার অদরে আগে,

কুঞ্তহু যেন আন্ত আঠা; নারীর মনে পশি যায়, যত্নে নাহি বাহিরার,

তমু নহে দেয়াকুলের কাঁটা।

किनिया ভवान शुक्ति, हेत्स नीन मंत्र कार्डि, যেই কান্তি জগৎ মাভার;

শুকার রস সার ছানি, তাভে চক্র জ্যোৎসা ছানি, ছানি বিধি নির্মিল ভায়।

কাঁহা সে মুরলী ধ্বনি ? নবাখুদ গর্জিত জিনি, क्रशनाकर्य व्यवत्य गारातः ;

केंब्रिधात्र खब कन, ভৃষিক চা**ভক**গ**ণ.**

আসি পীয়ে কাস্তামৃত ধার।

(मात्र रमहे कलानिधि, ध्यान त्रकात मरहोवधि, **দথি ! মোর ভিঁহে। স্বভ্ম ;**

দৈছ জীয়ে ভাঁহা বিনে, ধিক্ এই জীবনে,
বিধি করে এত বিড্ছন !
বে জন জীতে নাহি চার, তারে কেন জীয়ার !"
বিধি প্রতি উঠে জোধ শোক;
বিধিকে করে ভর্পন, কুম্ফে দেন ওলাহন,
শতি ভাগবতের এক প্রোক.।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে দশমন্বন্ধে একোনচত্বারিংশাধ্যারে সপ্তদশক্ষোকে বিধাতরং প্রতি গোপীবাকংং।

'অহো বিধাত স্তব ন কচিদ্দয়।
সংযোজ্য মৈত্র্যা প্রণয়েন দেহিনঃ।
তাংশ্চাক্তার্থান্ বিযুনক্ষ্য পার্থকং
বিচেষ্টিতং তেহর্ভকচেষ্টিতং ষথা'॥ ১৬৩॥

প্রীক্ষণদভিং বিধায় বিঘটনতীতি বিধাতরং প্রত্যেবমাকোশস্ত্যঃ বেগাণ্যঃ আহ:। 'কহো' থেদে হে 'বিধাতঃ' 'তব' 'ন' 'কচিং' কমিংন্চিং জনে 'দন্না' অস্তি ; ষতঃ 'দেহিনঃ' জীবান্ 'মৈত্র্যা' হিভাচরপেন ভথা 'প্রণ্রেন' ক্ষেত্রেন পরস্পানান্ 'সংযোজ্য' 'ভানৃ' 'জক্তার্থাংস্চ' জপ্রাপ্ত্রভোগানপি 'বিযুন্নিক' বিষোজ্যনি; 'জর্ডকচেটিতং যথা' বালকচেটিতমিব 'ডে' তব 'বিচেটিতং' বিধানং 'অপার্থকং' হেতুশূত্তং নিপ্রধাননমিত্যহং মতে ॥ ১৬০ ॥

গোপীগণ কৃষ্ণের সহিত বিরহ ঘটিতেছে বলিয়া বিধাতাকে আফ্রোশ করিয়া বলিতেছেন ঃ—হে বিধাতঃ !
তোমার দয়া মাত্র নাই; দয়া থাকিলে জীবগণকে মৈত্রী ও
ক্ষেহে সংযুক্ত করিয়া অভিলাষ পূর্ণ না হইতে হইতে তাহাদিগকে বিযুক্ত কেন করিবে? বুঝিলাম তোমার বিধান
বালকের কার্যের স্থায় অর্থ শৃষ্য ॥ ১৬৩ ॥

জ্মস্তার্থে বথা রাগঃ। 'না জানিস্ প্রেম মর্দ্ধ, ব্যর্থ ক্রিস্ পরিশ্রম, জোর চেই। বালক সমান; 'ডোর যদি লাগি পাইরে, তবে তোরে শিক্ষা দিয়ে, এমন যেন না করিস বিধান। ওরে বিধি ছে৷ বড় নিঠর [•

चक्रां छ इन ७ चन, (श्राम कत्रारत मिनन, ু অক্তার্থে কেন করিস্দ্র ?॥ এদ ॥

चात्र विश्वि । क्षककृष, त्रथाहियां कृष्णानन,

নেত্ৰন লোভাইলি আমার ;

ক্ষণেকে করিছে পান, কাড়ি নিলি অন্ত স্থান, পাশ কৈলি দত অপহার।

অক্র করে ভোর দোব, 'আমার কেন কর রোব ? ইছো যদি করে ছরাচার';

কুষ্ণ নিশি চুরি করি, ভুই অন্র মূর্তিধ্রি, অভোর নহে ঐছে হ্যবহার।

আপনার কর্ম দোষ, ভোরে কিবা করি রোষ, ভোর আমার সম্বন্ধ বিদূর; (১)

বে আমার প্রাণনাথ, একত রহি বাঁর সাথ, সেই কৃষ্ণ হইলানিঠর।

সৰ ভাজি ভজি বাঁরে. সেই আপন হাতে মারে. নারীবধে কুঞ্জের নাহি ভয়:

ভার লাগি আমি মরি, উলটি না চাহে হরি. কণ মাত্রে ভাঙ্গিল প্রণয়।

ক্বফেরে কেন করি রোষ ? আপন ছবৈদিব দোষ, পাকিল মোর এই পাপফল;

(य कुक (भाव (श्रमाधीन, जाद देवन छेमानीन, এই মোর অভাগ্য প্রবল'।

এই মত গৌর রায়, বিবাদে করে 'হায়! হার! হাহা কৃষণ গেলে তুমি কতি ?'

> विषृत-पृत्रवर्शी मण्टार्कः

গোপীভাৰ হৃদয়ে. তাঁর বাকো বিলাপতে. (४) विम्म माह्यामत्र याथ्य (७) তবে স্বরূপ রামরায়. করি নানা উপার, মহাপ্রভুর করে আখাসন: গায়েন মঙ্গল গীত. প্রভুর ফিরাইতে চিত্ত, প্রভুর কিছু স্থির হৈল মন। এই মভ[া]বিলাপেতে অর্দ্ধ রাত্রি গেল ; গন্তীরাতে স্বরূপ গোঁসাঞি প্রভবে শোয়াইল। প্রভু শোয়াইয়া রামানন্দ গেলা ঘরে: সরপ গোবিন্দ শুইলা গম্ভীরা ভ্রারে। প্রেমাবেশে মহাপ্রভর গর গর মন: নাম সংকীর্কন করি করে জাগবণ। বিরহে ব্যাকুল গুড়, উদ্বেগে উঠিলা:

গঞ্জীর। ভিতরে মুখ ঘষিতে লাগিলা।
মুখে গণ্ডে নাকে ক্ষত হইল অপার;
ভাবাবেশে_না]জানে প্রভ্, পড়ে রক্তধার।
সর্করাত্রি করে ভাবে মুখ সংঘর্ষণ;
গোঁ গোঁ শব্দ করে, স্বরূপ গুনিল তথন।
দীপ জালি ঘরে গেলা, দেখি প্রভ্র মুখ
স্বরূপ গোবিদ্দ দোঁহার হৈল বড় হুখ।
প্রভূকে শ্যাতে আনি শ্রন করাইল;
কোঁহা কৈলে এই তুমি ?' স্বরূপ পুছিল।
প্রভূ কহে ভিষেগে ঘরে না পারি রহিতে;
ঘার চাছি ফিরি শীজ বাহিরে যাইতে।
ভাবে না পাইরা মুখ লাগে চারি ভিতে;

ক্ষত হয় রক্ত পড়েনা পাই জানিতে।

১ গোবিক্ষ দানোদর মাধবেতি—অক্র কৃককে মথুরায় লইয়া বাইবার সময় গোপীগণ এই নাম ধরিয়া বিলাপ করিয়াছিলেন। 'এবং ক্রবাণা বিরহাজুয়া ভূপং, এয়প্রিয়ঃ কৃষবিবক্তমানসাঃ, বিস্ঞা লজ্জাং কৃক্তঃয় স্বরং, গোবিক্ষ দানেশির মাধবেঙি'।

উন্মাদ দশার প্রভুর স্থির নহে মন ; (यहे करत (यहे बरण खेन्राम जयान। স্বরূপ গোঁদাঞি ভবে চিস্তা পাইল মনে : ভক্তপণ লঞা বিচার কৈল আর দিনে ঃ সব ভজা মিলি তবে প্রভরে সাধিল: শকর পভিতে প্রভুর সঙ্গে শোরাইল। প্রভির পদত্রে শহরে করেনে শ্রুন : প্রভু তার উপরে করেন পাদ প্রসারণ। व्यक् शारमाथधान विन कांत्र नाम देशन : পুর্বেব বিছুরে ধেন এতিক বর্ণিল। (১)

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে তৃতীয়ক্ষন্ধে ত্রয়োদশাধাায়ে চতুর্থ-শ্লোকে পরীক্ষিতং প্রতি শুক্বাক্যং।

'ইতি ক্রবাণং বিত্ররং বিনীতং, সহস্রশীফু শ্চরণোপধানং। প্রকৃষ্টরোমা ভগবৎকথায়াং, প্রণীয়মানো মুনিরভ্যচন্ট ॥১৬৪॥

'ভগবৎকথায়াং' 'প্রণীয়মানঃ' বিহুরেণ প্রবর্ত্ত্যমানঃ 'মুনিঃ' মৈত্তেয়মুনিঃ 'প্রহুষ্টরোমাঃ' সন 'ইতি' ইখং প্রকারেণ 'বিনীতং' যথা স্থাৎ তথা 'ক্রবাণং' 'বিহুরং' 'অভ্যচষ্ট' অভ্যভাবত ; কীদৃশং বিহুরং ? 'সহস্রশীফু':' সহস্রশীর্ষা শ্ৰীকৃষ্ণস্তস্ত 'চরণোপধানং' চরণাবুপধীয়েতে ধশ্বিনৃ ভং। শ্ৰীকৃষ্ণ: প্ৰীভায় যক্তোৎসঙ্গে চরণৌ প্রসারয়তীতার্থঃ। মহাভারতে বিছরপুতে ভোজনে ভপ্রাংস্তত্ৎসঙ্গে চরণৌ নিধার স্থাপেতি প্রসিদ্ধে: । ১৯৪॥

শুকদেব কহিলেন ভপবান শ্রীকৃষ্ণ যাঁহাকে স্বীয় পাদোপধানস্বরূপ করিয়াছিলেন, সেই বিতুর বিনীত হইয়া প্রাগুক্তরূপ জিজ্ঞাসা করিলে,ভগবৎকথায় প্রবর্ত্তামান মৈত্রেয় মুনি আনন্দে পুলকিত হইয়া কহিতে লাগিলেন ৷ ১৬৪ ৷

> শহর করেন প্রভুর পাদ সম্বাহন; খুমাঞা পড়েন তৈছে করেন শরন।

বিহুরে—সকল পুতকেই 'উয়ব' পাঠ আছে ; তাহা সলত হয় না।

উঘার অংক পড়িয়া শহর নিজা যায়;
প্রভু উঠি আপন কাঁথা তাহারে জড়ায়।
নিরস্কর ঘুমার শহর শীজচেতন;
বসি পাদ চাপি করে রাজি জাগরণ।
তাহার ভয়ে নারে প্রভু বাহিরে ঘাইতে ক ভার ভয়ে নারে প্রভু বাহিরে ঘাইতে ক ভার ভয়ে নারে ভিতে মুখাক ঘ্রিডে। এই লীলা মহাপ্রভুর রঘুনাথ দাস;
চৈতভা তাব করবুকে করিয়াতে প্রকাশ।

তথাহি স্তবাবল্ল্যাং চৈত্রস্তবকল্পর্কে ষষ্ঠশ্লোকে রসু-নাথ দাদবাক্যং।

> 'স্বকীয়স্থ প্রাণার্ব্বুদসদৃশগোষ্ঠস্থ বিরহাৎ প্রলাপাত্মাদাৎ সততমতিকুর্বন্ বিকলধীঃ। দধন্তিকৌ শশ্বদনবিধুঘর্ষেণ ক্রধিরং

ক্ষতোথাং পোরাপো হলয় উলয়মাং মলয়তি'॥ ১৬৫॥ 'স্বকীয়স্তা' গ্রাণার্ক্ দুসন্শগোষ্ঠ দেশকোটপ্রাণসদৃশরন্দাবনক্ত 'বিরহাং' 'উন্নালাং' উন্নত্তারা হেতৃত্তাং 'সভতং' সর্কটেন 'প্রালাণান্' 'অভিক্র্কন্' 'বিকলবীঃ' বিকলচিতঃ সন্ 'ভিডে)' 'শবং' নিরস্তরং 'বদনবিধুবর্ষেণ' 'ক্ষতোথং' 'ক্রিরং' 'দধং' সন্ 'গৌরাঙ্গং' 'মে' মম 'হান্মে' 'উদয়ন্' 'মাং' 'মদয়ভি'। ১৬৫।

স্বকীয় প্রাণার্ব্যুদদশ ব্রজধামের বিরহে উন্মন্ত হইয়া যিনি সতত প্রলাপ করিতে করিতে বিকলচিত হইতেন; ভিত্তিতে নিরন্তর মুখচন্দ্র ঘর্ষণ জনিত ক্ষত দিয়া খাঁহার অঙ্গে রুধির ধারা পড়িত; সেই গোরাঙ্গমূর্ত্তি হৃদ্যে উদিত হইয়া আমাকে অতিশয় ব্যাকুল করিতেছে॥ ১৬৫॥

> এইমত মহাপ্রভুরাত্রি দিবদে; প্রেমসিন্ধুতে মগ্ন রহি কভু ডুবে ভাগে। এক কালে বৈশাথের পৌণমাসী দিনে; রাত্রিকালে মহাপ্রভু চলিলা উদ্যানে।

জগলাথ বলভ নাম উদ্যান প্রধানে: প্রবেশ করিলা প্রভু লয়ে ভক্তগণে। थक् जिंछ दृष्ण वज्ञी ¦रशन दुष्णावन : তক শারী পিক ভঙ্গ করে আলাপন। পুষ্পাগৰ লঞা বহে মলয় প্ৰন : গুরু হঞা তরুলতার শিখার নাচন। र्श्वित हिस्त कात्र श्रव है ब्ह्व है : ভরুলভা ভ্রোৎসায় সব করে কলমল। ছয় ঋতৃপণ হাঁহা বসস্ত প্রধান : দেখি আনন্দিত হৈলা গোর ভগবান। 'ললিত লবঙ্গলভা' পদ গাওয়াইয়া; নৃত্য করি বুলে প্রভুনিজগণ লঞা। প্রতি বৃক্ষ বলী ঐছে ভ্রমিতে ভ্রমিতে: ্অশোকের তলে ক্ষেও দেখে আচ্বিতে। कृरक (मिय महाक्षच् धारेता हिनना; कारत रमस्य हानि कृष्क व्यक्षति देशता । चार्ण भारेन कुछ छाँदा भूनः शांतरिया; ভূমিতে পড়িলা প্রভু মৃচিছত হইয়া। কুষ্ণের অঙ্গের গন্ধে ভরিয়াছে উদ্যানে : সেই গন্ধ পাঞা প্রভূ হইলা চেভনে। নিরস্তর নাসার পৈশে রুফা পরিমল: গন্ধ আমাদিতে প্রভু হইলা পাগল। কৃষ্ণ গন্ধ লুদ্ধ রাধা স্থীকে যে কহিলা: সেই শ্লোক পড়ি প্রভু অর্থ করিলা।

তথাহি গোবিন্দলীলামতে অস্ট্রমসর্গে ষষ্ঠশ্লোকে বিশাখাং প্রতি জ্রীরাধিকাবাক্যং।

> 'ক্রক্সদজিদ্বপুঃ পরিমলোর্দ্মিকৃষ্টাঙ্গকঃ স্বকাঙ্গনলিনাষ্টকে শশিষুতাজ্বগদ্ধপ্রথঃ।

মদেন্বরচন্দ্রাগুরুত্বগন্ধচর্চার্চিতঃ

স মে মদনমোহনঃ স্থি ত্নোতি নাসাস্পৃহাং' ॥১৬৬॥

হে 'সথি' বিশাবে ! 'স:' 'মদনমোহন:' নদনদলন: 'মে' মম 'নাসাস্পৃহাং' নাসিকায়া লালসাং 'তনোতি'। কীদৃশ: ? 'ক্রলমদজিভপু:পরিমলোর্শিকটালক:' ক্রলমদাৎ কস্তরিকায়াঃ সৌরভাৎ শ্রেষ্ঠিত যো
বপ্যং পরিমল ভত্ত উর্শ্বিভি ভরতৈঃ কৃটানি আকৃটানি বরালনানাং অলকানি
যেন স:। পুন: 'বকালনলিনাইকে' স্কীয়দা অলনলিনসা অলপায়স
আইকে নেএনাভিবদনকরচরণাইকে 'শ্লিযুভাজগদ্ধ প্রথং' শ্লিমা কপ্রেল
সহ অভগদ্ধসা,প্রথা থ্যাতি র্যস্থা গ্রাহ 'মদেশ্বরচন্দনাগুরুস্গদ্ধচর্চাচিত্তিঃ' মদঃ কৃত্তরী ইন্দ্বরঃ কপ্রিঃ চন্দনঃ খেডচন্দনঃ অভকঃ এছেযাং
স্থান্চর্চাভিঃ অচিতঃ প্রিভঃ ॥ ১৬৬ ॥

হে দথি। মৃগমদগন্ধাপেকাও হুগন্ধতর দেহপরিমলের তরঙ্গাঘাতে যিনি ব্রজাঙ্গনাদিগের অঙ্গদকল আকর্ষণ করিয়া থাকেন; যাঁহার মূথ, নেত্র, নাভি, কর, চরণ প্রভৃতি আটটী অঙ্গদ্মে কপূরি ও পদ্মের গন্ধ নিহিত রহিয়াছে; যিনি মৃগমদ কপূরি চন্দন ও অগুরু দারা দর্বদা চাচ্চিত, থাকেন; দেই মদনমোহন আমার নাদিকার লাল্সাবৃদ্ধি করিতেছেন॥ ১৬৬॥

যথা বাগঃ।

'কম্বরিকা নীলোৎপল, তার যেই পরিমল, তাহা জিনি কৃষ্ণ অস গন্ধ; ব্যাপে সর্ব্বনে, করে সর্ব্ব আনকর্ষণে, নারীগণের অ'থি করে অন্ধ। স্থি হে ! কৃষ্ণ গন্ধ জ্বত মাতার; নারীর নাসাতে পৈশে, সর্ব্বকাল ভাঁছা বৈশে, কৃষ্ণ পাশ ধ্রি লঞা বার। 'নেতা লাভি বদন, কর যুগ চরণ,

এই অষ্ট পদ্ম কুষ্ণ আছে:

কপুর লিপ্ত কমল, ভার থৈছে পরিমল,

ু সেই গন্ধ ছাউ পতা সংক।

হেমকীলিভ্রন্থন, ভাহা করি বর্ষণ,

ভাহে অভাক কুছুম কন্তারী;

क्शृंत मत्न हर्क। चर्क, शृंदर्व चरकत शक्त मरक, মিলি ভাকে যেন কৈলা চুরি।

इरत नातीत उद्यम्न, नामा करत पूर्वन,

খদার নীবী, ছুটায় কেশবন্ধ;

করি আগে বাউরী, নাচার জগৎনারী,

হেন ডাকাইত অঙ্গ গন্ধ।

(मरे गम्न वण नामा, मना करत श्राम्त आणा,

কভুপায় বভুনাহি পায়;

পাইলে পীয়া পেট ভরে, পীঙ পীঙ তবু করে,

না পাইলে ভূকার মরি বার। मननत्माक्त नांचे, श्रेता कार्तन्त कांचे,

জগরারী গ্রাহক লোভায়;

विभिग्द (मत्र शक्त, शक्त मित्र करत क्यक्त,

ঘরে যাইতে পথ নাহি পায়'।

এই মভ গৌরহরি, গল্ধে কৈল মন চুরি,

ভূঙ্গ প্রায় ইতি উতি ধায়;

ৰার বৃক্ষলতা পাশে, কৃষ্ণ ফ্রে সেই আশে, কুঞ্চনা পায় গন্ধ মাত্র পায়।

শ্বৰূপ রামানন্দ গায়, প্রভু নাচে স্থ পায়,

এইমতে প্রাতঃকাল হৈল; শ্বরূপ রামানন্দ রায়, করি নানা উপায়,

মহাপ্রভূর বাহাক্ষুর্ভি কৈল।

माङ् ङक्टि, व्यवाशन, जिल्हे मूथ पर्वन,

কুঞ্গদ্ধ কুৰ্ন্তি, দিব্য নৃত্য ;

এই চারি লীলা ভেদে, গাইল এই পরিছেনে,

রক্ষণাল রূপগোঁলাঞির ভূতা।

এই মত মহাপ্রভূ পাইরা চেতন;

রান করি কৈল জগরাথ দরশন।

স্মানেকিক রক্ষালীলা দিব্য শক্তি তাঁর;

তর্কের গোচর নহে চরিত্র ধাঁহার।

এই প্রেমা সদা ভাগে ধাঁহার স্কান্তর;

পণ্ডিতেও তাঁর চেটা বুঝিতে না পারে।

তথাহি ভক্তিরদায়তদিন্ধে পৃর্ববিভাগে প্রেমভক্তি-লহর্য্যাং দ্বাদশশ্লোকে শ্রীরূপগোম্বামিবাক্যং।

'ধন্মস্থারং নবপ্রেমা যস্থোন্মীলতি চেতদি। অন্তর্কাণীভিরপ্যস্থ মুদ্রা স্তর্চ্চু স্তর্গনা'॥ ১৬৭॥ টকা ও ব্যাধ্যা মধ্যঃ ৪২৭ শ্লোঃ ৫৮৩ পুঃ দেখ। ১৬৭।

অলোকিক প্রভুর চেষ্টা প্রলাপ শুনিরা;
তর্ক না করিও শুন বিশ্বাস করিয়া।
ইহার সভাজে প্রমাণ শ্রীভাগবভে; (১)
শ্রীরাধার প্রেমপ্রলাপ ভ্রমর গীতাতে।
মহিনীর গীত মেন দশমের শেষে;
পণ্ডিতে না বুরে বার অর্থ বিশেষে।
মহাপ্রভু নিত্যানন্দ গোঁহার দাসের দাস
যারে কুণা করে, ভার ইহাতে বিশ্বাস।
শ্রদ্ধা করি শুন, শুনিলে পাবে মহামুব;
বিশ্ববে আধ্যাত্মিকাদি সকল তুঃব।

১ ইহার সভাবে প্রমাণ—প্রভাগবতে। রাসন্থলে গোপীগণ কৃষ্ণের আবর্ণনে বিশ্বহা হয়ায় বে ভাবচেটা দেখাইয়াহিলেন, অমরগীতা নামক গ্রন্থে শ্রীমতী রাধিকা কৃষ্ণবিশ্বহে দেসকল উক্তি করিয়াহিলেন ও দশা প্রাপ্ত হইয়াহিলেন, আর ভাগবতের দশমক্ষের শেব ভাগে কৃষ্ণমহিলাপ যে বিনাপ করিয়াহিলেন, সেই সকল ঘটনা দাবা মংশ্রন্থের প্রাপ্তেমিক সভাতা প্রমাণ হইতেছে; অর্থাৎ এই সকল ভাবচেটা অসম্ভব হইলে শাল্পেবিশ্বশ্বধাকিত না।

চৈত্রত রিভার্ত নিতা নৃতন;
ভানিতে ভানিতে জ্ভার হাবর প্রবণ।
শ্রীদ্ধণ রঘুনাথ পদে যার আল;
চৈত্রতারিভারত ক্তে রফাদাস।

ইতি জীচৈতন্মচরিতামূতে অন্ত্যথতে বিরহপ্রলাপ-মুথসভার্যণাদিবর্ণনং নাম উনবিংশতিভ্যমপরিছেদং ॥ ১৯ ॥

বিংশতিতম পরিচ্ছেদ।

গ্রন্থকারস্থ।

প্রেমোন্তাবিত হর্ষের্বোদ্বেগদৈকার্ত্তি মিপ্রিতং। লপিতং গৌরচক্রক্ত ভাগ্যবন্তি নিষেব্যতে। ১৬৮।

'গোৰচক্ৰদ্য' 'লপিছং' প্ৰলাপাদিকং 'ভাণ্যবৃদ্ধিং' সাধুভিং কর্ভৃতৈং 'নিবেব্যভে' ক্ৰায়তে। কীদৃশং লপিজং ? 'প্ৰেমোন্তাবিভহুহেঁহোঁবেগদৈ আ-র্জিনিশ্রিভং' প্রেমা হেত্না উত্তাবিভাভিং প্রকটিতাভিং হুর্বেহোঁবেগদৈ আ-র্জিভি র্মিশ্রিজং ॥ ১৬৮॥

প্রেমোন্টাষিত হর্ষ, ঈর্ষা, উদ্বেগ, দৈন্স, আর্ত্তি, সংযুক্ত গৌরচন্দ্রের প্রকাপকথন কেবল ভাগ্যবান্ ভক্তেরাই প্রেবণ করিয়া থাকেন। ১৬৮।

জর জর গৌরচক্র ! জয় নিত্যানক !
জরাবৈতচক্র ! জয় গৌরতক্তবৃক্র !
এই মতে মহাপ্রস্থ বৈদে নীলাচলে;
রক্ষনী দিবদে কৃষ্ণ বিরহ বিহুলে।
অক্সণ রামানক এই গুই জন সনে;
রাত্রি দিনে করে রসগীত আখাদনে।
নানা ভাব উঠে প্রজুর হুর্ব শোক রোব;
দৈয়া উদ্বেগ আদি উৎক্ঠা সস্টোব।

দেই সেই ভাবে নিজে লোক পড়িয়া;
লোকের অর্থ আবাদরে ছই বছু লঞা।
কোন দিন কোন ভাবে শ্রেলক পঠন;
দেই লোক আবাদিতে রাজি জাগরণ।
হর্ষে প্রভু কছে 'ভন স্বরূপ রাম রায়!
নাম সংকীর্জন (কোন গরুক্ত আরাধন;
সেইত স্থনেধা পার ক্ষেত্র চরণ।

তথাহি শ্রীমন্তাগবতে একাদশস্কন্ধে পঞ্চমাধ্যারে উন-জ্রিংশশ্লোকে জনকং প্রতি করভাজন বাক্যং।

'কৃষ্ণুবর্ণং দ্বিষাকৃষ্ণং সাম্বোপাঙ্গাস্ত্রপার্ষদং। যজ্ঞৈ: সংকীর্ত্তনপ্রায়ৈ র্যজন্তি হি হ্রমেধসঃ'। ১৬৯। টীকা ও ব্যাথ্যা আদি: ৬৬ লো: ৮০—৮১ গৃ: দেখ। ১৬৯।

> 'নাম সংকীর্ত্তনে হয় সর্ব্বানর্থ নাশ; সর্ব্বভজেদয়, ক্লফে প্রেমের উলাস।

তথাহি পদ্যাবল্যাং সপ্তমাক্ষ্ত আনন্দাচাৰ্য্যকৃত-শ্লোকঃ।

'চেতো দর্পণমার্জ্জনং ভবমহাদাবাগ্নিনির্বাপণং শ্রেরঃকৈরবচন্দ্রকাবিতরণং বিদ্যাবধূজীবনং। আনন্দাস্কুধিবর্দ্ধনং প্রতিপদং পূর্ণায়তাস্বাদনং

সর্বাত্মপুনং পরং বিজয়তে অকুষ্ণগংকার্ত্রনং ॥ ১৬৯ ॥
'জ্রিক্ষদংকীর্ত্রনং জ্রীজনং প্রবং সংক্রিং কে 'বিজ্বতে'; কীদৃশং দংকীর্ত্রনং গুলেজা দর্শনার্জনং চিত্রনা দর্শনার নাগবিক্র বিশ্বাং গুলেজা দর্শনার পদাবায়ি নির্বাণি বিত্রকর্ষণং পুনা 'ভবমছাদাবায়িনির্বাণি গং' সংসারর পদাবায়ি নির্বাণি বিত্রক্ষণং ক্রের তহ ন্দ্রনার করবং শ্রেজ তহ ; 'শ্রেয়াকৈরবচন্দ্রিকাবিতরণং' শ্রের এব ন্দ্রন্তর করবং খেভোৎপলং শ্রেষ বেভোৎপলমিব শুলং পবিত্রমিন্ডার্থা ভিত্মিন্ চল্লিকাই শ্রেজিক্যুম্ শীলং বস্ত ভৎ ; জ্যোৎস্লালোকো বধা খেভোৎশল্য

শোডাং বিস্তারয়তি তথা সংকীর্ত্তনরপ্রেয়াৎকা শ্রেষ্ট্রস: শোভাং বিতনো-ভীতি নিষ্ক্ৰাৰ্থ:: 'শ্ৰেষ্ণ প্ৰেষ্ণ মনুষ্যমেত্তো সম্প্ৰীতা বিবিনজি ধীরঃ। ওরো: শ্রেয় আদদানভ সাধু ভবভি হীয়তেহর্থাৎ মউ প্রেয়ো বুণীতে' ইতি কঠিঞ্চতেঃ শ্রেরসো লক্ষণং জ্ঞাতব্যং। পুনঃ 'বিদ্যাবধূজীবনং' পরা-বিদ্যারপুরধ্বাঃ প্রাণরপং, সংকীর্তনেন ব্রন্ধবিদ্যা সঞ্জীবিতা ভবতীভার্থঃ। #থেলে। ষজুর্বেল: সামবেলোহথর্ববেদঃ শিক্ষা কল্পো ব্যাকরণং নিক্ক জং চ্ছলো জ্যোতিষমিতি অথ পরাষ্যা তদক্রমধিগমাতে ইতিক্রত: বিদ্যাহত্সদেয়া। পুন: 'আনন্দাম ধিবদ্ধনং' আনন্দ্রপসমূলং বৃদ্ধিত্ম শীলং ষম্ভ তৎ; পুন: 'প্রতিপদং' মথাভাত্তথা 'পূর্ণামৃতাসাদনং' পূর্ণামৃতভা আস্থাদনং যত তৎ: পুন: 'স্ক্রিল্লপনং' স্ক্রিল্লানং স্পরিত্ম রসভাবে-নেতিশেষঃ শীলং যস্ত তৎ; আত্মন ভৃপ্তিজনকমিতার্থঃ। ১৬৯।

মাহা চিত্তরূপ দর্পণের মলা বিদূরিত করিয়া দেয়; যাহা সংসারদাবাগ্লিকে নির্ব্বাণ করিতে সক্ষম : যাহা পরম শ্রেরেরপ * খেতোৎপলের শুভ্র কৌমুদী তুল্য ; যাহা পরাবিদ্যাবধুর + জীবনস্বরূপ; যাহা শুনিলে আনন্দসমুদ্র উথলিয়া উঠে; বাহার প্রতিপদে অমৃতের আস্বাদন পূর্ণ-মাত্রায় নিহিত আছে ; এবং যাহা আত্মাকে যেন রসভাবে স্নান করাইয়া দিয়া অপূর্ব্ব তৃপ্তিত্বথ প্রদান করিয়া থাকে; শ্রীকুষ্ণের সেই সংকীর্ত্তন জয়যুক্ত হইতেছে। ১৬৯।

> 'সংকীর্দ্ধন হৈতে পাপ সংসার নাশন; চিত্তভদ্ধি, সর্বভক্তি, সাধন উলাম। কুঞ্চপ্রেমোদগ্র, প্রেমামূত আম্বাদন; কৃষ্ণ প্রাপ্তি, দেবামৃত সমুদ্রে মজ্জন'। উঠিল ৰিবাদ দৈলা পড়ে আপন প্লোক: যাহার অর্থ শুনি সব যায় ছঃথ শোক।

^{*} coma:--- মক্রের পথ, প্রের সংসারের পথ।

^{👇 🕇} বিদ্যা---বাহা ছারা অক্ষর প্রেবকে জানা যায় তাহাই বিদ্যা : তন্তির সকলই অবিদ্যা।

তথাহি পদ্যাবল্যাং একোনবিংশারপ্পতঃ প্রীকৃষ্ণ-• চৈত্তত্তদেবস্থা শ্লোকঃ।

> 'নাম্বামকারি বহুধা নিজসর্কশক্তি স্তত্তার্পিতা নিয়মিতঃ স্মরণেন কালঃ। এতাদৃশী তব কুপা ভগবন্মমাপি হুক্রেবমীদৃশমিহাজনি নামুরাগঃ'॥ ১৭•॥

হে 'ভগবন্'! 'নামাং' তব নামসম্হানাং সহলে 'নিজসর্জশক্তিং' বিহুধা' বহুপ্রকারেণ 'ভত্র' নামসম্হে 'অর্গি নিছিড়া 'অকারি' ছয়েডি-শেষঃ; 'অরণেন' নামস্মরণেন করণেন হেতুনা, 'কালঃ' সময়ঃ 'নিয়মিডঃ' নির্থাক্তঃ বহুববলাশঃপ্রদত্ত ইভার্থঃ। হে প্রভো! 'এতারূমী' 'তব' 'কুপা' অস্তি; তথাপি 'মম' 'হুইর্দ্বং' 'ঈর্শং বং 'ইহ' নামি 'অমুরাগ্রু' 'ন' 'অজনি' ন অভবং ৷ ১৭০।

হে ভগবন্! তোমার এতাদৃশ কুপা যে তোমার নামসকলে তুমি বহুপ্রকারে নিজশক্তি অন্তর্নিহিত করিয়া
রাথিয়াছ; এবং ঐ সকল নাম স্মরণের জন্ম যথেক অবকাশও দিয়াছ; কিন্তু হে প্রভা! আমার এমনি ছুর্দ্দিব, যে
এমন নামে আমার অনুরাগ জন্মিল না। ১৭০।

'অনেক গোকের বাঞ্চা অনেক প্রকার;
কুপাতে করিল অনেক নামের প্রচার।
থাইতে শুইতে যথা তথা নাম লর।
কালদেশ নিয়ম নাহি সর্কাসিদ্ধি হয়।
সর্কাশক্তি নামে দিল করিরা বিভাগ;
আমার ত্তিদিব, নামে নাহি অভুরাগ।
ধেরপে লইলে নাম প্রেম উপভার;
ভাহার লক্ষণ শুন শ্রুপ রাষ্বার!

'তৃণাদপি স্থনীচেন তরোরপি দহিফুনা।
অমানিনা মানদেন কীর্ত্তনীয়ঃ সদা হরিঃ'॥ ১৭১ ।

টিকা ৩ ব্যাথ্যা আদি: ১৯৮ লোঃ ৩৬৮ পঃ দেখ । ১৭১ ॥

'উত্তম হঞা আপনাকে মানে তৃণাধম; ছই প্রকারে সহিষ্ণুতা করে বৃক্ষম। বৃক্ষ খেন কাটিলেও কিছু না বলম; ভকাইয়া মৈলে কারে পাণি না মাগম। যেই যে মাগমে তারে দেম আপন ধন; ঘর্ম বৃষ্টি সহি আনের কররে মক্ষণ। উত্তম হঞা বৈঞ্চব হবে নিরভিমান; জীবে সমান দিবে জানি কৃষ্ণ অধিষ্ঠান। এইমত হঞা যেই কৃষ্ণনাম লম; জীকুষ্ণ চরণে তার প্রেম উপজ্য়'। কৃহিতে কহিতে প্রত্রুত্ব দৈল্ল বাড়িল; ভক্ষভক্তি ফুক্ষ ঠাঁ ঞি মাগিতে লাগিল। প্রেমের সভাব, বাঁহা প্রেমের সভাব, বাঁহা প্রেমের সভাব, বাঁহা প্রেমের সভাব, বাহি ভক্তি গদ্ধ।

তথাহি পদ্যাবন্যাং পঞ্চাশীতিতমান্ধপ্রতঃ ঞীকৃষ্ণচৈতন্ত্র-দেবন্ত শ্লোকঃ।

'ন ধনং ন জনং ন স্থন্দরীং কবিতাম্বা জগদীশ কাময়ে। মম জন্মনি জন্মনীশ্বরে ভবতাদ্ধক্তিরহৈতুকী ছয়ি' n ১৭২ ॥

হে 'জগদীশ !' অহং তব সকাশাৎ 'ন ধনং' 'ন জনং' 'ন জন্মীং' ভাগিনিকং 'কবিভাং বা' কাব্যরচনাশক্তিং বা 'কামরে' বাচে; কিন্তু 'মম' 'জ্মনি' 'জ্মনি' আভিজ্মনি 'ক্ষিবে' 'অহি তৃকী' 'ভক্তিঃ' হেতৃ-রহিতাঃ নির্মাণাঃ 'ভক্তিঃ' ভবতাং' ভবতু। ১৭২।

হে জগদীশ! আমি তোমার নিকট ধন, জন, হুন্দরী

ত্রী, অথবা কবিশক্তি, এ সকলের কিছুই চাহি না; ভূমি আশীব্দাদ কর যেন আমার জন্মজন্মান্তরে তোমাতে অহৈতুকী শুদ্ধভক্তি থাকে। ১৭২।

'ধন, জন, নাহি মাগোঁ কবিভা, সুন্দরী; তক্ক ভক্তি দেহ মোরে ক্লফা! কুপা করি'। অভি দৈছে পুন: মাগে দাহ্য ভক্তি দান; আপনাকে করে সংসারী জীব অভিযান।

তথাহি পদ্যাবল্যাং ভক্তমাহাত্ম্যে ত্রোদশারপ্ত-দাক্ষিণাত্যকৃতঃ শ্লোকঃ।

'অয়ি নন্দতকুজ ! কিঙ্করং পতিজং মাং বিষমে ভবাস্বুধে। ফুপয়া ভব পাদপঙ্কজন্তিতধূলিসদৃশং বিচিন্তয়'। ১৭৩।

'জরি' কাভরে ছে 'নন্দতক্তর' 'বিষমে' 'ভবাস্থানি' ভীষণসংসারসাগরে 'পতিজং' তব 'কিকরং' দাসং 'রুপরা' করণরা 'তব' পোলপক্তরিভূনি-সদৃশং' 'মাং' 'বিচিন্তর' মাং চরণদাসত্তে গৃহাণেতার্থ:। ১৭৩।

হে লন্দাত্মজ! তোমার এই কিঙ্কর বিষম ভবসমুদ্রে পড়িয়া বড় কফ পাইতেছে; তুমি কুপা করিয়া তব পাদ-পন্মস্থিত ধূলিকণার স্থায় দাসত্থে গ্রহণ কর। ১৭৩।

'ভোমার নিত্যদাস মুক্তি তোমা পাসরিরা;
পাড়িরাছি ভবার্গবে মারা বন্ধ হক্রা।
কুপা করি কর মোরে পদধ্লি সম;
ভোমার সেবক, করোঁ তোমার সেবন'।
পুন: অভি উৎকণ্ঠা দৈতা হইল উদাম;
কুষ্ণ ঠাঁক্রি মাগে প্রেম নাম সংকীর্ভন।

তথাছি পদ্যাবল্যাং চতুরশীতিতমাস্কপ্তঃ প্রীকৃষ্ণচৈতক্ত দেবশ্লোকঃ। 'নয়নং গলদশ্রুধারয়া বদনং গদগদক্ষরা গিরা। পুলকৈ নিচিতং বপুঃ কদা তব নাম গ্রহণে ভবিষ্যতি'॥১৭৪॥ হে 'প্ৰতো!' 'কদা' কমিন্ কালে 'তব' 'নামধাহণে' 'গলদঞ্পার্যা' সহ 'নয়নং'; 'গলগদক্ষ্যা, 'গিরা' বাক্যেন সহ 'বদনং'; 'পুল্কৈঃ' সহ 'নিচিতং' ব্যাপ্তং 'বপুঃ' শরীবং 'ভবিষ্যতি'। ১৭৪।

হে প্রভো! তোমার নাম গ্রহণ করিতে করিতে কবে আমার নয়ন দিয়া অঞ্চধারা গলিয়া পড়িবে; মুখে বাক্য বোধ হইয়া আসিবে; এবং পুলকে সমস্ত শরীর কণ্টকিত হইবে। ১৭৪।

'প্রেমধন বিনা বার্থ দরিজ জীবন; দাস করি বেতন মোরে দেহ প্রেমধন'। রসাজ্রাবেশে হৈল বিরোগ ক্রণ; উদ্বেগ বিষাদ দৈতো করে প্রাসাপন।

তথাহি পদ্যাবল্যাং সপ্তবিংশত্যধিক ত্রিশততমাঙ্কপ্ত-শ্রীকৃষ্ণ চৈতন্মচন্দ্রোক্তপ্লোকঃ।

'যুপান্নিতং নিমিষেণ চক্ষ্যা প্রার্যান্নিতং। শুন্তান্নিতং জগৎ সর্বং গোবিন্দবিরহেণ মে'। ১৭৫।

'গোবিন্দবিরহেণ' হেত্ছ্ভেন 'নে' মম 'নিমিবেণ' নিমিবকালেন সুকুর্বনাত্রকালেন 'যুগায়িভং' যুগাবং আচরিতং লক্ষিভং; 'চকুষা' নয়নেন 'গ্রাম্বায়িভং' প্রার্বং আচরিতং লক্ষিভং; বর্ষাকালীদানেঘধায়াবং অঞ্লেষিভং; 'কগং সর্কং' 'শৃভায়িভং' শৃভাবং আচরিভং শৃভাবং প্রভিভাভং ভবতীত্যধং। ১৭৫।

গোবিন্দবিরহে আমার মুহূর্ত্তকাল মুগযুগান্তরের ন্যায় বোধ হয়; নয়ন দিয়া বর্ষাকালের ধারার ন্যায় অশ্রু পড়িতে থাকে; এবং সমস্ত জগৎ শৃত্য প্রতিভাত হয়। ১৭৫।

> 'উহেতে দিবস না যায় ক্ষণে যুগ সম; বর্ষার মেঘ প্রায় অঞ্চ বর্ষে নয়ন।

'গোবিন্ধ বিরহে শৃষ্ঠ হৈল জিত্বন;
ত্বানলে পোড়ে বেন না যার জীবন'।
কৃষ্ণ উদাসীন হৈল করিছে পরীক্ষণ;
স্থী সব কহে 'ক্লেঞ্চ কর উপেক্ষণ'।
এতেক চিস্তিতে রাধার নির্মাল জদর;
বাভাবিক প্রেমার স্থভাব করিল উদর।
এত ভাব এক ঠাই করিল উদর।
এত ভাবে রাধার মন অহির হইল;
স্থীগপ আগে প্রোচ্নি লোক যে পড়িল।
সেই ভাবে প্রভু সেই প্রোক উচ্চারিল;
লোক উচ্চারিতে তজ্ঞপ আপনি হইল।

তথাহি পদ্যাবল্যাং চভুস্তিংশাধিকশততমাঙ্কগৃতঃ কম্মচিৎ শ্লোকঃ।

> 'আল্লিষ্য বা পাদরতাং পিনউ ুমা-মদর্শনামূর্ম্মহতাং করোতু বা। যথা তথা বা বিদধাতু লম্পটো মহপ্রাণনাথস্ত দ এব নাপরঃ'॥ ১৭৬॥

স কৃষ্ণ: 'মাং' 'আলিব্য' সমালিক্য 'পাদরভাং' পাদরেবিকাং দাসীং করেছে; 'বা' অথবা মাং 'পিনটু' মহাছবৈঃ পীডরত্; 'বা' অথবা 'আদর্শনাং' আয়ানং গোপয়িছা মাং 'মর্শ্বহতাং' 'করেছে'; 'লম্পটঃ' বছরক্তঃ সন্ 'যথাতথা' 'বিদধাত্' বিহরত্ 'বা'; 'তু' তথাপি হে স্থি! 'সু এব' কৃষ্ণ: 'মংপ্রাণনাথঃ', 'ন' 'অপরঃ' বহিরকো জনো ন । ১৭৬।

তিনি আমাকে আলিঙ্গন করিয়া পাদদেবার দাসীই করুন্ বা মহাতঃথে ফেলাইরা নিজ্পেষিতাই করুন্, অথবা দর্শনস্থে বঞ্চিত করিয়া মর্মাহতাই করুন্, কিম্বা

বছবল্লভ হইয়া যেখানে সেথানে বিহারই করুন. হে স্থি। তিনি পর নহেন, আমারই প্রাণনাথ। ১৭৬।

যথা রাগঃ।

'আমি কুঞ্চপদ দাসী, তিঁহো রদ সুধ্রাশি,(১) আলিজিয়া করে আত্মসাভ; किया मा दमन मंत्रभन, ना काटन त्यात छ्छ्यन, তবু ভিঁহো মোর প্রাণনাথ। স্থি হে ! শুন মোর মনের নিশ্চয় : किंवा अञ्चर्त्राण करत, किंवा छःथ मित्रा मारत. মোর প্রাণেশর মুক্ষ, অন্ত নয়। ছাভি অভ নারীগণ, মোর বশ ভরু মন. মোর সৌভাগ্য প্রকট করিছা : তা'সবারে দিয়া পীড়া, আমা সনে করে ক্রীড়া, (मरे नातीशाल (मथारेवा: किया जिल्हा मन्नि मर्फ, मुद्दे, मक्नि म অন্ত নারীগণ করি দাথ; মোরে দিতে মনঃ পীড়া, মোর আগে করে ক্রীড়া. ভবু ভিঁহো মোর প্রাণনাথ ৷ িনাগণি আপন হংখ, স্বে বাঞ্চিতার স্থ, তার স্থথে আমার ভাৎপর্য্য ; মোরে यनि नित्य छः थ, छात देवस महास्त्र थ সেই ছঃ**খ মোর স্থুখ বর্**যা। যে নারীকে বাঞ্ছেক্সঞ, তার রূপে সভ্যুঞ্ ভারে না পাঞা কাছে হয় ছঃখী ? মুঞি তার পালে পড়ি, লঞা যাও হাতে ধরি, ক্রীড়া করাঞা ভারে করেঁ। স্থা।

আৰি কৃষ্ণ প্ৰদাসী ইত্যাদি --এই বাগৰাকো ভগৰানে আত্মবিসৰ্জন দিয়া নিভারসেবা ও ওছ থেবের বরুপ বর্ণিত হইরাছে।

'কান্তা ক্ষেক্রে রোষ, ক্ষণ পার সজোষ, মুধ পার ভাত্তন ভং সনে :

যথাবেংগ্য করে মান, কৃষ্ণ ভাভে স্থ পান, • ছাড়ে মান অলপ সাধ্নে।

সেই নারী জীয়ে কেনে ? কুফের মর্ম নাহি জানে, তবু কুফে করে গাঢ় রোষ:

নিজ স্থে মানে লাভ, পড়ুক ভার শিরে বাজ, কুম্ভের মাত্র চাহি যে সম্ভোষ।

্ষে গোপী করে মোর ছেমে, কুষ্ণের করে সস্তোষে, কৃষ্ণ যারে করে অভিলায়:

মুক্তি তার ঘরে যাঞা তারে সেবেঁ। দাসী হকা, ভবে মোর স্থের উল্লাস।

কুঠ্মবিপ্রের রমণী, পতিব্রতা শিরোমণি, পতি লাগি কৈল বেখার সেবা:

স্তম্ভিলে ক্র্যোর গভি, জীরাইলে মৃতপতি, ভূষ্ট কৈল মুখ্য তিন দেবা (১)।

কৃষ্ণ মোর জীবন, কৃষ্ণ মোর প্রাণধন, কৃষ্ণ মোর প্রাণের পরাণ;

জ্বনয় উপরে ধরেঁ।, সেবা করি হাখী করেঁ।, এই মোর সদা রছে ধ্যান।

মোর হৃথ দেবনে, ক্ষেত্র ক্ষ্থ স্লমে, অভএব দেহ দেও দান ;

কৃষ্ণ মোরে কাস্তা করি, কছে মোরে 'প্রাণেশ্রী', মোর হর দাসী অভিযান।

কান্ত দেবা স্থপপুর, সঙ্গম হৈতে স্থমধুর, ভাতে সাক্ষী কন্মী ঠাকুরাণী;

নারায়ণের হুদে স্থিতি, তবু পাদদেবায় মতি, সেবা করে দাসী অভিমানী'।

> ক্জীবিপ্রের রমণী...তিন দেবা।—এইরপ একটা প্রবাদ কথা আছে। তিন দেবা— রক্ষা, বিফু, শিব।

काचानदा धीरशीवतातः माचिक बाद्य भंदीय, ভাবে মন নহে छित्र. মন দেছ ধারণ লা যায়। ব্ৰজের বিশুদ্ধ প্রেম, ধেন জালুনদ হেম, আত্মস্থের যাহে নাহি গন্ধ; त्म (क्षेत्र कानाहरू लाकि, अकू देवन वहे स्मारक, शास देकन कार्थन निर्माह । এইমত মহাপ্রভু ভাবাবিষ্ট হঞা; প্রলাপ করিল কিছ স্লোক পডিয়া। পুর্বে অইলোক পড়ি লোকে শিকা দিল; সেই ছাই প্লোকার্থ আপনি আতাদিল। প্রভুর অষ্ট শিক্ষা প্লোক ষেই পড়ে গুনে; ক্ষাপ্রেমভজি ভার বাডে দিনে দিনে। বদ্যপিও প্রস্তু কোটি সমুদ্র গম্ভীর ; নানা ভাবচক্রোদয়ে হরেন অভির। ষেই ষেই শ্লোক জয়দেব ভাগবতে: রায়ের নাটকে বেই আর কর্ণামুভে। সেই সেই ভাবের শ্লোক করিয়া পঠনে: সেই সেই ভাবাবেশে করে আহাদনে। ছাদশ বৎসর ঐচে দশা রাতি দিনে: कुक्छद्रम् व्याचामस्य छ्हे वक्क मत्न । সেই বস্থীকা সৰ আপনি অনস্তঃ সহস্র বদনে বর্ণে, নাছি পার অন্তঃ জীব কুদ্ৰবৃদ্ধি ভাষা কে পারে বর্ণিভে ? ভার এক কণ স্পর্শি কাপনা শোধিতে। যত চেটা যত প্রলাপ নাহি ভার পার : সে সব বর্ণিতে গ্রন্থ হয় স্থবিস্থার। उन्मादन मान श्रथम (य नीना वर्निन: সেই সৰ লীলার আমি স্তর্মাত্র কৈল।

ভার ভাক্ত অবশেষ সংক্ষেপে কহিল: লীলার বাহল্যে গ্রন্থ তথাপি বাডিল। অতএৰ সে সৰ লীলা না পারি বর্ণিবারে : সমাপ্ত করিল লীলায় করি নমস্বারে। ষে কিছুক হিল এই দিগ দরশন: এই অমুসারে হবে আর আস্থাদন। প্রভার গন্ধীর লীলানা পারি ব্রিভে: বুদ্ধি প্রবেশ নাহি; ভাতে না পারি বর্ণিছে। স্ব শ্রোতা বৈষ্ণবের বিশিয়াচরণ : চৈত্ত চরিতা বর্ণন কৈল স্মাপন। আকাশ অনস্ত, তাতে যৈছে পক্ষীগণ, যার যত শক্তি ছত করে আহোহণ। ঐছে মহাপ্রভুর লীলার নাহি ওর পার: জীব হঞা কেবা সমাক পারে বর্ণিবার ? যাবৎ বৃদ্ধির গভি. ততেক বর্ণিল: সমডের মধ্যে যেন এক কণ ছাইল। নিত্যানন্দ কুপাপাত বুন্দাবন দাস: চৈত্ত লীলার ভিঁহো হয় আদিব্যাস। কোঁৰ আন্তোষদাপি সৰ লীলাৰ ভাওাৰ: তথাপি অলল বর্ণিয়া ছাড়িলেন আরে। বে কিছ বর্ণিলা দেও সংক্ষেপ করিয়া; লিখিতে না পারে, তবু রাখিরাছে লিখিয়া। रेडडिंग मकत्म जिल्हा निविदाहि चारन पारन ; সেট বচন খান সেই পরম প্রমাণে। 'সংক্ষেপে কহিল বিস্তার না যায় কণনে: (১) विकारिया (वक्यांत्र करित्वन वर्गमं । চৈত্র মললে ইহা লিখিয়াছে স্থানে স্থানে : म्डा करह 'कारश वानि कतिरव वर्गता'। रेडिक नीनामुख निस् श्रमासि नमान ; ভৃষ্ণাত্মরূপ ঝারি ভরি তিঁহে। কৈল পান।

তার বারি শেষামত কিছ মোরে দিলা: ততেকে ভরিল পেট ভকা মোর গেলা ৷ আমি অতি কুল জীব পক্ষী রাসাটনি: সে বৈছে ভূঞার পিরে সমুদ্রের পানী। হৈছে আমি এক কণ ছ'ইল লীলার : এই দটাছে জানিহ প্রভর লীলার বিস্তার। আমি লিখি ইচা মিখ্যা করি অভিমান : আমার শরীর কাঠ পুতলী সমান। বুজ অব্যক্তর আমি অক ব্ধির: হত হালে. মন বৃদ্ধি নহে মোর স্থির। নানা রোগগ্রন্থ, চলিতে বলিতে না পারি: পঞ্রোগ পীড়ার ব্যাকুল রাজি দিনে মরি। शृद्ध श्राष्ट्र हैश कतिशाष्ट्रि निर्वयन ; কেগালি কিছিলে ক্ষম ইতার কারণ। শ্রীগোবিক্স, শ্রীচৈত্র, শ্রীনিভাানক: শ্রীঅবৈত, শ্রীভক্ত, আর জীলোতবন। 🔊 স্বরূপ, এরপ, এসনাতন: শ্রীরঘুনাথ দাস, শ্রীগুরু, শ্রীজীব চরণ। ইতা সবার চরণ কপার লেখার আমারে : আর এক হয় ভিতো অভি কুপা করে। মদন গোপাল মোরে লেখার আজ্ঞা করি: কছিতে না জ্বায়, তবু রহিতে না পারি। না কহিলে হয় মোর ক্রতন্ত্রতা দোক: 'দক্তক বি' বলি শ্রোকান। করিছ রোষ।

গণেকেপে কহিল......আগে ব্যাস করিবে বর্ণন।— হৈতক্ত মললে বৃন্ধাবন লাস নিবিয়া গিয়াছেন বে পরে বেলব্যাস লাময়া বিভারিতরূপে গৌরগীলা বর্ণনা করিবেন। পাছে গ্রন্থকারকে কেছ সেই ব্যাস মনে করেন, সেই সন্দেহ নিয়সন করিয়া বলিতেছেন বে দত্যসভাই ইহার পর ব্যাস লাময়া এ লীলা বিভীপ্রপে বর্ণিবেন; তিনি কেবল এককণ ছুঁইলেন।

ভোমা স্বার চরণধুলি করিত্ব কান; ভাতে চৈত্ত मीना देशन य किছ निथन। এবে অস্তালীলাগণের করি অরুবাদ; অমুবাদ কৈলে পাই লীলার আস্থান। অপথম পরিচেছদে রূপের দ্বিভীয় মিলন : ভার মধ্যে ছই নাটকের বিধান শ্রবণ। তার মধ্যে শিবানন সঙ্গে কুরুর আইল; প্রাভু ভারে কৃষ্ণ কহাইয়া মুক্ত কৈল। দ্বিতীয়ে ছোট হরিদাদে করাইল শিক্ষণ कात्र मरधा निवासत्मत्र काम्ठरी मर्नन। ভতীয়ে চরিদাদের মহিমা প্রচণ্ড ; দামোদর পণ্ডিত কৈল প্রভূকে বাক্যদণ্ড। প্রভুনাম দিয়া কৈল ত্রহ্মাও মোচন; হরিদাস কৈল নামের মহিমা ভাপন। চতুর্থে শ্রীসনাতনের দ্বিতীয় মিলন ; দেহ তাগে হৈতে ভাঁরে করিল রক্ষণ। रेखाई मारम প्रज् डाँदि रेकल भरीकन ; শক্তি সঞ্চারিয়া পুনঃ পাঠাইল বুনদাবন। পঞ্চমে প্রহাম মিশ্রে প্রভু রূপা কৈল; রার দ্বারা তাঁরে কৃষ্ণকথা তনাইল। ভার মধ্যে বাঙ্গাল কবির নাটক উপেক্ষণ: স্থরূপ গোঁসাঞি কৈল বিগ্রহের মহিমা স্থাপন। ষষ্ঠে রঘুনাথ দাস প্রভুরে মিলিলা; निष्णानन चाड्डाय हिँडा सरहारनव देकना। দামোদর স্বরূপ ঠাঞি তারে সমর্গিলা; (शांवर्कत्नत्र मिना, खझामाना छाँद्र फिना । স্প্রম পরিচেছদে বছভভট্টের মিলন ; নানা মতে কৈল তার গর্ক খণ্ডন। काहेरम द्रामहत्त भूतीत काशमन ; তাঁর ভয়ে কৈল প্রভূ ভিক্ষা সংকাচন।

बर्ध्य देशश्रीमार्च महेनाइक त्याहत : ত্রিজনতের লোক এতুর পাইল দর্শন। লশমে করিল উত্তদত আখাদন : রাঘ্ব প্রতিছের ভাঁহা ঝালির সাজন। छात्र मध्य (भावित्मदत्र देकम भन्नीकन ; 🖟 ভার মধ্যে পরিমুঞানুভ্যের বর্ণন। ध्वकामत्म इतिमान केक्द्रवन निर्याण ; ভক্তবাৎস্ণ্য বাঁহা দেখাইল গৌর ভগবান। कामाण कश्रमात्रास्त्र टेकन एकतः নিত্যানক কৈল শিবানকেরে ভাডন। खार्यामान कामानम मध्या याहे चाहेना ; মহাপ্রভ দেবদাসীর শীত ভনিলা। त्रचुनाथ ভहाচार्यात छाहारे मिलन ; প্রভ তারে রূপা করি পাঠাইল বুন্দাবন। **ठ**कृत्म निर्द्याचान चात्रछ चर्नन ; শরীর এখা প্রভুর মন গেলা বৃন্ধাবন। ভার মধ্যে প্রভুর সিংহ্ছারে পতন ; অভি সন্ধি ভ্যাগ অমুভাবের উল্পন। চটক পর্কত দেখি প্রভুর ধাবন ; ভার মধ্যে প্রভুর কিছু প্রলাপ বর্ণন। शक्रमण शविरक्राम खेमान विनारम : बुन्नावन ज्ञाम याश कविन श्रावरण। ভার মধ্যে প্রভুর পঞ্চেক্তিয় আকর্বণ ; ভার মধ্যে কৈল রালে ক্লফ আছেবণ। বোডশে কালীলানে এড কুণা কৈল; देवकारवाकिन्द्रे चाहेवाद कन रमचाहेन। चिवानरचत्र वांगरक श्रीक बताहेंग : निःश्वादात बाजी अकृत्क क्रम मिष्टिन । यहा अनारमत छाहा बहिया वर्तिन ; क्काध्त्रामुट्डत कन स्त्रांटक चारांतिन।

সপ্তদশে গাবীমধ্যে প্রভুর প্তন; কুর্মাকার অন্বভাবের তাঁহাই উল্লাম। ক্ষের শব্দ গুণে প্রভুর মন আ ক্ষিল: 'কাল্রাঙ্গভে' শ্লোকের অর্থ আবেশে করিল। ভাব সাবল্যে পুনঃ কৈল প্রলাপন ু; কর্ণামূভ শ্লোকের অর্থ বিবরণ। : অষ্টাদশ পরিচ্ছেদে সমুদ্রে পতন; ক্লফ গোপীর জলকেলি তাঁহাই দর্শন। তাঁহাই দেখিল ক্ষের বন্তভোজন; षानिया উঠाইन, প্রভু আইলা খভবন। উনবিংশে ভিত্তিতে প্রভুর মুখ সংঘর্ষণ : ক্ষের বিবহ ফ তি, প্রালাপ বর্ণন। বসস্ত রজনী, পুপোদ্যানে বিহরণ: ক্রফের সৌরভ্য শ্লোকের অর্থ বিবরণ। বিংশ পরিছেদে নিজ শিক্ষাইক পছিয়া: তার অর্থ আস্বাদিল আবিষ্ট হইয়া। ভকে শিক্ষাইডে যেই শিক্ষাইক কৈল : সেই শ্লোকাষ্টকের অর্থ পুন: আসাদিল। মুখ্য মুখ্য লীলার অর্থ করিল কথন; অফবাদ হৈতে স্মরে গ্রন্থ বিবরণ। .একেক পরিচেছদে কথা অনেক প্রকার: মুখ্য মুখ্য কহিল, কহা না যায় বিভার। প্রীরাধা সহ খ্রীমদনমোহন; ব্রীরাধা সহ শ্রীগোবিন চরণ। জীবাধা সহ জীল গোপীনাথ: এই তিন ঠাকুর সব গৌড়িয়ার নাথ। শ্রীক্ষটেডজ, শ্রীবুক্ত নিত্যানন্দ; প্রীঅবৈত্ত আচার্য্য, প্রীগৌরভক্তবৃন্দ। প্রিক্রপ, প্রীক্রপ, জীসনাতন; প্রিক্তর, প্রীরঘুনাথ, প্রীকীব চরণ।

নিজ শিরে ধরি এই স্বার চরণ : যাহা হৈতে হর সব বাঞ্চিত পরণ। স্বার চরণ রূপা, গুরু উপাধ্যায়ী: (১) মোর বাণী শিষা, ভারে বক্তত নাচাই। শিব্যের শ্রম দেখি গুরু নাচন রাখিল: কুপানানাচায়, বাণী ব্দিয়া ছভিল। অনিপুণা বাণী আপুনি নাচিতে না জানে: যত নাচাইল নাচি কবিল বিশ্রামে। সব খ্রোভাগণের করি চরণ বন্দন: যাঁসবার চরণ কুপা শুভের কারণ। চৈতভাচরিভাষ্ড যেই জন ওনে: ভাঁহার চরণ ধুঞা করোঁ মুঞি পানে। শ্রোতার পদরেণ করে। মন্তকে ভ্রণ: তোমর। এ অমৃত পীলে, সফল হৈল প্রম। ঞীরপ রম্বাথ পদে মার আশ; চৈত্যচরিভাষ্ত করে রুঞ্চলাস।

ইতি আইচিত্রচরিতামূতে অংস্ত্যেপণ্ডে শিক্ষাংলাকার্থাবাদনং নাম বিংশক্তিকম পরিজেদঃ।

গ্রন্থ পরিশিষ্টম।

চরিতম্মতমেতৎ শ্রীলচৈততাবিফোঃ শুভদমশুভনাশি শ্রহ্মাসাদয়েদয়:।

১ সবার চরণ কৃপা.......করিল বিত্রাম। — পুর্বোক্ত মহালরগণের চরণক্ণ? আমার শুরু; এই শুরু ব্যতীত আমার ভাষা কুর্তি পার না; তিনি বেমন নাচাইয়াছেন্ সেতেমনি নাচিয়াছে অর্থাৎ বর্ণনা করিতে সমর্থ হইরাছে; এক্ষণে আর নাচাইতেছেন

তদমলপদপদ্মে ভৃঙ্গতামেত্য সোহয়ং রসয়তি রসমুচৈচঃ প্রেমমাধ্বীকপূরং। ১। শ্রীমনাদনগোপালগোবিন্দদেব তুষ্টয়ে চৈত্রতাশিতমস্ত্রেতচৈতশুচরিতামৃতং। ২। পরিমলবাসিত ভুবনং স্বরসোমাদিতরসিকালম্বং। গিবিধবচব**ণাম্মোজ**ং কঃ খলু রদিকঃ সমীহতে হাতুং। ৩। মংপ্রাণসর্ববস্থপদাব্ধরেণো র্মদীশ্বরী শ্রীসুতরাধিকায়াঃ। প্রাণোরুসর্বাস্বপদাব্দরেণুং <u>জী</u> জীলগোবিন্দমহং প্রপদ্যে। ৪। भारक मिस्नुधिवार्ट्या देखार्छ वृन्तविभाखरत। সূর্য্যাহেহসিতপঞ্চম্যাং গ্রন্থোহয়ং পূর্ণতাং পতঃ।৫।

সমাপ্তোহয়ং গ্রন্থ:।

টীকাপরিশিষ্টম্।

মুকং করোতি বাগীশমলং দর্শরতে পদ্ম । यदकुषा जमहः वत्स मिक्कानसभौधन्नम्॥ নিরাশ্রমধ্যক পতিতং দীনচেতসম। चकुराष्ट्रिषात्नन तक मार कश्मीयत ॥ প্রেমাবতার: মধ্রস্বভাবষ্ কুপানিধানং পরমং পবিত্র-। **মৈখ্যামাধ্যারসাভিবিক্তম** গৌরং প্রপদ্যে হৃগভীর ভক্তা।। এনিত্যানশ্মদৈতং এবাসপ্রমুখান্ গণান্। বন্দেহহং ভক্তিতো নতা প্রেমভক্তেরভীক্ষরা। স্থমধরচরিতং যদেগারসন্দর্ভগর্ভ-মথিলজনহিতক প্রেমভক্ত্যাতিপূর্ণম। বিরচিতমমূতং সদেষন ধঞ্চেন ভক্তা ভমতি বিনয়পুর্বং কৃঞ্দাসং নমামি। শ্রীথতে চ মহাগ্রামে বর্দ্ধমানপ্রদেশকে। আণুক্ক ইতি খাতো ভিষ্ণাসীমহান্ সভাম 🛊 গোপীকৃষ্ণ তু তৎপুত্র ভাতো মে দুর্জ্মারয়ে। ময়া ওস্তামজেন!তিমন্দেনাকৃতকর্মণা। ভগবৎপদকামেন চৈডনাচরিতামৃতম্ । (पवास्त्रमा कुछ: एहं) वार्थामा नवनाथामा।

ইভি ঐতৈতভাচরিভামূতে দরলাথ্যা টীকা দম্পূর্ণা।

অন্ত্যলীলার স্থচিপত্ত।

প্রথম পরিচ্ছেদ—শ্রীরূপ সঙ্গোৎদব।

বন্দনা — চৈতত্ত প্রভ্র নীলাজি আগমন—তৎস্থাদ নব্ধীপে প্রেরণ—বঙ্গদেশের তক্রগণের নীলাজি বাত্রা—শিবানন্দ সেনের ক্কুরের উপাথ্যান—প্রভূত্বক নাম দিরা কুক্রকে উদ্ধার করেন—অন্প্রমের সাহত রূপের নীলাচলে যাত্রা—কৃষ্ণগীলানাটকের স্চনা—অন্প্রমের সঙ্গাপ্রাপ্তি—সভ্যভামাপুরে রূপের আশ্চর্যা স্বপ্ন দর্শন—নাটকের ছই ভাগ করণ—রূপের সহিত প্রভূব ও ভক্তগণের মিলন—নাটকে কৃষ্ণকে ব্রজ্ঞ হইতে বাহির না করিবার জন্ম রূপের প্রতি প্রভূব আদেশ—র্থধাত্রাদিতে নৃত্যকীর্ত্তনন্দর্শন—রূপ কর্ত্বক প্রভূব নৃত্য প্লোকের অনুরূপ স্লোক করণ ও প্রভূব ক্ত্রক্রপের প্রশংসা—রূপের ওব ব্যাথ্যা—ভক্তন্মগুলীমধ্যে রূপের নাটক ব্যাথ্যা—নাটকের নান্দীতে নিজ গোরব শুনিরা প্রভূব ক্রেধে—ভক্তমগুলীতে রূপের প্রস্কাবন গমন। >—88

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ—ছোট হরিদাস দণ্ডরূপ শিকা।

বন্দনা—পরিত্রাণের তিবিধ উণায়—সাক্ষান্ধর্শন, আবেশ ও আবির্ভাব
—অধুয়া দেশের নকুল ব্রন্ধচারীর দেহে আবেশ—শিবানন্দ সেনের
পরীক্ষা ও তাঁহার সন্দেহভঞ্জন—শচীমন্দিরে, নিত্যানন্দর্ভনে, শ্রীবাসকীর্ত্তনে ও রাঘব ভবনে প্রভুর আবির্ভাব—প্রভু শ্রীকাস্তব্যেন ছারা বঙ্গের
ভক্তগণকে নীলাচলে যাইতে নিষেধ করিয়া পাঠান ও আপনি পৌষমাসে আসিবেন বলেন—প্রভুর না আসায় জগদানন্দ শিবানন্দের নিরানন্দ—
প্রভ্যুম ব্রন্ধচারী প্রভুকে আনিবেন বলেন—ধ্যান ঘোণে প্রভুকে আবিভূত করান—প্রভুর তিন ভোগ ভোজন—শিবানন্দের সংশ্র ও পরবৎসর
নীলাচলে যাইয়া প্রভুর প্রমুথাৎ শুনিয়া সংশ্র ভঞ্জন—পোপাল ভট্টাচার্য্যের নিকট তাঁহার ভাই ভগবান্ আচার্য্যের বেদান্ধ শুনিবার ক্ষ্ত

আগ্রহ ও বন্ধপ গোৰামীর ভিরকার—ভগবান আচার্য্যের গৃছে মহাপ্রভুর নিমন্ত্রণ—আচার্য্যের কথার ছোটছরিদাস শিখীমাহিতির ভগিনী সাধবী দেবীর নিকট হইভে উত্তম ডঙুল হাচ্ঞা করিরা আনেন—মহাপ্রভুজানিতে পারিয়া প্রকৃতি সন্তামণ পাপজ্ঞ ভাছাকে বর্জন করেন—স্বরুপাদির অহনর—প্রভুর উপেক্ষা—একবংসর পরে হরিদাদ প্ররাগে বাইয়া ত্রিবেণী প্রকেশ করেন—হরিদাসের গল্পক্ত প্রোপ্তি ও প্রভুকে অলক্ষ্যেগীত ভানান—ভিক্তগণের সমুদ্রন্তান ও অলক্ষ্যেতে হরিদাসের গীত প্রবণ—তর্ক বিভর্ক—প্রয়াগে হরিদাসের মরণবুত্রান্ত মহাপ্রভু জীবাসাদির মুক্ষে ভানা প্রকৃতি সন্তাম্বদের মরণবৃত্তান্ত মহাপ্রভু জীবাসাদির মুক্ষে ভানা প্রকৃতি সন্তাম্বদের মরণবৃত্তান্ত বিলয়া নির্দার করেন।

3a-ab

তৃতীয় পরিচ্ছেদ-হরিদাস ঠাকুর মহিমকাথন।

বন্দনা—মহাপ্রভু এক বিধবার পুত্রকে বেশ্ব করেন—দামোদর পণ্ডিভ ভজ্জা প্রভুকে বাকাদণ্ড করেন—প্রভুর সংস্থাব প্রকাশ—প্রভু তাঁহাকে উপদেশ দিরা নবদীপে মাভ্যমীপে প্রেরণ করেন—হরিদাসকে প্রভুষরন ও স্থাবর জন্ম উদ্ধারের উপার জিজ্ঞাসা করেন—মহাপ্রভু হরিদাসের চরিত্র ভজ্জগণসমীপে বলেন—বুন্দাবন দাসের বর্ণিভ অংশ ত্যাগ—হরিদাসের বেণাপোল মধ্যে ভপজা—রামচন্দ্র থানের উৎপাত—বেশু। প্রেরণ—বেশু। নাম প্রভাবে পরিত্রাণ পার—রামচন্দ্রের নিত্যানন্দ অবজ্ঞা ও ফল ভোগ—হরিদাসের চাঁদপুরে বলরাম আচার্য্যের গৃহে স্থিতি—বালক রঘুনাথ দাস তাঁহার সন্ধ করে—হিরণ্য গোর্ছনের সভার আগমন—নাম মহিমা ব্যাখ্যা—গোপাল চক্রবর্তীর সহিত বিচার—গোপালের দণ্ড—শান্তিপুরে অবৈত গৃহে হরিদাসের গমন—শ্রাদ্ধ পাত্র ভোজন—গন্ধাভীরে গুহার তপজা—নারীবেশে মান্ধা হরিদাসকে ছলিতে আইসে—ভাষার পরাজ্ম—প্রেম বক্তা—উপসংহার।

চতুর্থ পরিচেছদ-সনাতন দঙ্গোৎসব।

ৰন্দনা—কারিখণ্ডপথে সনাতন গোদামীর নীলাচলে যাত্রা—গাত্রে কণ্ডুখন রসা—লগরাথের রখাত্রে দেহ পাতের প্রতিজ্ঞা—হরিদাসের বাদার আগমন—মহাপ্রভুর সহিত মিলন—অমুপনের চরিজোরেখ ও খেদ— মহাপ্রভু সনাতনকে দেহভাগের অসারতা বুঝাইয়া দিয়া তাহা হইতে নিযুত্ত করেন-নৰবিধ ভল্তির উপদেশ-দনাভনের প্রতি বৈষ্ণবশাস্ত প্রকাশের অনুজ্ঞা-সনাতনের প্রতি করণা প্রকাশ ও তাঁহাকে আকাশৎ করণ-হরিদাস সনাতনে কথোপকখন-রথ যাতার বঙ্গের ভক্তগণের আগমন—তাঁহাদের সঙ্গে সনাতনের মিলন—বৈজ্যষ্ঠ মাসে প্রভুর যমেশ্বর টোটায় স্থিতি—সনাতনকে মধ্যাহে তথায় সাইতে আজ্ঞা করেন-সিংহ্যারের শীতল পথ বজ্জিয়া সমুদ্রপথে তপ্ত বালুকার উপর দিয়া দ্রাভনের গ্রম-প্রভার জিজ্ঞাসায় স্নাতনের কারণনির্দেশ-মর্য্যাদা রকাজন্ত প্রভুর স্তোষ ও কও রস্মুক গাত্রে আলিজন—জগদানন্দের সহিত স্নাতনের প্রামর্শ-জগদানন স্নাতনকে বুন্দাবন প্রত্যাগমনের পরামর্শ দেন-প্রভু গুনিয়া জগদানন্দের উপর ক্রন্ত হয়েন-জগদানন্দের প্রতি আত্মতামধারদ ও তাঁহার প্রতি গৌরবস্তুতিনিম্বরদ দান জন্ত স্নাত্তন প্রভুকে লজা দেন—প্রভুর উত্তর—বৈষ্ণবদেহের অপ্রাকৃতভা— সন্ত্যাসীর সমদৃষ্টি ধর্ম-সনাভনের কণ্ডুরসা আরোগ্য-সনাতনের বিদার ও ঝারিখণ্ড পথে বৃন্দাবন প্রভ্যাগমন—রূপের এক বৎসর গৌড়ে হিভি ও বৃন্ধাবন গমন—উভয় ভ্রাভার দেবা ও বছ গ্রন্থ প্রকাশ—প্রীজীবের আগমন ও তৎকর্ত্তক বহু গ্রন্থ প্রকাশ। 606---

প্রক্ষম পরিচ্ছেদ—প্রত্যুদ্ধ মিশ্রোপাখ্যান।

বন্দনা—প্রহায় মিশ্র চৈতন্ত প্রভ্রুত নিকট কৃষ্ণকথা শুনিতে চাহেন—প্রভু তাঁহাকে রামানন্দ রায়ের নিকটে ঘাইয়া শুনিতে উপদেশ দেন—
— মিশ্রের রামানন্দ দভার গমন—রামানন্দ হই যুবতী কল্যাকে অভিনর
শিক্ষা দেন ও তাহাদের অভাঙ্গ মার্জনা করেন—প্রহায় মিশ্রের বিদার
ও মহাপ্রভুর নিকট বৃত্তাভ্রু কথন—মহাপ্রভু রামানন্দের নির্ব্বিকার নাধনের
কথা বলেন—মিশ্রের পুনরায় রামানন্দের নিকটে গমন—নিভ্তে তাঁহার
নিকট কৃষ্ণকথা শ্রবণ—মিশ্রের ভৃত্তিলাভ ও প্রভুর নিকট রামানন্দের
মাহাত্মাকীর্ত্তন—শুল্ল ও নীচ জাভি ঘারা ভগবতত্ব কহাইয়া প্রভু সয়াসী
প্রতিভিদ্যের গ্র্মানাশ করেন—বঙ্গদেশীয় বিপ্রের নাটক শ্রবণ অক্সভগরান্

আচার্য্য স্বরূপের নিকট প্রস্তাৰ করেন—স্বরূপের নিকট নাটক ব্যাথ্যা— স্বরূপ কর্তৃক দোষারোপণ—বঙ্গদেশীয়কে স্বরূপের উপদেশ—স্বরূপ কর্তৃক লোকের ধিতীয় ব্যাথ্যা—কবিত্ত সর্ব্বত্যাগ ও নীলাচলে স্থিতি—উপসংহার।

3 · ; — ; · c

ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ-রঘুনাথদাস মিলন।

वन्मना-- त्रीरतव वितर-- त्रचूनाथ मिनन-- णांखिशूत रुरेट त्रचूनात्थतः গুহে গমন—ভাঁহার আচরণে পিভামাতার সম্ভোষ—মেচ্ছাধিকারী हित्रा मारम्य मूलूक नक्षा कतिया नय-हित्रात्र भनायन-त्रपूनारभव বন্ধন ও মিনভি—মেচেহর দয়া ও বিষয় প্রত্যপণি—রঘুনাথের পলায়ন চেষ্টা ও পিতা কর্তৃক বন্ধন—পানীহাটীপ্রামে নিভ্যানন্দের নিক্ট রঘু-নাথের পমন-উভয়ের মিলন ও চিড়াদধি মহোৎসব বৃত্তাস্ত-রাত্তিতে রাঘৰ মনিবে নৃত্যকীর্ত্তন ও মহোৎসব—ভোজন বিলাস—রঘুনাথ মহাপ্রভুর নিকট याहेवात अन्न निकानत्मक्रिनकृषे आभीसीन नरवन—निकानम ও जाहात গণদিগকে রঘুনাথের দান স্ট্রিংহ প্রত্যাগমন ও বাহিরে শয়ন—ভক্তগণের নীলাচলে গমন-বাত্তিশেষে বহুনন্দন আচার্য্যের আগমন-তাঁহার সঙ্গে রঘুনাথের বহির্গমন-নীলাচলে যাতা-পিতা জানিতে পারিয়া ঝাকরা পর্যাস্ত লোক পাঠান--রবুনাথের মহাপ্রভুর সহিভ মিলন-স্বরূপের হত্তে সমর্পণ-রঘুনাথের বৈরাগ্য--তাঁহাকে প্রভুর উপদেশ-গোড়ের ভক্তগণের আগমন ও তাঁহাদের সহিত রঘুনাথের মিলন-বর্ষাস্তরে রঘু-নাথের পিতা ভক্তগণের দঙ্গে পুত্রের জন্ত দ্রব্য ও মমুষ্য পাঠান--রঘুনাপের ব্যবহার-প্রভু শিলা ও গুঞ্জামালা রঘুনাথকে দেন-রঘুনাথের শিলা দেবন —রঘুনাথের দাধন বিধি ও আত্মশাদন—ভোজনের নিরম।

সপ্তম পরিচেছদ—বল্লভ ভট্ট মিলন।

বন্ধনা—বল্পত ভটের নীলাচলে আগমন—মহাপ্রভুর সহিত কথোণকথন
—মহাপ্রভু কর্ত্তৃক ভক্তগণের প্রশংসাবাদ—বৈক্ষবগণের সহিত ভটের
বিলন—গণ সহিত মহাপ্রভুকে ভট ভোজন করান্—রথধানোর নৃত্যকীর্ত্তন দর্শন—বল্পত ভটের দিতীর্বার আগমন—প্রভুকে প্রচিত ভাগবডের

শাব্যা গুনাইবার প্রার্থনা—প্রত্ব প্রত্যাব্যান—ভট্টের অপমান—গদাধর শণ্ডিতকে বলাৎকারে ব্যাথ্যা শ্রবণ করান—মহাপ্রভ্র সভার ভট্টের উদ্গাহাদি—ভট্ট শ্রীধরস্বামীর ব্যাথ্যার দোষারোপ করিলে মহাপ্রভ্র অদন্তোব—
•ভট্টের অপমান ও নির্কোদ —প্রভ্ তাঁহাকে শিক্ষা দেন ও গণদহিত তাঁহার স্থাহে ভোজন করেন—গদাধর পণ্ডিভের নিকট ভট্টের দীক্ষা প্রার্থনা—
তাঁহার প্রত্যাধ্যান—প্রভ্র সহিত পণ্ডিভের প্রণায় কলহ ও মিলন—
গদাধরের মহিমা কথন—পণ্ডিভের নিকট ভট্টের দীক্ষাপ্রহণ—১৪১—১৫৫

অফম পরিচেছদ—ভিক্ষাসঙ্কোচ।

বন্দনা—রামচন্দ্র পুরীর আগমন—অগদানন্দ পণ্ডিতের গৃহে ভোজন—
পুরী মহাপ্রভুর গণকে নিন্দা করেন—মাধ্যেক্র পুরীর শাপে রামচক্রের
নিন্দা অভাব লাভ—ঈর্বর পুরীর গুরুপ্রসাদে ভক্তিলাভ—রামচন্দ্র মহাপ্রভুর নিন্দা করেন—প্রভু তাঁহাকে ভক্তি করেন—প্রভুর বাসার পিণীলিকা
দৃষ্টে পুরী মহাপ্রভুর সাক্ষাতে নিন্দা করেন—প্রভুর ভিক্ষাসংক্ষোচের
আদেশ—রামচন্দ্র প্রভুকে শিক্ষা দেন—পর্মানন্দ্র পুরী প্রভৃত্তি ভক্তগণ
প্রভুকে পূণ ভোজন করিতে অন্তরোধ করেন—প্রভুর উত্তর ও ভক্তগণের
অন্তরোধ রক্ষা—রামচন্দ্র পুরীর গমন—প্রভুর অক্তন্দ্রপান ভোজনাদি—
উপসংহার ধ

নবম পরিচ্ছেদ—গোপীনাথ পট্টনায়কোদ্ধার।

বন্দনা—নানাদেশ হইতে প্রভুর দর্শনে লোক সমাগম—প্রভুকে লোকে জানার যে গোপীনাথ পটনায়ককে রাজাক্তার চাঙ্গে চড়াইয়া মারিভেছে—প্রভুর প্রশ্নে লোক কর্ত্বক ঘটনার বিবরণ—প্রভুব সাহায়্য প্রার্থনা—প্রভ্যাধ্যান—বাণীনাথাদির বন্ধনবৃত্তান্ত নিবেদন—প্রঃ প্রঃ জরুরোধে প্রভুর রোষ—হরিচন্দন পাত্র প্রভুর ব্যবহার ও গোপীনাথকে নিজ্তি দিভে রাজ সমীপে নিবেদন করেন—গোপীনাথের নিজ্তি লাভ—প্রভুর নিকট কাশীমিশ্রের আগমন—প্রভু তাহার নিকট বিরক্তি প্রকাশ করেন—কাশীমিশ্রের প্রবোধ দান—প্রভাপ কল্র কর্ত্বক মিশ্রের চরণ্সেবা—প্রভু বিরক্ত হিরা নীলাচল পরিত্যাগ করিবেন, কাশী মিশ্র রাজাকে বলেন—রাজার

উত্তর—রাজা গোপীনাধকে দার ইইতে নিক্ষতি দিয়া ও অধিকার প্রস্ত্য-পুন করিয়া প্রসাদ করেন—কাশীমিশ্র প্রভূকে রাজার ব্যবহার বলেন— ভবানন্দ পঞ্চপুত্র সহ প্রভূকে মিলেন—গোপীনাথের নির্কোদ—প্রভূব শিক্ষা—উপসংহার। ১৬৪—১৭৫,

দশম পরিচেছদ—ভক্তদত্তাস্বাদন।

বন্দনা—গোড়ের ভক্তগণের নীলাচলে যাত্রা—প্রভুর কল্প দমন্ত্রী
কর্তৃক নানাদ্রবা প্রস্তৃতীকরণ—দ্রব্যের নামোরেণ—রাঘ্রের ঝালি
সাজান—বৈষ্ণবগণের নীলাচলে আগমন—জগল্লাথের জললীলা ও ভক্তগণ
সক্ষে প্রভুর জল ক্রীড়া—প্রসাদ ভোজন—গোবিন্দকে ঝালি দান—বেড়া
কীর্ত্তন ও পরিমুণ্ডা নৃত্য বর্ণন—ক্রীর্ত্তনান্তে প্রভুর ভোজন ও শরন—গোবিন্দের পদসেবা—পূর্কবিৎ লীলা—ভক্ত দত্ত ভোজন জব্য সঞ্চয়—প্রভুর
ক সব জব্য ভোজন—রাঘ্রের ঝালির জব্য ভোজন ও প্রশংসা—আচার্য্যাদির বাসার নিমন্ত্রণ ভোজুরনের নিয়ন—উপসংহার। ১৭৫—১৮৭

একাদশ পরিচেছদ—হরিদাস নির্যান।

নমন্ধার—মহাপ্রভ্র রুঞ্বিরহোদয়—হরিদাদের সংখ্যানামের অপূর্ণভা—প্রভুর উপদেশ—হরিদাদের মরণের প্রার্থনা—উত্তর প্রভ্যান্তর—
হরিদাদে বেড়িয়া অলনে কীর্জন আরম্ভ—হরিদাদের প্রাণ ত্যাগ—হরিদাদের ৠ
সূত্ত দেহ লইয়া মহাপ্রভুর নৃত্য—হরিদাদের অস্ত্রোষ্টি—মহোৎদ্র অস্ত্র প্রভুর ভিক্ষা—বিজ্ঞাংস্বে বৈশ্ববভোজন—প্রভুর বর্দান—বিজ্ঞান
সঙ্গীত—উপসংহার।

घान्य পরিচেছন—জগদানন্দ তৈল ভঞ্জন।

বন্দনা—গোড়ের ভক্তগণের প্রভুদর্শন জন্ম সন্ত্রীক নীলাচলে যাত্রা— পথে শিবানন্দ সেনের ঘাটা সমাধান—শিবানন্দকে নিত্যানন্দ গালি দেন—শিবানন্দের স্ত্রীর ছংধ—শিবানন্দকে নিত্যানন্দ লাখি মারেন— শিবানন্দের আনন্দ প্রকাশ — প্রীকান্ত সেন ছংখিত হইয়া অগ্রস্চি যান— ভক্তগণের নীলাচলে অগেমন ও প্রভুস্কে মিলন—পুরীদাস—শিবানন্দের গোষ্টির উপর প্রভুর কৃপা—পর্মেশ্বর মোদক—চাতুর্যান্ত ভক্তগণ সক্ষে
কুম্পণ—বিদায় সময়ে ভক্তগণের প্রতি প্রভুর প্রেমপ্রকাশ—জগদানদের
ক্ষুটী মাতার নিকট নবদীপে গমন—কথোপকথন—ভক্তগণের গৃহে জনদানিদ্দের গমন ও স্থিতি—শিবানদের গৃহে চন্দাাদিতৈল সংগ্রহ—নীলাচলে
বাইয়া প্রভুকে তৈল উপচৌকন দান—প্রভুর তৈল উপেক্ষা—পভিতের
তৈল ভঞ্জন ও প্রভুর উপর অভিমান—জগদানদের নিকট প্রভুর ভোজন
কীলা—জগদানদের সতাভাষার ভাব।

ত্রোদশ পরিচেছদ—জগদানন্দ বুন্দাবন গমন।

বন্দনা — প্রভূর ক্লয় বিচ্ছেদে ক্ষীণকার — কলার শরলাতে শর্ম — জগদানন্দের বালিশ দান—প্রভু বালিশ অস্বীকার করেন—স্বরূপের চরিত কদলীপত্তের বালিশ গ্রহণ—জগদানন্দের বুন্দাবন যাইবার ইচ্ছা—প্রভূ ভাঁহাকে যাইতে বাধা দেন—স্বরূপের অন্তরোধে যাইবার অনুমতি দান—প্রভু জগদাননকে পর্যাটনের উপদেশ দেন—জগদানলেক কুলাবন যাত্রা—বারাণসী সনাতনের সঙ্গে মিলন—বনদৰ্শন—রাভুলবজের আমাগমন—মথুরায় উপাখ্যান-স্নাত্নের নিক্ট জগদানন্দের বিদায় গ্রহণ ও নীলাচলে যাত্রা—স্নাত্ন প্রভুকে বস্তু ভেট-দেন—স্নাত্ন প্রভুর জন্তু দাদশ আদিত্য ঠিলায় স্থান নির্দেশ করেন—জগদানন্দের নীলাচলে আগমন ও প্রভুর সঙ্গে মিলন-বুলাবনের পীলু ফল ভোজন কৌতুক-দেবদাদীর গানে প্রভ্র • আবেশে ধাবন—লোবিন্দের পশ্চাদামন ও প্রভুর রক্ষা—রঘুনাথ ভট্টাচার্য্যের আগোমন---রামদাস বিশাস ভটের কালি বংহন-- প্রভুর সহিভ রলুনাথের মিলন — অস্ট মাস জিডি ও প্রভুর সেবা—রামদাস বিশাসের নীলাচলে বান—ভটের প্রতি প্রভুর উপদেশ—ভটের বিদায়—দ্বিতীয়বার আগমন— অইমাস পরে প্রভূব আংক্রায় রুকাবনে গমন—রূপসনাতনের সঙ্গে মিলন— ভাগবভ পাঠ ও সাধন প্রণালী—উপহংহার। 205-236

চতুর্দ্ধণ পরিচ্ছেদ—চটকগিরিগমন।

বৰুনা— প্ৰভ্র বিরহোনাদ— রঘুনাথ স্করণের কড়চাবলস্ন— প্রভ্র রাধাভাব— প্রভ্র রাদণীণার স্থানশ্ন— জগরাথদশ্ন— উড়ীয়া জীর . উপাধ্যান—প্রাপ্তরত্ব হারাণর ভাবোন্ধানপ্রশাপ দশনশা — সিংহ- ।

ছারে প্রভ্ব পভন—ভক্তগণের অবেবণ ও প্রাপ্তি—অহিস্থি
বিশ্লেষ—প্রভ্ব চৈতঞ্জনাভ—গৃহে গমন—গোবর্জন জ্ঞানে প্রভ্ব চটক পর্কাতে ধাবন—ভক্তগণের অনুসরণ—প্রভ্ব বার্গতি ও প্রভভাব—

স্থাবা ও প্রভ্ব চৈতঞ্জনাভ—সপ্রেগোব্রিনে ক্লফদর্শনের বৃত্তাক্ত কথন—
গৃহে আগমন।

পঞ্চদশ পরিচ্ছেদ—উদ্যান বিহার।

বন্দনা—মহাপ্রভ্র অবস্থা—জগরাথদর্শনে প্রভ্র ক্ষের পঞ্জণ ক্রণ—স্বর্গ রামানন্দের নিকট প্রভ্ বিশাখার প্রতি রাধার উৎক্ষণীত্রাক পাঠ করিয়া অহারাগে বিলাপ করেন—এ হইজন কর্তৃক প্রভ্র শান্তনা—বুলাবনন্দ্রমে প্রভ্র প্রপোদ্যানে ন্রমণ—রাসে রাধানপ্রে ব্রিক্স অন্তর্হিত হইলে গোপীগণ প্রতি তকলভাকে ক্ষণবার্তা !জিজ্ঞানা করিয়া যেরূপে বেড়াইরাছিলেন, মহাপ্রভ্র সেই ভাবস্কৃতি ও উদ্যান ন্রমণ—স্বাভাবে বিভোর হইয়া চৈছল্ল প্রভ্র বম্নাকৃলে পরমস্থলর ক্ষজরপ দর্শন ও মৃত্র — স্বর্গাদির অহ্বর্গর ও প্রভ্র সংজ্ঞা লাভ—অদর্শনে বিলাপ —বিশাধার প্রতি রাধা বাক্যাম্পরণ করিয়া চৈতন্ত প্রভ্ ক্ষণমেন্দর্গ বর্ণনা করিয়া বিলাপ করেন—রামানন্দরায় শ্লোক পড়িলে প্রভ্ প্রশাপ বাক্রের ক্রের নারীবধে ব্যাধের ব্যবহার বর্ণনা করেন—প্রভ্ শ্লোক পাঠ করিয়া ক্রের সৌন্দর্গা ও চঞ্চলতা বর্ণন করেন—প্রভ্ শ্লাজার স্বরূপ কর্ত্বক গীতগোবিন্দ্রগান—প্রভ্র ভাবাবেশে নৃত্য ও পুনঃ পুনঃ গীতাস্থাদন—প্রভ্র শ্রম দর্শনে গান সমাপ্তি—স্বান ও বিশ্রাম—রূপগোস্বামীর স্তর্থনালার শ্লোকে এই লীলান্সরণ বর্ণন—উপসংহার।

ষোড়শ পরিচ্ছেদ—কালীদাসপ্রসাদাদি।

বন্দনা—বর্ধান্তরে গৌড়ের ভক্তগণের নীলাচলে আগমন—বর্মাণ দাসের জ্ঞাতি পুড়া কালীদাসের আগমন—ভাঁহার পরিচয় ও বৈঞ্বোচিছট ভোজনের কথা—ভূমিমালী জাভীর ঝড়ু বৈঞ্বের উচ্ছিট কালীদাস বেহ্মপে খাইয়াছিলেন, তাহার কথা—কালীদাসের উপর মহাগ্রভ্র কুণা— অভুর জগরাথদর্শন গমনকালে সিংহ্যারে পাদপ্রকালন-কালীদাদের ূ ঐ পাদোদক পান — প্রভুর নৃসিংহমূর্ত্তি দর্শন ও নৃসিংহ স্তব — কালীদাসকে ্ভুক্তশেষ দান—ভজের পদ্ধৃলি, পাদেদিক ও ভুক্ত শেষের মাহাত্মা বর্ণন— শিবানন্দের কনিষ্ঠ বালক পুরীলাসকে প্রভু ক্রফ বলিভে বলিলে বালক नीतव थारक--- अक्र वानरकत्र त्रीनावनश्चरनत्र कावन निर्देश करवन--সাত বৎসরের বালক পুরীদাসের আশ্চর্য্য ক্লোক রচনা—গৌড়ের ভক্তগণের বিদায়-প্রভুর বাহজান লোপ ওউন্ধাদাবত্বা-সিংহ্বারের স্বারপালকে প্রভূ অভ্তানাবস্থায় কৃষ্ণ দর্শন করাইভে বলেন—বারপাল প্রভ্কে জগলাথ মৃতি দেখাইয়া ক্লফজ্ঞান করিতে উপদেশ দেন--র ঘুনাথ দাস কর্তৃক চৈত্তগ্রস্তব কর বৃক্ষে এই লীলাত্মরণের উল্লেখ-জগরাথের সেবক প্রভুকে গোপাল-বলভনামক ভোগের কিয়দংশ দেন-প্রভু ভাহার অল্লাংশ আস্থাদন করিয়া ভাহাতে রক্ষাধরামৃত সঞ্চার অন্তব করত পুলকাশ্রু ত্যাগ করেন—স্কৃতি লভ্য ফেলাম্ভের ব্যাথ্যা—সন্ধায় ভক্তগণকে প্রসাদ বিভরণ ও অধরা-মৃতের গুণব্যাখ্যা—ভক্তগণের প্রসাদাখাদন—রামানন্দের ও প্রভুর অধরামৃতের শ্লোকপাঠ-প্রভু ভাষাবেশে শ্লোকের প্রলাপার্থ করেন-অধরচরিত, বেণুচরিত ও প্রসাদের অফুরাগ প্রলাপ—যোগ্যাযোগ্যনির্গয়— উপসংহার।

সপ্তদশ পরিচ্ছেদ—কূর্মকারানুভাবোন্মাদপ্রলাপ।

বন্দনা—মহাপ্রভু স্বরূপ রামানন্দ সঙ্গে অর্জরাত্রি পর্যান্ত কৃষ্ণকথায় অভিবাহিত করেন—ভাবাবেশে কৃষ্ণের বেণুগান শুনিয়া প্রাচীর লক্ষ্ণন পৃর্জ্ব সিংহছারে তেলাঙ্গাগাবীগণ মধ্যে প্রভুর পভন—স্বরূপাদির অবেষণ—প্রভুর কৃর্মাকারে পতন দর্শন—অচেতন অবস্থায় ভক্তগণ প্রভুকে গৃহে আনয়ন করেন—প্রভুর চৈতক্ত লাভ—প্রভুকর্ত্ব বুলাবনে ক্ষণ্ণের সন্তেত বেণুনাদে প্রীরাধার আগমন ও রাধা ক্ষণ্ণের ক্ষপ্রবেশ বর্ণন—প্রভুর আজায় স্বরূপের স্লোক পাঠ—প্রভু কর্ত্বক প্লোকার্থকরণ ও বেণুনাদের মন-প্রাণ্ডর মাধুর্ঘ কীর্ত্তন—রাগবাক্ষে চারি শক্ষামৃত বর্ণন—রাগোদয়াদির প্লোকপাঠ—ভাহার ব্যাথায় ভাব বৈচিত্র কীর্ত্তন—প্রভুর ভাবাবেশে পলাস্বনের চেষ্টা—স্বরূপ প্রভুকে কোলে করিয়া বিদ্যাপভির পদ গান করেন—

প্রকারের উপদেশ বাকা-রব্নাথ দাসকত চৈতগ্রন্তব কর্ম্বিক্ত ক্র্মাকতি লীলাবর্ণন লোকে। জার। ২৬২------

অন্তাদশ পরিচেছদ-সমুদ্রে পতন।

বন্দনা—শরংজ্যাৎস্বার মহাপ্রভুর স্বগণ সহ উদ্যান দ্রমণ—রাস্
লীলার স্লোক পাঠ ও ব্যাখা।—নানা প্রেমবিকার—প্রেমের বিচিত্রতা
কথন—জলকেলির স্লোক পাঠ—আইটোটা হইতে সমৃদ্র দর্শন ও প্রভুত্ব
ভন্নধ্যে পতন—কোনারকের দিকে ভাসিয়া যাওন—স্বরুপাদিগণ প্রভুত্ব
আবেষণ করেন—বিতর্ক ও অনিষ্টাশারা—পূর্কদিকে গমন ও জালিয়ার্রু
সঙ্গে সাক্ষাং—জালিয়ার বিচিত্র ভাব চেষ্টা—ভাহার উপাথান—স্বরূপাদি
ভাহার সঙ্গে নির্দ্দিই স্থানে যাইয়া অজ্ঞানাবস্থার প্রভুকে দেখেন—
প্রভুর অর্দ্ধ হৈতন্ত্র লাভ—রাস্থাবাকে স্থী সহ প্রীক্ষরের জলকেলি ও বক্ত
ভোজন বর্ণনাচ্ছলে প্রভুক্ স্টেভব্রের ও লীলাতব্রের নিগৃচ ভাব বাক্ত
করেন—সম্পূর্ণ চেতনালাভ—মহাপ্রভুর বিশ্বর—বাসায় আগমন—
উপসংহার।

छेनविश्म शतिरुष्टम--- मूथमध्यर्घगामि वर्गन ।

উপক্রমণিকা—ছগদানন্দকে প্রভু মাতৃসমীপে প্রেরণ করেন—মাতৃত্তি ও মাতৃপ্রেম প্রদর্শন—মাতার ও ভক্তদিগের জন উপটোকন প্রেরণ—জগদানন্দের একমাসকাল নবদ্বাপে স্থিতি—শচী মাতার ও অবৈতের নিকট বিদার গ্রহণ—আচার্য্যের প্রহেলীভরজা—ভরজার জর্ঘ সম্বন্ধে কগাবার্স্তা—প্রভুর রাধা ভাবাবেশে বিরহাদি—উদ্বৃণ্ দশার রাধিকাক্ত প্রোকে প্রসাপকথন—রাগবাকো সেই শ্লোকাস্বাদন—বিধাতার প্রতি গোণীর উক্ত শ্লোক পাঠ—রাগ বাক্যে তাহার অর্থাস্বাদন—গোণীভাবে বিষাদ ও গোবিন্দ দামোদর মাধ্বেতি নামোচ্চারণ—গঞ্জীরার মধ্যে প্রভুর শ্রন—উচ্চদংকীর্ভন ও ভিত্তিতে মুথসভর্ষণ—মুথে ক্ষন্ত ও ক্ষরির ধারা দৃষ্টে স্বন্ধপাদির ভ্রুথ—মহাপ্রভুর উর্বেগ কথন—শহর পণ্ডিতকে প্রভুর নিকটে শ্রন করান—শহরের প্রভু পাদোশধান খ্যাতি লাভ—বিভূরের দৃষ্টান্ত—এই লীলাসম্বন্ধীয় র্যুন্থ দাসের শ্লোকোদ্ধান—বসন্ত পোর্ণাসীয়

ক প্রায় বিশ্ব প্রকাশ সহ জগরাথ বরত নামক প্রপোদ্যানে জ্মণ—ললিছক লতা 'দ্যাদন—প্রভ্র নৃত্য ও অংশাক ব্লের তলে প্রক্রিদর্শন—
হুর ধাবন ও ক্লেন্ডর অন্তর্ধান—প্রভ্র মৃচ্ছা ও ক্লেগন লাভে চেতনাভ —গন্ধ রাধিকোক্ত শ্লোক পাঠ –রাগবাকো ক্ল্যান্থ গন্ধান্থাদন—
কেল্ড নিশা স্বন্ধপ রামানন্দের গীভ, প্রভ্র নৃত্য ও গন্ধান্থাদন—উপহোর—এই বব লীলান্নভ্তি ভর্ক সাধ্য নহে।
১৮৪—২৯৮

বিংশতিতম পরিচেছদ—শিক্ষা শ্লোকার্থাস্থাদন।

বন্দনা—তথ্প রামানন্দ দলে নানাদিনে নানালোকাত্মদন—নাম
নাংকীর্ত্রন কেলি, পরম উপায় কথন—সংকীর্ত্তনের মহিমাত্মক প্লোক পাঠ
ব্যাথ্যা—নামন্ত্রক্তি না থাকুরে বিষাদ দৈন্তপ্লোক পাঠ ও ব্যাথ্যা—
বৈরপে নাম লইত হয়, তদাত্মক শ্লোক ও ব্যাথ্যা—গুরুভক্তি প্রার্থনা
লোকপাঠ ও গোলা—দান্তভক্তি প্রার্থনা—বিমোগক্ষ্ ভির শ্লোকার্ম্বভি
ক্রাথ্যা—ভাং পরিবর্ত্তন—প্রোট্ড ভাবে রাধিকোক্ত শ্লোকার্ম্বভি
ক্রাথ্যাক্তন প্রার্থনা আনন্ত লীলামুত্মভি
ক্রাররের, দোষকাল ক্রিট মার্জ্জনা—রুলাবনদানের মহিমা বর্ণন ও
প্রস্থাবের বিনয়-দেবলৈ প্রস্থ লিখন—নিজের অক্ষমভা—অন্তলীলার
ক্রম্বাদ কথন—উল্লেখ্যারক্তন।—গুকুকুপাতে গ্রন্থকারের বাণীর নর্ত্তন ও
বিশ্রাম—শ্রোভ্রন্তন—নিজ্যর—গ্রন্থকারিভি
ভিন্ত লাক্য পরিশিষ্ট।